vol. 7 (Sept., 1883 – Aug. 1884).

(Formerly vols. 5, 6 & 7
were bound in one volume
and named as V. 2.)

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Sept. 1888. Vol. VII] [No. 1
प्रयाग भादों कृष्ण ७ सं॰ १९४०
जि॰ ६ [संख्या १

जीवन्नरो भद्र शतानि पश्यत।

जिन्दगी शर्त है मनुष्य पर ईश्वर सानुकूल रह उसे जीता रक्खे तो कितनी अभ्युदय परंपरा दृष्टिगोचर होती रहती हैं आज हम सप्तम वर्ष में पग रखते हैं यह भी उस सर्वान्तर्यामी परमात्मा की कृपा लहरी का उद्गारही हम मानते हैं नहीं तो गत वर्षमें ही एक ऐसी आपत्ति आय उपस्थित हुई थी कि उ

नसे बच कर सही सलामत रहने की कोई आशा न रहगई थी; जैसी कुछ हिन्दीकी दशा और कदरदानी है उसे तो यह किसी तरह पर सम्भावित नहीं जान पड़ता कि वह इस चिरकाल तक बने रहें जैसी ना कामयाबी और उत्साह न बढ़ने का सब डौल हमारे आगे उपस्थित है ऐसा किसी दूसरे को होता तो कभी को वंबोल गाय बजाय जाता यह तो हमी ऐसे बेशरम हैं कि बहुत तरह की अपनी हानि सह और अणु मात्र भी इस उत्तम काम का प्रतिफल न पाय हृदय विदारित न हो ठेलेही जाते हैं; नसूर अक्सर होलेर शारीरिक धातुओं को क्षीण कर अन्तको प्राण घातक हो जाता है हमारे लिए उस लिखने का न सूरही जो इस दीन दशामे आजाने परभी पुराए नहीं पुररा किन्तु दिन दूना रात चौगुना बढ़ताही जाता है और आयुर्वर्द्धिनी सञ्जीविनी बूटीका काम दे रहा है दूसरे यह कि अपने सहयोगियों में किसी से कम नहीं हैं बल्कि कहीं चढ़ेबढ़े हुए हैं हर एक विषयों पर लिखने की कारीगरी झलकाय हसाय खिलाय रसिक पाठकों का मन अपनी मूठीमे कर लेना भी जानते हैं तोभी कृत कार्य हो प्रति फल कोन पहुंचे यह हमारे फूटे नसीब का दोष है सच है—आसारःसरसीसरांसि सरितो धारा धरैः पूरिता नासौ संप्रति पूर्यते जलनिधिः संक्षीयते प्रत्युत । किं वर्षतु कालक्रएव वडवा वन्हेः किमागः परं किं धाराधरपातकं किमथवा सत्य कृतघ्नोम्बुधिः—खैर जो हो इस सप्तम वर्ष का आरंभ तो करते ही हैं देखा चाहिए अन्त तक पहुंचते हैं या बीचही मे लड खड़ा रह जाते हैं क्योंकि सामान कुछ ऐसा ही देख पड़ता है दाम खर्च कर पढ़ने वाले अति विरल हैं जो हैं उनसे जिन्हे हमने निरा शठ समझा उनके नाम से अपनी ग्राहक श्रेणी मैली समझ हम आपही उन्हे तिलाञ्जुली दे छोड़ बै

ठे जोहैं उन्हें ३) साल ऐसा गढा ता है कि दो एक साल बाद अ नको कांच खोल हमारी ओर से मुंह मोड़ना ही पडता है मुफ्त के पढने वालों को हम किसी शर्त पर दियाही नहीं चाहते तब हमा रे चलने की कौन आशा है न ह मे बहुतेरे सहयोगियों समान किसि की झूठी सच्ची हां मे हां मि लाय अपना एक निराला ढंग ब दल ना पसन्द पड़ता है तो कि स गुन से हम पर कोई पसीज सक्ता है तब हमने भी यही ठान ठान लिया कि दीर्घ जीवन मे अनेक आधि व्याधि मान अपमा न सहने को भय उपस्थित रहतो है इस्से मान हानि और किसी त रह की दुर्गति बिना भोगे अल्प जीवन सर्वथा श्रेयान् है।

अब शिक्षितों की शोक
सभा का सरांश।

आजकल पश्चिमोत्तर की गव र्नमेंट ने उर्दू का पक्षपात कर हिन्दी के प्रतिकूल कर्तव्य प्रगट कि या है उस्से रुष्ट हो छोटे २ कान्य गणों ने एक सभा मे बहुत कुछ क हा सुना जिस्का सारांश यह है; पहले एक सत्कुल किशोर ने खड़े हो यह कहा—भाइयो आज उस दुराशय के प्रगट करने की नौव ला है जिस्के होने की स्वप्न मे भी सम्भावना न थी जिस्का होना ह म ऐसा समझते हैं कि चाहे सूर्य पूर्व दिशा को छोड़ पश्चिम मे उ दय हो पत्थरों की चटान पर क मल फूलै बडे२ अचल पहाड़ें पंछि यों की भांत आकाश मण्डल मे उ डते फिरैं और इसी प्रकार दूस री अचरज और असंभावित बा तें चाहे हुआ करैं पर हमारी ब्रि टिश गवर्नमेंट काम क्रोध लोभ मात्सर्य ईर्षा मर्ष भय आदि के कारण किसी अवस्था मे न्याय प थ को न छोड़ैगी; छैल छबीले बांके तिरछे सीधे सादे झूठे सच्चे सबी प्रकार की प्रजा पर एकसा वात्सल्य भाव रक्खे गी; हा करा ल काल तेरी प्रपञ्च कारीणी मा या ने इतनी शक्ति के न्याय मत

धारियों और दया का नियम निबाहने वालों की सत्कीर्ति कामिनी की सीमन्त केश पकड़ गली२ घसीटती और अप्रतिष्ठा की धूल लगाती फिरती है शाबाश शाबश बलिहारी प्रभुता सयो मघ की जिस्के सामने वेचारी वोतल बासिनी की क्या हकीकत है जिस्की हाला हल मयी नशा बड़े२ राज्याधिकारी किम्बा गवर्नरों के तनमे ऐसी व्यापती है कि न्याय और विवेक का सर्व नाश कर आंख और कान मे विरुद्ध गुण या इक शक्ति भर देती है; सत्य है का

मिट्टी मे मिला दिया इसी मदने हिन्दुस्तान मे मुसल्मानो के राज्य का अन्त दिखलाया इस राज्यमद का पूर्वरूप हठ धर्मी है ; जैसा प्रजा चाहती है कि हम अपने देशी नसक से सहज मे गुजारा करैं उस्पर यह ज़ोर कि नहीं जो नोन हमारी आज्ञा से आवे उसेही खाओ नही तो दंड पाओगे प्रजा पुकार२ कहती है कि पुलिस का वर्तमान प्रबन्ध और इस्के अधिकारियों को बिना अदले बदले एकही जगह या बज़ीब के लिये थूनी सा गाड़ देने से

दाम देकर हमारे बनाये हुए कागज़ पर लिखो तो वह सच्चा तुम सच्चे; इसी प्रकार प्रजा चिल्लाती है और दोहाई मचाती है कि दीन बन्धु कृपा सिन्धु, हमसबों को पर देशी भाषा और पर देशी अक्षरों के कारण क्लेश होता है देशी अक्षरों से हमारी विनती सुनी जाय इसपर यह हठ धर्म्मी कि नहीं २ तुम को एक की जगह दोदो परदेशी अक्षर और तीन२ परदेशी बोली और उस्के बड़े आकर ग्रन्थ पढ ने पड़ेंगे देशी अक्षरों के भरो से रहोगे तो कुरसी पर से ढकेल दिये जाओगे जैसा कि हमारी पश्चिमोत्तरीय गवर्नमेंट को यह खयाल पैदा हुआ है कि नागरी वा हिन्दी किसी काम की नहीं मुख्य कारण इस्का जो कुछ हो अनुमान से मालूम होता है कि किसी ईरानी या अरबी मुसल्लिम ने शागिर्दाना तौर पर समझा दिया होगा कि हिन्दी हरूफों की बेशुमार पोथियां मुसल्मान बादशाहों के हाथ से जलाई गई हैं इन्में अब तक चिरायंद की बू आती है जिन बादशाहों के कायम मुकाम आप हैं उनके कामों पर तो ज़रा नज़र दौड़ाइये इन लोगों ने इस कमबख्त मुल्क पर क्या २ नहीं किया अगर आप इनकी देशी अ[illegible]पा और ज़बान को नेस्त नाबूद नहीं करते तो हुकूमत का नतीजा क्या; सुनते हैं हमारे वर्तमान लफटिनेन्ट साहब फ़ारसी अरबी के बड़े कदर दां हैं इसी से हिन्दी के कतल आम का हुक्म सादिर फरमाया है नहीं तो श्रीमती महाराणी के राज्य में ऐसा दुःश्राव्य कटुरव काहे को सुनने में आता और २ प्रान्तों के गवर्नर भी तो हैं बंबई मन्दराज बंगाल कि जिनको कानून बनाने की सामर्थ्य और अधिकार प्राप्त है उन सब प्रेसिडेंसियों में स्थानीय भाषा प्रधान रक्खी गई है; इसी में कुशल है कि यहां की गवर्नमेन्ट को कानून बनाने का अधिकार नहीं मिला नही तो इसके बनाए कानून के पहले ऐक्ट का

सारांश यही होता कि हिन्दी रहित हिन्दुओं के कतल आम का ऐक्ट सुनदरह सन फलां फिर उस ऐक्ट की दफाओं मे हिन्दी वालों के लिये जो २ दंड और सजाएं न मुकर्रर रहतीं वही अ वरन या किसी दफा मे यह भी लिख दिया जाता कि हिन्दी के निर्मूलन की जो २ उपाय हों उस्के लिये साहब डइरेक्टर को इख्तियार है कि कायदे बनायें जिन्मे हिन्दी की बुराइयां खोज २ के भर दी जांय अगर डाइरेक्-टर साहब की ज़ात खास से यह काम पूरा न पड़े तो द-फ्तर के मोल्वीयों और इसलामी कमेटियों से मदद लें बाद मंजू री लोकल गवर्नमेंट के ये कायदे कानून के समान समझे जांयगे इत्यादि इस्मे कुछ सन्देह नहीं जिस किस्म के लफटिनेन्ट गवर्नर यहां आते हैं उनसे साधारण प्रजा को भलाई के बदले बुराई का प्रत्यक्ष भय है ये दूर दर्शित्व और न्याय अन्याय की पहचान किए बिना लकीर पीट कि-सी तरह ५ वर्ष पूरा कर देते हैं रहे सेक्रेटरी सो उन्हें क्या यथा राजा तथा प्रजा जैसा राग वैसा तान हम जानते थे विलायत के पादरी लोग इन सिविल सरवेंटों को खूब ईसाई धर्म सिखला के भेजते होंगे जिस्का असर जन्म पर्यन्त रहना चाहिए सो जहां हुकूमत का ओहदा मिला खुशा मदियों ने झुक २ के सलाम की इल्ला बिल्ला की बातें सुनी सब को रुखसत किया कहां के ईसा कहां के जगदीसा गिर्जेका कृत्य फिजूल समझ इतवार का दिन मुलाकातियों और प्रेमियों के अर्पण किया बस जब निज धर्म की यह दशा हुई तब दूसरी जा-ति के साथ न्याय का शुद्ध बर्ता व कैसा; ऐसे अवसर पर हम अ पनी महान् गवर्नमेन्ट से प्रार्थना करते हैं कि पश्चिमोत्तर और औध मे दो गवर्नर हुआ करें एक हिन्दुओं के लिए दूसरे मुस ल्मानो के लिऐ अगर उन की तनखाह का खयाल हो तो म्युनि सिपल फंड से दी जा सक्ती है इस

अवस्था मे दोनो को अपनी आधी न प्रजा के सुख दुख का खयाल रहेगा; समुद्र के समान गम्भीर चन्द्रमा के समान समदर्शी पुरुष इस ओहदे पर आतेही नही जै-सा तामसन साइब थे बहुधा वे ही होते हैं जो असिसटेंटी से बोर्ड की मेम्बरी तक काम करते २ बूरों की संगति से वे अनूठे और ऊंचे खयाल बाकी नहीं रहते जो इंगलिस्तान की पवित्र भूमि मे उनको प्राप्त होते हैं; अ सल तो यों है कि फारसी की तालीम और शौक से इनके ख याल बिलकुल बदल जाते हैं; अ-गर दो लफटिनेन्ट गवर्नरों का नियोग एकही स्थान मे अनुचित समझा जाय तो इस दशा मे दो सिक्रेटरियों का होना आवश्यक है जो अपने २ विभागा नुलब्ध हिन्दू और मुसल्मानो की भला ई मे तत्पर रहा करैं; हम जी खोल के कहते हैं श्रीमान् तामस न या चीफजसटिस श्रीयुत मार्ग न की प्रकृति धारण करने वाले इस समय ओहदेदारों मे कोई न हीदेख पड़ते जो हमारे न्याय का बोझ उठा सकें; हा कष्टम् हम और हमारी भाषा तथा अक्षर ऐसे अधम ठहरे; जो हिन्दी बड़े २ आर्यवंश शिरोमणि राजराजे श्वरों की भाषा है सो ऐसी नीच हो गई कि उस्के साथ रहने से अङ्गरेजी मे भी छूत लग जाय इसी लिये हम लोग अनाथों की भांत अपनी महान् गवर्नमेन्ट को पुकारते हैं कि हमारी पूर्वोक्त प्रा र्थना सुनी जाय नहीं तो हे जग दीश्वर तू इस पश्चिमोत्तर को प्रलय पयोधि मे डुबोदे या हम सब हिन्दी वालों को ऐसे दूरदेश मे पहुंचा दे जहां अनीति शास-न की गन्धि तक न आती हो क्या अच्छा होता कि हम लोग फरा सीस रूस प्रूस जर्मनी इंगलिस्तान या भारत वर्ष की किसी दूसरी प्रेसिडेंसी मे जन्म पाते तो इस अन्याय का दुःख तो न देखते।

इसपर दूसरे सत्कुल कुमार ने पूर्वोक्त वर्णन को पुष्ट किया औ

र कहा मित्र हम को आपके अक्षर प्रत्यक्षर से अनुकूलता है सिवा एक बात के कि इंगलिस्तान मे जन्म होता; वे सब इंगलेंडही के निवासी तो हैं जो हाल की इलबर्ट बिल पर इस तरह डाह का उद्गार कर रहे हैं और जिनके अन्याय ज्वालानल से हम सब जले जाते हैं; क्या ठीक था उस देश मे जन्म ले दैवात् ऐसे किसी ओहदे पर हम तुम नियत हो कर आते कि जिस पद पर ये सब लोग आते हैं तो कुछ अचरज न था कि हम तुम भी प्रभुता के नशे से बदमस्त हो आधीन प्रजा पर ऐसाही हृदय बिदारक अन्याय कर बैठते और उनकी प्रार्थना और बिनती को फटकार बतलाते तो कहिये प्रजा पीड़न और नृपाधिकार के अनुचित बर्ताव रूप दोष से दूषित हो ईश्वर की न्याय तुला के अनुसार न मालूम किस दंड और यातना के भागी होते; यहां तो थोड़े दिन का निवास है जो कुछ बुरी भली पीड़ा हो सह लो परमेश्वर के शुद्ध बिचार मे अन्याय करना पाप है निःशङ्क हो फरियाद करते रहो अगर चिढ़ के फांसी पर चढ़ा देंगे तौ भी एक प्रकार का उपकार होगा कि राज दण्डित को यम दंड नहीं होता और जो कदाचित तुह्मारी दोहाई किसी न्यायबीर के कान तक पहुंच गई तो फिर क्या यथोचित और पक्षपात शून्य न्याव किया जायगा जिस्मे हम सब प्रसन्न और प्रमुदित हो राजराजेश्वरी का जैजैकार मनावेंगे। इसके उपरान्त फिर कोई काररवाई न होकर सभा बिसर्जित की गई।

सम्वत् १९०१ और सम्वत् १९४० का तारतम्य।

हमारे देश में क्या बल्कि और ठौर भी कई कोटि मनुष्य ऐसे होंगे जिनको पैदा होते ही बल्कि मा के पेट से रहे तभी से यह बिश्वास हो गया है कि ईश्वर की सृष्टि प्रति दिन बिगड़ती जाती है

और इसके सिवा ह्रास और अवनति की उन्नति नहीं होती और हर तरह पर हर एक अच्छी बातों की दिन २ कमी ही होगी; हजार यत्न करो ऐसों का यह विश्वास किसी तरह पर दूर नहीं हो सकता कि जो बुराई जैसी अब है पहले भी थी और भलाई जो अब है पहले भी रही हो यह किसी तरह संभव नहीं है ऐसों के निकट पाप पुन्य को ब्रह्मा ने एक साथही नहीं सृजा बल्कि बड़े आदि पुरुष चिरकाल तक इस पृथ्वी पर वास कर बुड्ढे हो मरने पर हुए तब छोटे साहब पाप प्रगट हुए; पानी जैसा मीठा और सुस्वादु पहले होता था अब नहीं होता वायु जैसा राजा रामचन्द्र की प्रजाओं को मयस्सर था अब कहीं सपने में भी वैसा नहीं मिल सकता उस वायु में तो अपसराएं उड़ती थीं आज कल की मृगनयनी तो वैसा करें; औषधियों का वह गुण अब न रहा सूर्य की जोति वैसी न रही चन्द्रमा की किरनें जैसी पहले शीतल और सुहावनी थीं अब वैसी नहीं हैं, पृथिवी की वह उपजाऊ शक्ति नष्ट हो गई, अन्न की वैसी पोषण शक्ति अब बाकी नहीं है आगे घोड़ों को पर था अब तो पाज़ रूपि पैरों में रस्सी बांध लोग पीछे से ठेलते हैं तब भी नहीं चलते; इन्द्र की पूजा किया मेघराज आय उपस्थित हुए जब और जितना चाहा उतनाही पानी बरसा; स्त्रियों में सुन्दरता न रही पुरुषों में वह वीर्य और सामर्थ्य न रह गई वैसे विद्वान और गुणी अब न रहे न वैसे गुण गाहकही देखे जाते हैं; ऐसे२ हजारों दोष इस समय संसार में आय घुसे जो पहले कहीं नाम को न थे मगर इनके यह ख्याल सही हैं तो यह साफ ज़ाहिर है कि सतयुग त्रेता द्वापर से कलियुग का मुकाबिला नहीं हो सकता हमको अचरज यही है कि इस मत के लोग आज कल के लोगों को किसी बात की बड़ाई नहीं करते हम तो यहां तक राजी थे कि खैर उस समय के अच्छे लोगों में हमारी गिनती होना तो दुर्घटही था तो उस समय के बुरोंही में गिने लिये जाते और उस बुराई ही में हमें उनसे बढ़े हुए समझते पर इस बात के सुनतेही कि पुरानों से हम किसी बात में बढ़े हुए हैं इस मत के लोग मारे क्रोध के जल भुन खाक हो जायगी; जैसे चोर बटमार ठग डाकू पहले थे वैसे अब कहीं खोजने से भी नहीं मिलते सच है अब वैसे महात्मा कहां मिल सक्ते हैं जिनकी

अब से बड़े शहरों के बाहर एक मील भी चलना एका दुका के लिए सहज का न था और अपनी सजातीय ठगों की जमात में इकट्ठे हो इस बात के प्रगट करने में अपनी बड़ी प्रतिष्ठा समझते थे कि हमने इतने खून किए; वैसे महात्मा अब कहां हैं जो अपने अत्याचार के गिनाने में एक प्रकार का बड़प्पन समझते थे कि हम सैंकों जवानों को बह बेटियों को निकाल लाये कितनों के घर फूंक दिये शहर के धनी रईस सब हमसे डरते थे जिनसे जो चाहते थे करालेते थे; इस मत की वेश्याओं का भिखना है वैसे तमाशबीन अब कहां हैं; तो अब उनकी रोजीका द्वार ईश्वर ही की कृपा से खुला है; खैर व्यर्थ की बकवाद में क्या रक्खा है हम इस बात को मान लेते हैं कि इन दिनों के लोग हर तरह से छोटे कम हिम्मत और निकम्मे हैं पुरानी बातों को याद कर २ कहां तक रोएं हमतो महारानी विक्टोरिया के राज्यमें बसते हैं और दृढ़ विश्वास रखते हैं कि जो सुख और आराम हमें है बड़े २ राजाओं को न होगा अंगरेजों के संसर्ग से यूरोप की सभ्यता का सूर्य पश्चिम से यहां आकर जो चमका उसने इस देश की प्रजाको क्या से क्या कर डाला; सम्बत् १८०१ में हम लोग क्या थे और अब इस १९४० में क्या हैं किस २ सुख और आराम को गिनावें और सब जाने दीजिए एक डाक का इन्तिज़ाम है दिन में २।४बारलोगों को दूसरे शहर की चिट्ठियां मिलती हैं कासिदों का पेशा, अब कहीं बाकी न रहा परों में खत बांध कबूतरों के उड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है विरहिणी नायिका का यह कथन "कैसे भेजों पाती„ झूठ मालूम होता है दो पैसे का टिकट निश्चित दूतो है जो पत्र अवश्य ही पहुंचा देगा; इस शताब्दी के आरम्भ में जब तार के खम्भों का गड़ना शुरु हुआ था यहां की अर्द्ध शिक्षित प्रजा कैसे २ अनुमान करती थी उस समय के लाल बुझक्कड़ों की यह गप्प थी कि एक पुतली होगी जिसके गलेमें पत्र बांध उसी तार पर दौड़ा दी जायगी और वह घनघनाती हुई चट पहुंच जायगी ऐसे २ कितने ख़याल थे; ५ कोस भी जाना होतो उसी मचमचाती बहल या रथ पर सवार हो दिन भर की हैरानी के बाद शाम को पहुंचते थे अब दिन भर में २०० कोस के फासिले पर बिला तरद्दुद रेल पहुंचा

देती है; सरस्वती जो बाज़ २ वर्षों से घूंघट काढ़ जा छिपी थीं सो पश्चिम के आभूषण पहिन एक बारगी निकल पड़ीं अब अपने रसिकों की रुचि के अनुसार हर एक रूप रङ्ग और शृंगार मे प्राप्त हो सक्ती हैं छिपे से छिपे हर एक विषय के ग्रंथ अब अत्यन्त सुलभ हो गए पहले हाथ की लिखी तुलसी दास की रामायण सातो काण्ड जिस्के पास रहती थी उस्का मिजाज नहीं मिलता था और सम्भव बाल्मीकि और भारत तो किसी २ गुण ग्राहक राजाओं ही के पुस्तकालय मे रहा होगा; विद्यार्थी और तालबेइल्म बेचारों को कैसी २ मेहनत उठाना पड़ता था जो किताब और पोथियां जिस्के पास थीं लोग देते न थे जरूर था कि पहले किसी दयालु विद्यारसिक से पोथी मांग देशी कागदों की मड़ियाय और घोटार पहले उस ग्रंथ की प्रति उतार तब पढें इसी तरह फिजूल औकात जाया करते विद्यार्थी बेचारा ज्वान हो गया घरवालों के तकाज़े से तंग हो पढ़ने पढाने का विसर्जन कर दिया कुछ दिनों मे दो एक चेंगे मेंगे पैदा हो बाबा बाबा कहने लगे अब महाराज को पण्डिताइन के सामने खर्रे घोखते लाज लगती है सब छोड़ पेट के धन्धे मे फसे विद्या का ओर हो गया यही हाल मखतबों मे मौल्वीयों का था अब ईश्वर की कृपा से गुरु और मौल्वी गूलर के फूल हो गए स्कूलों की शिक्षा का मज़ा लोगों को भोगने लगा अंगरेज़ी शिक्षा से विद्याका असीम भण्डार खुल जाता है यह लोक परलोक दोनो सुधरता है यही कारण है कि अब अङ्गरेजी का प्रचार देश भाषा से भी अधिक है; कलकत्ते जाने वालों को लोग जैसा पहले समझते थे क्या अब भी वैसाही समझते हैं अब तो हर हिंदू समाज मे यही चवाव और चर्चा फैल रही है कि अगर यात्रा करने की सामर्थ्य हो तो इङ्गलैंड की यात्रा करे; क्षीर सागर जिस्मे नारायण लक्ष्मी के साथ शेष सैया पर शयन करते थे अब कहां बिलाय गया उदया चल अस्ताचल जिनमें से सूर्य निकलते और अस्त होते थे चान्दी का पर्वत कैलाश सोने का सुमेर सब उच्छिन्न हो गया "सौ योजन विस्तार समुद्र को कूदगए छिनमांही भरत जो" सब की कलई अङ्गरेजी शिक्षा से खुल गई; बङ्गाले का जादू कामरू का मन्त्र विन्ध्य पर्वत की घाटियों मे छिपे हुए डांकुओं का नाम भी अब कहीं बाकी न रह गया।

महाघोर बन दण्डकारण्य और पंचवटी जहां श्री रामचन्द्र जी ने १४ वर्ष तक बनवास किया था वहां अब बड़े २ नगर बसे हैं जिनमें सभ्य और सुशिक्षित जन बसते हैं; पहले द्वारिका आदि तीर्थों में जाने वाला घर द्वार को तिलाञ्जुली दे चलता था अब सातो पुरियों की यात्रा करने वाला बन्धु भाई कुटुम्ब परिवार से मिलने की निश्चित आशा रख सक्ता है; सचती यों है कि जैसा बुद्धि वैभव और हर तरह का सुख इस समय के लोगों को है वैसा देवराज को भी मयस्सर न रहा होगा पर अफसोस यही है कि इ-समें हमारी कोई करतूत नहीं हम वैसेही कोरे के कोरे बने हैं यह हानि अलबत्ता बड़ीभारी होती जाती है कि बुद्धिमान लोग अपनी बुद्धि केवल आराम हमें दे दाम हमसे खींचे लेते हैं।

अबक्या हम अकाल से बच सक्तेहैं।

आधा भादोंभी निकल गया जब यह सोंचते हैंकि सावनभादों दोनो बीत गए तब कलेजा धक से होजाताहै अब अन्न की महर्घता टाले नहीं टलती पहले तो यह सहारा था कि ईश्वर सुनेगा वर्षा होगीसो ईश्वरने न सुना वह कब किसी की सुनता है; हम लोगों की समझ तो इतनी नहीं है न-कि उस्की बातों को समझ सकै; काल पडे अन्न का कहीं नाम न रह जाय मरी पड़ै लाखों कार्स हार हो जाय सब उस्की कृपा है उस्के चोचले हैं खिलवाड़ हैं वा हरे ईश्वर और अन्य ईश्वर के पुजीरियो तुम्हे प्रणाम है; खैर अब तो काले मेघो ने धोखा दिया ही अब हमारे तुम्हारे आंख लाल पीली करने से क्या हो सक्ता है" वीतीताहिविसारदे आगे कीसुधलि,, पेटन मानेगा पशुपक्षी सब पीड़ित होंगे इस्से ईश्वर को छोड़ अब हम उस्से प्रार्थना करते हैं जो हमारी प्रार्थना सुन सक्ता है हम अपनी सरकार से कहते हैं जिस्के मुख्य अग्रणी और मुखिया परम दयालु सज्जन सिरताज सहा मान्य महात्मा लार्ड रिपन हैं; जहां कहीं नाज की कमी होगी वहां गल्ले को खींच

होगी इस्का इन्तिज़ाम सरकार की ओर से अभी से होना चाहिए पहले यह की भेजने का सब सुबीता रहै गाड़ियां तैयार रहैं; लोगों को भेजने मे दिक्कत न सहना पड़े मन्दराज के अकाल समान न रहै नहो एक तो गल्ला यहां ही से मंहगा गया दूसरे खर्चा बहुत बैठा तों काहे को पूरा पड़ैगा इस लिए गल्ले का महसूल कम कर दिया जाय; तबतो लार्ड लिटन का ज़माना था मन्दराज के दुष्काल मे जो २ अन्धेर हुई सब लिटन की राज शोभा थी; यहां के निर्दयी महाजनों को बन पड़ीलोग ५६ का ६ सेर बेच मालामाल हो गये परन्तु श्री मान् रिपन राज्य को यह बिल्कुल नही सोहता कि इस कदर अंधाधुन्ध और बे बन्दोबस्ती रहै रुपये वाले गल्ले के रोज़गारी जो कुराटोए ताक लगाए बैठे हैं कि हम दुष्काल की बुभुक्षित प्रजा की गरदन हलाल करैं उनकी लिए खूबताकीद रहै कि महंगा किसी तरह पर नाज बेचनें न पावें आशा है श्रीमान् इस्की ओर जो से ध्यान देंगे।

नमकहराम।

नातेदारों मे दामाद सब तरह पर खातिर करते रहो देओ लेओ मानो पूजो सदा मन मुंह लिये रहो फिर भी ज़रा किसी बात में चूके चट बिगड़ उठे जितना पहले का सुलूक सब बात की बात में खाक में मिल जायगा कन्या राशिस्थितोनित्यं यामातादशमो ग्रहः॥ ब्राह्मणों मे पुरोहित इनके उजड्डपन असभ्यता और निरक्षरता पर कुछ ध्यान न दे इनका टैक्स बराबर चुकता करते रहो इसी मे भलाई है ज़रा फर्क पड़ा कि जनेऊ तोड़ जान देने पर तइं हुए कोई मरै तब इन्हे दो जिए तब इन्हे दो पैदा हो तब इन्हें दो इन्हे न दो नास्तिक नरक के कीड़े घोर पातकी समझे जाओगे; यजमान सदा इन्हे सन्मानता देता रहा किसी समय

हाथ न चला भरपूर इनकी हत्ति का हक्क न दे सका उसके पहिले उपकार को कभी न याद रक्खेंगे थोड़े ही के लिए उस्से बिगड़ कर सब तरह पर उस बेचारी की फजीहत का गुड्डा बांधेंगे; नीच अंत्यज जाति में पासी नमक हराम होते हैं जिसके पड़ोस में रहैं उसी के घर सेंध फोड़ैं; परिन्दों में तोता; चौपायों में बिलार; स्वजाति पक्षपातियों में इलबर्ट बिल के बिरोधी; हिन्दुस्तानी रियासतों में पुराने दीवान जिन में इन्तिज़ाम का कोई शऊर नहीं वला से कई पुश्त के पुराने तो हैं। इत्यादि।

पातञ्जल दर्शन।

इस दर्शन के प्रणेता भगवान पतञ्जलि हैं इस्में योग का विषय विशेष रूप से प्रतिपादित किया गया है इस्से इसको योग शास्त्र भी कहते हैं और पदार्थ के निर्णय में इसका और सांख्य शास्त्र का ऐक मत्य है इस कारण इसका दूसरा नाम सांख्य प्रवचन भी है संख्याचार्य महर्षि कपिल ने जिस प्रकार २५ तत्व की संख्या माना है महर्षि पतञ्जलि को भी वही अभिमत है किन्तु कपिल के मत से जीवात्मा व्यतिरिक्त सर्व नियन्ता सर्वव्यापी सर्व शक्तिमान् लोकातीत परमेश्वर का होना सिद्ध नहीं होता भगवान् पतञ्जलि युक्ति प्रदर्शन पूर्वक ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करते हैं इसलिये कपिल दर्शन को निरीश्वर सांख्य और पतञ्जलि दर्शन को सेश्वर सांख्य कहते हैं; कपिल के सांख्य में गिनाये हुए उन २५ तत्वों के अतिरिक्त छब्बीसवां तत्व ईश्वर है जो क्लेश कर्म बिपाक से रहित जगन्निमार्थ स्वेच्छानुरूप शरीर धारण पूर्वक संसारानल से सन्तप्य मान प्राणीमात्र का अनुग्राहक असीम कृपा सागर एवं अन्तर्यामी रूपसे सर्वत्र प्रकाशमान रहता है; चित्तवृत्ति का निरोध अर्थात् विषय वासना से प्रवृत्त चित्तको उधर से हटाय ध्येय वस्तु परमेश्वर में उसे लगाना योग है; क्षिप्त विक्षिप्त मूढ एकाग्र और निरुद्ध ये ५ प्रकार की चित्त की अवस्था हैं; रजोगुण के उद्रेक से जिस अवस्था में चित्त अस्थिर रह कर सुख दुःखादि जनक विषय में प्रवृत्त हो उस अवस्था को क्षिप्तावस्था कहते हैं; दैत्य दानव गण के चित्त

की अवस्था प्रायः इसी प्रकार की रहती है; जिस अवस्था मे तमोगुण के उद्रेक से कर्तव्य अकर्तव्य विमूढ़ हो क्रोध मोह मद मात्सर्य आदि के वश मे हो चित्त सर्वदा विरुद्ध कार्य मे प्रवृत्त हो उसे मूढ़ावस्था कहते हैं इस प्रकार का चित्त यक्ष राक्षस किम्वा पिशाच का स्वभावही से होता है; सत्वगुण के उद्रेक से चित्त दुःख रूप संसारिक विषयों से निवृत्त हो सदा सुख साधन मे प्रवृत्त रहे उसे विक्षिप्तावस्था कहते हैं देवताओं के चित्त की अवस्था प्रायः इसी प्रकार की होती है यह तीनो अवस्था योग साधन के प्रतिकूल हैं सत्व गुण से विशुद्ध और उत्कृष्ट हो चित्त की एकाग्रता और निरुद्ध अवस्था होती है यह दोनो अवस्था योग साधन के अनुकूल है और बिना इनके योग किसी प्रकार नहीं सिद्ध होता; योग दो प्रकार के हैं ज्ञान योग और क्रिया योग ज्ञान योग के अधिकारी सब कोई नहीं हैं जिसका चित्त प्रसन्न और निर्मल हो गया है वही ज्ञान योग का अधिकारी हो सकता है इससे चित्त की शुद्धि के लिये पहले क्रिया योग करना उचित है तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान के भेद से क्रिया योग ३ प्रकार का है; विधि प्रदर्शित मार्ग का अवलम्बन कर कृच्छ चान्द्रायण आदि का अनुष्ठान कर शरीर का संशोधन तप है; प्रणव और गायत्री प्रभृति मन्त्र का जप और वेद आदि सत् शास्त्र का अध्यपन अध्यायन स्वाध्याय है; ज्ञात वा अज्ञात कृत शुभ अशुभ कर्म का फल समूह ईश्वर के अर्पण कर देने को ईश्वर प्रणिधान कहते हैं; इन पूर्वोक्त क्रिया योग के अनुष्ठान से सम्पूर्ण क्लेश आपाततः क्षीण हो जाते हैं; क्लेश ५ प्रकार के हैं अविद्या अस्मिता राग द्वेष और अभिनिवेश; अज्ञान स्वरूप मोह को अविद्या कहते हैं यह अविद्याही सम्पूर्ण क्लेश का मूल कारण है अतएव इस अविद्या के निवृत्त होने से सम्पूर्ण क्लेश मात्र की जड़ कटजाती है; आत्मा और अन्तः करण दोनो के अभेद ज्ञान को अस्मिता कहते हैं इसी अस्मिता के वश हो निर्लेप आत्मा भी "अहं कर्ता" "अहम्भोक्ता" इत्यादि कर्तृत्वाभिमान से लिप्त होजाता है; सुखकर वस्तु की अभिलाषा को राग कहते हैं सम्पूर्ण संसार की कर्म मे प्रवृत्ति इसी राग के वश से होती है "सुखाय कर्माणि करोति जन्तुः" कर्म जितने किये जाते हैं सब सुखही की इच्छा से चाहो परिणाम उस

करने का दुःखदायी हो जाय; दुःख जनक वस्तु से जो द्रोह उसे द्वेष कहते हैं इन्हीं इन रूप दोष के कारण लोभ कर शरीरा का स्वरूप योग साधन आदि कर्म में मनुष्य की प्रवृत्ति नहीं होती मरने से जो दुःख होता है उस वेदना से डर को अभिनिवेश कहते हैं यह डर प्राणी मात्र के साथ लगी है; योग के ८ अङ्ग हैं इन्हीं से यह अष्टाङ्ग योग कहाता है तद्यथा यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान, समाधि; यम ५ प्रकार के हैं अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ; सर्वथा और सर्वदा प्राणीमात्र का द्रोह न करना अहिंसा है इस अहिंसा को जिसने सिद्ध कर लिया उसके निकट स्वभावत: परस्पर विरोधी अहि नकुल आदि जन्तु समूह वैर भाव छोड़ सुहृद के समान व्यवहार करते हैं इस कारण जिस वन में ऐसा सिद्ध योगी एक भी वास करता है वहां नित्य वैरानुबद्ध अहि नकुल गो व्याघ्र गज सिंह प्रभृति पशु समूह सहज सुहृद के समान एकत्र विचरण करते हैं; मन तथा वाणी से कभी झूठ का लेश भी न रखना सत्य है जिसे सत्य सिद्ध है वह जो कहे सो हो जाय; मन वच कर्म से कभी दूसरे की वस्तु अपहरण की इच्छा न करना अस्तेय है जिसे अस्तेय सिद्ध हो जाय उसे कोई वस्तु अप्राप्य नहीं रहती; पराई स्त्री का ध्यान उसका संग उसकी ओर कुदृष्टि उसकी चर्चा आदि आठो प्रकार के मैथुन का त्याग ब्रह्मचर्य है ब्रह्मचर्य सिद्ध होने से अमोघवीर्य और असाधारण सामर्थ्य विशिष्ट पुरुष हो जाता है, भोग साधन विषयों का स्वीकार न करना अपरिग्रह है इसके सिद्ध होने से पूर्व जन्म की सब बात स्मरण हो जाती है; शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान ये ५ नियम हैं शौच दो प्रकार का है बाह्य अर्थात् मिट्टी और जल से शरीर का बाहरी मल धो डालना ; ईर्षा द्रोह कपट कुटिलता पर द्रव्या पहरण आदि बुरी वासना मन से निकाल डालना आभ्यन्तर शौच है; बाह्य शौच से शरीर नीरोग और स्वस्थ रहता है और आभ्यान्तर शौच द्वारा अन्त: करण निर्मल हो मुक्ति का अधिकारी होता है; अपने प्रयोजन से अधिक लाभ की इच्छा का न होना सन्तोष है सन्तोष से परम सुख की प्राप्ति होती है जैसा कहा भी है "यच्चकामसुखंलोके यच्चदिव्यंमहत्सुखम् । तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हत:षोडशींकलाम्" भूख प्यास शीता

तप आदि सुख दुःख का सहन शीतव्रत कृच्छ चान्द्रायण आदि व्रत का अनुष्ठान तप है इसमें अणिमा आदि ८ सिद्धि की प्राप्ति होती है; मोक्ष देनेवाले शास्त्र का अध्ययन अथवा गायत्री और प्रणव आदि का जप स्वाध्याय है; ईश्वर प्रणिधान पह ले कह आए; शौच के द्वारा चित्त की शुद्धि से सौमनस्य अर्थात् मन की प्रसन्नता होती है मन प्रसन्न होने से एकाग्रता प्राप्त होती है एकाग्रता से इन्द्री का जय जो योगी के लिये सर्वथा कर्तव्य है क्यों कि जैसा जलदी इन्द्रियों के चाञ्चल्य से योगी योग मार्ग से भ्रष्ट हो जाता है वैसा दूसरी बात से नहीं; शास्त्रानुसार हाथ पांव आदि संस्थापन पूर्वक बैठने को आसन कहते हैं; प्राण वायु की स्वाभाविक गति के विच्छेद को प्राणायाम कहते हैं जो ३ प्रकार के हैं-रेचक पूरक और कुम्भक; नासिका के छिद्र द्वारा भीतर के प्राणवायु को बाहर निकालना रेचक है बाहर से भीतर को वायु ले जाना पूरक है और उस वायु को भीतर ही रोक रखना कुम्भक है जैसा पूर्ण कुम्भ स्थ जल निश्चल स्थित रहता है उसी प्रकार कुम्भक प्राणायाम से प्राण वायु चाञ्चल्य छोड़ निश्चल वृत्ति धारण करता है प्राणायाम के द्वारा अन्तःकरण का सब मल दूर हो धारणा की शक्ति होती है; जैसा मधु मक्खी रानी मक्खी का सदा अनुसरण करती उसी तरह इन्द्रिय गण चित्त का अनुसरण करते हैं इन्द्रियों को विषय से रोकने को प्रत्याहार कहते हैं नाड़ी चक्र वा नासिका प्रदेश में विषयान्तर से विनिवृत्त चित्त को प्राण वायु द्वारा स्थापन करना धारणा है; अन्यान्य विषय की चिन्ता छोड़ ध्येय वस्तु के चिन्ता प्रवाह को ध्यान कहते हैं और इसी ध्यान की परिपाकावस्था का नाम समाधि है; ध्यान धारणा और समाधि इन तीनों को संयम भी कहते हैं ये तीनों योग के और अङ्गों की अपेक्षा उत्कृष्ट हैं क्योंकि ये तीनों योग सिद्धि के साक्षात् कारण हैं इनके सिद्ध हो जाने से कोई बात अज्ञात नहीं रह जाती भूत भविष्य वर्तमान तीनों काल का ज्ञान उसे प्रत्यक्ष हो जाता है अपनी इच्छा के अनुसार जब और जहां चाहे तब और तहां प्रगट और अन्तर्ध्यान हो सक्ता है कहां तक कहें जो योगी योगाभ्यास करते २ सिद्ध हो गये हैं उन्हें संसार में कोई बात असाध्य नहीं है जिसे वे न कर सकें जितनी प्रकार की सिद्धियां लोक में प्रसिद्ध हैं वह सब

योगी को आप से आप आकर प्राप्त होती हैं सिद्धियां अनेक प्रकार की हैं उनमें ८ सब से मुख्य हैं अणिमा अर्थात् अत्यन्त सूक्ष्म शरीर धारण करने की शक्ति इस्के द्वारा शिला के बीच भी प्रवेश करने की शक्ति हो जाती है; लघिमा अर्थात् अत्यन्त हलका हो जाना इस्के द्वारा योगी इतना हलका हो सक्ता है कि सूर्य की किरणों का अवलम्बन कर सूर्य मण्डल तक जा सक्ता है; महिमा अर्थात अत्यन्त स्थूल हो जाना, प्राप्ति अर्थात् जहां चाहे वहां चला जाय; प्राकाम्य — जो चाहे सो कर डाले इच्छा का अनभिघात; वशित्व सब को अपने वश करने की सामर्थ्य; ईशत्व अर्थात् सब का नियामक हो जाना; मनके स्थिर करने की उपाय योग से बढ़कर दूसरी कोई नहीं है योग के द्वारा जब मन ही स्थिर हो गया तब मनुष्य को फिर करना क्या रह गया—चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् । तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् — यह योग विद्या केवल हिन्दुस्तान ही में प्रगट हुई और अपनी उत्कृष्ट सीमा को पहुंची बौद्धों के समय इस्का अत्यन्त प्रचार था तब से घटते २ इन दिनों लोगों को अब फिर इस्की बहुत कुछ खोज है। इस्के उपरान्त सब दर्शनों का शिरोमणि वेदान्त या शाङ्कर दर्शन है जो अन्यत्र बहुत विस्तार पूर्वक लिखा है—माधवाचार्यकृत सर्व दर्शन का सारांश यहां समाप्त हुआ। विद्वज्जनमनस्तुष्टये भूयात्।

मेवाड़ का इतिहास।

मेवाड़ के महाराज राणा कहलाते हैं और सूर्यवंशी क्षत्रियों के कई एक घरानों में सब से बड़ा घराना इन्हीं मेवाड़ के महाराजाओं का है; सूर्यवंशियों की दूसरी पैतृकाख्या रघुवंशी भी है रघु जो इस वंश की भिन्न २ शाखा प्रशाखा के पताका हो गए हैं श्रीरामचन्द्र के भी पूर्वज थे यद्यपि कुलीन क्षत्रियों में अपने २ घराने की प्रतिष्ठा बढ़ाने को बहुतेरे सूर्यवंशी की उपाधि के लिए आपस में लड़ते झगड़ते हैं पर मेवाड़ के महाराणाओं के विषय में सबका ऐकमत्य है इनको असिल सूर्यवंशी और श्री रामचन्द्र के परम्परा प्राप्त उत्तराधिकारी मान

ने मे किसी को कोई उजर नहीं होता ; अबतो समय के प्रभावसे अन्त्यज शूद्रों से लेकर ब्राह्मण तक ठौर२ राज्य पद के अधिकारी बन गये हैं पर क्षत्रियों का ३६ कुल है जिनमे बहुत से अबकाल के कलेवा बन गए और उनका शुद्ध वंश न रहने से दूसरे २ उनकी जगह स्थापित करदिये गये हैं पर राणा को उन छत्तीसों का अग्रगण्य और प्रथम मानने मे तथा इनके शुद्ध वंश के निसबत किसी को कुछ शङ्का नहीं होती।

एक जैसलमीर के घराने के सिवा केवल मेवाड़हीका राजवंश है जो ८सौ वर्षतक विदेशी मुसल्मानो के अनेक अत्याचार झेल झाल भी अपनी उस भूमि से न टसके जिस्पर वे आरंभ मे जोत बार अपना स्वत्व जमा लिया था; राणा अपने अधिकार मे उतने ही देश के लग भग अबभी रखते हैं जितना वे तब रखतेथे जब की महमूद गजनवी ने सिन्धु नदी को पार कर हिन्दुस्तान का आक्रमण किया था; बही और२ घराने जो अब राजपुताने के उत्तर पश्चिम में राज्य करते हैं उन पुराने घरानों के बचे बचाए हैं या किसी छोटे घराने के थे संयोग से अब एक बड़े राज्य के अधिकारी बन बैठे हैं यही कारण है कि राणाओं की प्रतिष्टा और घरानो से कहीं चढ़ बढ़ कर है और क्षत्री मात्र के महामान्य हो रहे हैं क्षत्रियों ही पर क्या ब्राह्मण आदि जो भूमिपति और राजा की उपाधि धारी हैं जैसा पेशवा का घराना था वे भी राणा के सामने सिर झुका लेते थे ; देहली के मोगल बादशाहों का तो सदैव इन पर दांत लगा था जैसा हम आगे लिखेंगे वे भी जैसी कदर इनकी करते थे किसी रजवाड़े की ऐसी नहीं की ; अकबर और जहांगीर ने भल२ चाहा कि राणा हमारे बश में आ जांय और हमे अपनी बेटी और राजाओं के समान दें पर राणा कभी न पसीजे और मोग

लियों को हेच समझते रहे । राज्य यद्यपि इनका कोई एक पुराने राजाओं से इतना बड़ा नहीं है श्री रामचन्द्र के स्वर्गारोहण के उपरान्त जबकि अयोध्या और इसका सम्पूर्ण जनपद उजाड़ और शून्य होगया तो रामचन्द्र के ज्येष्ट पुत्र लव ने लेव पुर "लाहोर" बसाया और राजवंश की वह शाखा जिस में से मेवाड़ के महाराणा हैं वहां ही राज्य करते थे जबकि कनकसेन किसी कारण से लाहोर छोड़ द्वारिका में जा बसे जो उस समय सौराष्ट्र देश की राजधानी थी; कनकसेन ने वहां प्रमर वंशके एक राजा को जीत और बहुत सा देश उसका अपने अधिकार में लाय विक्रमाब्द की दूसरी शताब्दी में वीरनगर बसाया यद्यपि कनक सेन के वंशधरों ने सौराष्ट्र में चिर काल तक रहने के कारण विजयपुर विदर्भ आदि कई एक नगर बसाये पर सब से प्रसिद्ध और राजधानी वल्लभीपुर हुआ जो अब काठिया वार में भावनगर से १० मील पर उजाड़ ढूहा मात्र रहगया है ; वल्लभीपुर के आखिरी राजा शिलादित्य थे इन पर पश्चिम से हिन्दू कुश पर्वत के उस पार की वन्य असभ्य जातिने कई बार चढ़ाई की पर सदैव हारते रहे कथानक है कि वल्लभी पुर में सूर्यकुण्ड नाम का एक कुण्ड था शिला दित्य को जब शत्रु लोग आय दबा लेते थे तब यह सूर्य की स्तुती करते तो उस कुण्ड से सात मुंह का एक घोड़ा निकलता था शिलादित्य उसे अपने रथ में जोत शत्रुओं का सामना करते थे और सदैव विजयी होतेथे एक बार शिलादित्य के किसी दुष्ट मंत्री ने यह सब भेद जाकर शत्रुओं को बता दिया उन्होंने आय इस कुण्ड को गौके रुधिर से अपवित्र कर डाला तब उस साप्तश्व घोड़ा का निकलना बन्दहो गया और शिलादित्य पराजित हो मारे गए ।

वल्लभी पुर को इन असभ्यों ने जला कर भस्मसात् कर डाला

और शिला दित्य की सब रानियां अपने बाल बच्चों समेत सती हो गईं केवल एक पुष्पावती शिला दित्य की रानियों में वल्भी पुर के दहन से बच रही थी; यह चन्द्रावती नगरी के प्रमर वंशी राजा की कन्या थी और अपने बापही के घरथी जब बल्लभी पुर भस्मसात् किया गया था और अम्बा भवानी जो उस राज्य का एक उस समय का प्रसिद्ध देवस्थान था पुत्रकी कामना से वहां यात्रा करने गई थी लौटती वार रास्ते मे अपने पति के मरने का हाल सुन शत्रुओं की डरसे पर्वत की एक गुफा मे जा छिपी और कई महीनो तक गर्भवती रह एक पुत्र जनी जिसे उसने वीर नगर की एक ब्राह्मणी कमलावती सौंप आप पति के नाम से सती हो गई कमलावती अम्बा भवानी के प्रधान पण्डे की स्त्री थी जिसने इस लड़के को बड़े यत्न से पाला पोषा और गुहा में पैदा होने के कारण इसका नाम गोहा रक्खा।

क्रमशः।

खूब मिल बजे।

१७ सितम्बर के पायोनियर में लक्ष्मीशङ्कर मिश्र की लिखी पांच सात सतरें छपी हैं जिनमे उक्त महाशय ने भेड़राज के मुह का करिखा साफ करने की बड़ी कोशिश की है और पश्चिमोत्तर के सुशीक्षितों की ओर से राजा को कौंसिल से खारिज करने के लिए लार्ड रिपन साहब कों जो "मेमोरियल" अर्जी दी गई है उसे बड़े तंज के साथ बेहूदा और अनुचित ठहराया है; ए लिखते हैं "सुशिक्षित हिन्दुस्तानियों की यह बड़ी बेजा बात है जो आज़ादगी के साथ अपनी सच्ची और खरी राय Honest opinion देने के लिए राजा को कौंसिल

से च्युत करने की भारी सज़ा देने के यत्न में लग रहे हैं ; यह तअज्जुब है कि क्यों सुशिक्षित लोग यह आशा करते हैं कि राजा हमारी हां मे हां मिलाया करें राजा को क्या गौं जो किसी खास जमात या फ़िर्के का पक्ष कर अपनी आज़ाद राय देने से बाज रहें " क्या कहना जमाने में दोई तो सच्चे और खरे रह गए हैं एक इस आशय के लेखक दूसरे राजा साहब राजा जिस दिन अपनी हृदय की सङ्कीर्णता छोड़ उदार सच्चे और खरे देश हितैषी बन जांयगे उस दिन भूडोल आने लगेगा ; राजा के विरुद्ध अर्जी भेजने में सुशिक्षितों का हम समझते हैं शायद यह मतलब नहीं है कि राजा या कोई और दूसरा कौंसिल मे अपनी honest सच्ची और खरी राय न दे बल्कि यह अर्जी राजा के कुल जीवन चरित्र का खुलासा summary है ; राजा ने अपने जीवन भर में सिवा देश की हानि के आज तक कोई ऐसा काम नहीं किया जिसे देख इन की ओर से प्रजा की भलाई की किसी को कुछ आशा बंधे उन्हीं सब बातों पर खयाल कर यह अर्जी दी गई है ; फिर यह उनकी राय सच्ची क्योंकर हुई क्योंकि यह राय तो उन्हों ने केवल बङ्गालियों के द्रोह से चिढ़ कर दी थी हाल में काशी वाली व्यवस्था राजा के सच्चे और खरे बनने का एक बड़ा भारी नमूना है ; हम शिक्षा विभाग के एक प्रधान अधिकारी मिश्र महाशय से पूछते हैं कि यदि यह व्यवस्था सच्ची और सभा भी सच्चे हैं तो काशी के पण्डितों को घूस देने की क्या जरूरत थी ऐसे की राय को तो लच्मीशङ्कर ही महाशय आने स्ओपीनियन कह सकते हैं ; यह राजा की सचावट ही नमूना तो है कि इस आशय के लेखक सदृश बनारस कालेज के कितने सुपाठित छात्रों को चे-

ता मूड़ इन्हों ने बिगाड़ा काशी के पण्डितों को लालच दे इन्हों ने सत्यानास में मिलाया, बूढ़ महाराज रामनगर को बुढ़ौती में कलङ्क का टीका इन्हों ने लगाया; धन्य ऐसी सचावट और खरापन।

ठुमरी लखनऊ की।

बिल पाश करो प्रभु लाट रिपन विनती धर कान सुनो हमारी। टुक देर करो जिन याहि मांहि तुम्हारो जस हो नगरी नगरी॥ नहि भेद रहै काले गोरे को सब एक समान प्रजा तुम्हारी। इङ्गलिशमेन आदि हठ धर्मी बातें लिखत फिसाद भरी॥ भेड़ राज मति मूढ़ बूढ़ भए याही तें सुध बुध बिसरी। इनकी सीख नीको नहि प्रभुवर जानत हौ सब रीस भरी॥ बेग हरहु भारत आरत को द्वेष कलेश बिपत सगरी। जय जय धन्य धन्य ध्वनि होवै कीरत की रह मूल हरी॥ १॥

छन्द दण्डक।

बेर प्रभु मति कीजे शीघ्र याहि पास कीजे भारत सों यस लीजे दीजे सुख धाय कै। ऐङ्ग्लो इण्डियन सारे गारी देत देत हारे हृदय बिदार डारे गारी मुख लाय कै॥ पायोनियर इङ्गलिशमेन चाहत जो हमरो लेन पावैं दुष्ट सुख चैन हमें बिलखाय कै। पूर्ण होय हमरो काम प्रभु तुम्हारो होवै नाम गावै सदा शिवराम जय जय पुकार कै॥ २॥

पुस्तकप्राप्ति।

तासकौतुकपचीसी।

॥ दूसराभाग॥

बाबू रामकृष्ण वर्मा कृत इस मे ताश के बहुत से अनूठे इन्द्रजाल हैं जिसे साधारण चातुरी निस्सन्देह बढ़ सकती है इसका अभ्यास रखने वाला तिड़ीबाज़ आदि ठग बदमाशों से कभी नहीं ठगा जा सकता मूल्य ।~)
बनारस चन्द्रप्रभाकर प्रेस में छपी है।

लप्ता सम्बरण नाटक

लाला श्री निवासदास प्रणीत यह छोटा सा नाटक पहले हरिश्चन्द्र मेगज़ीन मे छप चुका है लाला श्री निवासदास जी को विशेष धन्यवाद इस बात का है कि उक्त महाशय ने इसे तब रचा था जब नाटक लिखने की रीति किसी को मालूम न थी वरन बिरले जन इसके रसिक और नाटक के नाम गुण से जानकार थे यह शृङ्गार रस प्रधान नाटक है और भाषा इसकी अत्यन्त सरस और शुद्ध हिन्दी है। दाम।)

सज्जाद सुम्बुल।

पण्डित केशवराम भट्ट रचित ६ अङ्क का एक नाटक भाषा इसकी उरदू खड़ी बोली है और इतनी बात इसमे दिखाई गई है मुल्क के खैरखाह का जोश, हाकिमों का जुल्म, बङ्गालियों की खुशामद और कादर पन, विरहिणी कुल बधू का बिलाप, बहादुरी की लड़ाई, दुष्टों की दुष्टता इत्यादि इस नाटक से न तो हिन्दी को कोई बड़ा लाभ है न हिन्दूपन को कहीं से पुष्टता पहुंचती है बांकीपुर विहारबन्धु प्रेश मे छपा है॥

इश्तिहार।

प्रगट हो कि हम लोगों ने यहां पर एक कुतुब खाना मुकर्रर किया है जिसमे हर तरह की पुस्तक और किताबें उरदू, हिन्दी, फ़ारसी तथा संस्कृत और स्कूल की किताबें जो ज़िलह तथा हलकाबन्दी मदर्सों का कोर्स है और कानून की किताबें हाईकोर्ट की नज़ीरें आदि सब यहां मिल सकी हैं इस कुतब खाने के मुताल्लिक एक प्रेस भी है जिसमे उत्तम से उत्तम टाइप अङ्गरेजी उरदू हिन्दी के मौजूद हैं जिसे ज़रूरत हो इस पते से लिखै।

मेनेजर ज्योतिप्रसाद ऐण्ड कम्पनी
मीरगंज इलाहाबाद।

मूल्य नियम।

अग्रिम २।ﺀ) पश्चात् ४।)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Oct. 1883. Vol. VII.] [No. 2.
प्रयाग क्वार कृष्ण ७ सं० १९४० जि० ६ [संख्या २

मन

हर एक देश मे बड़े २ बुद्धिमानो ने इसपर बहुत कुछ बिचार और मनन किया है पर अब तक कुछ ठीक पता न लगा कि मन क्या है और इसका रूप रंग कैसा है यह भी निश्चित है कि प्राण अर्थात जीव से यह भिन्न है और इसी से प्राणी मात्र अपने २ यथोचित काम को कर सक्ते हैं; पशु पक्षी और मनुष्यों के मन एक से हैं या भिन्न यह भी नहीं कह सक्ते पर इसमे कोई सन्देह नहीं कि जीव मात्र सब को मन है; इस मन से

सांप का मन मत समझो बरन वह शक्ति जिसके गुण और चरित्र ईश्वर के तुल्य अनन्त हैं जिससे दसों इन्द्रियां अपने २ काम में लगी रहती हैं; मन न होतो कुछ नहीं हो सक्ता मनमें आवे तो जो कुछ असाध्य है सब साध्य हो सक्ता है जिसने मन हर लिया उसने उस प्राणी को अपने वश कर लिया; "मसल है-हाथ जरा सुहजरा क्या ऐसे खाये । मन से मन न मिला क्या ऐसे आये" मन नहीं मिलाता तो संसार के कोई काम नहीं चल सक्ते चतुर सयाने मन बुझले तब किसी से कुछ बात कहते सुनते हैं; कितनों में यह हुनर होता है कि समय से ऐसी बात बोलेंगे कि मन तुम्हारा अपनी मूठी में कर लेंगे मनसे मन को राहत होती है मन मुकुर एक ऐसा आईना है जिसमें आदमी के भले बुरे कामों का सच्चा प्रति बिम्ब पड़ता है—जितनी चीज लगने की हैं उनमें मन का लगना सबसे बढ़कर है मन संसारिक विषयों से अपना लगाव छोड़ ईश्वर के पदारविन्द में लग जाय तो क्या कहना एतवाज्ञ अस्याफल्यम् मन खट्टा हो गया मन नहीं चाहता । मन नहीं देते । मन लेते हैं सईस लोगों का कौल है वे अपने इल्म को दरियाव कहते हैं जब तक घोड़े का मन नहीं लेते क्या कोचवान घोड़ा हांक सकेगा? सवार को सवारी का मजा तभी मिलता है जब जानवर का मन लिये रहै मन लेलेने से लोगों ने शेर ऐसे भयङ्कर जानवर को बकरी कर डाला है वेयरकी सरकस का तमाशा जिन्होंने देखा है वे इसे खूब समझ सक्ते हैं; मनोहर वेश्याऐं जो सबका मन हरलेती हैं उनका मन भी कभी को हरलिया जाता है जब बहुत से मन इकट्ठे हो जाते हैं तब अद्भुत शक्ति और पराक्रम पैदा करते हैं यह अद्भुत बात है कि चाहों कई मन मिलैं एक ही मन रहैगा केवल मिलना चाहिए मन मिलना इसी को कहतेही हैं कि कई मनों का एक मन हो जाना—पीतम हम तुम एक हैं कहन सुनन को दोय । मन सेमन को तोलिये कधौं न दो मन होय । हमारे भारत वर्षमें शाप है कि मन से मन कभी न मिले हमारा मन काश है तुम्हारा कालेमें जाता है; योग शास्त्र इसी मनही की छानका निचोड़ है संसार में यक यही वस्तुहै जो कभी बेकाम नहीं रहती सोए बैठे चलते फिरते खाते पीते सदा मन अपना काम कियाही करता है;

परमाणुओं के समष्टि का बना यह जगत केवल मनही पर अपना असर नहीं पहुंचा सका यह आत्मा और जीव सब से परे है ; बुद्धिमानों ने निश्चय किया है कि मन mind परमाणु matter से बिल्कुल पृथक् है एक किसी परमाणु वादी "मेटीरियालिस्ट" ने एक बार एक मनन शील विद्वान् से पूछा What is mind उसने जवाब दिया No matter तब उसने फिर पूछा what is matter उसने उत्तर दिया never mind ; नर और मादा दो मन मिल जाने से तीसरा मन पैदा होता है; मन जब तक मरा और बुझा रहता है किसी काम को जी नहीं चाहता सच पूछो तो मन का मारनाही सब सुख का हेतु है मनही मनुष्य के लिये बन्ध और मोक्ष का कारण है मनएवमनुष्याणां कारणंबन्धमोक्षयोः । मन के वेग के समान किसी का वेगनहीं है पलक भांजते हजार कोसकी दूरी पर पहुंच सक्ता है जनन मरण आदि महाक्लेश का बीज रूप संसार चक्र की धुरा इस मन को मार जिसने अपने वश कर लिया उस मन ही के चिदानन्द रूप चैतन्य चन्द्रोदय के प्रकाश मे दुःखान्धकार क्षय हो सक्ता है। अप्रध्वदुःखौघमयंप्रध्वानन्दमयंजगत् । अन्धंभुवनमन्धस्य प्रकाशं सुखचक्षुषः ॥ जो मन मन्दिर ज्ञान के प्रकाश से स्वयं प्रकाशमान् है उसे सूर्य अथवा अग्नि क्या कभी प्रकाशित कर सक्ते हैं प्रलय काल के मेघ क्या कभी ढहा सक्ते हैं उनचासो वायु एक साथ मिल कर बहने पर भी उसे क्या कभी हिला सक्ते हैं—कल्पान्तवायवोवान्तु यान्तुचैकत्वमार्णवः । तपन्तुद्वादशादित्या नसीसा भीनसिच तिः । ऐसों के चिदाम्बर मन महा सागर की एक २ लहर में अनेक कोटि ब्रह्माण्ड पानी के बुले समान आप से आप पैदा होते हैं और नष्ट भी हो जाते हैं मय्यनन्तचिदाम्भोधावाश्चर्यं विश्ववीचयः । समुद्यन्तिखेलन्ति प्रविशन्तिस्वभावतः । जिसका मन अशुद्ध है उसका सब काम विरुद्ध है। कैसा अच्छा कबीर ने कहा है । मालाफेरतयुगगया मिटान मनकाफेर । करकामनकाछाड़के मनका मनकाफेर । संस्कृत मनस् अंगरेजी माइंड दोनों मन धातु से बने हैं जिसका अर्थ है ज्ञान का आधार और मनीषा जो बुद्धि का नामान्तर है सो भी इसी मन से बना है तो निश्चय हुआ मनुष्य की आभ्यन्तरिक जितनी शक्तियां है सब का राजा इस मन से है; मन बहुत तरह के होते हैं एक

दिल दरिया सखी और उदार लोगों का मन होता है जिन्हें सदा यही नशा सवार रहता है क्या पावें क्या देवें राजा कारण और बलिको भी तुच्छ समझता है; एक सूम कजूस का मन है एक २ फूटी कोड़ी मे बसा रहता है आप भला क्या किसी को देंगे किसी का देते देखे तो छाती फट जाय—नागांठी को गिरगया गा काहू को दीन । देतज देख ग्रानको तासों बदन मलीन" नखाया नखरचा स धुसक्खी समान एक २ कतरा जोड़ इकट्ठा किया अन्त को सुह बाय रह गए—एक क्रूर कुटिल खल मनुष्यों का मैला मन होता है ऊपर से रंगी चुंङ्गी ज़का बर्का पर मन मे छूरी कटारी भरी हुई अपने दांव पर चढ़ा कि एकही वार मे दो टुकड़े "मन मलीन तन सुन्दर कैसे। विषरस भरा कनक घट जैसे"। एक ठगों का मन है जो सदैव पराये माल मे रहता है। भेड़ राज का कलुषित मन प्रजा के बिगाड़ मे रहता है; भक्त जनों का मन अहर्निश नारायण के चरणारविन्द मे बसता है; कामियों का मन कुलटाओं की मूठी मे है सती का मन पति की सेवा मे रहता है; खूशटदास का मन रुपया बटोरने मे रहता है खुल्ज अखुज्जन्याय अन्याय जैसे बिने गप्प करते जाओ सरकार सांच तो होऔंगी; खलका मन पर छिद्रान्वेषण मे रहता है; व्यभिचारिणियों का मन पर पुरुष मे फंसा रहता है; निमन्त्रित ब्राह्मण का मन पेड़ मे लगा रहता है; परिश्रमी विद्यार्थी का मन अपनी संथा मे इत्यादि इस चंचल मन के विविध रंग ढंग हैं कोई कहां तक गिना सक्ता है।

व्यवस्था की दुरवस्था।

स्थान—काशी।

महाराज महामोह और कुलपांशनाचारी।

महामोह। आचारी जी आप तो जानतेही हैं मेरे महामोह का परदा फाश हो गया सब कलई खुल गई अब लोग मेरा नाम ले ले गालियां देते हैं तो अब आप कोई ऐसी व्यवस्था लिख दीजिए जिस्मे अन्धे गूंगे हिन्दुस्तानियों मे किसी तरह कुछ तो रोब कायम रहै।

कुलपांशन। महाराज यह कौन सी बड़ी बात है खास कर यों २ है

भोलानाथ की इस नगरी काशी में, अरे कलम अपनी कागज अपना सुफ़ेदी पर स्याही चढ़ाते क्या लगता है दक्षिणा होनी चाहिए आप जानते हो ही 'दाम करै सब काम' वाह्मनों की पोथियां टकसाल हैं जैसा चाहो वैसा वचन गढ़ते जाओ हम पर किसका आंकुस।

महामोह। हां हां दक्षिणा तत्क्षण न तेरह नगद न बाइस उधार पर इतना समझे रहिये जो इस गुम सुम व्यवस्था पर दस्तखत न करेंगे उनकी दक्षिणा आज से बन्द।

कुलपांशन—तो अब आप पण्डितों को जमा कीजिये मै व्यवस्था तैयार किये देता हूं।

व्यवस्था।

महाराज महामोह की आज्ञा है कि यह समय बड़ा नाजुक है इसमें दो बातों का खयाल सब को रखना चाहिये एक तो यह कि बात जाय धर्म जाय देश उजड़ जगत् भर रसातल की तल मे अन्तर्ध्यान हो जाय पर अपने मतलब का ध्यान न छूटे—इति प्रथमः कल्पः—दूसरे यह कि जैसे हो रुपया मिले कहां का पाप कहां का पुण्य कहां का नर्क कहां का स्वर्ग—कहो अधर्म को धर्म कहैं पाप को पुण्य कहैं दिन को रात कहैं--कहो कौआ को हंस कर दें हंसको कौआ केवल रुपया मिलता जाय-- ईमानदारों का ईमान रुपया--दीनदारों को दीन रुपया--न बाप न भैया सब से बड़ा रुपैया--जलेरूप्यं स्थले रूप्यं रूप्यं पर्वत मस्तके। व्यवस्था मूलकं रूप्यं सर्वं रूप्य मयं जगत् इति द्वितीयः कल्पः।

महामोह। धन्य आचारी जी महाराज यह व्यवस्था तो खातिर ख्वाह मेरे मतलब की है लीजिये २) दस्तखत कीजिए।

कुलपांशन। तथास्तु। सम्मतिरत्रार्थे कुलपांशनाचारिणः। हाथ तो गरम हुआ देखा जायगा।

संमतिरत्रार्थे धोंधऊशास्त्रिणः

इदंपत्रंज्ञानमनुते सपापीयान्।

संमतिरत्रबाह्रराम शास्त्रिण:--यह पत्र जो न माने सो पापी ।

संमतिरत्र उलूकभट्टस्य।पपपुण्य का जिम्मेदार रुपया ।

संमतिरत्र भाजभट्टस्य । हमको भावा सोई साना इसमे किसका साझा।

संमतिरत्रवेदीन त्रिवेदिन: । जिसने हमको रुपया दीन दीन हमारो उसने लीन । सनमे आवा सोई कीन काहेका पांच काहेका तीन ।

संमति रत्र कृतान्त शर्मण: । कियो आज हम सब को अन्त। तासों हमरो नाम कृतान्त ।

संमति रत्र चुद्र बुद्धि: । चुद्रबुद्धि ने एही ठाना रुपये कीसी तानें गाना ।

संमति इस्मे दुरात्मा शास्त्री की यथानामस्तथा गुण: ।

संमतिरत्र कुक्कुट मिश्रस्य । दो रुपये मे महीने भर बीखाय डंड पेलेंगे ।

संमति इस्मे महा महोपाध्याय की । भगवान् आरे ऐसी व्यवस्था रोज बना करे । महामोह महाराज की जै जै कार ।

संमतिरत्र गर्दभानन्द चतुर्वेदिन: तोंद पर हाथ फेरते हुए । सर्व चौपट हुं फट स्वाहा ।

अंगरेजों मे अकबर ।

अंगरेजों मे हम हिन्दुस्तानियों का सच्चा खैर खाह लार्ड रिपन सा न ऐसा कोई आयाहै औरन शायद आगे फिर कभी आवेगा; तअस्सुबी मुसल्मानो की इतना खिलाफ होने पर भी अकबर ने हिन्दू और मुसल्मानो को सब तरह बराबरही समझा। और दोनो मे कुछ फर्क न रहगया था। बड़ं से बड़े ओहदे हिन्दुओं को दिए था इस।इसके प्रधान अङ्ग टोडरमल वीरवल मानसिंह आदि जो नाक के बाल हो रहे थे सब हिन्दू होथे मुसलमान आज तक अकबर को काफ़िर कहते हैं वल्कि नाम लेते नाक भौं सिकोड़ने लगते हैं; वैसाही अंगरेज़ इन दिनों क्या विलायत मे क्या यहां लार्ड रि-

पन साहब के जानी दुशमन बन रही हैं और अंगुलियों दिन गिनती हैं कि कब ये यहां से सिधारेंगे उक्त श्रीमान को रातों निद्रा न पड़ती होगी कोई इन्हे दीवाना और सिड़ी कहते हैं कोई कहते हैं लार्ड रिपन कच्चे पोलिटिशन हैं अर्थात इल्म हुकूमत मे बिलकुल वाकफीयत नहीं रखते पहिले घर रख तब मसजिद मे दीया बारना होता है कोई गवार दिहकानी भी ऐसा न करेगा कि अपनी कौम के लिए बबूल के कांटे आगे के लिए बो जाय ; यह महात्मा रिपनही का काम है कि सब तरह की बोली ठिठोली सुनते और सब ओर की बौछार सहते बड़ी गंभीरता के साथ इलबर्ट बिल का बड़ा भारी बोझ उठाए अपने कर्तव्य मार्ग से नहीं हटते सच पूछिए तो हम अकिंचित्कार हिन्दुस्तानी लोग इसके बदले में इन्हे क्या भर देंगे किन्तु नहीं अपनी बड़ाई और महत्व पर ध्यान दे न्याय की कसौटी से मुंह मोड़ना अनुचित समझ अपने औदार्य गुण को भरपूर दिखा रहे हैं जो बात शायद अकबर में भी न थी।

गान पारसियों की धुन पर।

प्रभु लाट रिपन गुनगाओ,
चिरजीवो प्रभू सुख पाओ।
नाथ जब से तुम ह्यां पै पधारे,
सुख सूरज उदै भए हमारे॥
जग में जब लों है रवि चन्द तारे,
यश गावेंगे हम नित तुम्हारे॥१॥
चिरजीवो प्रभू सुख पावो।
देसी छापे को आज़ाद बनाया,
प्रेस ऐक्ट से पीछा छुड़ाया।
और जुल्म से सब को बचाया
दुख दर्द प्रजा को नसाया॥ २॥
चिरजीवो०
देसी कारीगरी तुम बढ़ाई,
शिल्प बानिज की नीम जमाई।
आत्मशासनप्रणाली सिखाई,
जिस्की होती है चहुंदिश बड़ाई॥
चिरजीवो०
बिल इलबर्ट पास करा दो,
फौजदारी के सब हक्क दिला दो।

गोरे कालों का द्वेष मिटा दो,
बढ़ने पावे न आग बुझा दो ॥४॥
चिरजीवो।

हक अपना जो भारत पावे,
जान वो माल को खैर मनावे।
तुम्हारी कीरत ध्वजा फहरावे,
तुम पे शिवराम वल बल जावे ॥
चिरजीवो।

राजा मै बन जाऊंगी तुझे
रानी बनाऊं। इस राह पर

लाट रिपन प्रजापाल हो, बिल पास कराओ, बिलपास कराओ। गोरी काली प्रजा तुम्हारी सबको एक बनाओ रे ॥ बिल०। सदी बिचारे बड़े दुखियारे उनका दुःख मिटाओ रे। बिल०। सब गुनआगर तुम दया सागर दीन दयाल कहाओ रे ॥ बिल०। इङ्गलिश पेपर गरीदेंवेडर मुह इनको बंद कराओ रे। बिल०। जैसे निशाकर और दिवाकर कीरति किरण फैलाओ रे। बिल०। बिनती सुनो शिवराम हमारी लाट रिपन गुन गाओ रे ॥ बिल पास कराओ।

मेवाड़ का इतिहास।

गोहा लड़कपने ही से निपट नटखट और चचल था राज पूत के लड़कों के साथ मिल आखिट मे बड़ा मन देने लगा और ग्यारहवें वर्ष की उमर तक पहुचने पर तो यह नितान्त अशासनीय और स्ववश हो गया सच है आग का पुञ्ज कभी घास फूस से दब कर छिपा रह सक्ता है; ईदुर का नगर इस समय जंगली भीलों के अधिकार मे था यह उन भीलों को जीत राज्य उनसे छीन आप वहां का राजा हो गया और तब से ८ पुश्त तक ईदुर उस्के वंशधरों के तहत मे रहा इसी गोहा से राजा वंशी क्षत्री गहलोत या गेहलोत भी कहे जाते हैं; आठवां राजा नागादित्य एक समय बन मे आखिट कर रहा था कि भील लोग जो बहुत दिनों से ताक लगाए थे कि अन्य जाति का राजा जो उनपर हुकूमत कर रहा था किसी तरह उस्से छुटकारा पावें मौका पाय एक बारगी

नागादित्य पर टूट पड़े और जा नही लेकर छोड़ा और ईदुर को फिर अपने अधिकार मे कर लिया; बीर नगर की ब्राह्मणी कमलावती के वंश वाले इस समय फिर वल्लभी पुर के राजवंश को रक्षा के काम आये नागादित्य के ३ वर्ष के छोटे लड़के बप्पा का लेजाय भंडेर के किले मे रक्खा जहां यादव वंशी भीलों से रक्षित हो यह बड़ा हुआ और मौर्यवंशी राजाओं को चित्तौर से निकाल आप राजा बन गया; बप्पा के बहुत से लड़के वाले हुए कई एक उनमे के अपने पुरखों की पुरानी जन्मभूमि सौराष्ट्र मे जाव से जिनकी सन्तान अकबर के समय तक वहां राज्य पद पर आरूढ़ रहे यह सौवर्ष का होकर इस असार संसार से प्रयाण किया अपने जीवन के पिछले वर्षों मे इसने खुरासान पर चढ़ाई की इस्फहान कन्दहार कश्मीर इराक ईरान तूरान. काफरिस्तान आदि देशों को जीत वहांही बस गया और उन २ जाति की स्त्रियों के साथ व्याह कर १३० लड़के छोड़ गया जिनकी औलाद नौशेरा पठान के नाम से अब तक विख्यात हैं हिन्दू रानियों से भी इसके ९८ लड़के हुए थे और उनकी सन्तान अग्नि उपासक सूर्यवंशी कहलाये; बप्पा ७६९ के संवत मे पैदा हुआ था और ७८४ मे चित्तौर को जीत उसपर अपना दखल जमाया तब से खुमान तक जो ८६८ के संवत. से ८९२ के संवत तक चित्तौर मे राज करता रहा इस बीच का हाल बहुत कम मालूम है खुमान बप्पा का परपोता था इसके समय मे महम्मद के उत्तराधिकारी हारूनुल रशीद का बेटा महमून जो खुरासान का हाकिम था चित्तौर पर धावा किया खुमान अपने वशवर्ती राजपूत राजाओं की सहायता लेकर मुसल्मानो से २४ लडाइयां लडी और दाम २ उन्हे हराया और यहां तक मुसल्मानो ने हार मान ली कि

तब से पचास साठ वर्ष बाद तक फिर कोई हमला उनका हिन्दुस्तान पर नहीं हुआ और न चित्तौर के घराने में कोई ऐसी बात ही हुई जो लिखी जाय; संवत १२०६ में समरसिंह हुए इसी दल्लीपति पृथ्वीराज की बहन व्याही गई इस सबन्ध से शहाबुद्दीन गोरी की लड़ाई में समरसिंह भी पृथ्वीराज की मदद को आये थे पृथ्वीराजरासा के प्रसिद्ध कवि चांद ने अपने रासा में समरसिंह की बड़ी प्रशंसा की है पृथ्वीराज सामने आगे से आकर बड़ी धूम धाम के साथ इसे दिल्ली में ले गया और उपस्थित लड़ाई की हर एक बात में बिना समरसिंह के पूछे कुछ नहीं करता था ३ दिन की गहरी लड़ाई के बाद में अपने लड़के कल्यान राय के समरसिंह मारा गया और पृथ्वीराज कैद हो शहाबुद्दीन गोरी के हस्तगत हुआ; समरसिंह की प्यारी रानी पिरथा अपने भाई पिथौरा की कैद और अपने पति पुत्र का मरण सुन पति की लाश के साथ सती हो गई; शहाबुद्दीन से हिन्दुस्तान में मुसल्मानों के राज्य की नेवजमी और हिन्दुस्तान के विपत्ति के दिन भी तभी से आरंभ हो गये और इस आरतभारत का कोई प्रदेश न बचरहा जहां हज़ारों वर्ष तक मिवालूट मार और कतल की आर्तध्वनि के और कुछ नहीं सुनाई देता था हम हिन्दुओं का कोई पवित्र स्थान न बच रहा जिसे अत्याचारी यवनों ने अपने अत्याचार का लक्ष्य न किया हो; इस देश की जितनी विद्या और जो कुछ इल्म हुनर था सब का म्लेच्छों ने सत्यानाश कर डाला; समर साहसी और युद्धोत्साही यहां के राजपूत भी बारी २ अपने भर सक न चूके जभी मौका पाया तभी मुसल्मानों को रणाङ्गण में धर दावा और राजस्थान की कोई सड़क और गली न बच रही जो एक बार हिन्दू और

मुसल्मानों के रुधिर से तरबतर न हो उठीं हों हमारे पाठक ज्यों २ आगे बढ़ते जांयगे त्यों २ इन राजपूतों की असामान्य वीरता और साहस के नमूने पाते जांयगे पर अफसोस दैव की प्रतिकूलता से किसी का कुछ वश नहीं है यहां तक कि राजपूतों के कितने घराने के घराने मुसल्मानों के साथ समर अग्नि में अपने को आहुत कर दिया जिन की कीर्त्ति कौमुदी अब तक दिशाओं को उजागर कर रही है; इस जगती तल में सिवा राजपूतों के कौन ऐसे होंगे जो हज़ारों वर्ष तक अनेक महा संकट झेल कर भी अपने छत्रीपने की आन बान न गंवाया सदैव अपना मान और तेहा जैसा का तैसा बनाये रहे अपनी पहली शाइस्तगी और सभ्यता के दिनों में जैसी कुछ इनकी चाल ढाल रीत व्योहार रहे उनमें आज इस घटती के दिनों में भी अणु मात्र अन्तर न पड़ा; बड़े २ बादशाहत और शाहन शाहतों का वारा न्यारा एक या दो लड़ाइयों में हो जाता है और देश का देश अपने को जित समझ जेता का मज़हब तौर तरीका रहन सहन सब का पैरोकार हो जाता है कभी को दोनो ऐसे मिलझुल जाते हैं कि जित और जेता में कोई अन्तरही बाकी नहीं रहता पर यह राज पुतानेही की भूमि है जहां जेता मुसल्मानों के दांतो पसीने आए कि हम राजपूतों को सब तरह पस्त कर इन्हें अपने से मिलालें तलवार के ज़ोर इन्हें मुसल्मान कर डालें अपना सब तौर तरीका इन्हें बतलाय हरतरह की लालच दे अपने रंग ढंग पर ढुलकालें पर ये अपनी ज़िद्द से बाज न आए और सदा मुसल्मानों के खून के प्यासे बने रहे खास कर मेवाड़ के राणाओं का घराना जो आज दिन छत्रियता के मान रक्षा की दुर्गभूमि बन रहा है।

समरसिंह की काई लड़के थे उ-न्में कारण उस्का उत्तराधिकारी हुआ इस्के बचपन में इस्की मा कारम देवी जो पत्तन की राजा की कन्या थी अपने पति की रियासत उसही तरह पर कायम रक्खा यह आप खुद राजपूतों की सिरदार हो ऐम्बर के निकट शहाबुद्दीन गोरी के प्रतिनिधि कुतुबुद्दीन ऐबक से लड़ी और हर तरह उसे हराय घायल किया; ९ बड़े राजा और ११ छोटे राजा रावल उपाधि धारी अपनी २ सेना साज लड़ाई में इस्के साथ थे और यह उन सबों की सरदार हो कुतुबुद्दीन से लड़ी; कारण अपने बाप की गद्दी पर सम्बत १२४९ में बैठा पर इसे मेवाड़ के राणाओं का पूर्व पुरुष बनना नहीं बदा था थोड़े ही दिन पीछे चित्तौर की पश्चिम उजाड़ बोहड़ जंगलों को साफ करवाय डूंगरपुर बसाया जिस्का ऐसा नाम डोंगरा पहाड़ के नाम से पड़ा है; वहां कारण ने एक नये घराने की नेव डाली जिस्के वंश में डूंगर पुर का छोटा सा राज्य अबतक कायम है कारण ने चित्तौर क्यों छोड़ा इस्का कुछ कारण नहीं मालूम होता; समरसिंह का भाई सूरज मल का लड़का रहूप तब १२१७ की सम्बत् में चित्तौर के राज पद का अधिकारी हुआ तब से लक्ष्मण सिंह तक ५० वर्ष के अरसे में ९ राजा चित्तौर में हुए जिन्में १ू मनु के मन्मथ,व जूझ स्वर्ग की अप्सराओं के प्रेम पात्र जा बने ३ थोड़े २ दिन राज्य कर जल्दी ही काल के कलेवा होगए। क्रमशः

—०—

परम शान्ति या निर्वाण क्या है।

सुख दुख क्या है इस पर बहुतेरे लोग बहुत सी छान कर चुके हैं पर सच पूछो तो जब तक मनुष्य की वासना संसार में लगी है कहीं अणु मात्र भी सुख का लेश नहीं है इसी वासना के क्षय

से परम शान्तिही सुख है जिसे निर्वाण और मुक्ति भी कहते हैं सो वासना का क्षय मन के नाश से होता है।

श्लोक

एषएवमनोनाश स्त्वविद्यानाशएवच। यद्यत्संविद्यतेकिञ्चित् तत्रास्थापरिवर्जनम्। अनास्थैवहि निर्वाणं दु:खास्थापरिग्रह:।

अर्थ

जो २ वस्तु विद्यमान् अर्थात् प्रत्यक्ष इन्द्रिय गोचर है उन्मे "आस्था" ममता का परित्याग मनो नाश या अविद्या नाश कहलाता है; किसी वस्तु मे ममता का न रखनाही निर्वाण या सुख है उसी के विरुद्ध ममता रखनाही दु:ख का मूल है-और भी।

श्लोक

इच्छामात्रमविद्येह तन्नाशोमोक्ष उच्यते। बन्धोहिवासनाबन्धो मोक्ष:स्याद्वासनाक्षय:।

अर्थ

इच्छा मात्र का होनाही है अविद्या है उस इच्छा का नाश कर डालनाही मोक्ष है; वासना के द्वारा जो फसाव वही बन्धन है और वासना का न रह जाना ही मोक्ष है।

नमोक्षोनभस:पृष्ठे नपातालेनभूतले। सर्वाशासंक्षयेचेत: क्षयोमोक्षइतीष्यते।

अर्थ

मोक्ष वस्तु आकाश पर है सो भी नहीं पाताल या भूतल मे है सो भी नहीं सब तरह आशा के क्षय से मन का जो नाश उसी का नाम मोक्ष है।

असंसर्गात्पदार्थाना मन्त:शान्ति विंमुक्तता।

सकल पदार्थ मात्र के असंसर्ग द्वारा अन्त: करण की शान्ति मुक्ति का रूप धर लेती है।

सारांश यह कि चञ्चलता शून्य मन का जो स्थिर भाव मे ठहरना वही निर्वाण मुक्ति या परम सुख है उसी मन का जो संसार के अनेक विषयों से गमना गमन उसी का नाम बन्धन या दु:ख है।

॥ हमारे सहर कि रामलीला ॥

महा वैभवी स्वाद अपव्यय और पक्षि सिरे के फिजूल खर्चीं आदि नई रोशनी के खयालात थोड़ी देरके लिए हम डिबिया मे बन्द कर रखते हैं और पुराने ढंग के शुद्ध सिक्खा लिस और कोरे हिन्दू बनते हैं—रामलीला—पहले तो यही एक ध्यान देने की बात है कि बुद्धि मानो ने इस मेले को कैसी सोहा वनी ऋतु मे रक्खा है न गरमी न जाड़ा दोनो का समभाव और एक हिसाब से दिन को सोहावनी गरमी और रात को गुलाबी जाड़ा न वर्षा की किच पिच न गरमी की व्याकुली; फिर हमारा देश जहां सर्व साधारण बनिज व्योपार की ओर कम ध्यान दे केवल धरती माता की उपजाऊ शक्तिपर निर्भर हो आराम से अपना दिन काटते हैं उनके लिये ४ महीने के कठिन परिश्रम का परिपाक शारदीय शस्य की निष्पत्ति और आगामी चैती फसल की आशा इत्यादि कई एक प्रकार के आनन्द की सन्धि और बहुत तरह की खुशियों का मज मूआ यह मेला है; लङ्का पर चढाई और रावण का वध आदि कृत्य का स्मारक यह मेला मानों हमारे देशके व्यौपारियों को इस बातकी सूचना है कि जैसा श्री रामचन्द्र ऐसे अच्छे समय और शुभ अवसर पर अनुपम उद्योग मे सहसा प्रवृत्त हो गए वैसाही तुम भी चौमासे की महावृष्टि के कारण सिकुर सिकुराय जो हाथ पर हाथ रक्खे बैठेथे सो अब उठो बाहर निकलो श्री रामचन्द्र के नमूने पर अपने २ काम और धन्धे मे चिपट कर लगो और अपने उद्योग रूपी बाण को निरूद्यमता आलस्य कमहिम्मती रूप रावण कुम्भकरण मेघनाद पर ताक २ चलाओ और दीन हीन भारतीय सीता का दुष्ट अत्याचारियों से उद्धार कर देशके सुख सम्पित्ति को बढाओ; हिन्दुस्तान का कोई भाग नहीं बच रहा जहां यह उत्सव न होता हो बड़े बड़े नगरों की कौन छोटे २ पुरई पुरवा मे भी आबादी के अनुसार कम या जियादह श्री रामचन्द्र के यश को प्रति वर्ष तरो ताजा और नया करने वाली यह लीला की जाती हैं जिसका होना हमारी समझ से सब तरह पर उचित है क्योंकि इस भारत वर्ष की पृथ्वी पर रामचन्द्र ऐसेही महा पुरुष हो गये हैं जिनके स्मरणार्थ यह उत्सव होनाही चाहीये; किस अभागी की रसना होगी जो उ

ठते वैठते चलते फिरते गिरते पड़ते हर दम राम नाम से विमुख रहती हो तब घट घट व्यापक तन मन सेभी अधिक प्यारे अपने राम के लिये जो कुछ करें सब थोड़ा है; खैर हम हिन्दुस्तानी तो दुनिया भरमें बदनाम हैं कि पुरानी बात के लिए जो दिये डालते हैं पर हम पूछते हैं कौनसा देश और जाति होगी जो राम ऐसे सर्वगत familiar के निमित्त उतना सूचक कोई कृत्य न करती हो और यही कारण है कि यह मेला उसी जोश और तेजी के साथ आज तक किया जाता है मानो श्री रामचन्द्र रावण के मुकाबिले आजही दलसाज जा रहे हैं; हमारे शहर मे रामलीला के दो दल हैं एक ओर खत्री मात्र और उन्ही के जेलसे ठठेरे और सोनार और दलाल भी हैं दूसरा दल प्रधाग कार अगर वाले और कायस्थों का है उन्ही के पिछ लगुवा बनिया बक्काल तेली भुजवा आदि अनेक जाति के लोग शरीक हैं और इन दो दलों को आपस में बड़ी ही लाग डांट है जिस्से सबब दोनों तरफ लीला का सामान और हर तरह की तरहदारी प्रति वर्ष बढ़ती ही जाती है इस्का बढ़ना इसी एक बात मे समझ लेना चाहिए कि पहले इन दोनों के मुकाबिले मे रात को कई घण्टे तक पंशाखे और मशाल की रोशनी होती थी बीसों मन तेल फुंक जाता था फिर अबरक के गिलास हजारों दो तरफा जलने लगे अब उस अबरक की जगह हजारों फानूस हांडियां लैंप और झाड़ जलती हैं किसी राजा महाराजा की मोहफिल मे भी इतने गिलास और शीशे कभी न जलते होंगे उन्माद और फिजूल खर्ची का अन्त है देखें आगे इस लाग डांट में अब और क्या होता है; हमारी राय है दूसरी साल अब बिजली की रोशनी होनी चाहिए दलालों का दल बहुत दिनों से बढ़ा बढ़ा है इस साल दूसरे दल वाले भी बहुत उमड़ उठे हैं पर अभी तक तो इनसे वे सब कतनहीं ले गए।

उत्तम से उत्तम क्या ? अ-द-से।

वह जिह्वा जो ईश्वर का नाम जपा करे।

वह वार्ता जिस्मे परमेश्वर की चर्चा हो।

वह मन जो मैला न हो।

वह मकान जिस्मे बुरे लोग न रहते हों।

वह विद्या जो लोक परलोक दोनो सुधारे।

वह हाकिम जो इंसाफ पसन्द हो।

वह नौकर जो घूस न लेता हो।

वह कान जो भलाइयों को सुने।

वह संगत जो सुमार्ग सिखलावे।

वह स्त्री जो मन वच कर्म से पतिव्रता हो।

वह देश जिस्मे फूट न हो।

वह धन जो अपनी गाढ़ी मोह त से इकट्ठा किया गया हो।

वह मित्र जो समय पर काम आवे।

वह जीवन जो पराधीन न हो।

वह औलाद जिसने बाप दादों का नाम उजागर कर दिया हो।

वह बोल जिस्से दूसरे का मन हर जाय।

वह ब्राह्मण जो सन्तोषी हो।

वह विद्या जो कण्ठस्थ और अर्थकारी हो।

फल।

सन्तोष का फल आनन्द।

कुपथ्य का फल रोग।

हंसी का फल लड़ाई।

फूट का फल दोनो की हानि।

परमात्मा मे लीन होने का फल परमानन्द।

कपट का फल अविश्वास।

देश विदेश घूमने का फल चतु राई।

हिन्दुस्तान का फल फूट॥

किससे किनकी पौ बारह हैं।

अन्धों मे कानो की।

मूर्ख धनियों मे झूठी लल्लोपत्तो करने वालों की।

अदालत मे वकीलों की।

सूखे मे बनियों की।

मरी मे अत्तारों की।

मेले मे लुच्चे उचक्कों की।

लगन के दिनो मे रंडी और भाड़ों की।

आपस की लडाई मे विचवई को।

बाजार मे दलालों की।

लार्डरिपन के समय हिन्दुस्ता नियों की।

अचेत प्रबन्ध कर्ताओं मे कर्म

चारी अमलों के।

झूठी व्यवस्था तलव करने मे काशी के पण्डितों के।

पितृपक्ष मे ब्राह्मणो के।

अच्छे ज्ञात विद्य बुद्धिमान को सब ठौर।

अल्ला मियां क्यों भूले।

इस मुल्क के महाजनो को कैवल रूपये के वल महाजन क्यों किया? ' जर दिया जनानो को, पण्डितों को भद्दी अकिल के सोते मे डाट क्यों न लगादी? हमारे खुशामदी राजा सितारे हिन्द को दुमदार क्यों न कर दिया? काशी के लोभी पण्डितों को व्यवस्था मे जगत् को रसातल मे डुबोने की सामर्थ्य क्यों न देंदी? ऐङ्गलो इंडियनो को पढ़ाय लिखाय सब तरह की देवतुल्य सामर्थ्य दे उन्हे सङ्कीर्ण हृदय क्यों कर दिया? हिन्दुस्तान को पृथ्वी को उत्तम से उत्तम उर्वरा और सुवर्ण मण्डिता कर इस्के भाग्य मे सदा के लिये परवश रहना क्यों लिख दिया? इस वे कदरी के जमाने मे हमको लिखने का नसूर क्यों कर दिया॥

नूतन चरित्र।

जिल्द ६ संख्या १२ के आगे से

अध्याय ८

वार्तालाप।

विवेकराम चित्रकला को साथ लिये अपने मकान पर आये और उस्के भाई को सौंप कहा लो अपनी बहन की खबरदारी करो बड़ी मुशकिलों से इस्का पता लगा है; मुझको इस्का सब वृत्तान्त कहने का इस समय अवकाश नहीं है परन्तु निश्चय है कि आप को बहन जरूर आपको सब हाल सुनावेगी और यह भी बतलावेगी कि मै कितनी जोखिम उठाकर इसे मूंजी के चङ्गुल से छुटा लाया हूं यह सब मै इस लिये नहीं कहता हूं कि चित्रकला मेरी तारीफ तुमसे करे वरन इस शहर के बदमाशों से होशयार रहने को यह सब आपको चिताया चाहता हूं मै भी रोटी खाकर ४ बजे शाम को फिर हाजिर हूंगा; चित्रकला के भाई ने उत्तर दिया आप बड़े सत्पुरुष हो जिन्हो ने मेरी दीन

दया पर दया कर इतना श्रम उठाया अब आप भोजन कर आइये पीछे हमको भी आप से विदा मांगनी पड़ेगी मैंतो आपकी असीम कृपा समुद्र की लहर मे सदैव मग्न रहा चाहता हूं पर यह मेरी बहन आपके स्थान पर रहने को अपने उज्वल कुल चन्द्रमा मे अपकीर्तिका धब्बा समझती है; विवेकराम चित्रकला के विदाई की बात सुन जोसे कुह्मला गया पर ऊपर से नम्रता पूर्वक बोला आप यहां से विदा होने का नाम लेकर मेरे होश हवास को विदा न कीजिये अभी दोचार रोज अपनी प्यारी बहन को जो संकट पङ्क मे चिरकाल तक पड़ी रही अपनी विचार नदी के स्वच्छ जल मे स्नान कराय निर्मल कीजिये; यह कह विवेक राम दोनो को वहां छोड़ घर की ओर चला चलती समय चित्रकला ने अपने भाई की नजर बरकाय उस्की ओर देखा और इसने उसकी ओर ऐसा देखा कि दोनो की चार नजर दोनो के दिलों मे पार हो गई। विवेकराम के जाने पर भाई ने चित्रकला से कहा प्यारी बहन अब बतलाओ क्या करना उचित है और इस उपकारी विवेकराम से जिसने हम दोनो के कारन अपनी जान को भी कुछ माल न समझा कैसे उद्धार पावें; चित्र कला जो लोक मे अपकीर्ति महाभयावन शोक सागर मे पड़ी नेत्र शुक्तियों से अश्रुबिन्दु मोतियों का ढेर लगा रही थी अपने भाई की एक बात पर भी कान न दिया, अब भाई ने देखा कि अथाह दुख के कारण चित्रकला भीत के उरेहे चित्र समान स्तब्ध सी हो रही है तब उस्को उपदेश की चितावनी से जगाने लगा; बहन यह कलङ्क तो तुम्हे बेबसी के कारन लगा है कलङ्क तो तब था कि तुमने अपनी इच्छा इसे किसी तरह पर प्रगट किया होता तुम तो आप पढी लिखी हो तुम्हे हम क्या समझावें सीता का रावण हर लेगया पर अन्त को सीता महारानी निष्कलङ्क ठहरीं यदि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई दुष्ट मनुष्य धोखा दे तुम्हे हर लेगया तो इसमे कलङ्क कौन सा है अब तुम कुछ सोच मत करो और यह बतलाओ कि तुमने उस दुष्ट के घर ये चार पाच दिन कैसे काटे; चित्रकला अपने दुःख के बोझ को कुछ हलका कर ती हुई बोली मेरी कहानी बड़ी लम्बी है फिर कभी कहूंगी परन्तु अब आप यह मुझे निश्चय करा दीजिए कि आपको

मेरी ओर से तो कुछ शङ्का नहीं है? भाई ने जवाब दिया पहले तो मेरे मन मे कुछ ऐसी ही अ्यासी थी पर अब वह सब सन्देह दूर हो गया; अब यहां से चलने के बारे मे आपकी क्या सलाह है क्योंकि यहां विवेकराम के घर तुमको साथ लेकर रहना दुनिया के दुष्ट जनो की बुरी दृष्टि मे महा कलङ्क का कारण होगा; चित्रकला ने कहा मैं भी यही उत्तम समझती हूं कि यहां से चल देना चाहिए और जो आप विवेकराम से रुखसत मांगेगे तो निश्चय है वे अपने सरल स्वभाव के कारण आपको यहां से किसी तरह पर न जाने देंगे मुझे निश्चय है विवेकराम का जो हम लोगों की मोहब्बत में कुछ फंस गया है नहीं तो हमारे कारन इतना क्लेश कभी न उठाते; भाई ने कहा जो ऐसा है तो इसमे अन्देशा किस बातका है तुम्हारा व्याह भी अभी नहीं हुआ और विवेकराम भी सत्पुरुष हैं हम ऐसे बद्‌किसमतों के साथ रह सिवा दुख भोगने के सुख मिलना कठिन है एक दिन हमसे तुम्हारी जुदाई होनी ही है यदि विवेकराम तुम्हारा हाथ पकड़े तो इससे अच्छी और क्या बात है यह तो ईश्वर के यहां से नियत कर दिया गया है कि स्त्री पुरुष योग्य देख उनका व्याह कर दिया जावे।

चित्रकला बोली भाई अब तक तो मुझे निश्चय था कि आप को मै बहुत प्यारी हूं किन्तु इन बातों से जो मैं इस समय आप के मुख से सुन रही हूं मुझे यह जान पड़ा कि आप की मेरी प्रीति जाती रही और इस अपकीर्ति को आप मेरेही कारण समझे हो मैं ईश्वर की शपथ करती हूं कि मैं इसमे सब तरह निरपराध हूं जो आप मुझे अपनी बहन समझने मे अपनी बदनामी जान साथ रखने से हिचकिचाय पहले की समान प्रीति और अनुग्रह न करोगे जैसा अब तक करते आए हो तो मै भी उसी पाठशाले में जाय जहां मैने पढ़ा है सिलाई के काम से अपना जीवन किसी तरह पार कर दूंगी पर इस तरह व्याह करना अङ्गीकार न करूंगी। भाई ने कहा तुमने मेरा मतलब ठीक २ नहीं समझा तुम से प्यारही के कारण तो मैं चाहता हूं कि व्याह कर तुम्हे ससुराल में रख सुचित्त हो जाऊं तुम्हें खुशहाल देख मेरा जी प्रसन्न रहेगा और आने वाली गरीबी का दुख भोगने को मैं अकेलाही रह जाऊं; चित्रकला ने कहा तो आप

ने मुझे ऐसी निठुर समझ लिया कि आप को गरीबी का दुख भोगते देख मैं आप सुख रत होंउ—पहले मै आप का व्याह कर भावज को घर मे आ गई देख लूंगी तब अपना व्याह करूंगी।

यह सत्य है कि विवेकराम ने मेरे साथ बड़ाही उपकार किया है परन्तु इस उपकार के बदले मेरा हाथ उसे नहीं मिल सकता जब तक वह अपने गुणों से मेरे साथ सादी करने योग्य आप को साबित न कर दे फिर यदि आप द्रव्यवान होते तो इतना खयाल आपका मुझे न भी होता जैसा अब हो रहा है। क्रमश:

एम,ए,बी,ए, परीक्षोत्तीर्ण छात्रों का निवेदन पत्र।

पश्चिमोत्तर और अवध के एम, ए,बी, ए, लोगों नेप्राय: दो मास बीते एक निवेदन पत्र memorial श्रीयुत सर आलफ्रेड लाएल हमारे लाट साहबको इस मजमून का दिया था कि हम लोगों के सरकारी नौकरी मे प्रवेश कर ने का कोई अच्छा प्रबन्ध किया जाय अभी तक उस्का कुछ उत्तर प्रकाश नहीं हुआ देखें कब लाट साहब इसपर अपना मन्तव्य प्रकाश करते हैं; इसमे कुछ संदेह नहीं इन लोगों को उत्तम शिक्षा दे दुर्दशा में पड़े रहने देना सरकार के राजकीय प्रबन्धों मे बड़ा धब्बा है; हम यह मानते हैं कि सरकार का यह कर्तव्य नहीं है कि कालेज के यावत् उत्तीर्ण छात्रों को सदरआला डिपटी या तहसीलदार बनाही दे यह तो सर्वथा असंभव है पर यह भी तो न होना चाहिये कि इन बेचारों को सिवा टीचरी के सोभी (अब दुष्प्राप्य है) दूसरा कोई रोजगार न मिले; डइरेक्टर तथा कालिजों के प्रिंसिपल सदा यह शिकायत करते हैं कि लोग उच्च शिक्षा का लाभ नहीं उठाते पर लोग क्या बेवकूफ हैं जो अपने लड़कों को सैकड़ों रूपया खर्च कर डिगरी पास कराय अच्छी २ नौकरियों के लिए निकम्मा कर दें; जब वे देखते हैं कि मिडिल

क्लास से सब मतलब निकल आता है और लाट साहब भी उतने ही से तृप्त हैं तब अधिक पढ़ाने का झगड़ा क्यों लगाना; एम, ए, बी,ए, से तो बहुधा हाकिम लोग चिढ़ते हैं कहते हैं ये घमंडी होते हैं; इसी से बहुतों ने यही सिद्धान्त कर लिया है कि मिडिल क्लास या इंट्रेंस पास कर हाकिमो की खुशामद करनाही नौकरी का ठीक द्वार है; बंगाल मे उच्च शिक्षा के बढने का यही मुख्य कारण है कि वहां डिगरी पास किए लोगों को नौकरी मिलने का बड़ा सुबीता है; कुछ इसी ढंग का प्रबन्ध क्या यहां नहीं हो सक्ता मखतबों के पढ़े लाला मुल्ला भाइयों से क्या हमारे बी,ए, एम, ए, अच्छा काम अंजाम नहीं देंगें ? हाल मे दो एक एमए मुनसिफ कर दिये गए वे पुराने अध कचड़े मुनसिफ से कहां चढ़ बढ़ कर समझदार और कार गुजार निकले यह किसे विदित नहीं है; जो प्रति हमारे पास मेमोरियल की आई है उस्मे इस बात को खूब युक्तिं पूर्वक दिखलाया है हमे पूर्णं आशा है लाट साहब इसपर ठीक २ विचार कर एम, ए, बी,ए, लोगों का यथोचित समाधान करेंगे इस निवेदन पत्र मे ८ उपाय बताई हैं उन पर लाट साहब को सविशेष ध्यान देना चाहिए। अन्त मे हम यह भी सूचित करते हैं कि विलायत से जितने 'सिविल' 'मिलिटरी' 'मेडिकल' या 'इंजिनियरिंग' के महकमो मे आते हैं सब 'कांपिटिटिव' इमतिहान मे छांटे जाते हैं यहां भी उसी प्रकार छांट क्यों नहीं होती हम किसी का पक्षपात नहीं चाहते किन्तु यह कहते हैं कि अच्छे २ ओहदों के लिए योग्यही पुरुष छांटे जावें जिस्मे प्रजागण को सुख मिले और सरकारी काम भी भली भांत निबहे; माल और पुलिस के महकमे मे इस्का विशेष खयाल रहना चाहिये दोनो महकमें ऐसे हैं जि

न्मे राजा को प्रजा से बहुतही सामीप्य सम्बन्ध है इन अधिक बड़े डिपटी तहसीलदार या पुलिस इन्स्पेक्टरों से हाकिमों की खुशामद अलबत्ता भरपूर निबहती है सो न भी निबहैगी तो कौन हानि है प्रजा तो जुल्म से बची रहैगी।

निगाह रूबरू।
ज़रा इधर भी।
सस्ते से सस्ता।

हमारे पत्र को लोग बदनाम करते हैं कि यह बहुत महंगा है यह किसी कहैं कि इसके अद्भुत और चमत्कारी लेख के आगे इतना मूल्य अति स्वल्प है खैर जो हो इस बदनामी मिटाने को हम इसकी पिछली ४ जिल्द ३ री ४ थी ५ वीं ६ वीं जिल्द की बाकी संख्या डाक व्यय समेत ४) में देंगे पहली और दूसरी जिल्द की सब संख्या अब बाकी न रहीं इसी लाचारी है ४ थी जिल्द की भी पहलीसंख्या नहीं है पर उससे कोई प्रस्ताव टूटता नहीं इन ४ जिल्दों में अनेक उत्तमोत्तम प्रस्ताव मृच्छकटिक आदि कई एक नाटक और उपन्यास तथा बहुत से परिहास के चुटकुले और राजकीय विषयक अच्छे से अच्छे सामयिक प्रबन्ध छपे हैं पढ़नेही से मालूम होगा अपने मुह अपनी तारीफ़ व्यर्थ है पर शर्त यह है कि जिन्हे लेना हो दाम पहले भेज दें पीछे से किचर करना अच्छा नहीं इतने पर भी जा कोई न पढ़ै तो शरम है और एडिटरी को धिक्कार है।

मिडिल क्लास से हिंदी तथा उच्च सिक्षा का विनाश

गवर्नमेंट आर्डर नम्बर १४८४ ए लिखा हुआ तारीख़ १६ वीं जूलाई सन् १८७७ ई० फिर २४ मार्च सं १८८३ ई० के पश्चिमोत्तर देश और अवध की गवर्नमेंट गजेट में छपा है उसमें यह लिखा है कि १ ली जनवरी सन् १८७९ ई० से वह आदमी १०) को और इससे ऊपर की जगह अंग्रेजी दफ्तरों में न पावेगा जो एन्लाव

र्नाक्यूलर मिडिल क्लास की परीक्षा में पास नहीं होगया है और उक्त परीक्षा में उर्दू वा फ़ार्सी अपनी दूसरी भाषा नहीं रक्खी है और जिन दफ़तरों में उर्दू या हिन्दी में काम होता है उन दफ़तरों में १०) और इससे ऊपर की जगह उसी को मिलेगी जिसने उस भाषा में मिडिल क्लास की परीक्षा पास की हो जिस भाषा की उस दफ़तर में दर्कार है अर्थात उर्दू दफ़तर में उर्दू और हिन्दी में हिन्दी की यहा पर लोगों को यह भी याद रखना चाहिये कि पश्चिमोत्तर देश और अवध में ऐसे दफ़तर बहुत ही कम हैं और नहीं हैं के समान हैं जिनमें हिन्दी में होता है और उर्दू के तो दफ़तर सब जगह बहुत से हैं और जो आदमी युनीवर्सिटी के ईं ट्रेंस को उर्दू या फ़ार्सी दूसरी भाषा ले कर पास किए हुए हैं वह ऊपर लिखी हुई परीक्षाओं को पास किये हुए लोगों से उत्तर गिने जांयगे और ऐसे २ पास किये हुए लोग जो दफ़तरों में भरती होंगे उनकी परीक्षा उस बात में भी ली जायगी जिस बात की उस दफ़तर में दर्कार है अंग्रेज लोग और किरानियों को १०) की और इससे ऊपर की जगह वे उनके ऊपर की लिखी हुई परीक्षाओं का पास किये हुए मिलें गो उनमें केवल इतना ही देखा ज यगा कि उन्होंने यथा सं शिक्षा पायी है यह ऊपर का लिखा हुआ गवर्नमेंट आर्डर अभी इन लोगों से कुछ संबन्ध नहीं रखता है अर्थात पु लिस वालों से और उन लोगों से जिन की तलब इम्पीरियल, प्राविंसियल वा इनकार पोरेटेड लोकल फण्ड से नहीं दी जाती है वा जिन दफ़्तरों में भरती होने को जुदी २ परीक्षा नियत हैं वा जिनकी नोकरी लाट साहब से पूछ कर तब पक्की होती है।

इस ऊपर लिखे हुए गवर्नमेन्ट आर्डर का नियम तो बहुत अच्छा है यह तो बड़ी आवश्यकता की बात थी कि कोई पैमाना जरूर मुकर्रर होना चाहिए जिससे नाप के लोग सर्कारी दफ़्तरों में नोकरी पाया करें न कि सिफ़ारसी टट्टू बन कर पढ़े लिखे ख़ाक नहीं सर्कार के यहां नोकर हो गए और पढ़े लिखे लोग घास खोदते रहे।

हम आशा करते हैं कि यह नियम जिन २ दफ़तरों से अभी संबन्ध नहीं रखता है उनसे भी जलदी संबन्ध हो जाना चाहिए। अब हम आगे यह लिखते हैं कि यह सर्कारी हुकम है तो बहुत अच्छा पर इसमें दोष क्या २ हैं जिनके कारण हजारों पढ़े लिखे लोगों की निगाह में यह सर्कारी हुक्म अन्यायी और अपकारी जान पड़ता है वास्तव में यह सर्कार का हुकम अति न्याय विरुद्ध और अपकारी हैं कि जिन दफ़तरों में अंग्रेजी भाषा में काम होता है उनमें भी वही आदमी भरती हों जिन्हों ने मिडिल

क्लास वा इनट्रेंस की परीक्षा में दूसरी भाषा उर्दू वा फारसी ली हों अर्थात् हमारी गरीब हिन्दुओं के लड़के जो मिडिल क्लास या इंट्रेंस की परीक्षा में निपुणता सहित पास किए हैं पर इस बात के अपराधी होने के कारण कि उन्हों ने उर्दू वा फारसी छोड़ संस्कृत वा हिन्दी में दूसरी भाषा की परीक्षा दी है इस लिए इन बिचारों को अन्तिम जीविका की आशा का फल भी न मिलेगा अर्थात् सर्कारी नौकरी भी न पावेंगे । शेषमग्रे ·

स्वामी दयानन्द सरस्वती का शोक वृत्तान्त ।

यह भी हम इस हिन्दुस्तान हतक के अभागही कहेंगे कि इस्को ऐसे हितैषी परलोक यात्रा के लिए दत्त चित्त हो झट पट सिधार गए ; सिवा कतिपय प्रतारक धूर्त ब्राह्मण और कोरे पण्डितों के जो इनकी गुप्त नीति के मर्म समझने को सर्वथा असमर्थ हैं और कोई प्रसन्न न हुआ होगा ; हा आर्य समाज की बाहु टूट गई सरस्वती का भाण्डार लुट गया यहां की बिगड़ी समाज के संशोधन का फाटक ढे ·या ; यह इन्हीं महात्मा का पुरुषार्थ है कि भारत वर्ष के धर्म तत्व का सर्वस्व वेद जिसे बड़े २ विद्वान ब्राह्मण भी केवल पाठ मात्र पढ़ लेने को अर्थ ज्ञान की ओर से निपट मूर्ख थे और कुछ भी न जानते थे कि इस्में क्या चोल बिलार भरा है सिवा मक्षिका स्थाने मक्षिका के सो भी केवल पाठ मात्र से अर्थ से क्या सरोकार उसे अब जाति और चारो वर्ण के लोग समझने लगे और अब बहुतों के मन मे लगी है कि इस वेद रूपी अगाध महोदधि मे गहरी डुबकी मार इस्की था लेना चाहिये कि इस्में क्या २ रत्न भरे हैं अतिरिक्त वेद के उद्धार के हिन्दू समाज की सैकड़ों बिगडी बातों के सुधार ने मे भी कोई कल बल इन्हों ने न छोड़ रक्खा कद्रमरदुमबादमरदुम सरस्वती महाशय के न रहने पर अब इनकी कदर लोगों को होगी कसे जौहरी जिन्हों ने हीरा को कांच सम झ रक्खा था चाहो जो कहैं पर हमतो इस अंग्रेजी " माटो " सिद्धान्त Speak well of the dead. पर दृढ रह दयानन्द की सर्वतो भाव से सराहनाही करेंगे ।

मूल्य अग्रिम ३॥) पश्चात देने से ४)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ लो को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Nov. 1883. Vol. VII.] [No. 3.
प्रयाग कार्तिक कृष्ण ७ सं० १९४० जि० ७ [संख्या ३

हितूविरानोबन्धुहै अनहितबन्धु
विरान। वनकीबूटीहितकरै
तनरुजहरतपरान॥

राज नीति के परमाचार्य चाण
क्य का यह बचन बहुतही ठीक
है देखिये अमरिका देश वासियों
से हमारा क्या सम्बन्ध जिस देश
का हम लोग पहले नाम भी न
हीं जानते थे वहां के लोग हमा
रे हित के लिये कैसी दौड़ धूप

कर रहे हैं हमारी डूबती हुई सांख्य और योग शास्त्र मयी नौका के उभाड़ने मे कारनल आलकाट और मेडम ब्लूवस्की का प्रयत्न कैसा बढ़ता जाता है उक्त कारनल साहब का विचार है कि प्रधान २ नगरों मे संस्कृत की पाठशालाऐं स्थापित करें हाल मे यहां ये साहब सुशोभित हुए थे और अपनीउत्तेजक वक्तृताद्वारा यहां के रईसों को ऐसा उभाड़ा कि बड़े २ मनहूस मटिया फूसों ने भी जोश मे आय प्रत्येक व्यक्ति सौ सौ दो२ सौ चन्दा लिख दिया और दो तीन हजार रुपया झटसे दस्तखत हो गया यद्यपि पाठशाला होना तो महा दुर्घट और शेख चिल्ली का खयाल मात्र है पर आलकाट साहब तो अपने प्रयत्नसे न हटे ; वही हमारी सरकार है हिन्दी संस्कृत की पूरी सांसत देख भाल करभी भली तरह सन्तोष नहीं हुआ अब हिन्दी की सुहावनी बेलों को सुखाने और उसे जड़से उखाड़ने के, लिये कैसी गहरी सुरंग लगाई है अंगरेजी स्कूलों मे जो बालक निज मातृ भाषा को रुहारे अंगरेजी भाषा मयी नीति देवता के, आराधन रूप अनुष्ठान मे लग रहे हैं उनकी कुसुम सदृश कोमल उत्साह पर कैसी वज्र धारा की कुल्हाड़ी चलाई है; हा निर्दयी निठुर विधाता कई सौवर्ष तक पाप शील यवन बादशाहों से हमारी दुर्गति कराके तू अभी सन्तुष्ट नहीं हुआ तो अब उन नरेशों के हाथ से हमारी सांसत कराना तूने आरंभ किया जो बड़े पुण्य शील बनते हैं और न्याय का बाना बांधे हुएहैं खैर हमेतो दुर्गति भोगने का अभ्यास पड़ा हुआ है सब कुछ सह लेंगे पर धर्म शील न्याय शीलो के धर्म औरन्याय मे धब्बा लगना अच्छा नही है हे पश्चिमोत्तर और अवध के प्रभु वर लायल प्रतापी है दयालु यशस्वी रीड हे कुशाग्रबुद्धीस्मिटन हे उन्नत हृदय बैरी महानुभाव सिक्रेटरियो हम सब हिन्दू और हमारी

भाषा हिन्दी ने आपका कुछ ऐसा अपकार नहीं किया जिस्से चिढ़ कर इस्के निर्दलन मे इतनी बड़ी उग्र राज कीय शक्ति का वर्ताव किया जाय कि जो हिन्दी के साथ अङ्गरेजी मे उत्तीर्ण हों उन का इतना अनादर किया जाय यदि इस पंक्ति भेद रूप ज्वाला नल की लपक मे झुलस २ हम सब पीड़ित होंगे तो यह दोष किस्को होगा हमारे खोटे कर्म को वा उन उर्दू के पक्षपाती गुरु ओं को जिनकी मंत्रा धौन हो गवर्नमेंट प्रजाकी पुकार नहीं सुनती; आपके अमोघ शस्त्र के प्रहार योग्य बड़े २ अहेर उछल रहे हैं उन पर उन शस्त्रों को क्यों नहीं छोड़ते सब से बड़ी डाकिनी मूर्खता है जो बड़ी २ हवेलियों मे दखल और साम्राज्य किये हुए है उसे क्यों नहीं मारते ; जुआ बहादुर पुलिस के अधिकारियों की कृपा से लालटीकरगरज रहा है तस्करों का नाटक जो नगर२तथा दिहातों मे सदैव हुआ करता हैं उस्के ग्रीष्म का ठीक वृत्तान्त ही आप तक नहीं पहुचता यह सब एक ओर रहै आपही का एक अङ्ग पुलिस का महकमा हम गरीब दुखियाओं को क्लेश पहुचाने मे क्या कम है क्या सरकारी क्या गैर सरकारी जबरदस्त का ठेंगा सिर पर जो गरीब के लिये सन्तोष का एक और शान्ति पहुचाने वाला मंत्र है इसका भेदीही दुर्लभ होगया हां सरकार माल गुजारी कौड़ी २ अदा हो सरकारी खजाने मे पहुच जाया करे बस हो गया इसी एक महा सिद्धि के,विश्वास, पर समस्त शान्ति विघातक शत्रुओं से आना कानी कर उस्के बदले हमारी दीन भिखारिन हिन्दी पर नृपाज्ञा रूप कठोर अस्त्र शस्त्र चलाना न किसी प्रकार राज धर्म के अनुकूल है न वीरों के लिये कीर्ति कार कहै।

होहै वही जो राम रच राखा।

हम लोग जो आस्तिक हैं ईश्वर का होना तो किसी न किसी त

रह पर मानतेही हैं तब जो ईश्वर है तो साथही इस्के यह मानना भी बहुत मुनासिब जान पड़ता है कि जो उसे मंजूर है वही होता है लाख सिर पटको कभी एक जर्रा भी उस्की मर्जी के बाहर कुछ होहीगा नहीं यदि ऐसा है तो बहुत सी उलटी पुलटी घटनाओं से यह निश्चय हमारे जीमे पत्थर की लीक सा हो गया है कि उसे मंजूर कभी नहीं है कि हिंदुस्तान अपनी गिरीदशा से फिर उठै इस सिद्धान्त को पुष्ट करने वाले सैकड़ों दृष्टान्त हैं खैर कहने को हमारे इस पश्चिमोत्तर मे यह बड़ा दोष आघुसा है कि यहां के लोग नितान्त कूर कायर और कम हिम्मत हैं इस कारण इस्की उन्नति नही होती हम पूछते हैं बङ्गाल तो इन दिनो उद्यम साहस लियाकत और तेजी की छोर को पहुंचा है खैर हम लोग पड़े २ सड़ा करते बङ्गालही कुछ करतूत कर देखाता; सच पूछो तो बङ्गालियों का हद के बाहर इतना उफनाना ही उन्हे आगे बढने से रोक रहा है और अंगरेज कर्मचारियों की नजर मे बङ्गाल हिन्दुस्तान भर मे खटकता है बल्कि और २ प्रदेशों के लिये मानो नमूना होता जाता है कि इन पर से शासन का बोझ हलका कर जरा भी आजाद किया कि ये अंगुली थांमते पहुंचा पकड़ने का मन करैंगे इसी तालीम आदि कई बातों मे अब इन्हे आगे न बढ़ने दो कहिये सिद्ध हुआ कि हिंदुस्तान का बढ़ना उसे मंजूर नहींहै; इन प्रान्तों मे हिन्दी के लिये हद से जियादह कोशिश हुई छोटे से छोटा भी कोई नगर न बच रहा जहां से डाक्टर हंटर साहब के पास हिन्दी के लिये निवेदन पत्र न पहुंचा हो जिस्का फल यह देख पड़ा कि जो हिन्दी थी उस्की भी जड़ कट गई नहीं तो क्या काम था कि पुराने दबे दबाए सरक्युलर पर फिरनये सिरसे जोर दिया जाता कि जो उर्दू पढ़ा नही

गा उसे १०) की नौकरी भी सरकार से न मिलेगी इसका कारण भी हम यही समझते हैं कि ईश्वर को मंजूर नहीं है कि हिन्दी समेत हिन्दुओं की तरक्की हो वल्कि संस्कृत या हिन्दी पढ़ने वालों को वह यातना भोगना चाहिये कि जन्म पर्यन्त याद रहै; लार्ड रिपन साहब कमर बान्ध हिन्दुस्तान की भलाई पर मुस्तैद हुए और यही प्रण कर लिया कि चाहो जोहो हम हिन्दुस्तान को विना स्वर्ग भूमि किये और यहां के एक २ आदमियों को विना इन्द्रासन दिये न रहेंगे तो यह परिणाम दृष्टि गोचर हुआ कि अंगरेज साथ क्या विलायत मे, क्या यहां उनके जानी दुश्मन, हो गये और आगे को शायद इस बात की सख्त ताकीद रहैगी कि अब ऐसे उदार गवर्नर जेनरल यहां न भेजे जांय लोग कहते हैं हिन्दुस्तान के बद किस्मती का ओर आ रहा है थोड़ी ही कसर है पुरानी फसल कट जहां नई आई सब अच्छा ही अच्छा होगा यहां नयों का रंग ढंग तेज मिजाजी और कुचाल देख यही निश्चय होता कि पुराने तौभी भले कितनी बातें उनकी सराहने योग्य हैं नयों के चाल चलन से तो यह देश औरहु जद्द रसातल को पहुंचेगा; हाल मे स्वामी दयानन्द सरीखे देश हितैषी का ऐसा जद्द सुरधाम सिधारना भी हिन्दुस्तान की ओर से ईश्वर की बुरी इच्छा का नमूना है; आगरे मे हिन्दू मुसल्मानो की आपस मे लड़ाई भी वही बात है नहीं तो क्या अब यह होना चाहिये कि सरीहन देखरहे हैं कि आपस की फूटही ने एक तीसरे को हमारे मान मर्दन के लिये सात समुद्र के पारसे लाय हमारे ऊपर खडा कर दिया चाहिये अब भी साहुत से चल आपस मे मेल रक्खें हमदोनो का जो इसी भूमि के उदरसे जन्मे हैं एक प्रकार का समुदाय हो जाने से ताकत और

जोर बढ़े सो न होकर व्यर्थ को मजहबी झगड़ों के पीछे आपस ही से कटे मरते हैं यह ईश्वर की इच्छा नहींतो क्या है? हमने बहुत दिनो तक इस बेहूदगी के पीछे सिर पचाया और अनेक यत्न किया कि अपने भाइयों को समझाय बुझाय उन्हे राह लगा एं और इस देशको स्वर्ग सरिस त स्वर्ग तुल्य करदें पर अणु मात्र भी कुछ किया धरा न हुआ तब गोशे निशीनी इखतियार कर इस सिद्धान्त पर अमल कर बैठ रहे "अपना चेता होत नहिं प्रभु चेतातत्काल"॥

—०—

कलकत्ते का प्रदर्शन भी हमारी ही मूड़ी कूचने को होता है।

यह कलकत्ते का प्रदर्शन यहां का रुपया खीचने को एक बड़ा भारी पंप या नहर है यहा "इंडस ट्रियल एक्सहिबिशन" समझा गया है सो "मूल नास्ति कुतः शाखा" जब इंडसट्रीही यहां के लोगों मे नहीं है तो उसका प्रद र्शन कैसा? अंगरेज जिनमे हर-तरह की कारीगरी हुनर और निपुणता बढ़ी हुई है और भरपूर इसकी चाह और कदर है वेही इस प्रदर्शन से खातिरखाह फा इदा अलबत्ता उठावेंगे और इ-स देश के दूर २ के राजा रईस और उमरा महीनो तक जिल्लत उठाय धूर फांकते पहुंचैंगे और प्रदर्शन महा यज्ञ मे वैभवोन्माद प्रकाश करते लाखों की आहुति देंगे पास न होगा कर्ज़ काढैंगे न जांय ऐसी हिम्मत या साहस कहां ज़रा हिच किचांय रेजीडें ट तथा स्थानीय गवर्नमेंट अफ्स-रों के क्रोधाग्नि के स्वयं आहुति बन जांय खैर गयेभी तो अनोखी वस्तुओं को देख मन से टूट मान अपने २ राज्य की प्रजा मे वैसी इंडसट्री बढाने को प्रोत्साहित हो सो कभी आजन्म होना नही काठकी पुतलीही ठहरे धक्के खा-य रुपया बरबाद कर वैसेही कोरे के कोरे बने चले आवेंगे; उचि

न था कि सरकार पहले हमारे देश मे हर तरह के हुनर और दस्तकारी फैलाने की सहज उपाय स्थान २ मे आर्ट स्कूल उस खर्च से नियत करने की चेष्टा करती जो खर्च प्रदर्शन मे सरकार उठाया चाहती है जब अच्छी तरह इंडसट्री का स्वाद यहां वलों को मिल जाता तब यह प्रदर्शन भी जां और हमे लाभ दायक था नहीं तो अवश्य ही विलायत का रुपया बढ़ाने को यह एक सुगम उपाय है॥

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती के लोकान्तर गमन का शोक सम्वाद।

हा आज भारतोन्नति कमलिनी का सूर्य अस्त हो गया; हा वेद का खेद मिटाने वाला सद्वैद्य गुप्त हो गया; हा दयानन्द सरस्वती आर्यों की सरस्वती जहाज की पतवारी विना दूसरे को सौंपि तुम क्यों अन्तर्ध्यान हो गये; हा सच्ची दया के समुद्र; हा सच्चे आनन्द के वारिद; अपनी विद्यामयी लहरी और हितोपदेश रूपी धारा से परितप्त भारत भूमि को आर्द्र कर कहां चले गए; हा चार दिन के चतुरानन इस असभ्यता प्रिय मण्डली में आप ने अपनी विलक्षण चतुराई को क्यों इस प्रकार सरल भाव से फैलाया; क्या आप नहीं जानते थे कि काल कराल ने भारत को असाध्य आरत बनाने के निमित्त ब्राह्मणों से तपः स्वाध्याय विद्या छीन विषय लंपट और शिश्नोदर परायण बना दिया; क्षत्रियों को ऐसा चौपट और लतमर्द कर डाला कि वे बेचारे किसी कामही के न रहे; वह धनुर्वेद वह अस्त्र शस्त्र विद्या वह शूरता वीरता वह अमर्ष जो अग्नि की उष्णता समान उनका स्वाभाविक धर्म था अब कहीं देखने सुनने को भी न रहा जिनके पूर्व पुरुषों की संगति से जङ्गल के रीछ और बन्दर भी सुधर कर बड़े सधीर और योद्धाओं की पदवी को प्राप्त हुए

और देवताओं की कोटि में मिल गए अब उन्ही की सोहबत संगति में वह विकार हो गया है कि बड़े २ स्वाभाविक और प्रकृतियों को स्त्रैण किम्वा क्लीव भाव सहज में प्राप्त हो जाता है जहां वशिष्ठादि महर्षियों की शिक्षा और नीति विद्या का विचार होता था वहां ढाढी कत्थकों की कथा से कालक्षेप होता है सो ऐसे कौतुकी काल कराल को तुच्छजान आपने मुनियों की हत्ति निधड़क हो ग्रहण कर लिया यह न समझा कि वह निठुर निर्दयी काल आप की प्रतिज्ञा और सत्य सङ्कल्प को पूरा होने देगा या नहीं; हा अब वे परोक्ष वल दर्शक शृगाल गण जो तुह्मारे सिंहनाद की भय से छिपते फिरते थे आज ऊंचे टीलों पर बैठ पूंछ फटकारेंगे; वे उच्छिष्ट भोजी पेटारथू कौवे जो अपने पेट के कारण तुह्मे वैरी जानते और कांउ कांउ करते डोलते फिरते थे सो सब आज कैसे मन मगन हो अनन्द बधाई बजाएंगे; इस्मे कुछ सन्देह नहीं कि इस अभागी भारत की भलाई और कल्याण के प्रयत्न से आपने अपने जीवन पर्यन्त एक क्षण का अन्तर भी नही डाला क्या महन्त और मठाधीशों के समान आप भी सुखा श्रय और देहाराम नहीं हो सक्ते थे वैकुण्ठ पहुचाने का वीमा और स्वर्गीय भोग विलास की हुंडी का व्यौहार फैलाते तो हजारों लाखों चेले चेलियों के तन मन धन को बात की बात मे आत्म सात और समर्पण करा सक्ते थे; हा निर्लेप निस्खार्थ शिक्षा प्रदायक; हा बन्धु, वात्सल्य कुल कुमुद सुधाकर; इस नीच और खोंटे भाव भरे भारत देश मे भटकते २ आप कहां से आ गये; हा स्वामी दयानन्द; आपका यह पवित्र विग्रह यूरप खंड के किसी देश मे इस गुरुभाव के साथ प्रगट हुआ होता तो जिस उन्नति शैल के शिखर तक पहुंचाने की सीढ़ी आप बना रहे थे उस्को अवश्य पूरा कर देते और

देश का देश आप का सहकारी और सहायक बन जाता वे न केवल आपके पवित्र नाम और सत्कीर्तिही के संस्थापन का उद्योग करते वरन अपने कर्तव्य कर्म को उत्तरोत्तर ऐसा चमकाते कि एक दयानन्द रूपी मूल प्रकाण्ड से सहस्रों दयानन्द रूपी शाखा प्रशाखा प्रगट हो जाती और भारत श्री विघातक काकसृगालों का चणिक प्रमोद जो आपके अन्तर्ध्यान होने का सम्वाद सुन कर उत्पन्न हुआ है उस्का अंकुरही न जमता; आप का वहवेदार्थ यंत्र और अपूर्व सदाव्रत जो आपने ब्राह्मणो की सोहाग पेटारी से निकाल आर्य मात्र के लिये सुगम कर दिया है कभी न वन्द होने पाता; हमको क्योंकर आशा हो कि आप के उस भारी बोझ उठाने और असिधारा पथ पर चलने का फिर भी कोई साहस बांधेगा हम खूब जानते हैं कि आप उस निर्विवेकी विधाता के मुख में कारिख पोतने गए हैं जिसने इस पवित्र भारत भूमि को सृजकर उस्के योग्य सत्पुरुष न पैदा किया; हा भारत भारती बन राजकेशरी इस उलाड़ बिजाड़ विपिन को सनाथ किये बिना क्यों इस बेग से ऊपर को उठ धाये क्या कोई पाखण्ड मत सुरलोक मे भी फैला है जिस्के निर्दलन के लिये आप झट पट वहां को सिधारे; सच २ आप की पवित्र आत्मा देवताओं के समुदाय पति होने के योग्य थी इसमें कुछ संदेह नहीं आप सरीखे देश हितैषी महात्माओं का पवित्र विग्रह इस असार संसार मे चिर काल तक नहीं रहता इस बात को प्रत्यक्ष साक्षी के लिये बहुत से ग्रंथ विद्यमान हैं जिस प्रकार मन्दाग्नि और क्षुधा रहित रोगियों के जठरानल धधकाने को सद्वैद्य लोग कटुतिक्त अम्ल रसों का व्यवहार करते हैं ऐसेही सद्धर्म विमुख और तत्व भ्रंशित जनो के मुरझाये चित्त की प्रफुल्लता के लिये मूर्तिपूजा खण्डन प्रभृति युक्ति को

आप काम मे लाए आपके इस भावको यातो प्राचीन महर्षिगण जानते होंगे जिनके हार्दिक्य अभिप्राय के मूल पर आपने इस कष्ट साध्य व्यवसाय को उठाया था या वे देशहितैषी उन्नत हृदय जानते होंगे जिनके मानसिक सरोरुह पर देशोन्नति किरण धारी भगवान् भास्कर का प्रकाश पहुंच गया है; इस प्रसङ्ग के समाप्त करने के पूर्व यह अल्पज्ञ अपना अभीष्ट खोल के कहता है कि जिस पुरुष के अनुताप मे यत्किञ्चित् निवेदन किया गया उस्को मेरी जान पहचान केवल एक बार हुई थी जिस्को १३ वर्ष से अधिक बीते कि यहां वासुकीश्वर पर थोड़ी देर तक संस्कृत मे बात चीत हुई तब से स्वामी जी कई बार यहां पधारे पर इसने अपने को उनकी शिक्षा जनित कर्तव्य के अयोग्य बन्धनासक्त समझ फिर उनसे न मिला अब उनके शान्त होने का समाचार सुन उन बातों को कह सुनाया जो आर्य पद धारियों को इज्जत करनी चाहिये; अब सब सज्जनो से उचितानुचित की क्षमा मागी ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि भारत की जड़ताम्धकारापहारी दयानन्द सा कोई दूसरा सूर्यजलद प्रगट कर दे; हमको उस सत्पुरुष के शुद्ध भाव और सत्य सन्धानता पर विश्वास होता है कि उक्त सत्पुरुष के आरंभित कार्यों मे कभी विघ्न न होगा किन्तु जिन सज्जनो के भरोसे यह कार्य स्वामी जी छोड़ गये हैं वे लोग इस समर्पित कार्य को बड़ी उत्तमता और उज्वलता के साथ चमकायेंगे यह कुछ नई बात नहीं है सदैव से अच्छे २ लोग अपने प्रियतमो को अपना कर्तव्य कार्य सौंपते आए हैं देखिये संध्या समय भगवान् भास्कार जगदन्धकार नाशनकार्य अग्निदेव को सौंप कर आप अस्ताचल को सिधारते हैं और सबेरे अग्निदेव सूर्य के भरोसे विश्राम करते हैं इन दोनो की परस्पर मैत्री और सहायता का

कभी विश्लेष नहीं होनेपाता; यह कौन नहीं जानता किस्वामी जी को मत् शास्त्र और सद्विद्या का प्रचार और भारतवर्ष की मूर्खता न्धकार निवारण तन मन से अङ्गी कार था जो अपने अङ्ग अङ्ग और रोम रोम से समय प्रति समय प्रकाशित कर चुके हैं इस अवस्था मे उन विद्वानो को जो संकेत मात्र से प्राणीमात्र के भाव को बूझ सक्ते हैं वैकुण्ड वासी स्वामी जी के मुख कमल निश्रित आशयों के मूल पर उनके अभिलषित भाव का समुत्थान कठिन नही है किन्तु जहां. ऐसे विरल विद्वान विद्यमान् हैं कि यदि इस बड़े कार्य्य की पूर्त्ति के लिए वे नियुक्त किये जांय तो निस्सन्देह अपनी विद्यामयी धारा से सोच उस वृक्ष मे फल लगा सक्ते हैं जिनको उक्त सत्पुरुष प्रफुल्लित और हराभरा छोड़ गया है; कुछ अचरज नहीं है जिस कार्य्य समर्पित मण्डली के सभा शिरोमणि यावद्.र्य कुल कमल प्रभाकर श्री महाराणा उदैपुर प्रभुवर हैं वह कार्य्य अवश्य निर्विघ्न और उत्तमता के साथ उन्नति शैल की चोटी तक पहुचेगा और सदा सर्वदा रक्षित रहैगा ॥

पं—एकसारग्राही प्रयाग-

———

स्वर्गलोक की यात्रा भारतेंदु से।
नया नहुष वा नया त्रिशंकू।

मैंने परम कारुणिक सच्छिद्र दरिद्र महाराज की बहुत दिनों तक सेवा करके परम लाभ उठाया कि कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ हो गया। स्त्री पुत्रादिकों के छोड़ देने से वैरागियों में फर्स्टग्रेड हुआ भिक्षा मांगने से इस हेतु न डरा कि आज कल हमारी सर्कार के अधिकारी लोग भी तनक तनक सो तुच्छ बातों में चन्दा करते हैं. "यथाराजा तथाप्रजा:" चोरी करने में इस्से बडा उत्साह हुआ कि श्रीकृष्ण जो हमारे परम देवता हैं उन्हों ने भी माखन और गोपियों के चीर चुराए. तथा हमारे गुरू श्री व्रजेश जी महाराज ने भी पार्सल चुराई। और ख्यालात हतकड़ी को इस्से बड़ी कदर की कि हतकड़ी वेड़ी आशकों का यह गहना है, मान जा कहना है ऐसेही

रहना है, इसी प्रकार बेंत भी सेत मेत बड़ी भीति से खाए कि अनेक लोग श्री जगन्नाथ जी में जान बूझ कर आग्रह से भेंट देकर बेंत खाते हैं, तो यह दर्बार भी कुछ कम नहीं है क्योंकि यह भी जगन्नाथ हैं। और प्रभू यिशू मसीह भी तौ शूली दिए जाने से सब जीवों का अपराध क्षमा कर सके तो मैं भी अदालत से बेंत खाने से लोगों को छोटे २ जुर्म माफ कर सकूंगा ? या दागी बदमाश होने से बड़ी २ तहकीकातों में हमहीं रईसों की तरह बुलाए जांयगे॰ संयोग वस दो एक बार जेलखानों में भी जाने की आवश्यकता हुई तौ कुछ पर्वाह नहीं श्री कृष्ण के पिता बसुदेव जी और माता देवकी भी तो जेल में रहीं । वह बेफिकिरी का अलौना भोजन, वह दस आदमीयों को सङ्ग लेकर खाना, वह दिन भर मेहनत करना. वह बे खबर सोना, इसमें वह घर वालों के ऊट पटांग स्वप्न और बर्राना आदि ऐसा सुखदाई हुआ कि किसी बड़े आदमी बढ़िया के साज को हजारों खर्चने पर भी इतना सुख न मिला होगा। अर्दली के दो चार सिपाई आगे पीछे दस बीस भाई साथ में॰ चलते समय चरणों से नूपुरध्वनि ऐंठ ऐंठ कर चलना, लड़कों का हंसना, बाजार वाले आदमियों का आक्षेप करना सभी कौतुक दिखलाता था रही विपत्ति और अपनी तंग हालत॰ इसके लिए नल, राम, युधिष्ठिर, वा बहादुरशाह, वाजिदअलीशाह आदि की कथा याद कर लेते थे निदान घूड़े केभी बारह वर्ष में दिन फिरते हैं, मेरे गुरु सद्गुरु श्रीश्री ठों तत्सत् विष्णु पाद स्वामी ने अकस्मात दर्शन दिए मैं उनके चरणों में गिर पड़ा और कहा महाराज " दारिद्र्यार्णवमग्नम्" उनको दया हो आई मुझे एक चुटकुला बताया बेटा दिवालीकी महारात्रि में लक्ष्मी नारायण ह्रदय के एक सौ आठ पाठ कर तुझे सम्पत्ति मिलेगी मुझे कुछ पाठ पूजा में बिश्वास तो था ही नहीं पर दिवाली जो आई, तो मेरा भी जी ललचाया, एक पाठ जो किया या तो पहिले पाठ के समाप्त होतेही छननननन ! छत में से बीस बीस रुपए वाली अशर्फीयां गिरीं, मुझे बड़ाही आनन्द हुआ॰ नाचने लगा और चाहा कि मुहर्रम में हसे करूं, पर फिर यह सोचा कि अभी क्या है एक दांव का तो बन्दोबस्त कर लूं बस फिर छननननन ! निदान सबेरा होते २ छप्पन किरोड़ की चौथाई घर में भर ली। मेरा पाठ करते २ इतनी बेहद दौलत देख कर दम निकल गया।

श्रीमान् राज कुमार ड्यूक आफ़ कानाट का शुभागमन

सुनि लीजिए भारत की बिनती
प्रभु आइए तो फिर जाइये ना

हम चिरंजीव राजकुमार ड्यूक आफ एडिनबरा को अनेक साधुवाद देते हैं, जिन्हों ने सब से प्रथम भारत कमल को अपने चरण चंचरीकों से सुशोभित किया तदनन्तर भविष्यभावी सम्राट युवराज प्रिंस आफ्‌वेल्स राजाधिराज को कोटिशः धन्यवाद देते हैं, जिन्हों ने भारत वर्ष के प्रेम के वशीभूत होकर शशी के समान हम लोगों को दर्शन दिया। और आगे जिस दीन मन मलीन हीन प्रजा और हत सर्वस्व, निः स्वदेश का पालन करना है, उसे प्रथम से ही देख भाल लिया, जिस्से आशा है कि श्रीमान् को कोई कुतंत्री मंत्री झूंठ सच समझा कर हम लोगों को यंत्रों में न पीस डालेगा और अब अधिक अधिक प्रशंसा वाद हम लोग वीर पुंगव श्री पाट ड्यूक आफ कनाट का करते हैं जो हमें इस ईलबर्ट बिल के कठिन समय में युगल जोड़ी से दर्शन दिया। और मेरट की फौज को कमान लिया। जोकि इनके पहिले भाई वियोगी योगी आत्माराम, वा आप्त काम होकर आये थे, इस्से आते देर न हुई कि जाने की पड़ गई, पर धन्य है उस ईश्वर को, जिसे भारत का मंगल विधेय है, हमारे राज कुमार दो वर्ष तक यहां निवास करेंगे, और भारत की प्रजा का अत्यधिक विश्वास करेंगे। आहाहा! अब क्या चिन्ता है? दो बरस में तो हम ऐंग्लो इण्डियन साहबों का सारा भंडा फोड़ देंगे "हाथ के कंगन को कहा आरसी" हमारे परम उदार राज कुमार आप देख लेंगे। और आशा है कि यह दुख दारिद्र और यह अन्याय का छाता जो हमारे सिर पर है इस का हाल आप श्री दया मयी जननी के भी कर्णगोचर करेंगे। समूह भारत वासियों ने जब से राज कुमार का आगमन सुना है, परम आनंदित हैं राजकुमार के आने के दिन दिन प्रति दिन गिनते हैं, और घर घर बधाई बज रही है। क्यों न हो "आत्मा वै पुत्रनामासि" कुमार श्री मती महारानी के प्राण धन हैं, वरन्च मूल से ब्याज ज्यादा प्यारा है, हम लोगों के कहां ऐसे भाग्य! और कहां राजकुमार का शुभ आगमन! राजकुमार के आने की बधाई! बधाई! बधाई! भारतेंदु

ब्राह्मण कैसे सह्मलें।

बारम्बार धन्यवाद उस परात्पर जगदीश्वर की है जिसने अखण्ड ब्रह्माण्ड की रचना मे भांत २ की चमत्कारी प्रगट कर देखाई और हर एक लोक या भुवन को ऐसा विलक्षण बनाया कि प्रत्येक की शोभा और रंग ढंग निराले दर्शाये कितने लोक इसी भूमि मण्डल पर संस्थित हैं जिनके वर्णन मे बडे २ पौराणिक और ज्योतिर्विद भूगोल वेत्ताओं की बुद्धि चकराती है; इसी पृथ्वी मे सातद्वीप और ९ खण्ड हैं जिनमे भारत खण्ड सबसे पुनीत और श्रेष्ट माना गया है भारत खण्ड मे भी विन्ध्य और हिमालय के बीच का यह देश आर्यावर्त पुण्य भूमि कहा गया है आर्य अर्थात् श्रेष्ठ जनो का जन्म इसी आर्यावर्त मे हुआ है यह वही भूमि है जहां ब्रह्मा के मानसिक पुत्रों ने अपने तपोवल से सब तरह की विद्या और गुणो का प्रकाश किया और ब्रह्मा की सृष्टि को संपूर्ण आवश्यकीय वस्तुओंसे भर दिया उसी तरह पर उनके वंशानुवंश महर्षि गण भी तप और विद्यानुशीलन द्वारा सदैव देश की भलाई मे तत्पर रहे पृथिवी के सारे पदार्थों की जान कारी और परीक्षा कर प्रत्येक बिषय मे शास्त्र रचना की अनेका नेक ग्रंथ बनाये और उनके पढ़ने पढ़ाने मे लगातार तत्पर रहे; इन प्राचीन ऋषियों के अतिरिक्त भास्कराचार्य श्री स्वामी शङ्कराचार्य वा राह मिहर कालिदास भवभूति भारवि श्रीहर्ष आदि कितने कविवर और श्रेष्ठ विद्वान् हुए जिनकी विद्या विभव का जब ध्यान आता है तो यह चित्त चिन्ता नल की ज्वाला मे तड़फ २ झुलसने लगता है और चाहि २ कर यही सोचता हैं कि हे परमात्मा जिस भारतखण्ड को तूने सब देशों का शिरोमणि बनाया उसे अब ऐसा गिरा दिया जिसे देख राह की धूल और घूर पर का तिनका भी हंसता है जहां के राजा प्रजा पालन और धर्म की रक्षा को अपनी मुख्य वीरता समझते थे जहां के विद्वान ब्राह्मण देश की भलाई और विद्याके प्रचारको अपने तप का सारांश जानते थे दधीच ऋषिने अपने प्रियतम शरीर को इन्द्र वज्र निर्माणार्थं देदिया और अगस्ति महाराज आतापी वातापी दैत्यो को पचाय अपने जाति वाले तपस्वी मुनि और ब्राह्मणो का कितना उपकार किया सच है "परोपकाराय सतांविभूतय:" यथार्थ मे परोपकार ऐसेही बड़े कामां

को कहते हैं उस्मे सन्देह नहीं जब तक हमारे देश मे विद्या पूर्ण रूप से बनी रही तब तक यहां के लोगों का तेज प्रताप नहीं घटा अन्त को विद्या के घटने और दुर्व्यसनों के बढ़ने ही से हम ऐसे दीन हीन हो विदेशियों के वश मे पड़ भांत २ की दुर्गति के पात्र बने मुसल्मानों के राज्य मे जो २ दुर्दशायें सहीं उनके पढ़ने व सुनने से स्कूल के छोटे २ बालकों की आंख से भी आंसू टपकने लगता है और चित्त मे ऐसा क्रोध उठता है जिस्का वारापार नहीं खैर अब तो ईश्वर की कृपा से उन सब आफतों को झेल यह दिन हमारे आगये कि अब हम अपनी भलाई बुराई समझ सक्ते हैं जहां पापी दुराचारी बादशाहों का अन्याय अन्धकार छाया हुआ था वहां श्रीमती विजयिनी की शीतल चांदनी का उजियाला छाया हुआ है जिस उजियाले के सहारे से प्रत्येक प्रान्त मे हर एक जाति के लोग अपनी २ खोई हुई संपत्ति के ढूंढने और बढ़ाने मे तन मन से लग रहे हैं; इस दशा मे कैसे सोच की बात है कि हम सब ब्राह्मणो की सावन के अन्धों की भांत अब तक हरेरी बनी है वह विद्या और तपोबल जो सदैव से इनकी मान प्रतिष्ठा और भलाई का कारण था अब उस्का लेश मात्र भी इन्मे न देख अखबार नवीस हंसते हैं और भांत २ का ताना फेकते हैं अंगरेजी पढ़े नई रोशनी वालों का यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि सब ब्राह्मणोंही का बिगाड़ा है यद्यपि उनमे भी ऐसी करतूती कोई न देखने मे आई कि उस बिगड़े हुए को सुधारने मे अपनी कोई निपुणाई कर देखाते सच पूछिये तो बिगाड़ने के बदले सृष्टि के आरम्भ से आज तक जो काम ब्राह्मणो ने भलाई और सुधारने का किया वह किसी से नहीं बन पड़ा मनु लिखते हैं

"तपस्तप्त्वासृजद्ब्रह्मा ब्राह्मणान्वेदगुप्तये।
तृप्त्यर्थंपितृदेवानां धर्मसंरक्षणायच"

कारण बिगड़ने का यह जान पड़ता है कि लोग ब्राह्मणो के बताये मार्ग पर चलना छोड़ मन माना काम करने लगे वेद विद्या का प्रचार घट गया जिस्के घटाव के साथही यह देश सब बातों मे हीन दीन बन गया मुसल्मानों के राज्य मे बहुत से हिंदू अरबी फारसी पढ़ी और बड़े २ ओहदे पाये अब अङ्गरेज़ी राज्य मे भी फारसी अंगरेज़ी के पढ़ने वाले बड़े २ अधिकार पर नियत होते हैं पर देश की भलाई और धर्म की रक्षा का

नगर उन्से बहुत कम पाया जाता है जिस तरह उनके हृदय मे निज स्वार्थ साधन की आग धधक रही है उस्का शतांश सहस्रांश भी परमार्थ के उद्यम की गरमी नहीं पाई जाती दूसरा कारण इस्का यह भी है कि मुसल्मानों के समय से ब्राह्मणो ने राज काज मे दखल देना छोड़ दिया न फारसी अंगरेजी पढ़ी कि न प्रति दिन राज काज से इनका लगाव और सम्बन्ध छुटता गया जिन्हो ने फारसी अङ्गरेजी पढ़ भारी अधिकार पाया वे ब्राह्मण न थे हिन्दी संस्कृत को बक्रिया पुजोनी विद्या कह इस्से घिन करने लगी अपनी तामसी बिद्या और "गगरी दाना सूद उतराना" वाली मसल के अनुसार सौ पचास की नौकरी के मद मे ऐसे मतवाले हो जाते हैं मानो देश जाति और धर्म की भलाई से उन्हे कुछ सरोकार ही नही है; एक मुसल्मान लोग हैं कि अपने धर्म और जाति की जरा भी तौहीन होते देख प्राण तक दे डालने को सन्नद्ध हो जाते हैं वहीं हिंदू ओहदेदार राज काज मे प्रधान अधिकारी धर्म सङ्कट या जाति सङ्कट उपस्थित होने पर कान पूछ दबाय ऐसा सन्नाटा बांधते हैं मानो इनके रक्त से धर्म तत्व और वन्धु प्रेम किसी ने छान २ कर निचोड़ लिया है न उस अन्याय पर इन्हे कुछ क्रोध आवे न लोक परलोक का भय रहे न कुछ आगा पीछा का खयाल; क्योंकर हो नवे स्वयं ब्राह्मण हैं न धर्म तत्व का सर्वस्व संस्कृत मे उन्हो ने अभ्यास किया है; मुसल्मान अपनी विद्या फारसी मे प्रवीण होने के कारण धर्म सम्बन्धी काम मे कैसे जोर शोर और कड़ाई के साथ डट जाते हैं और अपना प्रयोजन अदालत और हाकिमो को समझाय खातिर ख्वाह मतलब निकाल लेते हैं; और हमारे कुलीन ब्राह्मण क्षत्रियों के बालक भी जो अङ्गरेजी के साथ संस्कृत पढ़े हुए होते तो हमारा धर्म पक्ष ऐसा अनाथ और हीन दीन न हो जाता; दूसरे कुलीन ब्राह्मणो के बालक जो सद्विद्या और गुण के न पाने से गली २ टक्कर खाते फिरते हैं और छोटे २ लोगों के सामने मे भी उन्हे डर और सङ्कोच होता है हर तरह की मजदूरी और नीच धन्धो के अङ्गीकार करने पर भी पेट भर दाना नहीं पाते न अपने धर्म को ठीक २ जानते हैं तब उस्की रक्षा का यत्न कहां रहा वेही अंगरेजी संस्कृत मे निपुण होते तो इन बिपदाओं से आप बचते और अपने

स्वदेशियों के बचाने मे भी समर्थ होते ; संस्कृत के प्रभाव से धर्म की महिमा को जानते और उस्का पच करते अंगरेजी की सामर्थ्य से राज दरबार मे प्रवेश पाते हाकिमो से भरपूर सवाल जवाब करने मे जरा भी न सकुचाते; यद्यपि अंगरेजी भाषा हमारे धर्म के अनुकूल किसी तरह पर नहीं है पर कंटकेन कंटकोद्धारः इस न्याय के अनुसार अंगरेजी से हमारा बड़ा मतलब निकल सक्ता है देश के कितने धर्मध्वजी भकुआ पुण्यात्मा बनने वाले ताल्लाव मन्दिर आदि धर्म सम्बन्धी कामो मे लाखों विलटा देते हैं जिस्से कोई वास्तविक लाभ नहीं है पर वह यत्न किसी से नहीं होता कि हर एक छोटे २ नगर और कस्बों मे एक २ सरस्वती का सदावर्त खोल दिया जाय जिस्से हजारों पुरुष तीर्थव्रत देवता यज्ञ और वेद शास्त्र के जानने वाले और रक्षा करने वाले पैदा हों हमारे धर्म शील अब भी चेत जाते और इस सरस्वती सदावर्त की थोड़ी २ सहायता भी करते तो थोड़े ही समय मे हम हिन्दुओं का दल पलट और का और हो जाता हमारी विद्या और धर्म का प्रकाशक सूर्य जो तामसी विद्या के बादलों मे छिप रहा है एक प्रकाशित हो जाता; हम अपने धर्मध्वजी पुण्य शीलों को फिर चेताते हैं आप हजार तरह का पुण्यदान इस भकुआपने से करते रहो बिना विद्या दान के सब निष्फल और फीका है विद्या दान समान कोई दान नहीं है हमारे शास्त्रकार इसे पुकार २ कह रहे हैं महात्मा योगी याज्ञवल्क्य का वचन है—सर्वधर्ममयंब्रह्म प्रदानेभ्योधिकंयतः । तद्ददत्सम वाप्नोति ब्रह्मलोकमविच्युतं—अर्थात् वेद विद्या सर्व धर्म मय है इस लिए वेद विद्या का दान सब दानो से बढ़कर हुआ जिस्के देने से दाता उस अचय ब्रह्मलोक को जाता है जहां से कभी नही गिरता; इस विद्यामय मूल के बिना सीचे धर्म उप धर्म रूप शाखा और पल्लवों का सीचना निरी मूर्खता और व्यर्थ है हम हजार पुकार मचावें पर देश के धर्म शील महात्मा क्या कभी कान दे सक्ते हैं न सही हम तो अपनी ओर से न चूके ॥

पं० रामप्रसाद तिवारी प्रयाग

घर।

घर क्या है घर किसे कहते हैं ? घर इस दो अक्षर में क्या ऐसी फिलाशोफी भरी है जिस्का विचार

आप किया चाहते हैं? वाह आप को घर की भी खबर नहीं है पहले अपना घर समझ लीजिए तब बाहर की खबर रखिए स्त्रियों में यह एक प्रचलित कहावत है कि घर रख तब गोबर पाथना होता है—पहले घर में दिया बाल तब मज़जिद में बालना चाहिए; जिसको घर नहीं उसकी कुछ इज्जत नहीं जो लोग अपना घर अपने कान्धे पर लादे फिरते हैं वे खानाबदोश असभ्य अर्द्ध शिक्षित और अनसिविलाइज्ड कहलाते हैं। नामी और बड़े घरों की स्त्रियां तो क्या कहना लक्ष्मी ही होती हैं। अति विनयवामनतनुर्विलंघ्यते गेहदेहलीमवधू:। अस्या: पुनरारभटीं कुसुम्भवाटी विजानाति॥ घर का डर न होता तो हमारे नौ जवान न जानिए क्या कर डालते। गए घर को क्या। जब घर ही गया तो रहा क्या। बहुतों का घर देख पाना अच्छा नहीं; चोर का, लम्पटों का, कुटनियों का, यम का कहावत भी तो है। बुढ़िया की मरजाने का कुछ सोच नहीं है पर यम ने ता देख पाया-घरघर फिरना उठल्लू लोगों का काम है अनुद्यम और बेकारों की निशानी है ईश्वर न करे घर बैठना पड़े। घर में घर करना। घर के भेद से जानकार होना है। मसल है घर का भेदिया लङ्काढाह। घर फोड़ना। घर खोना। घर में घर करना, सब एक बात हैं, सयाने लोगों का कौल है घर खोवै साला राह खोवै नाला। सच भी है घर में साला घुसा कि घर गया बहुतेरे बने घरानों को सालों के मनहूस कदम ने बिगाड़ कर छार में मिला दिया। इस घर का एक अजीब नाजुक मामिला है न घर का जाना अच्छा न घर रहना अच्छा; बातें हजारों किस्म की हैं पर घर की बात एक निरालेही ढङ्ग की होती है घर की बात जैसी मोतबिर और छिपाने लायक है वैसी कोई बात नहीं मामिले भी सैकड़ों कि-

स्म के हैं पर घर घरौआ मामि-
ला कुछ औरही है। कहां तक
गिनावें घरकी जितनी बात सभी
निराले ढङ्ग की हैं ; घर की बा
त झूठ नहीं होती मसला है कि
एक लाला साहब कहीं परदेश में
नौकर थे बहुत दिनों से घर न
आए उनकी बीबी ने कहला भे-
जा तुम रहे तो क्या गए तो क्या
तुम्हारे लिखे हम बेवा हो गईं अब
तुम घर क्या करोगे आपके लाला
यह बात सुन चिल्ला चिल्ला रोने
लगे पड़ोसियों ने लाला का रो
ना सुन पूछा क्या हुआ लाला बो
ले क्या पूछते हो हम पर बड़ा
गज़ब आ गिरा बीबी हमारी बे
वा हो गईं लोगों ने कहा आप
को क्या हो गया ज़रा होश की
दवा कीजिए आप तो मौजूदही
हैं बीबी बेवा क्योंकर हुईं लाला
ने जवाब दिया सब सही पर घर
का आदमी है झूठ न बोलेगा
बीबी ज़रूर बेवा हुई होंगी। आ
दमी के लिए अपना घर क्या
कोट है घर बैठे लोग बादशाह
को भी कुछ माल नहीं स[illegible]
घर बैठे जैसी चाहे वैसा [illegible]
मारा कीजिए जिनको कभी ल-
खनोवे नौबाब ज़ादों के दस्तर
खान की बात चीत सुनने का
मौका मिला है वे खूब समझते
होंगे उस वक्त वे ज़मीन और
आसमान का कुलाबा मिलाते हैं
रूम और शाम की सलतनत को
भी कुछ माल नहीं समझते ; घर
के साथ घर वाली का भी होना
ज़रूर है बिना जिसके घर का
सब मज़ा फीका है सच पूछो तो
घरवाली ही से घर है "गृहेदी-
रैर्मिधन्ते गृहमेधिनः" हम हज़ा
र २ अपना प्रभुत्व प्रकाश करें
पर हमे घर वाला कोई न कहे
गा घरनी घरवाली घर के लोग
सब से प्रधान वही हम कोई ची
ज़ नहीं मानो हमे कोई सरोकार
ही घर से न ठहरा ; खैर जब
घरवाली हुई तो घर की रौनक
घर की रोशनी घर के चिराग
गृहदीपक लड़के बाले हुए घर
भर गया ; आहा इस दुःख मय

[illegible] संसार में घर ही तो एक [illegible] और सब सुख का केन्द्र स्थान है home is the centre of all pleasures बाहर हज़ारों तरह की झौंझट मान अपमान और तरद्दुद उठाय कैसाही रंजीदा और मलीन मन हो घर पहुंचतही लड़के तोतरी बोली से बाबा २ पुकार जहां आकर लिपटे कि सब दुख भूल जाता है रूई के गालों समान उनके कोमल अङ्गों का स्पर्श क्या है मानो विविध सन्ताप ताप तापित मन के प्रफुल्लित और हरा भरा करने को नव वारिद की सुधावृष्टि है; घर क्या है मानो मन ऐसे सयाने कौवा के फंसा रखने को माया जाल है, स्वच्छन्दतापहारक मोहनमंत्र जपने की सिद्ध पीठ है; संसार चक्र की भूल भुलैया है; ज्ञान सूर्य के प्रकाश का अच्छादक वितान है; महामोह महाराज के आसन पर सुशोभित होने की तख़्त ताऊस है; ममतामयी नौका के खेने की पतवारी है; भांत २ की जां फ़िशानी और तरद्दुद में फंसा रखने को गोरख धन्धा है; यह ऐसा क़िला है जहां बैठ २ मनुष्य काम आदि प्रबल ६ शत्रुओं को जीता चाहे तो सुख से जीत सक्ता है; यह वह यज्ञ वेदी है जिस पर देवता और पितर दोनों समय २ अपना २ भाग पाय तृप्त हो सक्ते हैं; चारो आश्रमों में गृहस्थ आश्रम सब में श्रेष्ठ हैं; घर का इन्तिज़ाम एक छोटी मोटी रियासत का नमूना है; घर के अगुवा के बराबर भकुआ भी कोई नहीं है बनता जाय सब के भाग से कोई बात बिगड़ी कि उस अगुआ के माथे बिसानी घर वाले सब उसे कोंच २ प्राण चंच डालेंगे; घर की साहुत की बराबर कोई आराम नहीं घर की फूट की बराबर कोई बुराई नहीं; जिस घर के मर्द औरत बन बैठे और औरत मर्दों का कान काटने लगीं उसी गए घर में दाखि

न करो "स्त्रीपुम्वच्च प्रभवति यद्दि तद्धिगेहं विनष्टं" घर की कदर आदमी को बाहर जाने पर होती है जितनही दूर और जितनही देर के लिए बाहर जाइए उतनहीं घर की कदर बढ़ती है अंगरेजों से पूछो जो विलायत को "होम" कहते हैं और घर जाने के लिए इतना आतुर रहते हैं कि ज़रा फ़ुरसत मिली कि विलायत चंपत हुए "छूट घोड़ भुसौल ठाढ़" घर की इतनी तारीफ़ से हमारा यह मतलब नहीं है कि आप हिन्दुस्तानी आइलों के माफ़िक घर ही में पड़े २ सड़ा करें ; नहीं अब गोड़ा काढ़ो चलो बाहर निकलो अब कोठरी में बन्द बैठे रहने का समय न रह गया, इङ्गलेंड, फ्रांस, अमरिका आदि बड़े २ मैदान पड़े हैं जिनमें तुम अपने पहलवान नसीब के साथ कुश्ती कर भांत २ का उद्यम हर तरह के विज्ञान और शिल्प के द्वारा सब प्रकार के दाव पेंच देखा सको तो हमारी सीख मानोगे भला होगा बिहिश्ती और स्वर्ग के देवता तुल्य बन कुन्दन से झलकने लगोगे न मानो मुंह में कालिख पोत जोरू के गुलाम बन लम्बी तान घरही में पड़े २ सोया करो "व्यापारान्तरसुत्सृज्य वीक्ष्यमाणोवधूमुखं। योगृहेष्वेव निद्राति दरिद्राति स दुर्मतिः।

मिट्टी खराब।

सब से पहले अखबार नवीसों में हमारी मिट्टी खराब है ; ऐंग्लो इण्डियन में लार्ड रिपन साहब की मिट्टी खराब है ; स्वच्छन्दचारिणी स्त्रियों में रमाबाई की मिट्टी खराब है ; पोंगा पण्डितों से व्यवस्था देकर काशी के पण्डितों की मिट्टी खराब हुई ; कचहरी के प्रचलित अक्षरों में कैथी की मिट्टी खराब है ; लाला भाइयों मे पटवारियों की मिट्टी खराब है ; होनहार कलकत्ते की बड़ी नुमाइशगाह में छोटे २ हिन्दुस्ता

की रईसों की मिट्टी खराब होगी नए सरक्युलर के अनुसार अंगरेजी दफ्तरों में हिन्दी के साथ इम्तिहान पास करने वालों की मिट्टी खराब है; अपना धर्म छोड़ विधर्मी हो जाने वालों में ईसाइयों की मिट्टी खराब है; निपट मूर्ख और असभ्य मण्डली में एक सुपठित की; अदालत में नए वकीलों की; विलायत की कारीगरी के सामने देशी चीज़ों की; सुन्दरी नारियों के बीच भद्दी माड़वारिनों की; रेज़ीडेंटों की खुशामद करते २ राजाओं की मिट्टी खराब है; पुराने तअस्सुबी मुसलमानों के बीच सैयद अहमद खां की मिट्टी खराब है; नेचर वादी नास्तिकों में ईश्वर की मिट्टी खराब है; अवधपंच से बनिया अखबार की मिट्टी खराब है; इस रोशनी के ज़माने में हिन्दूपन की मिट्टी खराब है।

स्वामी दयानन्द का वियोग।

सोरठा।

हाय! हाय!! हा!!! काल तोसि बस काहु ना चलै। बड़ विक्रम दस भाल, ताहू कहँ तुम भच्छिगो॥१॥
महा धनुर्धर बीर, अस्त्रकला महँ कोउ न भे। अस अर्जुन बरबीर, ताहू कहँ तुम भच्छिगो॥२॥
करण द्रोण कुरुराज, भोज परीछित विक्रमा। रघु न्रृग पांडु दृराज, ताहू कहँ तुम भच्छिगो।३।
ऐसे समथ सभार, जुगल बीर प्रगटत भए। सरजँग सरसालार, ताहू कहँ तुम भच्छिगो॥४॥
दाया कीर निधान, दायानन्द सरस्वती। बकता वेद प्रधान, ताहू कहँ तुम भच्छिगो॥५॥

दोहा।

दायानन्द सरस्वती, गुर्जर कुल अवतंस। अबहीं थोरे उमिर महँ क्यों? तन कियो विधंस॥१॥
कै प्रतिमा पूजन हिते, सुर पुर होत विचार। ता खण्डन करिवे हिते गए शक्र दरबार॥२॥

कै नरपुर सब जीति कै, सुरपुर जीतन हित। कंचुल इव तन त्यागि कै भागेउ छपानिकेत ॥ ३ ॥
कै कछु मन शंका भई, बेद अर्थ के मांहि। सो ? पूछन हित चलि गए, सत्वर ब्रम्हा पांहि ॥ ४ ॥
दायानन्द सरस्वती, देशोन्नति हित आप। जितो परिश्रम करि गए तितो तुमारोइ ताप ॥ ५ ॥
अबतो पण्डित अस अहैं, लिखत व्यवस्था झूठ। धर्माऽधर्म गुनैं नहीं, गथ चाहत हैं मूठ ॥ ६ ॥
तुम तो चन्दा करि किते, विद्यालय थित कीन्ह। सज्जनसिंह महिन्द्र कहँ सभाध्यक्ष करि दीन्ह ॥
गुनग्राहक उदयेश बड़, जस कीन्हा सनमान। खान पान द्रव्यादि ते, कोउ नृप नांहि जहान ॥
स्वामी जब लौं थित रहे, भारत भूमि मझार। सिंह सरिस गर्जत रहे, शंकित अशक अपार ॥ ८ ॥
मूरख मुख भंजन किए, जग बकता बड़ बाम। कितने सन्मुख भे नहीं, समुझि सारदा धाम ॥
सज्जन मन रंजन करन, भंजन मत पाखण्ड। दिन दिन कीरत गाइहैं, भल जन भारतखण्ड ॥

प्रशंशात्मक कवित्त।

चारिहू दिसान नगरान मधँ जाय जाय पण्डितन हेरि बाद करिकै प्रचारे हैं। पण्डित बिवाद मांहि होइगे परास्त जेते तेते मन सौंहैं करि सौंह न निहारे हैं ॥ बगरयौ आपर जस सारे नगरान मांहि खिजै बैजयन्ती फहरात हिन्द भारे हैं। विद्या चौदहनिधान बकता महान बेद स्वामीदयानन्द सम नांहि होनवारे हैं ॥ १ ॥

बनारस लाइट प्रेस का अध्यक्ष
केदारशर्मा

—०—

श्री मान् महामान्य लार्ड रिपन का शुभागमन।

दोहा।

शुभागमन रिपनागमन गाओ मङ्गलचार। बोलो जय २ जै रिपन जै २ रिपन उदार ॥ क्षुद्र बुद्धि ऐंग्लोंडियन सुनत भये जर छार। कबहुं उलूकन सुख नहीं देखत रवि उदगार ॥ भारतबासी जन सकल। भये परम सतकार।

मानों संपति सकल सुख । आई उन आगार ॥ सोरठा ।

हे प्रभु ऐसेहि लाट सदा २ आया करें। चिरजीवहु तुम तात लाट रिपन सुन्दर अनघ ॥

आइए प्रभुवर आइये आप सरीखे उपकारो के लिये हम आंख की पुतली बिछा दें तो वह भी कम है; एक समुद्र है जो इस अवसर पर खुशी के जोश मे खौल २ उमड़ रहा है कौन ऐसा है जो इस खौलनि को रोक सके; क्या कतिपय ऐंग्लो इंडियन कम गिनत अवाल हृदं भारत वासियों के प्रमोद मे खलबली कर सक्ते हैं? क्या उनका इलवर्ट के नाम रो २ कर सिरपटकना रिपन चन्द्र के दर्शन से हमे मन्दादर कर सक्ता हैं? कभी नहीं—फरदर प्रोटेस्ट कमिटी के नाम से रेलवे स्टेशन के सामने ऐन आगमन के समय उनका मुर्ग बिसमिल की तरह तड़फड़ाना और चिल्लाना कौन सुनता है—इस जोश मे मानो तवे की बूंद थी—जिसे देखो वही प्रसन्न वदन श्रीमान् के देखने को दौड़ा जाता है; प्रयाग नगर ने इस समय एक अनोखी पोशाक पहिन ली जैसी इसने पहले कभी न पहनी थी दो मंजिले ति मंजिलों पर दीपावली की कतार और गैस की रोशनी मे वेलकम और रिपन की जैजै आदि सजावटें देखने वालों का मन हरे लेती थीं कोठे अटारियों से श्रीमान् पर पुष्प वृष्टि मानो स्वर्ग के पुष्प वृष्टि का अनुकरण थी; श्रीमान् श्रीमती लेडी रिपन के साथ जोड़ी पर सवार हँसते मुसकिराते प्रसन्न वदन शहर से होकर गुजरे श्रीमान् का ईषत् हास्य "मनसे मनको राहत" मानो इस बात का नमूना था हम लोग उनके आगमन से जैसा प्रसन्न हुए वैसाही महामान्य लाट साहब भी हम सबों का उत्साह देख मन मगन फुटेहरा हुए जाते थे इस अवसर पर इलाहाबाद ने एक अनोखी छबि धारण कर ली जिसके उत्तरार्द्ध भाग अंगरेजी बस्ती मे इलवर्ट बिल के नाम का स्यापा पिट रहा था इधर दक्षिणार्द्ध हिन्दुस्तानी बस्ती मे होली दिवाली का उत्सव था ईश्वर ऐसे शुभचिन्तक हितैषी के आगमन से योंही हमे सदैव उत्सव करने का दिन देखलाता रहे ।

मूल्य का नियम

अग्रिम ३।) पश्चात ४।)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA

[illegible]दीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Dec. 1888. [illegible] २ सं० १९४०

Vol. VII.] [No. 4. [illegible] [संख्या ४

॥ हिन्दीमेध महायज्ञ ॥

इस हिन्दीमेध महायज्ञ का समारंभ पश्चिमोत्तर और औध गवर्नमेंट का सदर मुकाम इस तीर्थराज प्रयाग में होगा जिसकी

प्रति[illegible] [illegible]ार्च सन १८८३ की गव[illegible] [illegible] आर्डर नम्बर, १०५६ की ह[illegible]ी गई है जो मार्च ३१ सन[illegible] [illegible] की उर्दू गवर्नमेंट गजट[illegible] पृष्ठ १५८ में छपा है

और इसका विचार आज्ञा नम्बर १४६४ सन १८७७ मे हो चुका था परन्तु यज्ञ की पूरी सामग्री उस समय इकट्ठी न थी उस समय के महान् याजक और आचार्य सरजार्ज कूपर सा[illegible] बहादुर को लखनऊ मे इतना अवकाश न मिला इस लिये अपने अनुगामी महात्मा के लिये छोड़ रक्खाथा सो अब काल की प्रेरणा से सब संयोग आमिला है इस यज्ञ का दीक्षित यजमान, हिन्दी प्रदीप का इडिटर होगा क्योंकि इस ने इसकी सेवा बहुत दिनो तक कीहै इस यज्ञ के प्रधान आचार्य श्रीमान् लायल प्रतापी हों [illegible]की अनुमोद से इस यज्ञ का [illegible]ता है इस वध्य पशु [illegible] मज बूत खम्भा अंगरेज[illegible] [illegible]ना यगी जिस्की संभा[illegible] [illegible]प से इस हिन्दी वध्य पशु [illegible]स ह वन के योग्य समझा [illegible] है वा की रहे होता ब्रह्म[illegible] त्विक् आदि सो उनका काम [illegible] बड़े छोटे सिक्रेटरी मिलके करलेंगे परन्तु उपदृष्टा का काम बड़ी हिकमत का है उसपर कोई होशियार आदमी होना चाहिये सो उसके लिये बेहतर होगा कि सैयद अहमद [illegible]र सी एस आई वा उन [illegible]रीफ लावेंगे ; इस यज्ञ मे गुण प्रशंसक और पुराण सुनाने वाले की भी जरूरत पड़ेगी तो कोई खिताबी राजा बुला लिये जांयगे वा खुद पहुंच जांयगे पशु प्रोक्षक के अधिकार पर कोई डाक्टर वा डइरेक्टर का नियत होना आवश्यक है ; यह हिन्दी रूपा पशु उसी तरह अंगरेजी मयी शिक्षा के यज्ञ स्तम्भ मे वध के निमित्त बांधा जायगा जिस प्रकार पूर्व काल मे राजा मरुन्त के यज्ञ मे शुन:सेफ बांधागया था जिस्को विश्वामित्र जीने वरुण राजा का मंत्र बतलादिया था कि जिस्को पढ़ने से वरुण देव प्रसन्न हो शुन:सेफ को जीव दान दिया और राजा का यज्ञ भी पूरा हो गया, वैसाही हिन्दी मेध यज्ञ के प्रधान

देवता वरुण राज की भांत भूमि पर पुरन्दर लार्ड रिपन हैं जिस प्रकार शुनःसेफ को विश्वामित्र सदृश प्राणरक्षक मिलगये और उसी दिनसे शुनःसेफ अपने विक्रेता बापका गोत्र छोड़ विश्वामित्र गोत्री हो गया ऐसाही कोई विश्वामित्र सदृश हिन्दी का प्राणरक्षक भारत हितैषी रूप मिल जाता और अपने मंत्री पदेश से भूमिपुर पुरन्दर लार्ड रिपन को प्रमुदित कर हिन्दी का प्राण बचाता और उसे अपने गोत्र मे मिलाता नहीं तो क्या कीजिये कुछ चारा नहीं है हिन्दी टुकडे २ हो यज्ञ कुण्ड मे होम की जायगी; इस यज्ञमे माल और दिवानी के बडे २ ओहदेदार यज्ञ दर्शक होंगे उर्दू इस यज्ञ मे नाचेगी फारसी मजीरा बजावेगी अरबी सब रीत भांत बतावेगी और हिन्दी के प्राणान्त समय संस्कृत पुरानी बुढिया दांत बगार २ रोवेगी पादरी लोग इस महायज्ञ, मे अभिषिक्त का मंत्र पढेंगे भूरासी, दक्षिणामें बेरिस्टर और वकील आदि याचक को मार्जिकपर्णों की फाजिल कापियां पुनी २ या टुकडे २ कर बांट दी जांयगी तब यज्ञ की पूर्णता मे कुछ बाकी न रहेगा हां एक बात की अवश्य कसर जान पड़ती है कि इसयज्ञ का दीक्षित यजमान् हिन्दीप्रदीप का एडिटर द्रव्यके विषय मे निष्किञ्चन है वह इतने बडे यज्ञकी मांगता कहां पावेगा सो इसलिये उचित होगा कि हिन्दी मेध यज्ञ की मांगता मे बडे २ हिन्दुस्तानी रईसों की थोड़ो२ नाक काट ली जाय यज्ञ सम्पूर्ण—शुभं भूयात् शान्तिःशान्तिःशान्तिःहरिःओंशान्तिः

—०—

मनन शील के मन महोदधि की मौज।

गत अङ्क मे श्रीमान् ड्यूक और महात्मा लार्ड रिपन के आगमन का आनन्द वृत्तान्त और उनके आगमनी की जो २ तैयारियां और सजावटें की गईं सब हम लिख चुके हैं; खैर श्रीमान् ड्यूक

के आगमन से हम लोगों को जो कुछ हर्ष हुआ सब ठीक है जिसे वेही समझ सक्ते हैं जिन्हो ने हम दीन हिन्दुस्तानियों के राजभक्ति को परख की है पर यह बात कुछ दिनो तक याद रखने लायक है कि शिमले से लाट साहब के उतरतेही भारत भूमि लाहोर से कलकत्ते तक क्यों हरी भरी हो गई ? यह दीन अबला जो अचेत निद्रा मे मग्न पड़ी सो रही थी एक बारगी क्यों जाग उठीं ? कलकत्ता लाहोर आदि बड़े २ शहर के रहने वालों को राज भक्ति सूचक प्रमोद प्रगट करने की इच्छा क्यों हुई ? अब यहां पर यह भी अवश्य लक्ष्य करने योग्य है कि निग्रहानुग्रह कर्त्ता अपने राजा के देखने और उस्के आगत स्वागत की लालसा प्रजा मे स्वाभाविक है जब से अंगरेजी अमल्दारी यहां हुई हम अपनी भूस्वामी का नाम सुनते आए पर उनके दर्शन की कोई आशा न थी जब महाराणी राज राजेश्वरी के औरस पुत्र ड्यूक आफइडिनबरा यहां आये तब से सबों को निश्चय हो गया कि महाराणी को हमसे सच्ची प्रीति है नहीं तो अपने प्राणाधिक तनय को इतने दूर देश में न भेजतीं; जब महाराज कुमार युवराज प्रिंस आफ वेल्स यहां आय सुशोभित हुए तब तो यह अनाथ भारत उन्हे अपने अंचल से ले सनाथ और कृत कृत्य हो गया; इतिहासों को किताब की किताब उलट डालो यह किसी देश के इतिहास मे न पाओगे कि एक विदेशी राजा अपने देश से जब किसी दूसरे मे गया हो तो वहां वाले केवल इस ख्याल से कि ये राज कुमार हमारे होनहार राजा हैं इतने जोश और सरगरमी के साथ उनका आगत स्वागत किया हो प्रिंस जहां गये वहां यही समझे गये मानो साक्षात् देवताही स्वर्ग से उतर कर आये हैं; अब कि बार महाराणी के तृतीय सूनु ड्यूक आफ कीनाट ने अपनी प्राण प्रिया

सह धर्मिणी के हमारे देश मे अपने पहले दो भाइयों के समान निरीसैर और देशाटन् की इच्छा से नहीं आये वरन फौज का कमान ले कुछ दिनो तक रहने की इच्छा से यहां आये हैं तब इनका आतिथ्य सत्कार जो बन पड़ै सब उचित हैं; परन्तु लार्डरिपन की अबकि वार जो इतनी खातिरदारी और इनके साथ इतनी सहानुभूति प्रगट की गई सो क्यों ? क्या यह कह सक्ते हैं कि ऐसा मुन्तज़िम न्याय परायण और उदार चित राजनीतिज्ञ statesman हिन्द मे अब तक कोई नहीं आया था ? क्या लाट रिपन के समय जो बंगाल के जमीदारों की जड़ खोदी जाती है वह हमे नहीं याद है ? विद्या विभाग की ओर भी किसी कदर दांत लगा है यह हम नहीं समझते ? नहीं २ हम यह सब जानते हैं पर सच यह है कि अंगरेजी शिक्षा जैसी अब इस देश मे है पहिले न थी गवर्नमेन्ट और जिस उसूल और बुनियाद पर गवर्नमेन्ट का शासन चल रहा है पहले इस्की हमको भरपूर खबर न थी अब पार्लियामेन्ट का सब हाल हमे सिर्फ मालूम ही नही है वल्कि हमारे मुल्की आदमियों को उसमे भरती होने का हौसिला बढ़ रहा है अब हमारे भाई बन्धु लिबरल और कान्सर्वेटिव मंत्रिपद के भेद को अच्छी तरह समझने लगे हैं; लार्डरिपन महाराणी और सर्व साधारण अंगरेज मात्र British public को हम यह साबित किया चाहते हैं कि लाट रिपन के समय एतद्देशीय ज्युडिशियल ओहदेदारों में भारी ओहदा पाने की अयोग्यता जो भूल से अबतक समझी गई थी उस दागके धोने और मिटाने की तदबीर जैसी श्रीमान् लार्डरिपन और उनकी कौंसिल के सभासदोंने की उसपर एंग्लो इंडियन का समूह का समूह लागो हो जो क्रोध प्रकाश किया और करता जाताहै और रिपन

महामान्य उनकी क्रोधकी बाढ़को सब तरह पर बड़ी दृढ़ता और गंभीरता के साथ रोक रहे हैं यह सब उसी की एहसान मन्दी जाहिर करने के चिन्ह हैं जिस्से सङ्कीर्ण हृदय ऐङ्गलों इंडियनों को अवभी निश्चय हो जाय कि इस हिन्दुस्तानियों से उनको कभी किसी तरह धोखा होने वाला नहीं है तब इस भाव से बट्टा लगाय उनका इतना सङ्कीर्ण हृदय बन जाना महान् मूर्खता और व्यर्थ है॥

हम।

जहां देखो और जिस बात मे देखो उसी में इस हम का लगाव पाओगे सच पूछिये तो आदमी की पानी भरी खाल मे सिवा हम के और है क्या? हम हमी हैं हमी नहीं तो आप कहां आप के बाप कहां। मूदो आंख कतौं कोउ नाहीं। माल है, मताल है, खचा खच खजाना भरा है, सात खण्ड को शीस महल है, ऐश और आराम की सब सामिग्री मुहैया है, एक बार के कटाक्ष मात्र से मन को अपनी मूठी मे कर लेने वाली एक से एक चढ़ बढ़ नयना मृत वर्षिणी वाम लोचना सुलोचना नितम्बिनी ललना हैं; हुआ करो हमे क्या। हम नहीं जग नहीं। आप मुए जग मुआ गोरख धन्धा रूप यह प्रपञ्चात्मक जगत भर हमारे लेखे मानो श्मसान तुल्य निर्जन अरण्य है क्यों कि इसका जानने समझने वाला हम न रहा। जब तक हम रहे खूब खाया पिया लिया दिया हम उठकर चले गये कौन खाय पिये कौन ले कौन दे। बिना हम भाव मनुष्य नहीं मिटी का पुतला है इस हम का कुछ विलक्षण क्रम है बुराई करैं तो उसमे भी हम भलाई मे हम तो बने बनाए हैं कहीं गये ही नहीं। इस समय हिन्दुस्तान मात्र को एक सिरे से दूसरे तक झकोर डालने वाला इलबर्ट बिल का

ख्यापा क्या है वही हम भाव का
परिपाक ; हम जेता हैं हमारा
रंग गोरा है हम ब्रिटिश वार्न
सबजक्ट हैं हमारा न्याव इन
सड़े काले आदमियों से किया
जाय यह मरे २ कभी न होगा।
देहम्बा पातये कार्यम्बा साधये ।
उजड़ जांयगे बिलाय जांयगे को
ड़ी के तीन २ होंगे पर हम भाव
न छोड़ेंगे। बड़ा २ दान किया
बड़े २ यज्ञ किये बहुत कुछ लंग
र लुटाया सो सब क्या बिना इस
हम के यावत् कर्म मात्र मे आदि
की प्रतिज्ञा ही यह है । अमुको
हं अमुक कर्म अहं करिष्ये । एक
एक बार भी नहीं दो २ बार
उसी हम का प्रयोग करेंगे। बाह
रे हम कहां तक इस हम की
गीत गावें सांख्य प्रक्रियानुसार
महत्तत्व से इसकी उत्पत्ति है दसो
इन्द्रियां और उनके अधिष्टात्री
देवताओं ने अलग २ और सब
मिल अनेक तरह की चेष्टा कि
या पर बिना हम के बिराट पुरु
ष को न उठा सके। नोदतिष्ठत्
ततोबिराट्। जीव से ब्रह्म की
अभिन्नता प्रतिपादक भी यही
हम है तत्व मसि और सोहं आ
दि अजपा जप इस बात को
सिद्ध कर रहे हैं। हम यह अ
नाम किसी का नाम नहीं औ
र सब का नाम है इसे चा
हो स्त्री कहो चाहो पुरुष कहो
चाहो दोनोमे से एक भी न कहो
तुह्मे इखतियार है अलिङ्ग युष्मद
स्मदी—हम हिन्दुस्तानीयों का
हम अपना पन छोड़ मजूर बन
हुजूर के कदमो मे जा बसा सिवा
दासत्व स्वीकार के प्रभुता को क
हीं गन्धि भी न बच रही हुजूर
के गुलाम हैं तारबसुआ रैयत हैं
आपकी गोए हैं। बेकश हैं। ला-
चार हैं। वशम्वद हैं। रक्त सम्वा
हिनी शिराओं मेसे किसी मे हम
को उष्णता वाकी नहीं है। काठ
की पुतली बने बैठे हैं चाहो वारो
चाहो उवारो हजारों लात और
घूसे सह कर भी आप खाविन्द,
हैं हुजूर की खाक सारी से हटने
वाले नहीं; उधर इस हम भाव

निर्विशेषेण पश्यतीति पशुः। कोई यह न समझे कि जितनी खानी पीनी पहिननी ओढ़नी गानी बजानी तरह तरह की तरहदारी और वजेदारी की चीजें हैं जिनसे पृथ्वी का प्रत्यक भाग इस प्रचुरता के साथ पूरित है वैसी बनी बनाई धरती पर पड़ी मिल गई हों नहीं ये सब कालानुक्रम में छिपट मनुष्यों ही की विचक्षण बुद्धि से उत्पादित हैं कोई ऐसा देश नहीं जहां इस अद्भुत शक्ति का प्रचार न हो कोई ऐसा काल नहीं जिस मे इसकी चाल न हो; पहले पहल हमारे रोजोने की साधारण से साधारण वस्तु भी नई रही होगी उन्ही सबों का अधिक बर्ताव हो जाने से किसी तरह का नयापन novelty अब उसमे न रह गया; हम समझते हैं पहले आदमी की यह सृष्टिही एक नोवेलटी रही होगी; कोलम्बस ने पहले पहल जब अमरिका महाद्वीप प्रगट किया तो यहां के जंगली असभ्य निवासियों को कोलम्बस और उसके साथी देवता जचे और उनके चित्त में यहां तक नवलता का उद्गार हुआ कि साष्टाङ्ग प्रणिपात पूर्वक कोलम्बस को देवदूत समझ अपने को कृतार्थ माना; यह नवलता "सिविलिजेशन" सभ्यता का सार है यूरोप की कोई एक देश जो सभ्यता के सीमा को पहुचे हैं वहां के लोगों में इस नवलता की यहां तक तराश खराश और चित्थाड़ है कि बात २ में "नोवेलटी" देखी जाती है किसी पार्टीयाबाल में दो आदमियों की पोशाक में कमीज़ का बटन भी जो एक सा हुआ तो नोवेलटी न रही; भारतवर्ष के नागरिक जनों में नवीन वस्तूत्पादक यह शक्ति शायद सब से पहले प्रचलित हुई पर जैसी अनुपम और आश्चर्य जनक वस्तु और २ देशों में बनती हैं यहां वैसी न हो सकीं इसका यही छोटा सा उत्तर हो सकता है कि यहां वालों में नवोत्पादक शक्ति तो और २ देशों की अपेक्षा न्यून नहीं है पर उनके बर्ताव पर ध्यान नहीं दिया जाता; दूसरा यह भी कारण है कि यहां का पवन पानी कुछ काल से ऐसा दुष्ट हो गया है और लोगों की मानसिक सामर्थ्य काल चक्र के ऐसे ऐसे हेर फेर में फसी रही और अब तक फसी है कि उनके कलुषित मनों में वह स्वच्छता रही ही नहीं जो नवीन और उत्तम पदार्थों के निकालने में अपेक्षित है और जिसका प्रशंसनीय उदाहरण कालिदास आदि

कवि और विश्वकर्मा आदि शिल्पकारों में था ; देश में दूसरे का स्वामित्व असने ही से सब उत्तमोत्तम गुण यहां वालों के पलायमान हो गए धन से छीण हो गये पराधीनता और दीनता ने घर कर लिया और आलस्य का मधुर विष यहां के वायु मण्डल मात्र में फैल गया ; नये पदार्थ निकालने का व्यवसाय यूरोप के स्वाधीन और निर्दोष पवन पानी में बहुतही बढ़ गया है ; इस नवलता को जो कि हमने अंगरेजी शब्द "नोवेलटी" के पर्याय में अति निकट मिलान का हिन्दी शब्द ले लिया है अपने पाठकों के प्रयोजनार्थ हम दो प्रकार का कहेंगे। प्रथम वह नवीन पदार्थ जो पहले न थे और पदार्थों के संयोग वियोग से उत्पन्न हुए और अनोखी विलक्षणता रखते हैं जैसा रेल यह पदार्थ पहले न था पर भाफ पारा अग्नि आदि के संयोग से एक अद्भुत शक्ति वाला यंत्र विशेष पैदा किया गया इसी भांत २ की इन्जिन, घड़ी, तार, थर्मामिटर, बैरोमीटर, छापा, कागज, कपड़ा आदि अनेक वस्तु आ गईं दूसरे वे जो सदा से जगत में विद्यमान थे पर ज्ञात न थे और अब ज्ञात हुए हैं जैसा पृथ्वी की आकर्षण शक्ति वायु में स्थित स्याम इलेक्ट्रोसिटी विद्युत् और पृथ्वी की गोलाई आदि ; अब जो पदार्थ हमारे पहले निकल या बन चुके हैं वे हमारे लिए नवीन नहीं हैं पर उनके लिए थे जिनके समय वे निकाले गए ऐसे पदार्थों की गिनती करना पढ़ने वालों का व्यर्थ को सिर दुखाना है केवल यही कह देना ठीक है कि जिस२ समय जो २ बातें नई निकलती आईं वे सब अपने २ समय की नवलता थीं। आज कल फ्रांस में लेडियों की नई २ भांत की अनेक प्रकार की पोशाकें निकलती आती हैं इटली में नए २ प्रकार के वाद्य यंत्र पयानो प्रभृति। इंगलेंड और अमेरिका में भांत २ की कलें भांत २ के वस्त्र आभूषण नए २ खोटमोट नई २ शराबें आदि खाने पीने ओढ़ने पहिनने के सामान नई फिटिन गाड़ियां बन्दूकें बिलून टेलिफोन नये २ किस्म के जहाज डोंगी कश्ती टोपी जूती लाठी कहां तक गिनावें कितनी अनोखी चीजें नित नई निकलती आती हैं यही सब नोवेलटी हैं पाठक वृन्द अपनी ऐतिहासिक और भूगोल व्युत्पत्ति के अनुसार समझ लें। हमारे यहां पुराने खयाल के भजीयों ने यहां तक सत्यानाश किया कि पु

रोना क्रम छोड़ जरा भी किसी बात में नवलता की ओर मन चला कि भ्रष्ट नरकगामी और नास्तिक हुए हजार वर्ष से जैसा खाना जैसा कपड़ा जैसी सवारी पर चढ़ते आए हैं उस्से कसम खाने को भी तिल मात्र अदल बदल न हो नहीं तो सात पुरुष गहन अन्धकार मय नरक में लाखों वर्ष पड़े २ सड़ा करेंगे और यही कारण है कि हिन्दुस्तान का शिल्प वाणिज्य नहीं बढ़ता क्योंकि यहां तो पुराना छोड़ नये की खोज का अङ्कुर ही जो मै नही जमा; नावेलटी से देश को जो २ लाभ पहुंच सकता है किसी को छिपा नहीं है जिस बात में नई बात निकाली जायगी उसी काम की वृद्धि और उस्से लाभ पहुंचेगा और देश और धरातल की वसति मात्र पर उसका गुण होगा; नावेलटी पैदा करने की रीति यही है कि भांत २ की विद्या शिल्प और विज्ञान जो प्रगट हो चुके हैं उनको पूर्ण रूप से उपार्जन कर उस्मे अपनी शक्ति दौड़ाई जावे और जो कुछ नया निकालने की इच्छा हो उसकी समीचीनता और सार्वजनिक उपयोगिता का ध्यान अवश्य मन में हो यह केवल एक मोटा और संक्षिप्त वर्णन नावेलटी का है सविस्तार फि कभी०

श्रीधरशर्मा पाठक

॥ भारतोत्थान गान ॥

॥ श्रीधर पाठक सम्प्रणित ॥

भारत चेतहु नींद निवारो। टे० बीती निशा उदित भये दिन मणि काव को भयो सकारो ॥ निरखौ यह शोभा प्रभात वर प्रभा भानु की अद्भुत! किहि प्रकार क्रीड़ा कल्लोल मय विहग करहिं प्रातस्तुत! बिनस्यो तम परिताप पाप संग नभ नखच्छ बिलगाने। निशि चर मखब भचर तजि तजि सब भ्रमण भये झूक आने ॥ विकसे कुमुद मधुर मारुत मद सने भौंर गुंजारत! बाला नवल कमल कोमल बपु उठि निज केश सम्हारत! लगे भवे निज काज परस्पर प्रेम पाग रस चाखन! देखौ बरति रह्यो आनँद सुखउठौ खोलि दोउ आखन! गहरी नींद पड़े मति सोओ बात हमारी मानहु। "सोयखोयजागतपावत" जग कहत सत्य अनुमानहु ॥ अब अबेर मति करो बहुत नहिं पछितैहो पुनि पाछे। समझो सुभग समय चूका मति बचन हमारे

थाके ॥ तुम सोवत निश्चिन्त नीद में नेकु न सुधि काहू की ! । तुम बिन किमि समृद्धि सम्भव निज कुल निर्बल बाहू की ? ॥ बार बार बिनती हमार यह तजी वेगि तुम आलस । उठो खोलि लोचन प्यारे मति रहौ पड़े निद्रा बस ॥

राग बिहाग ।

भूमि यह उजड़ होगइ हमारी ! जो सोभा सुनियत श्रुतियन में सो सब स्वर्ग सिधारी ! ॥ कहां रहे कानन मन भावन मुनि गन बास सुखारी ? । कहं सरिता सर घाट स्वच्छ थल आश्रय त्रिविध बयारी ? ॥ कहं वे मधुप झुंड मतवारे डोलत डारी डारी ? । कहं वे मालति गंध अंध ह्वै सुधि बुधि देत बिसारी ? ॥ कहं वे हरि या बालिका यूथन निर्भय बिहरत प्यारी ? । मुनि कन्यन संग चरत केलि करु, तिन बिन होत दुखारी ? ॥ कहं वे मदन मदन घन कुंजें, कहं कोकिला पियारी ? । कहं वे सिखी लोक करठन निज आनँद नाद उचारी ? ॥ कहं वे विपिन वृच्च कोमल दल धूम स्यामता धारी ? । कहं इंगोट ढेर बन होवत वे सिसु बिटप मझारी ? ॥ कहं वे बटुक बेद उच्चारत ब्रह्म चर्य्य ब्रत धारी ? । कहं द्विज घर मध्यान्ह काल नित, अग्नि होत्र की त्यारी ? ॥ कहं वे पंडित साधु ऋषीश्वर, नृप अनर्थ अरि भारी ? । रहेन काहू ठौर देखि यह भारत होत दुखारी !!!

तुम लाख कहो करेंगे हम
अपने ही मन की ।

पुकारो तुम्हारी सुनी जायगी खटखटाओ तुम्हारे लिये खोला जायगा ईसू खृष्ट का यह कहना बिलकुल झूंठ है हिन्दुस्तानी खयाल था कि अंगरेजी राज्य में जितनाही रोना रुलाओ और पुकार करों उतनाही सरकार को अधिक और जल्द कान होता है सो एक नहीं दो २ बार देख लिया गया पर्ब्बों गोवध निवारणार्थ हिन्दुओं ने बहुत सिर

धुना अन्त को अपना सा मुहति
ए निरास हो चुप हो रहे अबकि
बार हिन्दी का आन्दोलन उस्से
बढ़ कर हुआ शिक्षा कमिशन के
पूर्व डाक्टर हंटर पश्चिमोत्तर औध
और पंजाब मे जहां गये वहां
हिन्दी हो हिन्दी की पुकार सुना
जिस्का परिणाम यह हुआ कि
हंटर साहब ने अपनी रिपोर्ट मे
हिन्दी का कहीं नाम भी न लि
या मुसल्मानो की तालीम के बा
रेमे अलबत्ता बहुत कुछ ज़ोर अप
नी रिपोर्ट मे दिया है हमे क्या
मालूम था कि हंटर हम हिन्दू
और हमारी हिन्दी के प्रच्छन्न
शत्रु हैं नहीं तो हम इन्हें मेमोरि
यल और अभिनन्दन पत्र देने के
बदले इनके पीछे ढोल पीट इन्हें
अपने यहां से भगाते फिरते खैर
सैयद अहमद खां बहादुर और
उनके चेले तथा मुसल्मान भाई
जो कुछ कहें उसे सुननाही चाहि
ये क्योंकि मुसल्मानो से सरकार
का सब कुछ सम्बन्ध और डर भी
है हिन्दुओं को तो जैसे रक्खो
वैसेही रह सक्ते हैं—राज़ी हैं
हम उसी मे जिस्मे तेरी रज़ा हो।
खैर हमारी वह बात नहीं सुनी
गई तो यह तो सुनी जाय कि
हिन्दू समेत हिन्दुओं को एक ब
ड़ी जहाज़ मे गांज इंडियन म
हासागर के मझधार मे जहाज
ले जाकर डुबो दी जाय फराकत
हो न रहेगा बांस न बजेगी बांसु
री हम लोग तो सब तरह हिन्दी
की ओर से निरस्त हो बैठे एडिट
र भारत मित्र अब उद्यत हुए हैं
अस्तु इन्ही की करतूत से हिन्दी
को सोहाग मिलै हमारी क्या
हानि है--य एव निवर्तने प्रभवति
गवां छिन्नश्छिन्नं स एव धनञ्जयः-

निष्फल ।

उजड़ु तीर्थ के पंडो को दान
ऊषर को खेती-अदालतों मे हि
न्दी ठूसने की कोशिश-डाक्टर हं
टर को मेमोरियल और अभिन
न्दन पत्र का दान- ऐंग्लो इंडिय
न मे इलबर्ट बिल का स्यापा-पु
राने खयाल मे नई रोशनी का

उमदा पन जचाने की तदबीर इस बात की आशा कि इस अभागे हिं-प्र-के कदर करने वाले बढ़ेंगे यह सब निष्फल है।

महामान्य न्याय और मिस्टर पक्षपात का मुकद्दमा।
बिनाय मुखासिमत इल्बर्ट बिल।

न्यायाधीश लार्डरिपन। न्याय नाथ बहुत दिनो से यह दुष्ट पक्षपात मुझ दीन को पीड़ा दे रहा है इसके सहायक हृदय सङ्कीर्णता और काम क्रोध आदि मेरे पिता धर्म का उच्छेदही कर डाला जिसका परिणाम यह हुआ कि मेरी प्रजा समस्त भारत वासी पराधीन हो सब तरह का दुःख सह रहे हैं मुसल्मानो के समय तो इसने मुझे अत्यन्तही जर्जरित कर डाला था हां अकबर के समय मेरा कुछ विचार किया गया परन्तु उनके पीछे कोई ऐसा न हुआ कि मेरा सुख दुख पूछता उदार शासन इस अंगरेज़ी राज्य मे कुछ आशा हुई थी कि मेरा कुम्हलाया हुआ रूप रंग फिर पहले का सा वैसाही हरा भरा हो जायगा जैसा राजा रामचन्द्र के समय मे था पर इस दुरात्मा पक्षपात को डायन वहन पालिसी ने ऐसा जाल फैला रक्खा है कि कितनी बेर मेरे प्राण कण्ठ गत कर दिये; महारानी राजराजेश्वरी ने बहुत बार चाहा कि इस अनाथ का कुछ उपकार हो परन्तु महाराणी के जितने अधिकारी आये उन सभों को इस दुष्टा पालिसी ने मोहित कर मेरी गरदन पर छुरी चलवाया ईश्वर की कृपा से अब आप सरीखे उदार प्रकृति आये तो इल्बर्ट बिल की बिनाय मुखासिमत पैदा हो गई अब आपही के हाथ निबाह है अपनी उदारता के अनुसार चाहो मुझे उबारो चाहो उसी दुष्ट पक्षपात के चेलों मे नाम लिखाय मुझे रसातल मे फेंक दो।

लाटसाहब-मिस्टर इल्बर्ट पक्षपात को बुलाकर पूछो उसने क्यों अंधेर मचा रक्खा है न्याय और

न्याय चाहने वाली प्रजाओं को क्यों पीडित कर रहा है।

मिस्टर इल्बर्ट-मइ लार्ड-यह पक्ष पास मौजूद है इसी पूछिये अपने बचाव के लिए क्या २ उजर पेश कर सक्ता है।

लार्टरिपन—अच्छा पक्षपात को जो तुमको न्याय की पुकार के उत्तर मे क्या कहना है।

पक्षपात—महाराज साहालौ-भ मैंओरू इस अहिमक न्याय का कहना सरासर बिल्कुल झूठ है मेरा बल पराक्रम जगत् बिदित किसी से छिपा नही है अपने नाम के अनुसार जो लोग मेरे कहने पर चलते हैं मे उनको बढ़ाता रहता हूं-पेट्रियाटिज्म मेराही नाम है रोम आर ग्रीसको मेंहीने बढ़ाया था और इस समय इङ्गलेंड को भी जो कुछ मान प्रतिष्टा बढ़ी है वह सब मेरेही कारण यह मेराही पुरुषार्थ है जो काले गोरे का भेद बढ़ता जाता है तब तो इङ्गलेंड निवासी केवल गोरवर्ण होने से लम्बी २ तनखाहें फटकारते हैं जो काम काले हिन्दुस्तानियों को सिर्फ २०) माहवारी देकर निकल सके उसकी जगह १००) दिये जाते हैं—किसी मुकद्दमे मे जब काले गोरों की मुठ भेड़ आ पड़ेगी तो वहां गोरों का सब तरह पक्ष किया जायगा आप को पाणिनि की परिभाषा का भी ध्यान नहीं है अन्तरङ्ग कार्यं कर्तव्ये बहिरङ्ग मसिद्ध-गौण मुख्ययो मुख्ये कार्य संप्रत्यय:-पहले घर मे दिया बाल तब मसजिद मे बालना नीति है अपने अन्तरङ्गी जन के साथ बहिरंगी जनो की तुलना कर दोनो को एक समझना यह निपट मूर्खन्या यही का काम है इसी से न्याय कोनिःसत्व समझ सबी इसे दबा लेते हैं आपतो जानते ही हैं Might is right भारतीय प्रजा के दुर्बल हो जाने का हेतु न्याय ही हुआ और इसकी सहोदर बहन क्षमा और दया राक्षसी ने तो देश का देश उजाड़ डाला जो कोई आया उसी पर दया कर

अपनी गोद मे बैठा लिया किसी ने कितनाही अपराध किया गम खाय बैठ रहे उदारता के जोश मे न्याय दृष्टि से अन्य किसी को दूसरा समझाही नहीं जो विदेशी यहां आए उन्हे अपनाही मान उनके वशीभूत हो गये जो मेरे कहने मे चलते तो ये दिन यहां वालों को कभी न भोगने पड़ते पहले के लोग अर्जुन भीम युधिष्ठिर श्रीराम प्रभृति वीर पुरुष मेरे कहने पर चलते रहे अपने देश और अपने देशवालों का पक्ष लेते रहे उस समय ये भारत वासी कैसे बढ़े हुए थे वही अब न्याय की कुमति मे फस अपना सब खो बैठे न्यायही की इच्छा से लोग आपस मे लड़ अदालत पहुचते हैं और सर्वस्व भेंट कर आते हैं हर एक के स्वभाव मे मेरा बीज मौजूद है कोई ऐसा मूर्ख न होगा जो दूसरे के मुकाबिले अपना पक्ष न करता हो पर इस न्याय ने मुझे बेदखल कर अपनापन भारत वासियों के जी से निकाल डाला अब ये निर्लज्ज हो हर एक सामने न्याया काची हो भीख मागते फिरते हैं अब इससे पूछा जाय ऐसी प्रजा की क्या हानि की और जो दोष इसने हमपर आरोपित किये वे सब इसी के हैं या नहीं।

लाट रिपन—हुक्म हुआ कि अब समय बहुत कम रहा है दूसरे, दिन दोनों मे अपने २ सबूत के गवाह और वकीलों के हाजिर हों और आज की सब कार रवाई हि—प्र—मे छाप दीजाय जिस्मे सर्व साधारण इसपर विचार कर अपनी २ राय दे सकैं।

सांच झूट निर्णयकरै नीति निपुण जो हाय। राजहंस बिन को करै छीर नीर को दोय॥

हे भारत वासियो अब वह समय आया है कि बिना हठ और पक्षपात छोड़े काम चलना कठिन है हमारे देशके बहुतेरे सम्बोधि का ढंग हितैशिता का आश्रय ले स्वार्थ साधन और कुटिल नामि

अत्यन्त परायण हो रहे हैं उनकी ऐसी कपट आचरणो से सम भाव की बदले परस्पर का वैर भाव बढ़ता ही जाता है—ईश्वर के मानने वालों ने और भी सत्यानाश किया पहले लड़ाई की जड़ तोनही कही जाती थी जन जमीन जर पर हम कहते हैं—धन धरती धर्म दार लड़ाई के घर चार एकने कहा ईश्वर काला है दूसरे ने कहा नहीं गोरा वस दोनो कट मरे—मुसल्मानो को अत्याचारी सभी कहते हैं परये ईसाई जो वड़े महात्मा बन बाजारों मे; खड़े हो सबको भाई कह कर पुकारते हैं इन्हाही ने हँजारों को जीता जला दिया अभी हाल मे एक डिपटी कमिशनर ने ईसा को खुदा मानना छोड़ दिया इस लिये वह पदच्यु,त कर दिया गया; थोडेदिन की बात है आर्य समाजी और थियोसोफिस्ट एक थे ईश्वर की भेदनेही दोनो मे ऐसा, विरोध डाल दिया कि आर्य समाज वाले इस बात पर कमर बांध, मुस्तैद हैं कि थियोसोफी को देशसे निकाल दें ब्रह्म समाज वाले कुछ निरालही तान गाते हैं उनकी समझ से मनुष्य कितानाही विद्वान् हो जबतक ब्राह्मय धर्म का आश्रयन ले संसर्ग के योग्य नहीं ऐसाही और २ मत मतान्तर को समझो यह तो हम भी कहते हैं कि बुराई को बुरा समझो और भलाई को भला परन्तु इन मतवालों की नजर मे और कोई बुराई हीं नहीं समझी गई जो कुछ बुराई है सो केवल यही कि हम ईश्वर को विनारूप के मानते हैं तुमने रूप क्यों माना वा हमने अपने ईश्वर को श्याम वर्ण चतुर्भुज माना है तुम उस्को गौर वर्ण द्विभुज पंचवक्र त्रिनेत्र क्यों मानते हो ऐसे २ हजारों मत भेद और जाति भेद से यह देश आपस के वैर के कारण छिन्न भिन्न हो रहा है; हमारा यह तात्पर्य नही है कि सबलोग एक हीमत और जाति के हो जांय जोमत जिस्को ग्राह्य स-

समझ पड़े वा जिस्मे जो है उसी-मे बनारहै पर हठ और पक्षपात छोड़ सत्य की खोज चाहै और ग्रहण करे दूसरे को निरा झूठा और जालसाज समझ व्यर्थ का वैर न बढ़ावे किन्तु आपस की प्रीती का अङ्कुर जमावे मनुष्य मात्र को अपना भाई समझे जो उन-की बात हमारी समझ मे न आ सके तो उनसे द्रोह न करले स त्य को खोजता रहै यह न सम झ लेकिन जो हम समझे हैं वही सत्य और उचित है सिवा उस्के और सब असत्य है किन्तु जहां तक हम किसि बात को सत्य स मझे हैं तहां तक उस्के अनुसार काम करें पर दूसरा जो गलत समझे है उसे द्रोह न करें इसी का नाम थियासोफी है और इ-सी का नाम फिलासोफी भी है अर्थात् सच्ची बुद्धि मानो थियो सोफी और फिलासोफी मे केव ल अन्तर इतनाही है कि फिलासो फी बाहरी बातों ही को मानती है जो बातें इन्द्रियों का विषयहो सक्ती है और बाहरीपदार्थ विद्यासे जानी गई हैं थियोसोफी मानती है कि बाह्यशक्तियों को छोड़ कु छ अभ्यन्तरिक शक्ति भी है जै-सा बाह्य पदार्थ विद्युत् भाफ आदि के गुणो से ज्ञान कारी हासिल कर रेल तार आदि भां त २ की कल बनी और जैसा कि मिसट्री वाला बाहरी शक्तियों के ज्ञान से ऐसे २ काम करता है जिसे देख लोग जो उस विद्या को नहीं जानते अचभा करते है ऐसेही योगी लोग जो आभ्यन्त रिक शक्तियों पर पूर्ण अधि कार प्राप्त कर लेते हैं वे उनके द्वारा ऐसे २ काम कर सक्ते हैं जिसे देख और लोग जो योग विद्यासे वहि मुंखहै अचंभित होते हैं-दूसरा बड़ा लाभ थियोसोफी से यह है कि जाति और मत का झगड़ा छोड़ आपस का प्रेम इ-स्का मुख्य सिद्धान्त है जिस्का ह मारे देशसे अत्यन्त विरल भाव है

———

सोते और जागते के अनूठे खयाल ।

जाड़े का मौसिम अंधेरी रात तुषार कण मिश्रित वायु बह रहा था कानों में सनसनाती ठण्ढी हवा तीर की तरह कलेजा बेधे देती थी खेत और मैदानों की ओर लक्ष्य कर बस्ती के बाहर का कुछ हाल लिखा चाहें तो यह लेखनी एक तो स्वभावही की जड़ दूसरे मारे जाड़े के ऐसी ठिठर गई है चलने का मन नहीं करती लेखिनी क्या बल्कि स्याही भी शीत से दही सी जम गई है चलती ही नहीं॰ स्याही का जिक्र क्या है स्याही रवां नहीं॰ बस्ती के भीतर के मुहल्लों का यह हाल था कि जिस गली में जाइये सूची भेद्य अन्धकार और सन्नाटा था दूर पर कुत्तों के भूकने का शब्द केवल सुनाई पड़ता था जो कहीं छाई हुई छोटी सी जगह में जहां वायु का भी सञ्चार न हो बैठे २ भूक रहे थे॰ बाहर तो सन्नाटा था पर घरों के भीतर लोग अपना २ द्वार बन्द किए कोलाहल मचाये थे जिससे निश्चय होता था कि सब लोग अपने २ काम में लगे हैं॰ कहीं किसी २ मकान के गलियारे में दीपक टिमटिमाता हुआ देख पड़ता था टढ की पोड़ा से मानो व्याह की आई बहू की भांत मारे शरम के सिर नहीं उठाता ; किसी २ घर में साठ वर्ष का बुड्ढा अंगीठी सुलगाये खों खों करता हुक्का सुड़ सुड़ा रहा था मानो अपने खों खों शब्द से जाड़े को घर के भीतर घुसने से डांट रहा है कहीं चटाई बिछाए दिया के उजाले में बालक मण्डली बांधे अपनी सबा रट रहे थे उनकी रटने धुन से यही प्रतीत होता था मानो सम्पूर्ण सरस्वती को उठा कर अपने पेट में रख लिया चाहते हैं किसी घर में कर्कशा स्त्रियों के लड़ने का कोलाहल रूम रूस के युद्ध को मात कर रहा था ; ऐसे समय पूस माघ के जाड़ों में जबसरदी खूब सुरखी पकड़े थी शीत से कांपता हुआ मैं भी घर पहुंचा सिर से तो रजाई ओढ़े था कान बन्द थे पर हिन्दुस्तानी आदतों के माफिक पैरों में मोजे न रहने से दोनों पैर हैवार हो रहे थे ; घर पैठतेही भोजन का जो खयाल आया पेट में पानी की लालच पैदा हो गई पर हाथ पांव कांप उठे दांत उसी दम से मानो अपनी जगह छोड़ने लगी खैर ज्यों त्यों किसी तरह ब्यालू कर खाट पर गया तो लिहाफ और बिछौने की ठंढई से यही बोध हुआ कि किसीने अगम पानी वाली नदी में ढकेल दिया है पर थोड़ी ही देर में जब हमारे देशकी रूई गरमाई तो यही जी में आया कि इस आराम के आगे आठो सिद्धि नवोनिधि को भी लात मारे इसी विचार में झट पट नींद ने आ घेरा देखता हूं तो एक वृद्ध महात्मा शान्त शील अक्षोद्विलित पीताम्बर पहने साक्षात शङ्कर मूर्ति मेरे सिरहाने खड़े कह रहे हैं ऐ कलियुग के कीड़े यहां ही पैदा हुआ और रहेगा पर

जिस भूमि में तू पैदा हुआ उसकी कुछ खबर भी रखता है असीम अनन्त महासागर जिसे तू कालापानी कहता है उसके दूसरे छोर के आदमी तेरे यहां आय तुझे बहुत कुछ सिखाया पढ़ाया पर आंख न खुली वैसा का वैसा हिये का अन्धा बना रहा; उसकी ये तीखी बातें सुन मुझे क्रोध आ गया उत्तर दिया अरे मूर्ख तू देखने ही में बड़ा भव्य है वचन से तो विष उगल रहा है हम तो अन्य देश के आदमियों को अनार्य समझ यहां तक बरकाते हैं कि उनके साथ सह भोजन की कौन कहे स्पर्श मात्र से सचैल स्नान से शुद्ध होते हैं; काबुल के मेवे विलायत के भांत २ के पिकिलस पनीर स्वीट मीट आदि किस्म २ की खाने की चीजें यहां आती हैं पर हम उनकी ओर कभी आंख उठा कर भी नहीं देखते; दिन में तीन बार स्नान त्रिकाल सन्ध्या अग्निहोत्र पञ्चयज्ञ बलि वैश्वदेव अतिथि सेवा नित्य करते हैं; नित्य एक सन्यासी बिना खिलाये कभी भोजन नहीं करते एकादशी निर्जल निबाहते हैं प्रति पर्व गङ्गा स्नान कर पितरों को पिण्डदान देते हैं साल में कम से कम एक बार तो मासव्रत चान्द्रायण अवश्य करते ही हैं आठवें पन्द्रहवें महासङ्कल्प भी हो जाता है तब हमारे समान धर्मशील पुण्यात्मा दूसरा कौन है जिसकी सीख मान चेले बनें; उस शान्तशील वृद्ध मनुष्य ने मुसकिराहट के साथ मेरा हाथ पकड़ लिया और हम दोनों धरातल से उठे मालूम होता था मानों वे पर ऊपर को उड़े जाते हैं बहुत ऊंचे पर ले जाय मेरे सिर पर हाथ फेर यह बोला जिस देश में तू रहता है वहां जैसा तू कहता है क्या सब ऐसेही हैं ? उसके हाथ के फेरतेही मेरे हृदय की आंख खुल गई हिन्दूकुश से गंगासागर और हिमालय से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण भारतवर्ष मेरे नेत्र के सामने था और मैं वे प्रयास लोगों का रंग ढंग रहन सहन बारबार देखने लगा पंजाब से बंगाले की ओर जो नजर गई नेपाल से बम्बई की ओर जो देखता था तो कभी यह विश्वास नहीं होता था कि ये सब आर्य वंशी एक गोत्र के और एकही निराकार ब्रह्म के उपासक वेदमाताप्रसूती हैं; एक बार जो पश्चिमी घाट पर्वत की ओर दृष्टि फैलाया तो वहां के पुरुष दिव्यांग और स्त्री अपसरा तुल्य दीप्यमान देखा उधर से जरा गरदन फेर पूर्वी घाट पर्वत की ओर जो ताका सभी विकराल काले २ राक्षस के कुल नजर पड़े; पश्चिमी घाट के प्रान्त भाग में रहने वाले पारसी भाटिये मरहठे गुजरातियों की स्त्रियों को देख बोध होता था मानों कवियों का शृंगार रस यहां ही उत्पन्न हुआ है वही पूर्वी घाट के प्रान्त भाग के नर और नारियों को देख जी में आता था कि कवियों को बीभत्स रस का अनुभव इन्हीं लोगों का आकार देख हुआ होगा; सभी के समा

न सुडौल और प्रकृति पंजाबी राजपुताने और बैसवारे के चत्री बुंदेल खण्ड के बुंदेलों को देख मन मे यही ब्यापी कि वीर रस का प्रादुर्भाव इन्हीं से हुआ है; कोमलांग डरपोक भीरु प्रकृति बंगालियों को देख निश्चय होता था कि कादरपन ईश्वर ने इसी देश के लिये सृजा है इन विविध जाति की स्त्रियों के वस्त्र और आभूषण की ओर जो दृष्टिपात किया तो इस चकितचित्त को खयाल का घोड़ा दौड़ाने को बड़ा भारी मैदान मिला बंगालिनी की शान्ती पुर की सारी का निर्लज्ज पहिनाव देख मारे शरम के आंख मुंदी जाती थी पारसी और मराठिनों की खूब सूरत चुस्त और मरदाने लिबास पर जी लुभाता था वैसा ही मारवाड़ियों के याथे लम्बे पेट के नीचे घेरदार घांघरे का पहनाव देख उनकी भद्दे पन पर घिन भी आती थी; भारत खण्ड की स्त्री मात्र की सबसे अधिक लालसा और शौक गहनों की देख पड़ी मानो चांदी और जवाहिरों से नख से सिर तक लदी थीं सिर बाल मांग चोटी लिलार नाक कान गला हाथ पांव कमर बीसों अंगुलियां सब सोने चांदी से कजड़ बन्द थे पर इसका बोझ उन्हें नहीं मालूम होता था मुझे बड़ा अचरज हुआ जब मैंने देखे कि इतना बोझ उनके लिये कुछ नथा वरन इससे भी अधिक बोझ उठाने की इच्छा रख तोषी और न उन गहनों की सुघड़ पन और खूबसूरतों का कुछ खयाल था मानो चांदी का वज़न अधिक हो बनावट चाहे कैसी हो भद्दी हो—प्रकृति के नियम विरुद्ध एक दूसरी विचित्र बात मैंने और देखा कि पुरुषों का समूह स्त्रियों के समूह से स्वच्छन्दता के साथ निधड़क मिलने से सिकोड़ करता था कहीं २ एक स्त्री भी दूसरी से मिलने मे सकुचाती थीं कहीं पर किसी कारणसे अचानक दोनों का संयोग हो जाता था तो दोनों हाथ २ भर का लम्बा घूंघट काढ़ एक दूसरी की नज़र बचा जाती थीं—स्त्रियों के समूह में हंस युक्त विमान पर चढ़ी परम शान्त और पवित्र विग्रह की, एक स्त्री देखा नर लोक म तो ऐसा रूप काहे को किसी ने देखा होगा इन्द्राणी, आदि देवाङ्गनाओं से जो इसके अङ्ग प्रत्यङ्ग के सौष्ठव और सौन्दर्य का मिलान किया तो कोई इसके मुकाबिले मे न ठहरीं इसके चरण कमल मे मत्स्य कूर्म पद्म आदि के आकार की रेख देख मुझे पुराणों का भ्रम हुआ; गोल कपोल भूगोल खगोल विद्याओं का अनुकरण कर रहे थे उसके सूक्ष्म उदर मे त्रिवली मानो भाष्य कैयट विवरण समेत पतञ्जलि का त्रिवली भाष्य था; कण्ठ की ३ रेखायें सूत्र वार्तिक भाष्य के क्रम से त्रि मुनि व्याकरण की झलक मार रही थीं; परस्पर सवर्णी नेत्रों के दीर्घ कटाक्ष मन हरे लेते थे उत्कृष्ट गुण विशिष्ट कुञ्चित केशों में गुहे फूलों की शोभा देख जी को यही ब्यापी कि यह जग

तुल्विका न्याय से रेफ का उर्द्ध गमन हुआ है उस्के कुन्द से झलकते हुए १६ दातों की पंक्ति मानो षोड़स पदार्थ वादी नैयायिकों के १६ वाद हैं अक्षपाद और कणाद उस्के पाद सेवा में लगे थे पतञ्जलि उसकी अञ्जली में और पाणिनि पाणि पल्लव के संकेत पर ध्यान जमाए थे व्यास उसके पीछे लगी हुए व्यर्थ का आयास सह रहे थे योग उसके सहयोगी होने के प्रयत्न में था ; उसकी चारो भुजाएं ४ वेद थी कवियों के नवो रस उसके शृङ्गार में लगे थे और उनकी कविता के उपमा आदि अलङ्कार उस देवी के अलङ्कार की जगह पर थे ; कहां तक कहैं यह स्त्री मुझे सर्व विद्या मयी जंची कभी की यह अपना विमान ऊपर को ले जाती थी कभी फिर नीचे उतर आती थी न जानिए उसे ऐसा क्या मीठा था कि इस भारत भूमि का छोड़ते बड़ा पछताया सा हो रहा था कभी के इसके विमान की गति पूरब से पश्चिम को होती थी कभी के पश्चिम से पूरब को ; वह जहां कहीं जाती थी स्त्रियां उसे अपनी शिरोमणि समझ बड़े आगत स्वागत से मिलती थीं पर इस भूमि की स्त्रियां न जानिए क्यों उस्से सब तरह घिन कर रही थीं यहां के पुरुषों से अलबत्ता उसे बड़ा प्रेम था० उसका यह अनूठा क्रम देख मैं कुछ विचार में आ गया कि उस महात्मा ने कहा थक गया होगा अभी बहुत देखना है आकाश गङ्गा के तट पर चल थोड़ा विश्राम करले मैंने कहा तथास्तु और दोनों वहां से चल दिए । क्रमशः

——o——

॥ वीर वामा ॥

An Historical dancing opera.

एक ऐतिहासिक लास्य नाटक मथुरा ज़िला अन्तर्गत काशी निवासी बाबू बैजनाथ कृत ; यह नाटक बेशक अपने ढंग और तर्ज़ का बहुत पूरा है नाटक रसिकों के लिये अवश्य पढ़ने योग्य है ; नाटक रचना चातुरी में भारत भूषण बाबू हरिश्चन्द्र कृत नील देवी से कुछ कम नहीं है हमें बड़ा हर्ष होता है अब हम देखते हैं कि दिन प्रति दिन जहां तहां उत्तम हिन्दी लिखने वालों का समूह बढ़ता जाता है और बाबू हरिश्चन्द्र जीने जिस तरह की भाषा का अङ्कुर रोप रक्खा था उसमें अब शाखा प्रशाखा फूटती आती हैं दो उत्तम सुलेखक केवल इस मथुरा ही प्रान्त में हुए एक वृन्दावनस्थ श्रीराधा चरण गोस्वामी दूसरे इस नाटक के कर्त्ता ; यह नाटक ग्रन्थ कर्त्ता महाशय की लेखनी का पहला कुसुम है यह पौधा अपनी पूर्ण वय पर पहुंच न जानिये कितना उत्तम होगा ईश्वर इस्के उत्साह को ऐसीही दिन २ बढ़ता करता रहे मूल्य =) कोसी जिलह मथुरा बा—बैजनाथ के पास मिलैगा ।

——

नित्योपदेश ।

सिरसा निवासी बाबू काशी नाथ

जाती जाते; इस पुस्तक में अपनी युक्ति से बुद्ध बढ़ाने स्वास्थ्य रक्षा और नीति पूर्वक धर्म पालन के सरल स्वाभाविक नियम उपाय और साधन हैं; यह सुप्रसिद्ध प्रोफ़ेसर ब्लेकी साहब के ग्रंथ Self-culture Intellectnal Physical and Moral का अनुवाद है; इसके प्रथमभाग में मानसिक योग्यता भावना विचार स्मरण और तर्कना शक्ति बढ़ाने के साधन मनोहर लेख लिखने सभाओं के बीच बोलने दूसरे देश की भाषा सीखने के यत्न और नियम बहुत उत्तम रीति पर लिखे हैं द्वितीय में आरोग्यता और मानसिक शक्ति की सम्बन्ध, कसरत करने के गुण, भोजन पान सोने नहाने हवादार स्थान में रहने आदि के नियम और साधन विधि पूर्वक लिखे हैं, तृतीय में यह सिद्ध किया गया है कि बिना धार्मिक हुए और शुभ आचरण रक्खे मनुष्य का जीवन दुःख मय रहता है नीति पूर्वक गुरुजनों की आज्ञा पालन, सत्य बोलना, आलस्य त्याग, उदारता, गुण देख सराहना करने का प्रयत्न, परिमितता अर्थात अति का त्याग, एक संग धनाढ्य हो जाने की अभिलाषा की भूल और त्याग दृढ़ता, उद्योग, साहस, मन को महात्माओं के उपदेश से पूरित रखना, सत्संग आदि का वर्णन बहुत अच्छा किया गया है। डाक व्यय सहित मूल्य इसका ॥/)॥ है जिन्हें लेना हो। किरपा जिनके इलाहाबाद में बाबू काशीनाथ के पास भेज कर मंगालें, यह पुस्तक बहुत उत्तम है पढ़ने ही से इसके गुण प्रगट होंगे; आईने एखलाक के नाम से यह ग्रंथ उर्दू में भी मुद्रित है दाम १॥ है।

महाराजबेतिया कलिकर्ण का मर्ण

दोहा।

पौष कृष्ण तेरसतिथी गुरुबासर की रैन। पंचतत्व तन त्यागि कै गए अमरपति ऐन ॥ मर्णकर्ण का पाटुका स्मृगुदिन चिता बनाइ। बिधि पूर्वक तन दाह किय नृप इच्छित गति पाइ ॥

कवित्त।

पथ न्याय नायक सहायक महीसुर को पायक उमेश पदपद्म काल करिगो। तीरथ जितेक हैं तितेक में हमेश जाइ बस्त्र भूषण चढ़ाइ देव जस करिगो ॥ कहत केदार कलिकाल में करण सोचो दान धारा बहाय भरतखण्ड भरिगो। याचक गुनीजन को आछे बेतियेश्वर जू मंगन को कल्पतरु हिंद ते उखरिगो ॥ १ ॥ ब० ला० प्रस केदारशर्म्मा।

मूल्य अग्रिम ३॥) पश्चात ४॥)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै।
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Jany. 1884. Vol. VII.] [No. 5.
प्रयाग पौष शुक्ल ५ सं० १९४० जि० ७ [संख्या ५

मनोविनोद।

पं० श्रीधर कृत शुद्ध हिन्दी की कविता का एक उत्तम ग्रन्थ; विषय इसकी सबी मनोरञ्जक हैं पर प्रिया विमर्ष शीर्षक विषय में वैणगीतका शब्दार्थ अनुवाद बहुतही अनूठा है दाम मै पोस्टेज ॥ आना है जिसे लेना हो मुझे लिख भेजै।

सन ८३ की बिदाई सन ८४ की आगमनी।

मसल है लगा सो भगा यह आया वह गया शाम हुई सुबह हुआ दिन गया रात आई देखते ही देखते साल के ३६५ दिन झटपट गुज़र गये और सन ८३ अपना चारिज ८४ को दे विदा हुए; बस गये सो गये अब कभी न लौटैं गे इ[illegible]स लेखकों की ढाविली मे [illegible]र से वन्द हुए काम पड़[illegible]. केवल समय से याद आ[illegible] अमुक जन्मे या अमुक मरे [illegible] अमुक हादसा कब हुआ सन ति[illegible].सी मे मानो काल ने समय के अनादि और अनन्त के ओर छोर डोरे मे जहां हजारों लाखों गिरहयौं वहां साल की एक गिरह और छोड़ उस गट्ठी को जोर से कस दिया रौंसतम के दादा भी आही आवें तो उन की तोड़े भी न टूटे खोले न खुले इसी से गीता का श्रीमुख वाक्य है—कालः कलयतामहं—खैर यह सन तिरासी मन मानता जिधर जी मे आया हाथ फेरते उधर सर सलारजंग गप्प इधर स्वामी दयानन्द सरस्वती जीको हप्प करते काल कराल के मुखमे आप भी एक ग्रास हो गये; इस मनहूस सन को हम "पोलिटिकली" राजकीय सम्बन्ध से विशेष याद रक्खें गे कि इसमे हम हिन्दुस्तानियों की दो बड़ी भारी कोशिशें हुई पर मानो अरण्य रुदन या लाठी लैं नदी का पानी पीटने कीसी व्यर्थ चेष्टा समझी गई--एक हिन्दी को चिरस्थायी करने का महा प्रयास जो मि॰ हंटर के कट्टे लगा दूसरे इलबर्ट बिल के द्वारा अंगरेजो का मुकद्दमा फैसल करने का अधिकार जिसे डिफेंस असोसिएशन डाइन शांवर करते भख गई।

अब सन ८४ की आगमनी है ऊंघना छोड़ सम्हल बैठो खबरदार हो जाओ—"सखो सम्हल बैठो जरा होशयार हो जाओ सभा मे दोस्तो इन्दर की आमद है" यह आये वह आये अब आते

हैं अब आतेहैं लो आहो तो गये और कदम रखतेही केशवसेन महाशय पर ररररर धम से आगिरे; हुजूर आलो आए अपने साथ क्या२ और किनर को लाये काबुल से मेवे लाये किश्मीर के दुशाले लाये विलायत से भात २ के खिलौने लाये उमदा २ मिठाइयां लाईं हर क़िस्म के आम पिक्लस अचार चटनी नए २ फ़ैशन और तरहदारी के कपड़े आदि हजारों क़िस्म की चीजें लाये कहां तक गिनावें हमारे हुजूर नूरपुरचश्म-बहूर हजरत सन ८४ खां के साथहीं महाराणी के प्रिय पुत्र ड्यूक अफ़ कैनाट आए शिमले और नैनीताल से हाकिमो का झूंड आया बड़े दिन को डालियां आईं नुमाइश की धूम और राजा महाराजों की कमबख्ती आई दौरे मे हुक्काम आये थानेदार तहसीलदारों को देहाती प्रजा पर इसी बहाने जुल्म करने की बारी आई गरीब किसानो की मौत आई इत्यादि इत्यादि।

कलकत्ते की नुमाइश गाह।

इस नुमाइश की चर्चा आज दिन हर एक छोटे बड़े शहरों मे हो रही है हमारे देशी भाइयों मे बहुतेरे गोबर गनेसों को इस्की कुछ खबर नही है निपट नादान बन पूछते हैं इस्से क्या फ़ाइदा है; हम को अपने मुल्क पर इस्से बढ़ कर और क्या अफ़सोस हो सक्ता है कि सभ्यता का अब निचोड़ जिस्पर आलगा है उस्की ओर से अब तक निरे ना समझ बने हैं हमको अपने पागुर करने से मतलब हजार बीन बजती रहो हमे क्या; कितनो को यह बिश्वास है कि सरकार बिना अपना फ़ाइदा समझे कभी कोई काम नहीं करती इस मेले मे न कुछ होगा टिकटोंही के लाखों रुपये आवेंगे; हमारे बुद्धिमान् राजकर्मचारियों को बिचार करना चाहिये कि इस कदर मेहनत और रुपया जो इस्मे लगाया गया है उस्से हिन्दुस्तान को क्या फ़ाइदा है और पहले जो आगरे

आदि कई शहरो मे नुमाइशें हो चुकी हैं उनसे क्या लाभ हुआ है; अगर एक आदमी को किसी उमदा चीज के बनाने या ईजाद करने की खाहिश पैदा हो गई तो यह हमारे उस प्रश्न का उत्तर नहीं हो सक्ता ; जितनी मेहनत और रुपया लगा है उस्के लिहाज से क्या लाभ हुआ पहाड़ ने बड़ी मुशकिलों से एक चूहा जना तो क्या ; कारण इस्का यह है कि हमारे देश की जल वायु उस प्रकार की नहीं है कि यहां वालों मे दूसरे के मुकाविले ऐसी २ बातों से श्रेष्ट होने का हिस्का और चोट पैदा हो न इस्के गुण यहां की सर्व साधारण प्रजा समझ सक्ती है हमारे देश मे आपस की उतरा चढ़ी पैदा करने की औरही ढंग हैं ; यह ठीक है कि इस देश की शिक्षित मण्डली ऐसे २ प्रदर्शनों का गुण दोष अच्छी तरह समझ सक्ती है परन्तु यह प्रदर्शन सुशिक्षितों की शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं रखता न इस्के द्वारा उनकी आभ्यन्तरिक शक्ति Mental culture प्रदर्शित हो सक्ती है;। इस प्रदर्शन मे हाथ की कारीगरी पृथ्वी की पैदावरी या दूसरे तरह की मेहनत का नतीजा दिखलाया जायगा जो मनुष्य की आभ्यन्तरिक शक्ति इल्म और तरबियत से कुछ सरोकार नहो रखता; दस्तकारी आदि मेहनत जिनका पेशा है उनको न तो तलाश इस नुमाइश मे है न उनके पास इतना खर्च न ऐसा सामान कि खुद उस्मे जाय शरीक हों ; कुम्भ के मेलों की सी भीड़ नुमाइश मे जाने वालों की रेलवे स्टेशनो पर हरकहीं देखने मे आती है पर जो जा रहे हैं उनमे कोई भी ऐसे हैं जो इस प्रदर्शन से किसी तरह का लाभ उठा सक्ते हैं सिवा नये फ़ेशन के दास बन नुमाइस की अद्भुत और लोकोत्तर वस्तुओं को आंख फाड़ २ मुह बगार २ देख भाल अपना सा मुह लिए लौट आने के; जो चीज नुमाइश की

आये कातिक उपजे धान घी को—मे गये जिजमान।

आठो गांठ कुम्मेद।

आंत भारी माथ भारी।

आलस्यंग्रहितमिच्छतिसर्वः।

आदमी २ अन्तर कोई हीरा कोई कंकार

आधा तीतर आधा बटेर।

आपत्कालिंग्रथमनफला सम्पदोह्युत्तमानां।

आप मुए तो जग मुआ। आप मियां मांगते द्वार खड़े दुर्वेश।

आपहि मियां दर दरबार आपहि मियां खेत खलियान।

आया है सो जायगा राजा रंक फकीर।

आसमान के फटे को कहां लों सीवेगो दैय

आर्जवंहि कुटिलेषु न नीतिः—शठश्च शाठ्यं।

आशा मरे निराशा जीवै। Hope humbles more than despair.

इत के भए न उत के।

इस हाथ दे उस हाथ ले।

इन्द्रायन का फल देखने का खाने को नहीं।

इश्क मुश्क खांसी खुटका खैर खून मद्यपान। बात छिपाए ना छपे परघट होहिं निदान॥

उखली में सिर दिया तो धमक से क्या डर।

उत्तम खेती मध्यम बान। निकृष्ट चाकरी भीख निदान।

उतावला सो बावला।

उत्साहवन्तो हि नरा न लोके सीदन्ति कर्मस्वतिदुष्करेषु।

सोत्साहस्यहि लोके भिन्न किंचिदपि दुर्लभं।

ऊंची दुकान का फीका पकवान।

ऊंचे चढ़ के देखा घर २ एकी लेखा।

ऊंट चढ़े को कुत्ता काटे।

ऊंठ के मुंह का जीरा।

ऊंठ की चोरी झांहे झांहे।

ऊंठ का पाद न जमीन का न आसमान का।

ऊंठ चरावे खाले खाले। ऊंठ की ऊंठ कटारा भावे।

ऊंठ पहाड़ के तले न जायगा तब तक आप को बड़ा जाने गा।

ऊंठ की पकड़ हाथी का दांत होवा की हांव घोड़े की लात मूंजी का चंगुल।

एक तो तितलौकी दूजी नीम चढ़ी।

एक तो डाइन दूजी लुघाठ लिए॥

एक तो बुढ़िया नचनी दूजी घर भा नाती। एक तो मियां येही दीवाने दूजे है भांग।

कपिरपिचका पिमायम मधुमत्तोवृश्चि-
कीनसंदृष्टः। अपिच पिशाच ग्रस्तः किमत्रू-
मो वैकृतं तस्य।

एक दिन का पाहुना दूजे दिन बिल-
खावना।

एक वैद्य सारा गांव रोगी।

एक भवानी कुल गांव अन्धा किसे २
आंख हैं।

एकः सएव जीवति हृदय विहीनोंपि
सहृदयोराहुः। यः सर्वं लघिमकारणमुद
रंनबिभर्तिदुस्पूरं।

एक और एक ग्यारह।

एक मछली सारा जल गन्दा।

एक नार जब दे। वे फसी जैसे सत्तर
वैसे अस्सी।

एक दिन का मेहमान दूजे दिन वे इ-
मान।

एकै घर में दो मता कुशल कहां से होय।
खसम जो पूजै देहुरा भूत पूजनी जोय।

एक पथ दो काज।

एका क्रियाद्व्यर्थकरीप्रसिद्धा।

एकोहिदोषोगुणसन्निपाते निमज्जतीन्दो
किरणेष्विवाङ्कः।

ओछो सङ्गत नीच की आठो पहर उ
पाध।

ओछी पूंजी गुसैंया को त्रास।

और को कूंआ खोदै सो आपै गिरै।

और को लोखरी सगुन बतावै आप कु
त्तों से खिथवावै।

करै करावै आपही औरन के सिर देय,

करेला नीम चढ़ा।

करणो पृष्ट कटिं चालयति।

कहां राम राम कहां टेटें।

कथा के सुनते फूटा कान तऊ न उप
जा रंचक ज्ञान।

कहां राजा भोज कहां गंगा तेली।

कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी ना-
व पर।

करै सेवा पावै मेवा। करै खिजमत
पावै अजमत।

करम हीन खेती जो करै बैल मरै की
सूखा परै।

करम रेख ना मिटै करै कोई लाखों
चतुराई।

कम कूवत वाले दराजी मारखाने कि
निशानी।

कटे काङ्का सोखे नाजका।

कहां आसमान कहां जमीन।

कनक कनक तें सौगुनो मादकता अ
धि काय। यह खाये बौरात है वह पा
ये बौरात।

कहीं २ गोपाल की गई चौकड़ी भूल।

काबिल मे मेवा किये व्रज मे किये करील ॥

कहां कहूं छवि आजकी भले बने हो नाथ। तुलसी मस्तक तब नवै धनुषबान लो हाथ।

कनौड़ो बिल्ली चूहों से कान कटावे।

कब जन्मे कब राकस भये।

कस्य दोषः कुले नास्ति: कस्य सौख्यो निरन्तरम्।

काका काहू के न भये।

काचः काचोसणि र्मणिः।

काजी जी दुबले क्यों शहर के अंदेशे।

काजी जों इस्ताफन करै तो घर तो जाने दे।

काया राखे धरम—शरीर माद्यं खलु धर्म साधनं।

काल्ह करन्ता आज कर आज करै सो अब्ब—आदानस्य प्रदानस्य कर्तव्यस्य च कर्मणः चिप्रमक्रिय माणास्य कालः पिवत तद्रसम्। कालागिः समये च्युतिः।

काविल भये सुगल हो आये बोली बोल पठानो आव २ कह मुतजा मरगए खटिया तल रह पानी।

काठ की हाड़ी नहीं चढ़ती है यारे बार बार।

काला मुंह कर जग दिखलावे तब लालों की लाली पावे।

कालो कामरी सूरदास की। चढ़ै न दूजा रंग।

कहैं कबीर यह काया खोटी। कभी की दुबली कभी की मोटी।

काजल की कोठरी मे एक रेख लागि है पैलागि है।

कहा भये विप्र कुल जन्मे जो हरि सेवा नाहीं।

कागज की नाव आज न डूबी काल डूबी।

काजर सब कोउ देत है चितवन मे है भांत।

जिस जिस्मे पर लगा पानी।

किम सुखं प्राप्तितरैः संगतिः।

किसीको बैंगन बावले किसी को बैंग न पथ्य।

किं सुतप्रश्नः शुभलाय कल्पते।

कूप मण्डूक।

कुत्ते को घी नहीं पचता।

कोई सचे कोई खाय।

केवलास्तुः परि अथ पदं निष्फला रंभवत्ताः।

कोई रंग रंगो खुलैगा उदा।

कोईसा होहि न हजरी सो मन कावुन धीय।

कोटिशु कोटायते।

कोतिभार: समर्थानां किन्दूरं व्यवसायिनां। कोविदेश: सुविद्यानां क: पर: प्रिय वादिनां।

कौड़ी के तिन तिन।

क्या पिदड़ी क्य ापिदड़ी का पुलाव।

क्या पिदड़ी को संपदा क्या आंछे की प्रीति।

क्षभोग माप्नोति न भोग भ।ग्जन:।

फिर कभी॥

मेवाड़ का इतिहास सं० २ से आगेसे

१३३१ की सम्वत् मे लक्ष्मण सिंह चित्तौर की राज्य सिंहासन का उत्तराधिकारी हुआ इस्के समय दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन, खिलजी ने दो बार चित्तौर पर चढ़ाई की पहली बार अपने नामो गिरामी शूर बीर योद्धाओं को उस दुष्ट अत्याचारी की क्रोधाग्नि मे होम कर चित्तौर समूल नाश होने से बच गया परन्तु दूसरी चढ़ाई मे अलाउद्दीन ने सैकड़ो वर्षको इस्को संचित पूंजी, को लूट पाट मेवाड़ देशाधिपति राणाओं को इस पुरानी राजधानी को धूर मे मिला दिया भीमसिंह ने जो लक्ष्मणसिंह का चचा और उस्के लड़कपन मे उस्की और मेवाड़ कीं कुल रियासत, की रखवाली का सब बोझ अपने उपर लिये था सिंहल द्वीप के चौहान राजा हमीर संक की बेटी पद्मनी से व्याह किया यह पद्मनी रूप और गुण में सच २ पद्मनी थी इस्के सौन्दर्य की यहां तक प्रशंसा है कि अबभी स्त्रियों मे जो अति रूपवती हैं उनको उपमा इसी पद्मनी से दीजाती है; अलाउद्दीन धरती और लूट को लालच से चित्तौर पर नहीं चढ़ा उस्का दिली मतलब इसी पद्मनी से था; भीम सिंह उसे खुशी वा खुशी अला उद्दीन को सौंप देता तो कुछ न होता अन्तको अलाउद्दीन इस बात पर राजी हुआ कि उस लोकोत्तर सुन्दरी

का प्रतिबिम्ब मात्र आईने में दिखलाय दिया जाय तो मैं लौट जाऊंगा; राजपूत लोग इस दुष्ट से अपना पिण्ड छूटते देख इसकी बात मान गये और इसे अपने किले के भीतर लिगये; अलाउद्दीन को पूरा विश्वास था कि कौल के सच्चे बात के धनी राजपूतों से कभी विश्वास घात न होगा बहुतही थोड़े आदमियों को साथ ले बे धड़क छड़ी सवारी भीतर चला गया और वहां आईने से उसकी सूरत देख लौट आया; भीमसिंह ने अब भी न चाहा कि उसके साथ किसी तरह विश्वास घात करे अलाउद्दीन लल्लो पत्तो की बातों से फसाय आरदामी करता हुआ भीम सिंह को अपने खेमे तक ले गया जहां पहलेहीसे सब दांव घात लगा रक्खा था, वहां पहुंचतेही इसको कैद कर लिया और कहा जब तक तुम पद्मनी न देदोगे कैद से छुटकारा न पाओगे; यह समाचार सुन चित्तोर के सब लोग घबड़ा उठे और पद्मनी की ओर से निरास हो बैठे पद्मनी अपने पतिको कैद से छुटाने को कोई उपाय न देख कहला भेजा मुझे हुजूर की कदम बोंसी हर तरह मंज़ूर है, पर मेरी ७०० सखी सहेली और लौंडी बांदी जो मेरा साथ किसी तरह नहीं छोड़ सक्ती सब मेरे साथ दिल्ली आवेंगी इस लिये ७०० डोलिया भेज दीजिये और खुब चौकसी रहै कि मेरी सहेलियों को किसी तरह बे परदगी न होने पावे; अलाउद्दीन ने सब मंज़ूर किया और हुक्म दिया कि पद्मनी को सहेलियो के लिये सात सौं डोलियां चित्तोर भेज दी जांय और खूब खबरदारी रहै कि उनके साथ किसी तरह की गुस्ताखी न की जाय; उन डोलियों मे चुने हुए क्षत्री वीर जिन्हा ने कभी नहीं लड़ाई से मुह मोड़ा जा बैठे एक २ डोली के साथ ६ कहार थे जो उपर से डोली ढोने वाले कहारों का कपड़ा पहने थे पर भीतर

अस्त्र शस्त्र से सजे बजे थे साथ ही किसीको चारों ओर कनाते घेर गई और डोलियां भीतर पहुंचा दी गई आध घंटेकी मोहलत दी गई कि पद्मनी अपने शौहर भीमसिंह से मिल भेटले थोड़ी देर बाद डोलिया लौटने लगीं उन्होंने से एकमे भीम सिंह बैठ कर कैद से निकल आया बाहर एक तेज घोड़ा जो पहलेही से वहां तैयार था भीम सिंह उसपर सवार हो चितौर को चंपत हुआ अलाउद्दीन हाथ मल रह गया, जो लोग वहां पहुच गये थे सब के सब वहां कट मरे ये कमसे कम ८०० चुने हुए बीर योद्धा थे भीम सिँह तो कैद से बच कर चला आया पर चित्तौर को इस लडाई से बड़ी हानि हुई; कुछ दिनों के उपरान्त बड़ी सेना साज और पक्का मन सूबा गांठ कि अबकि बार चित्तौर को बिना पाक मे मिलये न लौटेंगे अला उद्दीन ने फिर धावा किया; राणाको निश्चय हो गया कि अब किसी तरह पर बचाव नहीं है अपने बारहो लड़कों समेत केसरिया बागा पहन सिवा अजेसिंह के जिसे भीम सिहने बडे मुशकिलों से युद्ध मे शत्रुओं के सुन्मुख जानेसे रोक रक्खा बाकी सब रण के लिये मुस्तैद हुए अजे सिंह थोडे से क्षत्रियों को साथले शत्रुका दल चीरते केलवारा को बच कर चला गया राणा इस बात से सन्तुष्ट हो कि चलो हमारे वंश का एक बीज रूप बच तो रहा किले का फाटक खोल दिया और अपने राजपूत बीरो के जिन्हे रन अधिक प्यारी थी जिन्दगी से सब के सब साथ हो लिये; उधर चितायें धधकने लगीं पद्मनी हजारों अपनी सखी सहेलीयां और क्षत्रियों की बहू बेटियों को साथ लिये चिता पर पहुची राज पूत सब मै राणा के रन मे जूझ मरे अला उद्दीन ने भीतर जाकर देखा तो पद्मनी को जलते पाया सिर धुनते हाथ मलते रह गया—

क्रमश:॥

अर्थस्य पुरुषो दासः।

जहां तक अनुमान की दौर है और दृष्टि पहुंच सक्ती है सब ठौर रुपये की खींच है और रुपये की गुलामी सब बजा रहे हैं तिलभर भी ऐसी भूमि दुर्लभ है जहां स्वार्थ के लेप का पलस्तर न किया गया हो और परमार्थ की सुगन्धि से सुवासित हो; हम उन महा पुरुषों के बुद्धि वैभव और विज्ञान शक्ति का वारा पार क्यों कर पा सक्ते हैं जो इस वर्तमान दशा की बड़ाई में सहस्र मुख बन रहे हैं इसमें सन्देह नहीं बुद्धि की सूक्ष्मता ऐसी ही है जो एका एक सब को नहीं सूझती पर तौ भी मोटी समझ वालों से बिना कहे रहा नहीं जाता; संसार में जितने सम्बन्ध हैं सब स्वार्थ के फन्दे से जकड़े हुए हैं केवल स्वार्थही नहीं वरन तुच्छाति तुच्छ और महा खोटे स्वार्थ की रोशनी चारो ओर झलक रही है सब से सूक्ष्म और रहस्य संबन्ध पति पत्नी का है जिन दोनो के बीच किसी तरह का आड़ और परदा नहीं बाकी रहता ऐसी स्त्रियां बहुत ही थोड़ी और विरली होंगी जो पति के सच्चे और सभी चीन गुणों से प्रमुदित हों और धन आदि स्वार्थ की लालसा से उदास न हों; ऐसी कामिनी कहां मिलेंगी जो अपने पति की धर्मशीलता की अभिमानिनी होकर सकल ऐश्वर्य और सुख को तृण तुल्य समझती हों; ऐसी अलबत्ता बहुत पाई जांयगी जो धन कमाने वाले को सत्पति और पशु क्रिया विशारद को वीर समझती हैं इसी प्रकार पिता पुत्र का सम्बन्ध है ऐसे बहुत कम पुत्र मिलेंगे जो अपने निर्द्धन पिता को देवतुल्य मानते हों वरन आज कल के पुत्र ऐसेही पिता से खुश और राजी रहते हैं जो उन्हें ऐश आराम का सब सामान इकट्ठा कर दे; ऐसेही बहुतेरे पिता भी हैं कि पुत्र चाहो प्रल्हाद के समान भक्त वृहस्पतिके सदृश बाग्मी और पण्डित हो गङ्गा के समान जग

त्यागन और कलाधर चन्द्रमा के समान जगत् मे सत्कीर्त्ति कला धारी हो पर धन के कमाने मे जहां शिथिल और कम हुआ पिता जी उसे कूड़ा करकट से बत्तर समझने लगते हैं ऐसे मन्द बुद्धि कूढ़ पिता का यह कभी स्वप्न मे भी खयाल नहीं होता कि कृष्ण पक्ष मे चन्द्रमा की कला घट जाती है पर हमारे सद्गुणी पुत्र की सत्कीर्त्ति कला बढ़ती जाती है हां वह पुत्र पिता को अवश्य प्यारा है जो धन कमाने मे कुशल संसार की यावत् वंचकता मे परम प्रवीण कपट और खोटाई का पुतला हो; जब पिता पुत्र मे यह हाल है तब भाई की न किस्से होते हैं मसल है भाई भाई न भाई न भाई ; यही दशा गुरु चेला और पुरोहित यजमान की है चेला और यजमान साक्षात् धर्म की मूर्त्ति हों धन हीन होने के कारण गुरु या पुरोहित जी उस गली की ओर ताकेंगे भी नहीं हां धनवान् चेला या यजमान् दस बीस पचास और पा तक नित्य करता जाता हो धन लोलुप गुरु या पुरोहित जी को परम प्यारा होगा और उनकी दृष्टि मे वह घोर पातकी धर्म का अवतार ही जंचेगा ; यही दशा स्कूलों के हेड मास्टर और टीचरों की है विद्यार्थी चाहे कैसाही सुशील और सच्चरित्र हो तथा याद करने मे अपने सह पाठियों मे किसी से कम न हो कभी उस पर वैसी रियायत और अनुग्रह न की जायगी जैसी कृपा दृष्टि कोटिमल साह जी के साहबजादे पर होगी चाहे वह कैसाही शैतान का पुतला हो ; होनाही चाहिये जिनकी गाड़ी पर चढ़ के आते जाते हैं जिनसे सब तरह का स्वार्थ निकलता है वे फेल भी हों तो पास हैं और पास तो पास हई हैं प्रयोजन यह कि जिनसे हाथ गरम होता हो और जिनके पास धन हो वह पांस भी पास; यही हाल गांव के जमीदारों मे देखा जाता है जो असामी नित्य

उनकी साथ झूठी गवाही नहीं देता और धन से उन्हे पूजता नहीं वह कैसाही धर्मात्मा और भला मानुष हो सदा उनकी आंख मे कांटा सा चुभा करता है और जो उनके स्वार्थ के बढ़ाने मे सहायक हो चाहो कैसाही बद चलन हो वही बिशेष आदर पाता है और रक्षा भी उसी की होती है; और किसी समय धन पर सब दार मदार चाहो न रहा हो इस अंगरेज़ी राज्य मे तो निरा स्वार्थ और रुपया देखा जाता है स्वार्थ की प्रबलता यहां तक देखी गई है कि जितने का इदे और कानून सरकार की तरफ से जारी होते हैं उनसे भी धन ही की प्रधानता है हाकिमो के घरमे दरबार मे कुरसी उन्ही को मिलेगी जो धन मे ऊंचे हैं राय बहादुर सी एस आई का खिताब भी उन्ही को दिया जायगा सलाह भी उन्ही की ली जायगी जो साल मे टैक्स अधिक देते हैं यही बन्धन म्युनिसिपलिटी और सेल्फ गवर्नमेन्ट के बोर्ड मे है और होगा; अर्थ धर्म काम मोक्ष ये चारो भाई सहोदर और समान समझे गये हैं समयानुकूल चारो की प्रधानता उचित है पर आज काल अर्थ ने अपने चारो भाइयों को ऐसा पछाड़ रक्खा है विशेष कर धर्म को तो ऐसा खदेड़ डाला कि वह बेचारा किसी कामही का न रहा सत्य शौच सन्तोष दया आदि जो शुद्ध और बेलगाव धर्म के लक्षण हैं कहीं देखाते ही नहीं लड़के स्कूल या कालिजों मे पढ़ती समय बरसाती मेढकों की भांत कैसा कोलाहल मचाये रहते हैं मानो अनाथ भारत को स्वर्ग भूमि बना देंगे जहां नौकरी मिली या डिपलोमा के लोम का दर्शन हुआ बस चुप एक २ बात मे २ रुपये की इच्छा से एडिटर महाशय हिन्दी मे धर्म का संभार आप न रचिये क्यों कि यज्ञों मे धनकी ज़रूरत पड़ती है सो आप के पास है नहीं उत्तम होगा कि इसके बदले

आप अन्याय मेध यज्ञ रचिये जिसमें अन्याय का होम हो जाने से राजा राज करे प्रजा सुख में रहे तीर्थवासी—कश्चित्—परमार्थी ।

प॰ उ॰ देश में देशीभाषा की शिक्षा सर्कार के सैकड़ों करतब ऐसे दुर्ज्ञेय हैं कि उनका प्रयोजन और मर्म हमारे भोले भाले हिंदू भाइयों की आलस्यासक्त सरल बुद्धि में झटिति ही प्रविष्ट नहीं हो सक्ता पर याद रखना चाहिये कि चाहे जैसी हीन दशा में हों हम वही हैं जिनके पूर्व पुरुषों का साधारण संलाप दार्शनिक फक्किका और चित्त बिनोदार्थ हास विलास निगूढ़ाशय काव्य की चातुरी थी जिनके वेद को जर्मनी वाले दिवा रात्रि रट रहे हैं और जिनके काव्य नाटकों पर सारा सिविलाइज्ड योरप मुल्क का और लट्टू हो रहा है और जिनके योग शास्त्र की सुवास पर मतवाले हो करनल अलकाट भ्रमर बन सारी भारतभूमि में गुंजार रहे हैं उन्हीं की कर्म हीन सन्तान हम हैं सो हम भी निरे पशु नहीं हैं कोई २ कुछ २ अकल भी रखते हैं—हम पूछते हैं क्या कारण है कि देशी ज़बान की परीक्षा के लिये विषय सन् १८७६ के पहले कठिन और संख्या में अब की अपेक्षा अधिक होते थे वही आज कल यह परीक्षा इतनी सुगम हो गई है ? उक्त साल के पूर्व इस परीक्षा में ४ अध्याय रेखा गणित वर्ग समीकरण से भी अधिक बीजगणित परिवर्तन से परे अंकगणित बहुत सा क्षेत्रव्यवहार सारी दुनिया का नकशा इत्यादि चीजें नियत थीं और अब जो हैं सो विदितही हैं इस परीक्षा के सहल कर देने से क्या लाभ और क्या असली उन्नति देश की हुई ? हम को तो निरा इसका उलटा दिखाई देता है यदि यह कहा जाय कि इस तर्कीब से शिक्षा पहले की अपेक्षा अधिक तर फैल गई है सो भी नहीं पहले की अपेक्षा अधिमदर्से

भी अब नहीं रहे हैं हां यह देखते हैं कि पाठशालाओं मे वर्नाक्यूलर इम्तहान मे कबूतरखानों की तरह लड़कों के झुंड के झुंड परीक्षा को आते हैं और उत्तीर्ण भी बहुत हो जाते हैं पर इससे क्या ? प्राय: ये सब उत्तीर्ण छात्र नार्मल स्कूलों में पढ़ कर जहां कि उन्हें अपने प्राप्त ज्ञान से कोई अधिक शिक्षा नहीं मिलती पांच २ वा छ: २ रुपये महीने के मुदर्रिस हो जाते हैं बस इसी तरह का उन्के पढाए हुओं का हाल रहता है; सूक्ष्म रीति से विचारने से यही स्पष्ट होता है कि देशी शिक्षा के विषय में सर्कार की पौलिसी हमारी उन्नति की ओर नहीं है केवल एक हिन्दुस्तान का नक्शा और थोड़ा सा इतिहास और गणित वा पदार्थ विज्ञान पढ़ कर लोगों को क्या बड़ा ज्ञान हो सक्ता है उन्नति की ओर ध्यान गवर्न्मेंट का हम तब समझते जब कि जिस तरह अंग्रेज़ी एन्ट्रेंस आदि परिक्षाओं के लिये कठिन और उत्तम पुस्तकें दिन २ बढ़ती जाती हैं उसी तरह देशी ज़बान की परीक्षा में भी विविध भांति के विषयों की पुस्तकें जो पहिले हिन्दी में नहीं थीं नियत कर लोगों के परिज्ञान के बढ़ाने का यत्न किया जाता खैर यह हमारा भी रोना तो सर्कार काहे को सुनेगी हमारे भ्रात गण ही शिक्षोन्नति मे निज प्रबन्ध द्वारा प्रवृत्त हों ॥

हिन्दी का आर्तनाद।

राग बिहाग।

सुनो कोऊ हिन्दी हू की टेर।

हीन क्षीन अति दीन दुखित मन भ्रमति दैव के फेर। गली गली टकराति अनाहत धरें बोझ सिर ढेर। है कोउहु कोउ कादर करत नहिं देत न धीरज हेर। जिनके करगत भाग्य हिन्द को जिनके करगत न्याय। सोइ अब बधिर भये हिन्दी हित कौन रीति दुख जाय। निपट निबल अस हाय अकेली पद पद ठोकर खाय।

फिरो दैव हत भाग्य भई मै सुनत न कोऊ हाय । ठीकठौक मम काम होत सब निकसति एक न खोट । उर्दू करति कछू को कछू तउ ताहि की रक्षा ओट । नेकहु दरद दया नहिं आवति नोचत देह खसोट । महा निठुरता भरी रात दिन लगत मर्म यह चोट । इतने महाराज हिंदूपति राना रावल भूप । जिनको यश चहुं ओर जगत मे जग मग जोति अनूप । तिनहूं आई उर्दू ही प्यारी नहिं कछु मम सन्मान । कौन लोक मे शरण मिलै मोहि किहि विधि राखहुं प्रान । पं—श्रीधर शर्म्मा ॥

—o—

समस्या ।

१ सनक सिरोहिन औ फनक फरीन की ।

२ कबलौं यह चालि चलैगो अरे ।

३ अब तो तुम भारत नींद तजो ।

हम अपने रसिक पाठकों के लिये यह ३ समस्या देते हैं जो महाशय इसी पूर्ण कर भेजेंगे उनका नाम सहित सादर उस पूर्ति को पत्र मे स्थान देंगे ।

———

योरोप की सती और पतिव्रता स्त्रियों के जीवन चरित्र ।

यह अत्यन्त मनोहर अनुवाद सरल हिन्दी भाषा मे सिरसा निवासी बाबू काशीनाथ खत्री ने अंगरेजी ग्रंथ Noble deeds of women or examples of female courage and vurtue से किया है इसमें ४० धर्मशीला पतिप्राणा स्त्रियों के मन लुभाने वाले सुहावने इतिहास हैं कौन ऐसा नीरस हृदय होगा जो इन साध्वी स्त्रियों के मन भावने चरित्र पढ़ आनन्द मे मगन न हो जायगा मूल्य डाक व्यय सहित ॥=)॥ है ।

———

श्रीराम जी

परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृत स्वीकारपत्र की प्रति ॥

आज्ञा (राज्य श्रीमहद्राजसभा) संख्या २९०

आज यह स्वीकार पत्र श्रीमान् श्री १०८ श्रीजीधीरवीर चिरप्रतापी विराजमान राज्ये श्रीमहद्राज सभा के सनमुख स्वामी जी श्री दयानन्द सरस्वती जी ने सर्वरीत्या अङ्गीकार किया अतएव

आज्ञा हुई

कि प्रथम प्रति तो इस स्वीकार पत्र की स्वामी जी श्रीदयानन्द सरस्वती जी को राज्ये श्री महद्राज सभा की हस्ताक्षरी और मुद्रांकित दी जावे और दूसरी प्रति उक्त सभा के पत्रालय में रहै और एकर प्रति इसकी राजयन्त्रालय में मुद्रित हो कर इस स्वीकार पत्र में लिखे सब सभासदों के पास उन की ज्ञातार्थ और इसके नियमानुसार बरतने के लिए भेजी जावे संवत् १९३९ फाल्गुन शुक्ला ५ मंगल वार तदनुसार ता० २७ फरवरी सन १८८३।

हस्ताक्षर महाराणा सज्जनसिंहस्य (श्रीमेदपाटेश्वर और राज्ये श्री महद्राजसभापति)

(राज्ये श्रीमहद्राजसभा की सभासदों के हस्ताक्षर)

१ राव तखतसिंह वेदले ।
२ राव रत्नसिंह पारसोली ।
३ द: महाराजगजसिंह का ।
४ द: महाराज रायसिंह का ।
५ हस्ताक्षर मामा बखतावरसिंहस्य ।
६ द: राणावत उदयसिंह ।
७ हस्ताक्षर ठाकुर मनोहरसिंह ।
८ हस्ताक्षर कविराजा श्यामलदासस्य ।
९ हस्ताक्षर सहीवालाअर्जुनसिंह का ।
१० द० रा० पन्नालाल ।
११ ह० पुरोहितपद्मनाथस्य ।
१२ आ मुकुन्दलाल ।
१३ ह० मोहनलाल पण्ड्या ।

स्वीकार पत्र ।

मैं स्वामी दयानन्दसरस्वती निम्न लिखित नियमानुसार त्रयोविंशति सज्जन आर्य्य पुरुषों को सभा को वस्त्र पुस्तक धन और यन्त्रालय आदि अपने सर्वस्व का अधिकार देता हूं और उसको परोपकार सुकार्य्य में लगाने के लिए अधिष्ठाता कर के यह पत्र लिखे देता हूं कि समय पर कार्य्यकारी हो । जो यह एक सभा कि जिसका नाम परोपकारिणी सभा है उस के निम्न लिखित त्रयोविंशति सज्जन पुरुष सभासद हैं उनमें से इस सभा के सभापति ।

१ श्री महाराजाधिराज महिमहेन्द्र यावदार्य्यकुलदिवाकर महाराणा जी श्री १०८ श्रीसज्जनसिंह धीर वीर जी०सी० एस आई उदयपुराधीश हैं, उदयपुर राजमेवाड़ ।

२ उप सभापति लाला मूलराज एम ए० एक्सट्रा असिस्टंट कमिश्नर प्रधान आर्य्यसमाज लाहौर जन्मस्थान लुधियाना

३ मंत्री श्रीयुत कविराज श्यामलदास जी उदयपुर राजमेवाड़ ।

४ मन्त्री लाला रामशरणदास रईस उपप्रधान आर्य्यसमाज मेरट ।

५ उपमंत्री पण्ड्या मोहनलाल विष्णुलाल जी निवास उदयपुर जन्मभूमि मथुरा ।

॥ सभासद ॥

१ श्रीमन्महाराजाधिराज श्री नाहरसिंह जी वर्म्मा शाहपुरा राजमेवाड़ ।

२ श्रीमत् राव तखतसिंह जी वर्म्मा बेदला राज मेवाड़ ॥

३ श्रीमत राज्य राणा श्रीफतहसिंह जी वर्म्मा देलवाड़ा राजमेवाड़ ॥

४ श्रीमत् रावत अर्जुनसिंह जी वर्म्मा आसींद राजमेवाड़ ॥

५ श्रीमत् महाराज श्रीगजसिंह जी वर्म्मा उदयपुर मेवाड़ ॥

६ श्रीमत राव श्रीबहादुरसिंह जी वर्म्मा मसूदा जिले अजमेर ॥

७ राय बहादुर पण्डित सुन्दरलाल सुपरण्टेण्डेण्ट वर्कशाप और प्रेस अलीगढ़ आगरा ॥

८ राजा जयकृष्णदास सी०एस०आई डिपुटी कलेक्टर बिजनौर मुरादाबाद ॥

९ बाबू दुर्गाप्रसाद कोषाध्यक्ष आर्य्यसमाज फर्रुखाबाद ॥

१० लाला जगन्नाथ प्रसाद फर्रुखाबाद

११ सेठ निर्भयराम प्रधान आर्य्यसमाज फर्रुखाबाद निवास राजपूताना ॥

१२ लाला कालीचरण रामचरण मन्त्री आर्य्यसमाज फर्रुखाबाद ॥

१३ बाबू छेदीलाल गुमाश्ते कमसर्येट छावनी मुरार कानपुर ॥

१४ लाला सांईदास मन्त्री आर्य्यसमाज लाहौर ॥

१५ बाबू माधवदास मंत्री आर्य्यसमाज दानापुर।

१६ राव बहादुर रा० रा० पण्डित गोपालराव हरिदेश मुख मेम्बर कौन्सिल गवर्नर बम्बई। और प्रधान आर्य्य समाज बम्बई पूना

१७ राव बहादुर रा० रा० महादेव गोविन्द रानडे जज्ज पूना॥

१८ पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्म्मा प्रोफेसर संस्कृत युनिवर्सिटी आक्सफोर्ड लण्डन बम्बई॥

नियम।

१ उक्त सभा जैसे कि वर्त्तमान काल वा आपतकाल में नियमानुसार मेरी और मेरे समस्त पदार्थों की रक्षा करके सर्वहितकारी कार्य में लगाती है वैसे मेरे पश्चात् अर्थात मेरे मृत्यु के पीछे भी लगाया करे।

प्रथम वेद और वेदाङ्गादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने कराने पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने छापने छपवाने आदि में॥

द्वितीय—वेदोक्तधर्मके उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशकमण्डली नियत करके देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में भेज कर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग करने आदि में॥

तृतीय—आर्य्यावर्त्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण पोषण और सुशिक्षा में व्यय करै और करावै॥

२ जैसे मेरी विद्यमानता में यह सभा सब प्रबन्ध करती है वैसे मेरे पश्चात् भी तीसरे या छठे महीने किसी सभासदको वैदिकयंत्रालय का हिसाब किताब समझने और पर तालने के लिये भेजा करे और वह सभासद जा कर समस्त आय व्यय और संचत आदि की जांच परताल करै और उनके तले अपनी हस्ताक्षरलिख दे और उस विषय का एक एक पत्र प्रति सभासद के पास भेजे और उस के प्रबन्ध में कुछ हानि लाभ देखे उस की सूचना अपनी भी परामर्शसहित प्रत्येक सभासद के पास लिख भेजे पश्चात् प्रत्येक सभासद का उचित है कि अपनी २ संमति सभापति के पास लिख कर भेज दे और सभापति सब की सम्मति से यथोचित प्रबन्ध करै और कोई सभासद इस विषय में आलस्य अथवा अन्यथा व्यवहार न करै॥

३ इस सभा को उचित है किन्तु अत्यावश्यक है कि जैसा यह परम धर्म और परमार्थ का कार्य है उस को वैसा ही उ

साह पुरुषार्थ गम्भीरता और उदारता से करे ॥

४ मेरे पीछे उक्त त्रयोविंशति आर्यजनों की सभा सर्वथा मेरे स्थानापन्न समझी जाय अर्थात् जो अधिकार मुझे अपने सर्वस्व का है वही अधिकार सभा को है और रहे यदि उक्त सभासदों में से कोई इन नियमों से विरुद्ध स्वार्थ के वश हो कर वा कोई अन्य जन अपना अधिकार जतावे तो वह सर्वथा मिथ्या समझा जाय ॥

५ जैसे इस सभा को अपने सामर्थ्य के अनुसार वर्त्तमान समय में मेरी और मेरे समस्त पदार्थों की रक्षा और उन्नति करने का अधिकार है वैसे ही मेरे मृतकशरीर के संस्कार करने कराने का भी अधिकार है अर्थात् जब मेरा देह छुटे तो न उस को गाड़ने न जल में बहाने न जङ्गल में फेंकने दे केवल चन्दन की चिता बनावे और जो यह संभव न हो तो दो मन चन्दन चार मन घी पांच सेर कपूर ढाई सेर अगर तगर और दश मन काष्ठ ले कर वेदानुकूल जैसे कि संस्कारविधि में लिखा है वेदी बना कर तदुक्त वेदमंत्र से होम कर के भस्म करे इस से भिन्न कुछ भी वेदविरुद्ध क्रिया न करे और जो सभा जन उपस्थित न हों तो जो कोई समय पर उपस्थित हो वही पूर्वोक्त क्रिया कर दे और जितना धन उस में लगे उतना सभा से ले ले और सभा उस को दे दे ॥

६ अपनी विद्यमानता में और मेरे पश्चात् यह सभा चाहे जिस सभासद को पृथक् कर के उस का प्रतिनिधि किसी अन्य योग्य सामाजिक आर्य्य पुरुष को नियत कर सक्ती है परन्तु कोई सभासद सभा से तब तक पृथक न किया जाय जब तक उस के कार्य्य में अन्यथा व्यवहार न पाया जाय ॥

७ मेरे सदृश यह सभा सदैव स्वीकारपत्र की व्याख्या वा उस के नियम और प्रतिज्ञाओं के पालन वा किसी सभासद के पृथक और उन के स्थान में अन्य सभासद के नियत करने वा मेरे विपत् और आपत् काल के निवारण करने के उपाय और यत्न में वह यद्योग करे जो समस्त सभासदों की संमती से निश्चय और निर्णय पाया वा पावें और जो सम्मति में परस्पर विरोध हो तो बहुपक्षानुसार प्रबन्ध करे और सभापति की सम्मति को सदैव

विशुष जाने ॥

किसी समय भी यह सभा तीन से अधिक सभासदों को अपराध की परीक्षा कर पृथक न कर सके जब तक पहले तीन के प्रतिनिधि नियत न करले ॥

९ यदि सभा में से कोई पुरुषमर जाय वा पूर्वोक्त नियमों और वेदोक्त धर्मों को त्याग कर विरुद्ध चलने लगे तो इस सभा के सभापति को उचित है कि सब सभासदों की सम्मति से पृथक् करके उस के स्थान में किसी अन्य योग्य वेदोक्तधर्मयुक्त आर्य्य पुरुष को नियत कर दे परन्तु जब तक नित्य कार्य्य के अनन्तर नवीन कार्य्य का आरम्भ न हो ॥

१० इस सभा को सर्वथा प्रबन्ध करने और नवीन युक्ति निकालने का अधिकार है परन्तु जो सभा को अपने परामर्श और विचार पर पूरा २ निश्चय और विश्वास न हो तो पत्रद्वारा समय नियत कर के संपूर्ण आर्य्यसमाजों से संमति ले ले और बहुपक्षानुसार उचित प्रबन्धकरे ॥

११ प्रबन्ध न्यूनाधिक करना वा स्वीकार वा अस्वीकार करना वा किसी सभासद को पृथक् वा नियत करना वा आय व्यय और संचय का जांच पड़ताल करना आदि स   इति सब सभासदों को वार्षिक वा षाण्मासिकपत्रद्वारा सभापति छपवा कर विदित करे ॥

१२ इस स्वीकारपत्र संबन्धी कोई झगड़ा टंटा सामयिक राज्याधिकारियों की कचहरी में निवेदन न किया जाय वह सभा अपने आप न्याय व्यवस्था करले परन्तु जो अपनी सामर्थ्य से बाहर हो तो राज्यगृह में निवेदन कर के अपना कार्य सिद्ध करले ॥

१३ यदि मैं अपने जीते जी किसी योग्य आर्य्य जन को पारितोषिक अर्थात् पिनशन देना चाहूं और उस को लिखत पढ़त करा के रजिष्टरी करा दूं तो सभा को उचित है कि उस को माने और दें ॥

१४ किसी विशेष लाभ उन्नति परोपकार और सर्वहितकारी कार्य के वश सुझे और मेरे पीछे सभा को पूर्वोक्त नियमों के न्यूनाधिक करने का सर्वथा सदैव अधिकार है ॥

दयानन्द सरस्वती

श्रीनाथस्तुति

जय जय नन्दानन्दकरन वृषभानु सान्यतर । जयति यशोदासुपन कीर्तिदा

कीर्त्ति दागकर ॥ जय श्री राधाप्राणनाथ प्रणतारतिभंजन। जय वृन्दावन चन्द्र चन्द्रवदनी मनरंजन ॥ जय गोपति गोपाल गोपपति गोपीपति गोकुल शरण। जय कष्टहरण करुणाभरण जय श्री गोवर्द्धनधरण ॥ १ ॥

जय जय शकटविनाशन अघवकवदन विदारण। जय वृन्दाबनसोम व्योमतम तोम बिनाशन ॥ जयति भक्तअवलम्ब प्रलम्बवकास्वबिनाशन। जय कालिय फन प्रति प्रतिद्रुतगतिनृत्यप्रकाशन ॥ श्रीदाम सखा घनश्यामवपु वामकाम पूरन करण। जय ब्रह्मधाम अभिराम रामानुज श्री गिरिवरधरण ॥ २ ॥

जयति बल्लवीवल्लभ वल्लववल्लभवल्लभ। जय पल्लव द्युति अधर अमलबरजितकटाक्षप्रभ ॥ धरहासमल्लीमाल जयति ब्रज पल्लीभूषन। वजनवकीकुञ्जरचितहल्लीश मुदितमन ॥ जय दुष्टकाल बन मालधर भक्तपाल गनपालचय। क्षत तालमृदंगउत्तालगति गोपबाल नँदलाल जय ॥ ३ ॥

जय धृतबरहापीड़ कुवलयापीड़पीड़कर। चूरकरनचानूर मुष्टिबलमुष्टि दर्पहर ॥ जयति कंसविध्वंसकरन बिधुबंसअंसधर। परमहंसप्रिय अतिप्रशंस अवतसकलकिलकर ॥ जय अनिर्वाच्य निर्वाणप्रद चितअचिन्त्य प्राच्यतर। दुर्वारदुःखकर्बुददलन श्रुतिनिर्वादितब्रह्मवर ॥ ४ ॥

जयति पार्वतीपूज्य पूज्य पतिपर्वदत्त सुख। पांडवगुर्वीआर्तावर्षीपति अर्वरोध सुख ॥ हतसुपर्व्वहयपर्वादिक अर्वर दर्वीहुत। जय अथर्वनत गान्धर्वीयुत गन्धर्व स्तुत ॥ दुर्वासाभाषित सर्वपति अर्वखर्व जनउद्धरण। जय शक्रगर्वहतखर्व पर्वतपूजित पर्वतधरण ॥ ५ ॥

जय नर्तनप्रिय जय आनर्त्तनृपति-तनयापति। हतनावर्त्तहर कृपावर्त्त जय जयति आर्त्तगति ॥ कार्तस्वर भूषण भूषित जय धार्तराष्ट्रदर। कार्त्तिवृन्द पूजित जय कार्त्तिकपूज्यपूज्यतर ॥ जय बर्हविराजितसीसवर गर्हदीनजनउद्धरण। जय अर्ह अहर्निशिदुखदरण जय श्री गोवर्द्धनधरण ॥ ६ ॥

दोहा।

यह खट सुन्दर खटपदी सुमिरि पियो नंदनन्द। हरिपदपङ्कज खटपदी भिरधो श्री हरिचन्द ॥ १ ॥

मूल्य अग्रिम २॥) पश्चात ४।)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ लो को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Feby. 1884. Vol. VII.] [No. 6.

प्रयाग माघ शुक्ल ६ सं० १९४० जि० ७ [संख्या ६

॥ समस्या पूर्त्ति ॥

(हरिश्चन्द्र कृत)

गत महीने का हिन्दी प्रदीप ले कर हम पूर्वोक्त बाबू माहबके यहां गए थे पत्र पढ़ते ही उसमें तीन समस्या देख कर उसी चण बाब माहब ने दोही तीन मिनिट में ये तीनों कबित्त लिख कर मेरे हाथ दिए। (गो०ना०पा)

कबित्त।

लागी रन रङ्ग के भजत जीन तन तहां सोभा कोट चपकन चु-

स्त आमतीन को। भूम करि प-ट्टी पारि मांग काढ़ छड़ी लै कै चलै बनि नारी रही कमर चुरीन की ॥ बीरता को लेसहू न भारत में कहूं रह्यो चारो ओर फैल गई चाल नागरीन की। नाटक तमासा रामलीला आदि मांहि बची सनक सिरोहिन को फनक फरीन को ॥ १ ॥ सवैया।

तजि कै जगस्वामिहि पूजहि जो महा मूढ़ पिशाच के भूत मरे। कब लौं कहु चौका लगावत ही रहिहै तजि जीव के धर्म खरे ॥ तजि आलस मूढ़ता आग्रह बैर सुधार अबौं पन जो बिगरे। सब तौ नसि गो अब तौ सुधि लै कब लौं यह चाल चलैगा अरे ॥ २ ॥

नसिगे सब सास्त्र औ ग्रन्थ अनेकन मूढ़ बनै लखि कै सो लजौ। तजि छुद्र पखण्ड कौ धर्मन कौं अबहू छल छाड़ि कै ईस भजौ। सब डूबि चुको न रह्यो कछु है अब तौ तन बीरता बानो सजौ। गई सोअत सोअत बैस सबै अब तो तुम भारत नींद तजौ।

स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन।

स्वामी दयानन्द सरस्वती और बाबू केशवचन्द्र के स्वर्ग में जाने से वहां एक बेर बड़ा आन्दोलन हो गया० स्वर्गवासी लोगों में बहुतेरे तो इनसे घृणा करके चीत्कार करने लगे और बहुतेरे इनको अच्छा कहने लगे० स्वर्ग में भी कंसरवेटिव और लिबरल दो दल हैं० जो पुराने जमाने के ऋषी मुनी यज्ञ कर करके या तपस्या करके अपने शरीर को सुखा सुखा कर और कर्म में पच पच कर मरके स्वर्ग गए हैं उन को आत्मा का दल कंसरवेटिव हैं० और जो अपनी आत्मा ही की उन्नति से वा और किसी अन्य सार्वजनीन उच्च भाव सम्पादन करने से या परमेश्वर की भक्ति से स्वर्ग में गए हैं वे लिबरल दल भुक्त हैं० वैष्णव दोनों दल के क्या दोनों से खारिज थे क्योंकि इनके व्यापक गण तो लिबरल दल के थे किन्तु अब ये लोग रेडिकल्स क्या महा महा रेडिकल्स हो गए हैं० बिचारे बूढ़े व्यासदेव को दोनों दल के लोग पकड़ २ कर ले जाते और अपनी २ सभा का चेयरमेन बनाते थे और बिचारे व्यास जी भी

अपने प्राचीन अव्यवस्थित स्वभाव और शील के कारण जिस को सभा में आते थे वैसीही वक्तृता कर देते थे। कंसरवेटिवों का दल प्रबल था इसका मुख्य कारण यह था कि स्वर्ग के ज़मींदार इन्द्र गणेश प्रभृति भी उनके साथ योग देते थे क्योंकि बंगाल के ज़मीदारों की भांति उदार लोगो की बढ़ती से उन बेचारों को विविध पर्वों पर बलि और भोग न मिलने का डर था।

कई स्थानों पर प्रकाश सभा हुई। दोनों दल के लोगों ने बड़े आतङ्क से वक्तृता दीं। कंसरवेटिव लोगों का पक्ष समर्थन करने को देवता लोग भी आ बैठे और अपने २ लोकों में भी उस सभा की शाखा स्थापन करने लगे। इधर लिबरल लोगों की सूचना प्रचलित होने पर मुसलमानी स्वर्ग और जैन स्वर्ग तथा क्रिस्तानी स्वर्ग से पैगम्बर सिद्ध मसीह प्रभृति हिन्दू स्वर्ग में उपस्थित हुए और लिबरल सभा में योग देने लगे। बैकुंठ में चारो ओरइसी की धूम फैल गई। कंसरवेटिव लोग कहते कि ! दयानन्द कभी स्वर्ग में आने के योग्य नहीं। इसने पुराणों का खंडन किया, मूर्त्ति पूजा की निन्दा किया, वेदों का अर्थ उलटा पुलटा कर डाला, दश नियोग करने की विधि निकाली, देवताओं का अस्तित्व मिटाना चाहा और अन्त में सन्यासी होकर अपने को जलवा दिया। नारायण ! नारायण ! ऐसे मनुष्य की आत्मा को कभी स्वर्ग में स्थान मिल सकता है जिसने ऐसा धर्म विप्लव कर दिया और सारे आर्य्यों को धर्म बहिर्मुख कर दिया।

एक सभा में काशी के विश्वनाथ जी ने उदय पुर के एकलिंग जी से पूछा भाई ! तुम्हारी क्या मत मारी गई जो तुमने ऐसे पतित को अपने मुंह लगाया और अब उसके दल के सभापति बने हो ऐसाही करना है तो जाओ लिबरल लोगों से योग दो। एक लिंग जी ने कहा भाई हमारा मतलब तुम लोग नहीं समझे। हम उसकी बुरी बातों को न मानते न उसका प्रचार करते केवल अपने यहां के जंगल की सफाई का कुछ दिन उसको ठीका दिया बीच में वह मर गया अब उसका माल मता ठिकाने रखवा दिया तो क्या बुरा किया।

कोई कहता केशव चन्द्रसेन ! छिछि !!! इसने सारे भारतवर्ष का सत्यानाश कर डाला। वेद पुरान सब को मिटाया। क्रिस्तान मुसल्मान सब को हिन्दू बना

था। खाने पीने का विचार कुछ न बाकी रक्खा। मद्य की तो नदी बहा दी। हाय हाय! ऐसी आत्मा क्या कभी बैकुंठ में आ सकती है।

ऐसे ही दोनों के जीवन की समालोचना चारों ओर होने लगी।

लिबरल लोगों की सभा भी बड़ी धूम धाम से जमती थी। किन्तु इस सभा में दो दल हो गए थे, एक जो केशव की विशेष स्तुति करते दूसरे वे जो दयानन्द को विशेष आदर देते थे। कोई कहता धन्य धन्य दयानन्द जिसने आर्यावर्त्त के निन्दित आलसी मूर्खों की मोह निद्रा भंग करदी। इन रों मूर्खों को ब्राह्मणों के जो कनसरवेटिवों के पादरी और व्यर्थ प्रजा का द्रव्य खाने वाले हैं फन्दे से छुड़ाया। बहुतों को उद्यमी और उत्साही कर दिया। वे अब रेल तार कमिटी कचहरी लिख कर अर्थों को काटती हुई नाक बचा ली। कोई कहता धन्य केशव! तुम साक्षात दूसरे केशव हो। तुमने बंग देश की मनुष्य नदी के उस वेग को जो क्रिश्चियन समुद्र में मिल जाने को उच्छलित हो रहा था रोक दिया। ज्ञान कर्म का निरादर करके परमेश्वर का निर्मल भक्ति मार्ग तुमने प्रचलित किया।

कंसरवेटिव पार्टी में देवताओं के अतिरिक्त बहुत लोग थे जिनमें, याज्ञवल्क्य प्रभृति कुछ तो पुरानेऋषि थे और कुछ नारायणभट्ट रघुनन्दनभट्टाचार्य मण्डन मिश्र प्रभृति स्मार्त्त ग्रंथकार थे। सुना है कि विदेशी स्वर्ग के कुछ थोड़ा लोगों ने भी इनके साथ योग दिया है।

लिबरल दल में चैतन्य प्रभृति आचार्य, दादू नानक कबीर प्रभृति भक्त और ज्ञानी लोग थे। अद्वैतवादी भाष्यकार आचार्य पञ्चदशीकार प्रभृति पहले दलभुक्त नहीं होने पाए मिस्टर ब्राडला की भांति इन लोगों पर कनसरवेटिवों ने बड़ा आक्षेप किया किन्तु अन्त में लिबरलों की उदारता से उनके समाज में इनको स्थान मिला था।

दोनों दलों के मेमोरियल तयार होकर स्वाक्षरित होकर परमेश्वर के पास भेजे गए। एक में इस बात पर युक्ति और आग्रह प्रकट किया गया था कि केशव और दयानन्द कभी स्वर्ग में स्थान न पावें और दूसरे में इस का वर्णन था कि स्वर्ग में इनको सर्वोत्तम स्थान दिया जाय।

ईश्वर ने इन दोनों दलों के डिप्यूटेश

न को बुलाकर कहा। "बाबा अब तो तुम लोगों की 'सेल्फ गवर्नमेंट' है। अब कोई हमको पूछता है कि जिस के जो में आता है करता है। देखो कि कामटी ने कैसा एक प्रबन्ध लिखा था कि हम रहें तो तैसा और न रहें तो तैसा। अब चाहे वेद क्या संस्कृत का अक्षर भी स्वप्न में भी न देखा हो पर लोग धर्म विषय पर वाद करने लगते हैं। हम तो केवल अदालत या व्यवहार या स्त्रियों के अपथ्य खाने को भी मिलाए जाते हैं। किसी को हमारी डर है? कोई भी हमारा सच्चा 'लायक' है? भूत प्रेत तांत्रिया के तुल्य भी तो हमारा दरजा नहीं रहा। हम का क्या काम चाहे बैकुंठ में कोई आवे। हम जानते हैं चारो लड़कों (सनक आदि) ने पहले ही से चाल बिगाड़ दी है। क्या हम अपने विचारे अब विजय को फिर राक्षस बनवावें कि किसी को रोक टोक करें। चाहे सगुन मानो चाहे निर्गुन। चाहे द्वैत मानो चाहे अद्वैत हम अब न बोलें गे। तुम जानो क्या जाने।"

डिप्यूटेशन वाले परमेश्वर की ऐसी कुछ खिजलाई हुई बात सुन कर कुछ डर गए। बड़ा निवेदन विवेदन किया। कोई प्रकार से परमेश्वर का रोष शांत हुआ। अन्त में परमेश्वर ने इस विषय के विचार के हेतु एक 'सिलेक्ट कमेटी' स्थापन की। इसमें राजा राममोहन राय, व्यासदेव, टोडरमल, कबीर प्रभृति भिन्न भिन्न मति के लोग चुने गए। मुसलमानों में से एक इमाम, क्रिस्तानों से लूथर, जैनों से पारसनाथ, बौद्धों से नागार्जुन, और अफरीका से सिटेवायो के बाप को इस कमेटी का एक्स आफ़ीशियो मेम्बर किया। रूम के पुराने हरक्यूलस प्रभृति देवता जो अब स्टेट तन्खा ले कर स्वर्गों में रहते हैं और पृथिवी से अपना सम्बन्ध साफ छोड़ बैठे हैं तथा पारसियों के जरदश्त जी को कारेस्पांडिंग आनरेरी मेम्बर नियत किया और आज्ञा दिया कि तुम लोग इसके सब कागज़ पत्र देख कर हम को रिपोर्ट करो। उनको ऐसी भी शुभ आज्ञा थी कि एडिटरों को आज्ञा आप को तुम्हारी किसी 'कारवाई' का समाचार तब तक न मिले जब तक कि रिपोर्ट हम न छू लें नहीं तो व्यर्थ चाहे कोई सुने चाहे न सुने अपनी कांय कांय मचा ही देंगे।

सिलेक्ट कमेटी का कई अधिवेशन

हुआ। सब कागज़ पत्र देखे गए। दयानन्दी और केशवी पंथ तथा उनके २ प्रत्युत्तर और बहुत से समाचार पत्रों का मुलाहिज़ा हुआ। दाक्षयाखी प्रभृति कई कनसरवेटिव और द्वारकानाथ प्रभृति लिबरल तथ्य आला गणों की इसमें राय ली गई। अन्त में कमिटी या कमीशन ने जो रिपोर्ट किया उसकी मर्म बात यह थी।

'हम लोगों की इच्छा न रहने पर भी प्रभु की आज्ञाऽनुसार हम लोगों ने इस मुकद्दमे के सब कागज़ पत्र देखे। हम लोगों ने इन दोनों मनुष्यों के विषय में जहां तक समझा और सोचा है निवेदन करते हैं। हम लोगों की सम्मति में इन दोनों पुरुषों ने प्रभु की मङ्गलमयी सृष्टि का कुछ विघ्न नहीं किया वरंच उस में सुख और सन्तति अधिक हो इसी में परिश्रम किया है। जिस अगड़ालरूपी आग्रह और कुरीति के कारण मनमाना पुरुष धर्म पूर्वक न पाकर लाखों स्त्री कुमार्ग गामिनी हो जाती हैं, लाखों विवाह होने पर भी जन्म भर सुख नहीं भोगने पातीं; लाखों गर्भ नाश होते और लाखों ही बाल हत्या होती हैं; इस पापमयी परम नृशंस रीति को इन लोगों ने उठा देने में अपने शक्ति भर परिश्रम किया। जन्म पत्री की विधि के अनुग्रह से जब तक स्त्री पुरुष जिएं एक तीर घाट एक मीर घाट रहैं, बीच में इस वैमनस्य और असन्तोष के कारण स्त्री व्यभिचारिणी पुरुष विषयी हो जाय, परस्पर नित्य कलह हो. शान्ति स्वप्न में भी न मिलै, वंश न चलै, यह उपद्रव इन लोगों से नहीं सहे गये। विधवा गर्भ गिरावैं, पण्डित जी या बाबू साहब यह सह लेंगे, वरञ्च चुपचाप उपाय भी करा देंगे, पाप को नित्य छिपावेंगे, अन्त तोगत्वा निकलही जाय तो सन्तोष करैंगे, पर विधवा का विधि पूर्वक विवाह न हो, फूटी सहैंगे आंजी न सहैंगे, इस दोष को इन दोनों ने निस्सन्देह दूर करना चाहा। स्वर्ण पात्र न मिलने से कन्या का वर मूर्ख काना अन्धा वरञ्च नपुंसक मिलै, तथा वर को काली कर्कशा कन्या मिलै, जिसके आगे बहुत बुरे बुरे परिणाम हों; इस दुराग्रह को इन लोगों ने दूर किया। चाहे पढ़े हों चाहे मूर्ख, सुपात्र हो कि कुपात्र, चाहे प्रत्यक्ष व्यभिचार करैं या कोई भी बुरा कर्म करैं, पर गुरु जी वं पुरोहित जी हैं इनका दोष मत कहो, कहोगी तो पतित होगी, इन

को है, इनको राज़ी रक्खो ; इस सत्यानाशी सत्कार को इन्होंने दूर किया, आर्य जाति दिन दिन क्षय थी, लोग स्त्री के कारण, धनके वा नौकरी व्यापार आदि के लोभ से, मद्यपान के चसके से, वाद में हार कर, राजकीया विद्या का अभ्यास करके मुसल्मान या क्रिस्तान हो जाय आमदनी एक मनुष्य की भी बाहर से नहीं केवल नित्य व्यय हो, अन्त में आर्यों को धर्म और जाति कथाशेष रह जाय, किन्तु जो बिगड़ा सो बिगड़ा फिर जाति में कैसे आवेगा, कोई भी दुष्कर्म को तो छिपके क्यों नहीं किया, इसी अपराध पर हजारों मनुष्य आर्य पंक्ति से हर साल छूटते थे उस को इन्होंने रोका० सब से बढ़ कर इन्हों ने यह कार्य्य किया कि सारा आर्यावर्त्त जो प्रभु से विमुख हो रहा था, देवता बिचारे तो दूर रहे, भूत प्रेत पिशाच, मुरदे, सांप के काटे, बाघ के मारे, आत्महत्या करके मरे, जल दब या डूब कर मरे लोग, यही नहीं मुसल्मानी पीर पैगम्बर औलिया शहीद और ताजिया; गाजीमियां, जिन्हों ने बड़ी बड़ी मूर्ति तोड़ कर और तीर्थ पाट कर आर्य धर्म विध्वंस किया, उनको मानने और पूजने लग गए थे, विश्वासतो मानों विनाश का अंग हो रहा था, देखते सुनते लज्जा आती थी कि हाय ये कैसे आर्य हैं, किससे उत्पन्न हैं, इस दुराचार की ओर से लोगों का अपनी वक्तृताओं के थपेड़े के बल से मुंह फेर कर सारे आर्यावर्त्त को शुद्ध 'कायल' कर दिया।

भीतरी चरित्र में इन दोनों के जो प्रकार है वह भी निवेदन कर देना उचित है० दयानन्द की दृष्टि हम लोगों की बुद्धि में अपनी प्रसिद्धि पर विशेष रही० रंग रूप भी इन्होंने कई बदले० पहले केवल भागवत का खंडन किया० फिर सब पुराणों का० फिर कई अन्य माने कई छोड़े० अपने काम के प्रकरण माने अपने विरुद्ध को क्षेपक कहा० पहले दिगम्बर सिट्टी पीते महात्यागी थे० फिर संग्रह करते करते सभी वस्तु धारण किए० भाष्य में भी रेल तार आदि कई अर्थ जबरदस्ती किए० इसी से संस्कृत विद्या को भली भांति न जानने वालेही प्रायः इन के अनुयायी हुए० जाल को छुरी से न काट कर दूसरे आ-जाली से घिस कर काटना चाहा इसी से दोनों आपस में उलझ गए और इस का परिणाम गृह विच्छेद उत्पन्न हुआ० ।

केशव ने इनके विरुद्ध जाल काट कर

बहिष्कृत पत्र प्रकट किया॰ परमेश्वर से मिलने के हेतु कोई आड़ या बहाना नहीं रक्खा॰ अपनी भक्ति को उच्छलित नयनों से लोगों का चित्त आर्द्र कर दिया यद्यपि ब्राह्म लोगों में सुरा मांसादि का प्रचार विशेष है किन्तु इसमें केशव का कोई दोष नहीं॰ केशव अपने अटल विश्वास पर खड़ा रहा॰ यद्यपि कूचबिहार के सम्बन्ध करने से और यह कहने से कि ईसामसीह आदि उनसे मिलते हैं, अन्त्यावस्था के कुछ पूर्व उनके चित्त की दुर्बलता प्रकट हुई थी, किन्तु वह एक प्रकार का उन्माद होगा वा जैसे बहुतेरे धर्म प्रचारकों ने बहुत बड़ी बातें ईश्वर की आज्ञा बतला दीं वैसे ही यदि इन बेचारे ने एक दो बात कही तो क्या पाप किया॰ पूर्वोक्त कारणों ही से केशव का मरने पर जैसा सारे संसार में आदर हुआ वैसा दयानन्द का नहीं हुआ॰ इसके अतिरिक्त इन लोगों के हृदय के भीतर छिपा कोई पुन्य पाप रहा हो तो उसका हम लोग नहीं जानते उसका जाननेवाला केवल तुही है,

इस रिपोर्ट पर विदेशी मेम्बरों ने कुछ कुछ लेकर हस्ताक्षर नहीं किया।

रिपोर्ट परमेश्वर के पास भेजी गई॰ इसको देख कर इस पर क्या आज्ञा हुई और वे लोग जहां भेजे गए यह जब हम भी वहां जांयगे और फिर लौट कर आ सकेंगे तो पाठक लोगों को बतलावेंगे॰ या आप लोग कुछ दिन पीछे आप ही जानेंगे।

हरिश्चन्द्र

अथ वसन्तोत्सवे हंटर स्तोत्रं ।
नूतन महिष मर्दिनी प्रादुर्भावं च व्याख्यास्यामः ।

अस्यश्री हंटर स्तोत्र मंत्रस्य महा विपत्ति ग्रस्त भारतऋषिः उर्दू बीजं गवर्नमेण्ट देवता मिथ्याडम्बर शक्तिः अपमान कीलकं लम्बकूर्चक महामन्दीयानां प्रीतये शिक्षा कमिशनोद्भव हिन्दी बलिप्रदाने जपे विनियोगः ।

अथाङ्गन्यासः ।

हंटराय हृदयाय नमः । हिन्दीहृत्कोन्मूलने प्रचण्ड दण्डाय शिरसि । अभिनन्दनपत्र निगल जाने को प्रतनमुखकन्दराय मुख इङ्गलिश पलिसी आर सागर को मथ विष निकालने वाले अचल म

न्दरायनेत्राभ्यां। विष रस भरा कनक घट जैसे। मुह में अमृत हलाहल अन्तरायवाञ्छी:। इज्युकेशन कमिशन की नाक काटने वाले पादरी। अन्त को हिन्दी मृगी के अहेर कारक तथा हिन्दी मेधार्थ हव्य ढूढ़ने वाले अध्वाय फट् स्वाहा।

अथ ध्यानं।

मुखंपद्मदलाकारं वचश्चन्दनशीतलं। हृदयंक्षुरधाराभं विषकुम्भं पयोमुखं॥

अहाहाहा कैसी अपूर्व माया परात्पर जगदीश की है कि जिस्के प्रताप से सांप्रतिक व्रिटिश गवर्नमेगट के राज पुरुषो का भाव कुभाव प्रकाशक आदर्श रूप हंटर साहब महामहिम की कपट मालिनी मोहमालिनी व्यर्थ वागूजालिनी प्रकृति को किसी ने न पहचाना कि इन्हों महा पुरुष ने श्रीमान् नार्थब्रूक के शासन काल में अपनी गप्प गुण धारिणी रिपोर्ट के द्वारा कैसा कुछ अरबी फारसी का माहात्म्य बढ़ा के अपनी इष्ट मगडली के मूर्छित मन कुमुद को विकसाया और सैकड़ों जगह अरबी फारसी के मदरसे जमाए। "उघरहिं अन्त न होहि निबाहू। काल नेमि जिमि रावण राहू" जब इस्का भेद खुला सब चालाकी जाहिर हो गई और जितनी कारखाई इस बारे में की गई थी सब निष्फल हुई; हम लोगों को इस बात का खटका पहले ही से था कि हंटर तो तो उरदू फारसी के बड़े रसिक हैं क्यों कर हिन्दी की खैर करेंगे पर जुत्थ का जुत्थ जब मोह मदिरा के झोंक मे आ गया तो दो एक क्या कर सक्ते हैं; तो अब कपट भाव भूषिता अङ्गरेज़ी पलिसी की उपमा हम उस प्रभात कालीन छायों की काया को दे सक्ते हैं जो आरम्भ में बहुत लंबी चौड़ी होती है दो पहर होते होते सिकुड़ कर कुछ रही नहीं जाती; इस अभागी हिन्दी के लिए शिक्षा कमीशन में कुटिल भाव भासिनी उसी पालिसी को

दूसरी उपमा उस मूर्ख वैद्य से दी जा सक्ती है जो रोगी को अनेक उत्तम औषधियों से चंगा कर अन्त में विष की पुड़िया खिलाया चाहै ; हे उस ब्रिटिश कुटिल पालिसी के पुरुषावतार हंटर साहब हम लोग आप को अपूर्व गुरू समझते हैं दत्तात्रेय ने सुनते हैं २४ गुरू अलग २ किए थे हम लोगों को भाग्य वश सैकड़ों गुरुओं की शिक्षा इस कमीशन में आप के द्वारा वे प्रयासही मिल गई ; शिक्षा कमिशन वह भैंस है जो लाखों मन भूसा हज़ारों मन खरी बेनवल दाना घास खा गई बड़े २ पहाड़ और जंगलों को चरचोथ साफ़ कर डाला खुरखुन्द इतना मचाया कि तीनों लोक कांप उठा दूध दही की आशा दूर रही अन्त को गुच्छ पड़वा जनी जो उपजतेही महिषासुर बन गया—माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्। यह महिषासुर समस्त देवताओं का भाग छीने लेता है और देवता सब घबराए हुए प्रजापति की शरण में दौड़े जाते हैं इस अवस्था में हंटर हम आप को धन्यवाद देते हैं कि आपकी पालिता महिषी के पुत्र ने हमारे देवताओं को चिता दिया ; यह महिष केवल भारत वासियोंही का अपकारी नहीं है वरन ब्रिटिश गवर्नमेराट का भी पूरा शत्रु है जो राजा प्रजा के नाइत्तिफ़ाकी और द्वेष का मूल हुआ ; हे हंटर महाशय आप ने शिक्षा कमिशन महिषी को किस दुरात्मा के मंत्र बीज से सगर्भा कराया क्या गवर्नमेराट की शुभ चिन्तकता इसी में है कि कोई कड़ोड़ प्रजा दुखी हों? यह भी अनुमान हो सक्ता है कि इसमे आपकी जाती क़ुसूर नहीं है किन्तु जिस गवर्नमेंट का आप आवेशावतार हैं उसका दुर्भावही इस बात की प्रत्यक्ष शाक्षी है जो हमको पूर्ण शिक्षा के केन्द्रस्थान पर नहीं लाया चाहती ; ऐसा न होता तो आप के जठरानल मे इतनी शक्ति कहां से आ सक्ती कि सच्चाई के

पहाड़ को निगल जाते और न्याय के समुद्र को पीके पचा डालते ; खैर यह तो निश्चय हो गया कि सरकार को कभी हमारी हिन्दी के साथ सहानुभूति न होगी तो हमारे ही राजा महाराजा अमीर कबीरों के तेज पुंज से एक महिष मर्दिनी दुर्गा का प्रादुर्भाव होता जिसमे सत् शिक्षा विघातक शिक्षा कमिशनोद्भव उस महा महिष का तिल २ खण्डन हो जाता ; इस नवीन दुर्गा का उत्तमाङ्ग यावदार्यकुल दिवाकर श्री मन्महाराणा को शैवी शक्ति को होना चाहिए क्योंकि हमारे देश की सूतक प्राय राजमण्डली मे यही महाराज विद्या गुण की वृद्धि में कुछ २ जागरूप देखे जाते हैं और ये समस्त राजमण्डल के सिर मौर भी हैं उस दुर्गा के शेष अङ्ग प्रत्यङ्ग की पूर्ति और २ राजे महाराजे धनी श्रीमन्त करते तो यह हिन्दी समूल नाश होने से अब भी बच रहती नही कमिशन ने तो हिन्दी की हत्या करी डाली है ; इस हंटर के गुणानुवाद का बहुत कुछ साहस बांधते हैं पर जिह्वा आगे को नहीं बढ़ती इसी शिक्षा कमिशन के प्रपंच की फरियाद करने को स्वामी दयानन्द परलोक सिधारे और इसी शिक्षा विघातक महा महिष के अन्याय से शङ्कित हो बाबू केशवचन्द्र ब्रह्मासमाज को छोड़ स्वर्ग को यात्रा की और थोड़ेही काल में कमिशन में शिक्षा की क्षपणाई और इल्वर्ट बिल में शिकारी साहबों के हृद्गत भाव से खूब जानकार हो लार्ड रिपन भी इंगलिस्तान को प्रयाण किया चाहते हैं ; लार्ड रिपन की यह इङ्गलैण्ड यात्रा वैसीही समझनी चाहिए जैसा नागपुर के राजा का सर्वस्व हरण आदि अन्याय पर खिन्न चित्त हो उस राज्य के रेजीडेंट ने अपना अधिकार छोड़ दिया था ; हंटर महाशय हमने तो हिन्दी पर वज्राघात तभी समझ लिया था जब आप के साथ दो यवन कुलावतंस शिक्षा कमि

शन के सहकारी कर दिए गये ;
हे दैवी सम्प्रदाय कुल कलङ्क सूर्य
और चन्द्र वंश को लज्जित करने
वाले क्षत्रियो ; हे महर्षि वंश की
मलिनकारी ब्राह्मणों ; हे श-
ङ्कराचार्य के नाम धारको ; हे रा
मानुज की महिमा को अधःपात
करने वालो ; हे माध्वमत के मि
थ्याभिमानियों ; हे वल्लभाम्रतोप
देश के दम्भियो ; हे जगद्गुरु ना
नक के मूल सिद्धान्त देश और
जाति उपकार के आलसियो ;
चेतो समस्त भारतीय प्रजा का
हित जान शिक्षा कमिशन द्वारा
निर्मूलित हिन्दी के बचा रखने
मे एक मत हो और इस नव
दुर्गा के अङ्ग प्रत्यङ्ग के पूरा करने
में प्रयास करो ; ऐसा क-
भी मत समझो कि लोकल गवर्न
मेण्ट तुम्हारी इस बात में सहा-
यता करेगी वरन हिन्दी विघातक
महा महिष को जन्म दाता वही
हुई है जिसके दमन अर्थ हम तुम
से नव दुर्गा के प्रादुर्भाव की प्रा-
र्थना कर रहे हैं ; जब समझदार
लोग हमारे दुर्दैव की प्रेरणा से
ना समझी करने पर सन्नद्ध हों
तब कौन चारा है ; इस प्रदेश
की शिक्षा विभाग के महा महन्त
ग्रिफिथ साहब बनारस में रह
संस्कृत का अनुशीलन करते २
वृद्ध हो गए सो अब बुढ़ाई मे हि
न्दी की हत्या का काम उन्ही के
बांट में पड़ा ; गवर्नमेण्ट चाहो
कभी को कुछ दया भी कर जाय
पर यह ऐसी छुरी चला दें कि
नस तक कट जाय इनके सहका
री इन से बढ़ कर आलसी वणि
क् वृत्ति धारी और गोबर गनेस
मिले जिन्हें उत्तेजना कहीं छू
नहीं गई तब उक्त श्रीमान को
न्याय अन्याय से बचने को कौन
चेतावे ; हा जिस हिन्दी को इन
के पूर्व अधिकारी केम्पसन साहब
बचपन से पाल पोष इतनी बड़ी
किया उसके गले पर छुरी चलते
देख ग्रिफिथ साहब को तनिक
दर्द और रहम न हो ; सुयश
और नेक नामी को लूट तो है
जिसे जितना बन पड़े लूटे अब

ऐसा अवसर काहे को कभी मिलने वाला है-अच्छे मिलनसे जैसे शुद्धबुद्ध सीधेसादे मिस्टर ग्रिफिथ वैसेही प्रतापी लायल बहादुर--परम स्वतंत्र न सिर पर कोई। भावै तुम्है करौ सोइ सोई॥ ऐसाही पंजाब के लाट और डयूरेक्टर का हाल भी सुना जाता है तो बस भलाई की आशा इनसे छोड़ आगे को बढ़ो---उभय भांति देखा निज मरना। तात्कालीन रघुनायक सरना॥ बस अब मिथ्या आर्य कुलाभिमानियो चेतो ; वही जाति वही पांति, वही धर्म, वही कर्म, वही आचार, जिस्मे देश की भलाई हो जब यह तुम्हारी महिष मर्दिनी शक्ति विधि पूर्वक उठेगी तो तुरन्त समुद्र को डांक जाय प्रजापालिनी न्यायशालिनी विजयिनी देवी को समझाय तुम्हारा प्रयोजन सिद्ध करा लावेगी ; कदाचित् वहां भी कुटिल बुद्धि वालों की सम्मति से शिक्षाभिघाती महिष का पक्षपात होगा तो हमारी महिष मर्दिनी देवी विक्टोरिया के परम प्रिय सम्बन्धी रूस के अलिगजेंडर से उलाहना देगी और जरमनी के महाराज से जाकर निवेदन करेगी कि जिस प्रकार आप ने संस्कृत को अपने शरण में ले लिया वैसाही हिन्दी के प्राण भी बचाइये और फिर वहां जाने से न्याय समझ फ्रांस इटली प्रभृति सबी इस न्यायार्थिनी की बात पर ध्यान देंगे क्योंकि वहां यूरोप के पवन पानी में ऐसा अन्याय नहीं समाया है जैसा यहां पश्चिमोत्तर और अवध की सिविल सरवेंटो में भर गया है ; तस्मात् गवर्नमेंट की आशा छोड़ हम सबों को सर्वतोभावेन हिन्दी के प्राण रक्षा में सन्नद्ध रह तन मन से उद्यत होना चाहिये और जिन्हे इस प्रयत्न मे शिथिल देखे उनको हमारा यह हंटर स्तोत्र सुना दें जो उर्दू डाकिनी के टोने से बचे हुए होंगे तो उन पर यह स्तोत्र शस्त्र बन अवश्य असर कर जायगा। इति

आंख।

आंख संसार में बड़ी चीज़ है जिनको भगवान ने आंख नहीं दिया वे बेचारे तो लाचार हुई हैं पर बहुत से ऐसे भी हैं जिन के माथे की है पर हिये की फूटी होने के कारण आंखों के अन्धे नाम नेन सुख बन रहे हैं बहुतेरे अत्याचारी आंख बन्द कर चलते हैं हज़ारों गरीबों के सिर कुचल ते हैं; इस आंख का एक अनोखा ढंग है न इस्का मुदना अच्छा न उठना अच्छा न बैठना अच्छा न आंख का आना अच्छा न जाना अच्छा न लाल पीली होना अच्छा न दो से चार होना अच्छा न इसका ऊंची होना अच्छा न नी ची होना भला न आंख से उत रना अच्छा न इस पर चढ़ना कि सी काम का; एक का ठिका ना नहीं दो दो कौड़ी को लोग कहेंगे दो अकले हैं तीन आज तक किसी को देखने में नही आई ईश्वर न करे चार हो ' जब आंखेंचार होती हैं मुरौवत जा- ही जाती है ' ईश्वर न करे किसी मृगनयनी से किसी की आंखें लड़ जांय जहां आंखें चार हुईं कि आंख लग गई फिर क्या आं खों देखते २ लाख का घर खाक में मिलजाता है तब भी आंख नहीं खुलती आंखों का पानी तो ढल कहीं जाता है जो कुछ न करना चाहिये वह भी कर गुज़रते हैं; मसल है चा हे जी जाय लगी कैसे छूटे बिग ड़ते देख कोई हितैषी हित की सुझावे तो आंखें दिखाने लगते हैं और जो आंखों में थोड़ा बहु त शील सङ्कोच हुआ तो आंखें चुराने लगते हैं वा आंखें नीची कर लेना पड़ता है ; आंख चली जाय तो बुरा, रह जाय तो बुरा, न घुस जाना अच्छा न निकल प ड़ना अच्छा, न झंप जाना भला, न तिरछी होना गुणकारी, इस का सीधा होना भी नदामत की निशानी है बहुतेरे दूसरों की आखों में धूल झोंक अपना काम बनाने में बड़े सयाने होते

हैं आंखो का काजल काढ़ो निका
ल लें किसी को मालूम नहो
ऐसे वंचक वृत्ति वाले सदा यही
मनाया करते हैं कि कोई आंख
का अन्धा गांठ का पूरा मिले;
बहुतों की आंख सदा दूसरों की
बुराईही पर पड़ती है। खल: सर्षप
प्रमाणानि परछिद्राणि पश्यति।
आत्मनो विल्व मात्राणि पश्यन्नपि
नपश्यति। बहुतेरे ईढी मनुष्यों
को किसी की कुछ भलाई आंखों
में खटकती है बहुत से दूसरों की
मालछो पर आंखें डालते फिरते
हैं जहां टुक आंख की ओट हुई
या आंख चूकी कि माल यारो
का हुआ; कितने गंगा यमुना
किनारे मेले ठेलों मे दूसरों की
बहू बेटियों को बुरी नजर से
ताका २ आंखें सेकते हैं ईश्वर
करे इनकी हिये की खुले और
इन बुराइयोंसे बरतरफ हों; बिर
ही जनो की आंख सदा यही बा
ट जोहती रहती है कि प्रीतम
आवें और हम अपनी आंखें
ठंडी करें बिरह बिथा मे रात २
भर आंख नहीं लगती; आदमी
के तन मे आंख ऐसा पदारथ है
जिसके न होने से जिन्दगीही अ-
कारथ है; मन जैसा आंख
का प्रकाश करता है दस इ-
न्द्रियों में और किसी का वैसा
नहीं; कितनो की रसीली
आंख उपमा के योग्य होती है
फ़ारसी के शायर आंख की उप
मा नरगिस से देते हैं हमारे देश
के कवि मृग मीन खंजन और क-
मल से आंख की उपमा देते हैं;
राजाओं के नेत्र जासूस होते हैं
इसी से राजा लोग चार चक्षु
कहलाते हैं 'क्रियासुयुक्तै र्नृप
चार चक्षुषोन वञ्चनीया: प्रभवोनु
जीविभि:' योगी लोग ज्ञान नेत्र
से देखते हैं इस लिए वे ज्ञान च
क्षु कहलाते हैं; स्त्रीजित जोरू के
गुलाम गृहिणी नेत्र होते हैं क्यों
कि वे जो कुछ करते धरते देखते
भालते हैं सब घरवाली की हि
दायत से 'प्रायेणगृहिणीनेत्रा क-
न्यार्थेषु कुटम्बिन:' कितने आंख
रहते भी अन्धे हैं जैसा धन मद

दुर्मद 'कस्मात् भजन्ति कवयो धनदुर्मदान्धान्' ईश्वर ऐसों को आंख दे। ह—प्र—

——०——

कान।

पृथीराज के कानों की कथा कानो सुना करते थे परन्तु अपने सामयिक पृथीराज के कानस्टेबल अर्थात् कान के अस्तवलों को हर ठौर कोने २ खड़े आंखो देखते हैं; कैसा अच्छा होता जो हमारी सरकार के आंख स्टेबल भी होते तब तो हम इनको साक्षात् इन्द्रही समझते जो अब केवल अपने इन्ही कानो से सुनते हैं उसे आंखों से भी देखते तो कान के इतने कच्चे न होते; समाचारपत्र सदा कान खाते रहते हैं पर यह कब कान धरते हैं जो सरकार तनिक भी इनकी पुकार पर कान देती तो कानको कान रह जाती पर जहां कई एक चालाकी के कान काटने वाले कान लगे हैं वहां हम गरीबों की कौन सुने सिवा एक इन को सुनने के और सब ओर से सरकार ने कान बन्द कर रक्खे हैं; इसका एक प्रमाण यही है कि प्रजा सब हिन्दी ही हिन्दी पुकार रही है पर यह कान में तेल डाले बैठे हैं हम लोग चिल्लाते २ कान पोले कर दिये पर तौ भी कान न खुला बन्द का बन्द रहा बल्कि शिक्षा कमिशन से भी हिन्दी को कान पकड़ बाहर कर दिया; तब हमने यह उपाय सोचा कि इस कान के गान से अपने देशी धनाढ्यों के कान में भी इसकी भनक डालदें कदाचित् यही लोग कान लगा कर सुनलें; सरकार आपकी ओर कान नहीं करती तो आप भी अब कान पकड़िये कभी अदालत का नाम न लीजिये अपने मामिले मुकद्दमे आपसही में कर लीजिये किसी को कानो कान खबर न हो तब गवर्नमेन्ट के कान खुलेंगे नहींतो तुम लाख कहो वह एक कान से सुन दूसरे से निकाल देगी और इसे यहां तक गोप्य रक्खो कि

चार कान से ६ कान में न जाने पावे क्योंकि नीति है षट्कर्णोभिद्यतेमन्त्रः न सुन पड़ा हो तो कान की मैल निकलवा डालो और जो हम कहते हैं उसके करने पर कमर बांध मुस्तैद हो जो हमारी यह बात न मानोगे तो कोई दिनों में कान पकड़ उठाये बैठाये जावगे; इस लिये हे प्रिय लम्बो कान रहते बहरे बनो अप ने सच्चे हितकारी की बिनती कान लगा कर सुनो।

वाक् चातुरी।

Hunger is the finest sauce "क्षुत्स्वादुतांजनयति"।

Idleness is the rootof all evils "सुस्ती सब बुराइयों की जड़ है"।

Industry is fortune's right hand andfrugality her left "मेहनत की आदत खुश किस्मती का दहिना हाथ है किफायत से चलना बांया"।

A soft answer turneth away wrath; मुलाइम जवाब गुस्से को पलट देता है।

Wounds may heal, but not those made by ill words. घाव पुर जाते हैं प[illegible]

पुर[illegible]

Few words are best; मितंच सारंच वचोहि वाग्मिता"।

A word is enough to the wise, समझदार के लिये एक बात बहुत है; "दानारा इशारा काफी"।

Words are for women, actions for men; स्त्रियों के लिये बात है पुरुषों के लिए पुरुषकार काम है।

The worth of a thing is best known by the want of it. कद्र मरदुम बाद मरदुम"।

Waste not wantnot "खोओ मत चाहो मत"।

खाई भली की माई।

खूंटे के बल बछेड़ा कूदे।

खुदा को देखा नहीं तो अक्किल से पहिचाना ।

खेवा देकर बहे जाना ।

खोटा पैसा अपना कहा सराफ हि दोष ।

गरीबी कोट आपदा ।

गरीबी सबकी बीबी ।

गदहे का खाया खेत न पाप न पुन ।

गया सो गया अब राख रहे को ।

गले पड़े बजाए सिद्ध ।

गुड़ खांय गुल गुलों से परहेज ।

गोद मे लड़का गांव मे ढन्ढोर ।

गोता दिया समुद्र मे घोंघी आई हाथ ।

गोकुल गांव को पैंडो न्यारो ।

गुरू बिन ज्ञान नहीं ।

गुड़ देके ढेला मारे ।

गतं न शोचामि ।

घरको योगी बाहर के सिद्ध ।

घरको लगी बन गई बनमे लागी आग ।

घरका भेदिया लंका डाह ।

घर घोडी नकास मोल ।

घड़ी २ घड़ियाल बजावे कौन घड़ी कैसी आवे ।

घर खोदे मूसा राज करै भुजङ्ग ।

घर खोवै साला राह खोवै नाला ।

घट २ मेरा साइंया सूना घट नहिं कोय ।

घरमे नहीं चने का चूर लड़के मांगे मोती चूर ।

घर रख गोबर पाथना ।

घर दिया पहले मसजिद दिया पीछे ।

घसते २ चन्दन से भी आग निकले ।

घर रहे न तीरथ गए मूड़ मुड़ाय फजीहत भए ।

घर तुम्हारा डेहरी भीतर पांव न देना ।

होली ।

कानन बने रहे जु पुरातन मुनिवर कानन चारी । तेज पुंज तपसी चतुरानन सम गिरि गुहा मझारी । तेइ अब देखि दुर्दशा हमारी चितयइ दया बिचारी । भारत गुण विद्या चतुराई फिरसे करैं

प्रचारी। सोई अब हम तुमहि चितावत जिमि हित होय तुम्हारी। फागुन मास पूर्णिमा आई सुनहु सबन चित लाई। कलुष द्रोह उपद्रव ईर्षा कायरता निठुराई। यह सब ईंधन साज बहुं दिस पावक देहु लगाई॥

बजै चहुं ओर बधाई।

जो कटु वचन कहै कोउ तुम सों तेहि सह देहु भुलाई। अनहित करै जो तुम संग वाको हित करि देहु लजाई।

प्रीत कर पंथ लखाई।

प्रेमको रंग सुभग भरुणारो मन पिचकारी धनाई। ताग २ सब जनन भिगाओ कोउन सूख रह जाई।

यही सबके मन भाई।

लाल गुलाल अबिर सत्श्रद्धा निज २ मुख लपटाई। तब साजुस बनाय प्राण को देहु सबहि बरताई।

प्रेम जासो रहै छाई।

लाज अरु दुःख हेराई।

ह—प्र—

पण्डित श्रीधर।

समस्यापूर्ति।

सनक सिरोहिन की फनक फरीन की।

कवित्त।

वेद ग्रह नियुन विधु १२९४ ई सवौ बरस में सजी सेन पृथीराज समर प्रवीन की। पानीपत भरपट में सरपट सुरंग छाई चमू चतुरङ्ग उतै भारत चरीन की॥ दोउ दल प्रबल प्रहार अस्त्र शस्त्रन को दामिनी दमकै मनो विकट झरीन की। कुंजर चिघार हयहीसनि निनाद मारू सनक सिरोहिन की फनक फरीन की॥

कवित्त।

सुदृढ़ सुबीर सर तरकस कमान कांधे तुपक तमंचा बांधे झलक जरीन की। इबराहिम दिल्ली पति सेना सजाई निज बाबर मुकाबिले की सहज करीन की॥ मुगल

समूह संग लोदिन की जूह जूझौ कटत लिलार धार रुधिर नदीन को । गोलन की धाड़ धौ चिंघाड़ चराड हाथिन की सनक सिरोहिन की फनक फरीन की ॥

कवित्त ।

अष्टादस व्यासी के बरस मे सरस भूमि भई दैव योग तें अरस सिसरीन की । एकासिधारी रह्यौ एक न विवेक वारो ठनौ युद्ध तिन संग ब्रिटन धुरीन की ॥ भारत सपूत बीर ब्रिटिश अनीक और लरे जाय साथ फौज यवनन बलीन की । जय २ की घोर औ बघोर रिपुरोर तहां सनक सिरोहिन की फनक फरीन की ॥

अब तो तुम भारत नींद तजौ ।

सवैया ॥

जबतें महमूद चढ़ाव कस्यो जब तें जयपाल गयन्द भजौ । जब तें पृथिराज अकाज भयो जब तें कनवज्ज नरेश लजौ ॥ जब तें यहां गोरि गुलाम की हेत अचेत ह्वै आपनो ताज सजौ । तब तें अब लौं रहि सोवतहो अब तो तुम भारत नींद तजौ ॥

सवैया ।

तुम्हरे पति हैं अंगरेज अबै जिन रंग बिरङ्ग समाज सजौ । जिनकी प्रभुता सों अनेक अनोखी विभूति को ह्यां समवाय गजौ ॥ जिनकी उत्कृष्ट सुशासन सों अनजानपनो बहु दूरि भयो । सुभ ज्ञान को भानु उदोत भयो अब तो तुम भारत नींद तजौ ॥

सवैया ।

जब सों तुम सोइ गये वरबीर अधीरज लोक भयो बिरजौ । तुम्हरी सब सन्तति दीन भई कुल को कुल कूदि कुमार्ग सजौ ॥ दूढ़िकाल अनेकनुत्रास भयो निज दुर्गति की मति को भरजौ । हम टेरि पुकारत हैं सबरे अबतो तुम भारत नींद तजौ ॥

कब लौं यह चालि चलैगो परे।

सवैया॥

नित झेलत हानि अनेकनहीं अ विवेक में लीन सदा अँधरे। सह-साबधि द्रब्य लुटावन में नहिं सो चति नेक डरे न परे। लघु बालक ब्याहि चढ़ावत हैं निज सीस पै पातक पुंज खरे। समझावत हारि गये हम तो कबलौं॰॥

घर नारि जन्यो लरिका जबहीं बजवावत खूब नगारे खरे। नच वावत द्वार भलो गनिका गन आनंद गान निसान धरे॥ बहु भोर जिमावत विप्रन को धरवावत नाम कुढंग ढरे। पुनि ब्याहत बैस अजानहि पै कब लौं॰॥

एक सेठ बड़ो धनवान हुतो तिन आपुन तीन विवाह करे। जन सो तिरियान के तीनि सुता जिन देखि कै चन्द विभा बिगरे। पर पांच बरीस को ब्याहि दई पति बालक चेचक व्याधि मरे। शठ भारत रीति कुरीति महा कबलौं यह चालि चलैगो अरे॥

जब वे विधवा भईं षोड़श बर्ष को जोबन जोर शरीर भरे। तिन जार किए अपनी अपनी छिपि लागिहु भोगन भोग खरे। मद रङ्ग उमङ्ग के आनद में गृह त्यागि गईं पिय के डरे। शठ भारत कौन मृजाद रही कबलौं॰॥

दोहा।

पाठक गोपीनाथ जू शांतस्वरूप कृपाल। शिशुपन ते पालन करत अबुध केदार कँगाल॥ १॥

समस्या पूर्ति।

सनक सिरोहिन की फनक फरीन की।

कवित्त।

रीवाँ को नरेश विश्वनाथ जू बघेल आछे पञ्चनद नायक रणजीत नैन हीन को। सिवा जी बहादुर यों मानसिंह दयाराम बीर बरिवण्ड सिंह समर प्रवीन को॥ कहत केदार महाराणा उदयेश पुञ्ज काटि डारे अनगिनित मुण्डै मो मीन को। जाको जस आज लौं बितान सो तने हैं हिन्द सनक सिरोहिन की झनक फरीन को॥

कब लौं यह चालि चलैगी अरे।

सवैया ॥

मन भावै सोई कै डारत हैं अपने कहँ जानत हैं जबरे। जे ठांव सुनो अनरीतै महा लड़ि जात निशंकित जाम भरे। दुख हिंदुन को न मलिच्छ गुनैं सर्कारहु पच्छ उनी को करे। नहि जानि केदार परै जग मों कब लौं यह० ॥

हिन्दुस्तानियों मे एकता न होना।

सवैया ।

जूट की टूट महान अहै अपने महँ आपुहि रारि करे। यह फूट को बीज जमाइ धरे चकराइ दिने दिन फूट फरे ॥ तेहि खात खवावत हैं सुख से कबहूं नहिं देत निकाल अरे । ना जानि केदार परै जग मों कब लौं० ॥

सवैया ॥

गो बध निवारण ।

नरहरिदास विचार किए कबहूं जग में नहि गाय मरे। अरजी लिखि सींग में बांधि भले दर्बार अकब्बर सौंह करे ॥ अनुशासन शाह दई तुरते बध होय नहीं इनको नगरे। सर्कार केदार विचारै न हा! कब लौं यह० ॥

पय पान किए तन रिष्ट घनो घृत भच्छित आंखैं जोति करे। दधि माखन छाछ बनै मुखता एक बेरै भूस खरी की चरे ॥ सुत काज अकृत करैं जन्म तेहि को हति देत मलिच्छ हरे। ना जानि केदार परै जग मों कब लौं० ॥

रोम निवास अहै सुर सम्यक् तीरथ अग्र खुरग सिगरे। सविता ससि नैन समाइ रहे जमुना सरितासुर पुच्छ परे ॥ तेहि को बध हाय! मलिच्छ करैं सर्कारहु एकट बनाइ धरे। ना जानि केदार परै जग मों कब लौं यह० ॥

सवैया ॥

संयोगिनी वियोगिनी नायका

नरनारि सँजोग करैं गृह में वोहि में विधवा बिललात परे। एक लूटति है रस रङ्ग मजा एक सेजहि आंसुन धार भरे ॥ एक चाहति है सुख सिन्धु मिलै एक चाहति है सुख बोल टरे। गति जानि परै न केदार विधौ कब लौं० ॥

सवैया ॥

वेद बिधान को मान मलित श्रुक तात पुरान को पान करे। कह बाइकै ब्राह्मण बेचि सुता मत जागवलीक मनू को दरे ॥ धिक्कार है ऐसे महीसुर को वक जनमराही उर जात मरे। नहि जानि कीदार परे शठ मों कब लों यह० ॥

मानुस को तन पाइ भलो तेहि मों वर ब्राह्मण होइ हरे। जन साइ सुता द्वै चार छहा तिनको सिर पै ऋण बोझ धरे ॥ भर वर्ष की होइ गई तब ही जर जांचत हैं धनव्याह घरे। अस विप्र की लालत है जग मों कब लों० ॥

सवैया ॥

साठ को नायक नायका द्वादश बरस मे हरम बियाह करे। गथ लेन के हेत अचेत महा तनिको मनमांहि न लाज सरे॥ अस जीव अजीव गुनी अधिकै बधिको तनु जा बर बूढ़ बरे। नहि जानि कीदार परे शठ मों कब लों० ॥

सवैया ॥

मात पिता करि कै बड़ प्यार रिषी बरसै सुत व्याह करे। तनि को न बिचार किए पछिलि तरुनी तरुनाई लखाई घरे। तेहि को चहियै पिय पीन महा निसुबासर जो भुज ठोंकि लरे। अबला भर मार कदार महे कब लों० ।

सवैया ॥

गृह की तिय को रति अंजुलि दै सेवकाई करैं कसबी के घरे। धनिका वनिका गनिका रमते कनिका सम लाज दराज दरे ॥ कुण्ड हुतासन की नटिनी परते रसिया जन गात जरे। नहि जानि कीदार परे शठ मों कब लों यह चालि चलैगो अरे ॥

मान महान लहिउ जग में नवला की थाला में सबै को दरे। उर ज्ञान को दीप बुझाय दिए मृदु भाषित नर्तकि नेह परे ॥ धर्म अधर्म गुनैउ न काहू बड़ निर्लज्ज टोप कपार धरे। नहि जानि कीदार परे शठ मों कब लों यह चालि चलैगो अरे ॥

तजि कै गृह नारि रमैं गनिका पृथिपाल महाजन होइ हरे। जम

राज को चास बिसारि हहा दुख तीखन भैरव चक्र परै ॥ तनिकौ न विचार करैं मन में शुचि कर्म हि कै नर देह धरै । धिक्कार अपार केदार कहै कब लौं यह चालि चलैगो अरै ॥
अब तौ तुम भारत नींद तजौ ।

सवैया ।

दारिद मारि गिराय दियेउ जन को मन नेकु न लाज भजौ । निसुवासर दावेद्र आवत है तेहि ते भुज चगड है ठोंकि बजौ ॥ मन मांहि केदार अधीर न हो तन में बर बीरता साजैं सजौ । आँगिराव जँभाव नहीं रचिको अब तौ तुम भारत नींद तजौ ॥

[illegible] पाई घनो अपुनो बड़ विक्रम सोचि लजौ । हरिचन्द सिवी नृग कर्ण रघू बलि विक्रम दानि दधीच अजौ ॥ प्रगटे बहु बीर केदार उदार युधिष्ठिर पाण्डु प्रचण्ड धजौ । सब अस्त भए न रहे कोउ हा ! अब तौ तुम भारत नींद तजौ ॥

ब॰ला॰प्रेस केदारशर्म्मा ।

सत्योदय नाटक ।

सत्य का सत्य और हास्य का हास्य

ऐ गाफिलान हिन्द उठो खूब सो चुके । जो कुछ कमाया तुम ने था वह सब तो खो चुके ॥ यह काहिली व सुस्ती व गफलत कहां तलक । हिन्दू व कौम हबशिया काफ़र भी बन चुके ॥

बाबू नन्हेमल मुदर्रिस ज़िला फ़र्रुखाबाद कृत ; यह नाटक हकीकत में बड़ा उमदा और मुफ़ीद है पढ़नेही से इसका आनन्द मिल सकता है न जानिए हमारी तारीफ़ किसी को कैसी जचे क्योंकि सच्ची झूठी प्रशंसा कर हम अपना मन किसी के मन में कैसे छोड़ सकते हैं ; हाथ कङ्गन को आरसी क्या ≶) कुछ बड़ी बात नहीं भेज कर तुर्त मंगा क्यों न लो ।

मूल्य का नियम

अग्रिम ३≶)
पश्चात ४)

Printed at the 'Ligt Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by PtBalkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

-xxxx—

[illegible]मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ [illegible]ी को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st Mar. 1884. Vol. VII.] [No. 7.

प्रयाग फागुन शुक्ल ६ सं० १९४० जि० ७ [संख्या ७

समस्या।

१ तबही ते मयंकै कलंक लगो री।

२ मति मारी गई तो कहा करिये जू।

३ किमि भारत भारत भूमि भई।

४ अविवेकहि त्यागि गही गुन गैलै।

५ परखण्ड बवण्डर खेवट मातो।

६ उठ भारत रैन वितीत भई।

७ विपिन लतान में कि कीकर पतान में।

८ भूल औ भुलैया की समैया घिरि आयी है।

९ लता वितान कुंज में।

१० फिरह्रू सुहाई सो वसन्त ऋतु आई री।

११ आवत श्याम उछालत निंबू।

१२ कोउ की ससि मोद कोऊ दुखदाई।

प्रीति और मैत्री।

प्रीति और मैत्री।

आज हम इस बात का बिचार करते हैं कि प्रीति और मित्रता क्या वस्तु है तुलसी दास जी ने कहा है-रूपद्रव्य गुण शील को प्रीति करै सब कोय। तुलसी प्रीति सराहिये जो इनसे बाहर होय प्रीति एक ऐसी वस्तु है जो केवल मनुष्यों हो के लिये रची गई है यरन पशु पक्षी और मनुष्य मे यही तो विशेषता है प्रीति को आदर देने से मनुष्य देव तुल्य हो सक्ता है और बिना इसके पशु से भी हीन है कहां तक कहे इसी से मनुष्य मुक्ति का अधिकारी हो सर्वोत्तम ब्रह्मपद पा सक्ता है; इस प्रीति की रीति ही एक निराली है प्रीति इसका नाम नहीं है कि जो वस्तु हमे प्रिय लगी अथवा जो कोई हमारा प्रिय करे उससे अनुराग करना क्योंकि ऐसा तो पशु पक्षी भी करते हैं और न प्री[illegible] हैं कि जिस्से इस संसार मे हमन कुछ संबन्ध मान लिया है जैसे स्वजन बान्धव परोसी माता पिता भाई बहन आदि उनसे अनुराग बढ़ाना क्योंकि यह भी पशु आदि तिर्यक् योनि मे और मनुष्य मे समान है ऐसी प्रीति स्वार्थ और ममता मूलक होती है वरन ऐसी प्रीति बन्धन का कारण होती है मोह और दुःख इसका परिणाम है इस लिये हमने जिस्को प्रीति कहा है वह इन सब से अलग एक निराली वस्तु है।

मनुष्य मे पशुओं से प्रथक एक प्रकार की बुद्धि दी गई है जिस्से वह दूसरेप्राणी को सुखी वा दुखी देख एक तरह का हर्ष या बिषाद मन मे ला सक्ता है सुखी देख प्रसन्न होता है दुखी देख दया का उद्गार मन मे आता है ऐसे उदार चरित्र संसार भर को अपनाही समझते हैं इस

ों के हित को अपने जीवन का सार जानते हैं हम ऐसे स्वभाव का नाम प्रीति या मैत्री कहेंगे जिसका मुख्य तात्पर्य यही है कि आपे को अपने मेंसे निकाल दूसरे में रख देना इस प्रीतिका नाम Universal brotherhood विश्वसौजन्य है ; इस निष्काम प्रीति का लक्षण यह है कि तन मन धन से सब की भलाई मे तत्पर रहै गोरा काला मूर्ख पण्डित सजातीय विजातीय का भेद सब तरह पर मन से ढीला कर डाले जहां तक हो सके बुराई करने वाले के साथ भी भलाई करने से न चूकना इसी उत्तम प्रीति पर लक्ष्य कर यह वाक्य है । चाखा चाहै प्रेम रस सीख ईख ज्यौं लेय । जो तोभीं अनख करै ताहि अधिक रस देय । तुलसी दास ने भी कहा है । परहित सरस धर्म नहि भाई पर पीड़ा सम नहि अधमाई जैन धर्म और ईसाई धर्म को देखो तो उसमे भी सब जगह यही शिक्षा है । मुसल्मान जिन्हें सब लोग बड़ा अत्याचारी समझते हैं उनके मत मे भी जो बड़े महात्मा हुए हैं सभों ने यही उपदेश दिया है । इनके यहां खुदा की निरी प्रीति लिखा है कि ईश्वर आशिक है और मुहम्मद माशूक; रहीम और करीम ईश्वर के नाम बतलाते हैं और यहां तक ईश्वर मे प्रीति का फल दया सिद्ध करते हैं कि हजार गुनह करे पर जहां तोबा किया अर्थात् किये पाप से पछताया कि तुरन्त माफ कर दिया गया; शेख सादी ने बोस्तां मे इसी मतलब का एक किस्सा लिखा है कि इबराहीम का यह नियम था कि वह सदा एक अभ्यागत को खिलाय आप खाते थे एक समय कई दिनो तक कोई अभ्यागत न मिला और न इन्हों ने कुछ खाया कई दिन पीछे एक पुरुष मिला उसे बड़े चमत्कारके साथ अपने घर लाय भोजन के लिये बैठाया उस आदमी ने न ईश्वर का नाम लिया न उसका धन्यवाद किया और भोजन करने लगा यह देख इबराहीम को बड़ा क्रोध हुआ और कहने लगे रे अधम तू बड़ा दुष्ट है कि तैने ईश्वर का नाम भी न लिया और भोजन करने लगा इसपर आकाश बाणी हुई । ऐ इबराहीम इस पुरुष की इस अवस्था हुई सदा से इसका यही आचरण रहा पर मैंने इसपर कभी क्रोध न किया और बच पन से आज तक इसे खाने को देता रहा तू एक दिन खा-

ना देने से इतना क्रुद्ध हुआ ; यह बात तो स्पष्ट है कि जो जिस स्वभाव या आचरण को सब से उत्तम समझता है उसी को अपने ईश्वर मे आरोपित करता है तब इससे ज्ञात होता है कि मुसल्मानी मत मे भी जिसे हम इतना बुरा समझते हैं ; सबसे प्रेम रखनेको कितनी महिमा है; हां वे समझी और अज्ञान की बात निराली है यह अज्ञानही का कारण है कि भिन्न २ सम्प्रदाय और मत मतान्तर वालों मे आपस का विरोध और फूट फैल रही है; धर्म अर्थ काम मोक्ष चारो का निर्बाह यही परस्पर का प्रेम है इस्से हे प्रिय बान्धव जन जो आपको अपना कल्याण इष्ट है तो बहले इस सपना पक्ष और विषम बुद्धि को छोड़ सब से सहज प्रीति उपजाओ और यह लोक परलोक दोनो बनाओ । ह० प्र०

हम से ईश्वर और राजा दोनो रूठे हैं ।

लोग कहते हैं ऊपर ईश्वर नीचे राजा दोनो का दरजा समान है फारसी वाले बादशाह को नायब खुदा बतलाते हैं संस्कृत मे राजा ही का नाम ईश्वर है याज्ञवल्क्य स्मृति की अध्याय १ श्लोक १०० में लिखा है " उपेयादीश्वरंचैव योगक्षे मार्थसिद्धये " अर्थात् जो वस्तु प्राप्त नहीं है उसके लिये और रक्षा के निमित्त राजा के पास जावे ऐसाही गीता मे भी लिखा है-" नाराणां चनरेंद्रोहं " भगवान् कहते हैं मनुष्यों मे राजा मेरी प्रधान विभूति है; इसमे कुछ संदेह नहीं जिस प्रकार सारी सृष्टि के ऊपर ईश्वर की प्रभुता मानी गई है वैसाही वरन उस्से भी अधिक राजा की प्रभुता और डांट डपट देखी जाती है कारण यह कि ईश्वर परोक्ष नियन्ता और राजा प्रत्यक्ष शासन कर्ता है ; ईश्वर के विश्वासी ईश्वर को धर्म अर्थ काम मोक्ष चारो पदार्थ का दाता समझ उसकी भक्ति करते हैं ऐसाही राज भक्त लोग राजा को सर्व काम दायक और प्रजा पालक समझ उसको शरण लेते हैं और जय जयकार मनाते

हैं ; लोक मे जो देश धन संपत्ति राजपाट विद्या से सुपन्न है उसे कहते हैं अमुक देश पर ईश्वर की बड़ी कृपा है ऐसेही जब किसी देश की दशा बिगड़ने लगती है तो लोग कहते हैं इस्पर ईश्वर का कोप है जब पानी नहीं बरसता अकाल पड़ता है मरी होती है लोग कहते हैं हाय ईश्वर सो गया इसी तरह जिस देश मे मुल्क का अच्छा बन्दोबस्त होता है प्रजा की भलाई और धन संपत्ति के बढ़ाने के उत्तम प्रबन्ध राजा की ओर से किये जाते हैं प्रजा की सब भांत रक्षा करने और उसकी दोहाई फरियाद सुनने मे राजा जी लगाता है वह देश भाग्य बान गिना जाता है जैसे योरप के सु संपन्न देश ; जिस देश मे प्रजा की धन संपत्ति श्री मेधा और विद्या गुण बढ़ाने मे राजा आना कानी और बे परवाही दिखलाता है दिन प्रति दिन भूमिकर और भांत २ के टैक्स और चुंगी आदि अनेक दोहन और आकर्षण यंत्र से प्रजा का रक्त खींचा जाता है तिस्पर भी उनकी फरियाद पर कान नही दिया जाता तो समझना चाहिये उस देश पर राजा का कोप है जैसा कि अभागे इस हिंदुस्तान के कितने खंड हैं जहां विद्या और भलाई का बहुत कम यत्न किया जाता है हर तरह का टैक्स और भूमि कर दिन दूना रात चौगुना बढ़ता है प्रजा की भलाई की फरियाद एक भी नहीं सुनी जाती ; इस पश्चिमोत्तर औध तथा पंजाब की प्रजा समूह ने हिन्दी के प्रचार और गोवध के निवारणार्थ कितनी पुकार मचाया किसी ने न सुना बरन इन प्रान्तो की लोकल गवर्नमेन्ट को इस बात की जिद्द हो गई है कि अपनी खोटी राजनीति के द्वारा समय २ प्रधान राज कर्मचारियों का ऐसी प्रेरणा करती रहे जिस्मे प्रजा सब हताश हो क्लेश कारी बातों के निहत्यार्थ ऐसी २ बातों के आन्दोलन मे

भी प्रवृत्त होने का कभी उत्साह न करें इस दशा में यहां की प्रजा कह सक्ती है कि ईश्वर और राजा दोनो हम से रूठे हुए हैं; उस परोक्ष नियन्ता ईश्वर की उपमेय श्रीमती राज राजेश्वरी विक्टोरिया देवी हैं जो सर्वावस्था में प्रजा पालिका हो अपने शुद्ध प्रकृति गण और अगाध बुद्धि मानी मंत्रि वर्ग समेत सदैव प्रजा की रक्षा और भलाई में तत्पर रहती हैं परन्तु जिन संकीर्ण हृदय प्रधान कर्मचारियों में प्रभुता वा धन मद वा दुष्ट दुराचारियों के संसर्ग और संमति दोष से कुछ विकार आ जाता है वे अवश्य अपनी महोदार दया सिंधु स्वामिनी की प्राण प्यारी प्रजा के कोमल हृत्कुमुदिनी पर जो राजभक्ति कौमुदी के प्रकाश से प्रफुल्लित होने लगी है वज्राक्षेप करने से नहीं चूकते; जिस ने शिक्षा कमिशन की कथा सुनी होगी और ठौर २ डाक्टर हंटर का बाहरी आडम्बर देखा होगा जिसने ३१ मार्च सन १८८३ के उर्दू गवर्नमेन्ट गजट के पृष्ठ १५८ और १५९ का पढ़ा होगा जिस की पंक्ति २१ में उर्दू की पक्षपातकारिणी और हिन्दी की मूलोत्पाटिनी जो आज्ञा लिखी है उसके विरुद्ध जिसे मृत हिन्दी को फिर जिलाने का विश्वास होगा वह अवश्य निश्चय कर सकेगा कि इस प्रान्त के सांप्रतिक प्रधान २ देशाधिकारी हम हिन्दुओं के लिए आलमगीर की पदवी का अनुसरण करने पर उद्यत हुए हैं कदाचित् पहले जन्म में आलमगीर हिन्दुओं को व्यथि करने से सन्तुष्ट न हो फिर दूसरी वार आ उतरे हों तो क्या अचरज है; परन्तु इस अन्याय कर्म में हमारी दयालु प्रजा पालिका राजराजेश्वरी और उनके सहकारी मन्त्रियों का कुछ दोष नहीं है क्योंकि राज राजेश्वरी तथा उनके उदार मंत्रि वर्ग पांच हजार दस हजार पचीस हजार मासिक वेतन के ऊंचे तनखा

ह वाले अधिकारी विलायत से मुकर्रर कर इसी लिये भेजते हैं कि ये लोग अधिक वेतन पाकर जी लगाके न्याय पूर्वक प्रजा पालन करेंगे; जैसा जगत्कर्ता ने बादलों को इसी लिये रचा है कि वे अमृत वृष्टि से प्रजा का कल्याण करें परन्तु कभी २ वेही बादल अति वृष्टि या अनावृष्टि से तुम्हारी खेती बारी सब नष्ट कर देते हैं तो इसमें ईश्वर का क्या दोष है ऐसाही जो कोई हाकिम हो न्याय शासन का अपार बोझ अपने ऊपर ले अधिकार के विपरीत कार्य में प्रवृत्त हो जाय तो इसमें प्रजा पालिका महारानी की सम्मति न समझनी चाहिये; तुम सब हिन्दी के पक्ष पोषक प्रजागण महारानी के न्याय पर भरोसा रख मनु के इस वचन की प्रत्याशा देखते रहो—त्रिभि र्वर्षै स्त्रिभि र्मासै स्त्रिभिः पक्षै स्त्रिभि र्दिनैः। अत्युग्रपुण्य पापानामिहैव फल मश्नुते। जिन लोगों ने यह प्रपंच रच के न्याय सरोवर को गंदला किया है और श्रीमती की निर्मल पताका में धब्बा लगाने की घात से लोकल गवर्नमेन्ट या शिक्षा कमिशन के मेम्बरों को धोखा दिया है वे अवश्य अपने कर्म का फल पावेंगे; जिस हिन्दी की वृद्धि में और तदुत्पन्न उत्तम फलों की प्रशंसा में बारम्बार कैंपसन साहब ने रिपोर्ट किया था और अंगरेजी के साथ जिस हिन्दी संस्कृत के पढ़ाने का लाभ सर विलियम म्यूर साहब बहादुर ने बनारस [illegible] दरबार में बड़े उत्साह के [illegible]थ वर्णन किया था सो अब उ[illegible]की जड़ काटने की हिकमत रची जाती है डाक्तरी कालेज आगरा या लाहोर तथा इंजिनियरिंग कालिज रुड़की में भी उर्दू सहवर्तिनी अंगरेजी पूज्यमान है वहां भी हिन्दी के सर्वनाश का प्रयत्न चरितार्थ है; इसी से भाइयो जिस प्रकार आप लोग भौतिक उपद्रवों से पीड़ित हो त्राहि ईश्वर त्राहि ईश्वर पुकारते हो ऐसेही

इन राज प्रकृति गणो के अन्याय बल से पीडित और दुखित होकर श्रीमती राजराजेश्वरी को पुकारो और आगे को पांव बढ़ाओ अचरज नहीं कि यह भद्रा दूर हो राज कर्मचारी और ईश्वर दोनो जो हमसे रूठे हुए हैं फिर अनुकूल हो जांय; लौ लगी रहनी चाहिए रगड़ बड़ी चीज है एक न एक दिन किसी न्यायशील के कान मे भनक पड़ी हो जायगी।

लक्ष्मी का प्रकाश।

लक्ष्मी के प्रकाश का भी क्या ही प्रकाश है जिसके सामने नई ईजाद बिजली की रोशनी की क्या हकीकत सैकड़ों सूर्य और सहस्रों चन्द्रमा का प्रकाश भी हेच है तब बेचारे विवेक और ज्ञान प्रदीप को जुगुनू भी टम की क्या सामर्थ्य जो इस प्रकाश की चका चौंधी के आगे ठहर सके; इस प्रकाश की चकाचौंधी में अनोखी चमत्कारी देखी गई जहां अनीति ही नीति, अधर्म ही धर्म, स्वार्थ-साधन ही महा साधन, लोक निन्दा ही स्तुति, चांचल्य और अशालीनता ही सौशील्य, वचक वृत्तिता ही औदार्य, अविवेक ही विवेक, नासमझी ही समझदारी, जाहिरदारी ही गौरव, अपना मतलब ही प्रेम है कहां तक गिनावें राजा हरबोंग के अन्त होने पर अन्धेर नगरी यावत् अन्धेर और कुचाल जनित अन्धकार सब पिशाची भूत हो इस प्रकाश में छिप अन्तर्मग्न हो गया; किसी महा अंधियारी कोठरी में भी लक्ष्मी की झनझनाहट होती सुन पड़े हजारों शमा और लैम्प उस प्रकाश के सामने शरमा कर भागें २ फिरने लगें; विलायत में जैसा प्रकाश की किरनें कोटि सूर्य सम प्रभा हो छिटकी हैं सुनतेही हो हाथ कंगन को आरसी क्या? इस श्मशान हिन्दुस्तान में साहबान अंगरेजों को देख लो जिन की चमक दमक और तेज पुंज के आगे आंखें तिलमिलाती हैं सुष्टि प्रहार मात्र से कितने पिलाही रोग शान्त हो गए पदाघात में भूक

म्य होता है जिनकी एक शोशे में बड़ी २ रियासतों का बनना बिगड़ना आ गया है, कई किरोड़ मनुष्य जिनकी दाख्यता पर कमर बांधे मुस्तैद हैं हिन्दुस्तान से विलायत तक को कच्चे सूत का बंधा हाथी झूम रहा है सो भी इसी प्रकाशही के बल ; जगत ने पिता परमेश्वर के सबी सन्तान हैं क्या काले क्या गोरे तब ऐंगलोइण्डियनों में कौन सा सुरखाब का पर लगा था जो इल्बर्ट बिल के आन्दोलन ने एक छोर से दूसरे तक झकोर डाला केवल यही कि उन्मे जो प्रकाश की जगमगाहट है उसका लेश भी यहां नहीं ; इस प्रकाश के अनेक नाम रूप और ढङ्ग रङ्ग है बंगाल और बिहार के ज़मीदारों में इसतिमरारी बन्दोबस्त के नाम से यह प्रसिद्ध है रेंटबिल जिस्की जड़ काटने पर तई हैं ; मुसलमानों में एका और तअस्सुब वह प्रकाश है सैयद अहमद खां बहादुर जिसकी जड़ काटा चाहते हैं बम्बई के भाटिये और पारसियों का व्यौपार में अध्यवसाय वह प्रकाश है ; पुराने हिन्दुओं में सचाई के साथ इमानदारी और सीधापन वह प्रकाश था नई रोशनी जिसको जड़ पेड़ से उखाड़ रही है ; विलायत के सौदागरों में नए २ फैशनों की नित्य नई ईजाद लक्ष्मी का प्रकाश है ; पुराने ब्राह्मणों में जो पाण्डित्य शौच सन्तोष आदि तपस्या के रूप में लक्ष्मी का प्रकाश था वही अब धोंग धोगा चपलता और धूर्तता में आ टिका ; हमारे कुन्दे नातराश कोठी वाले हुण्डी वाल महाजनो की लक्ष्मी का प्रकाश हुण्डी पुरजे के ज़रिये रूपए सैकड़े सूद या इस्मालो में सन्तोष कर केवल बालिश्त भर ज़मीन में जो झिलमिला रहा था उसे मनीआरडर ठौर २ बंक चुंगी और रेल ने सब ओर से राहु बन ग्रस लिया जिधर टटोलो उधर अन्धकार प्रकाश का कहीं नाम न रहा नई रोश

नीवाली रोशनी २ पुकार कान ब हरा किए डालती हैं पर रोशनीइस बुड्ढे भारत से घिन खाय समुद्र पार श्वेत द्वीप का नवाभ्युत्थान देख चंचलता ग्रहण कर व्यभिचारिणी बनी । पुरुष पुरातन की वधू क्यों न चचला होय ।

हाथ ।

मनुष्य के गात में हाथ की कथा भी निराले ढङ्ग की है सब अंगों में सिर सब से उत्तम समझा गया सिर से नीचे सव से प्रतिष्ठित और बड़े काम का यही अङ्ग है ; इसे बड़ा उपकारी समझ वेदों ने इसी से चत्रियों को भगवान् विराट मूर्ति का हाथ कहा है ; इस हाथ के हाथ में सारा संसार है परन्तु किसी के सामने इसका फैलाना अच्छा नहीं " नित्यं प्रसारित करो दक्षिणाशाप्रसाधकः । न केवलमनेनैव दिवसोपिसनूक्रात: ॥ " " एष एव महान्दोषो शालिदिंजकरस्यच । पुनर्वसुसमूहोपि हस्तादकमपेक्षते " तुलसीदास ने भी कहा है । तुलसी करपर कर करो करतल कर न करो । जा दिन करतल कर करो ता दिन मरण करो । चलबो भलो न कोस को दुहिता भली न एक । मंगबो भलो न बाप को जो विधि राखे टेक ॥ हाथ के तले हाथ रखना सच २ मर जाना है किसी कवि ने कहा भी है गात्रभङ्गः स्वरोदीनो गात्रखेदो महद्भयं । मरणे यानिचिन्हानि तानिचिन्हानि याचके ॥ ईश्वर हाथ पे हाथ रखने की सदा रोजी किए रहे श्राद्ध कर्म के अन्त की आशिष प्रार्थना कैसी उदार भाव सम्पन्न है " याचितारश्चनः सन्तु माचयाचिष्मकंचन । श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयंचनोस्तु अन्नंचनोबहुभवेदतिथींश्चलभेमही " । मांगने वाले हमको हों हम किसी से न मांगे श्रद्धा हमारी कभी न घटे देने को हमारे पास बहुत हो । अन्न हमारे पास बहुत हो नित्य अतिथि हमे मिला करें । हाथपर हाथ रख हाथ काटा के बैठ रह

ना भी मर्द के लिए शोभा नहीं है "हाथ पांव के आलसी मुंह में मोंछ जांय" हाथ पैर चलाते रहना चाहिए कभी न कभी कुछ हाथ लगी रहैगा ; हमारी इन बातों पर ध्यान न दे सब ओर से हाथ खींच उद्योग और अध्यवसाय में कम हिम्मती को काम में लाय कान पर हाथ धरोगे तो इस उन्नीसवीं सदी तरक्की के जमाने में जब सभी बढ़ २ हाथ मार रहे हैं तुम्हारे हाथ कुछ आने का नहीं खाली के खाली रहा चाहते हो फिर पीछे हाथ मल २ पछताने और हाथ पटकने के सिवा कुछ बन पड़ने को नहीं ; हाथ पकड़े की लाज सब को होनी चाहिए मनुष्य के जीवन का यही साफल्य है कि इन हाथों से कुछ कर चले बुराई की ओर से हाथ रोके रहे भलाई में सदा हाथ डालता रहे जहां तक हो सके मुसीबत में पड़े हुओं का हाथ पकड़ उबार ले और जब अपने ऊपर कुछ और पड़े तब सहारे के लिए ऐसों ही का हाथ पकड़े जो पार लगा देने की सामर्थ रखते हों ; हाथ की रेख नहीं मिटती इस नासमझीपर मात का दरख हमारे देश की मूर्ख मण्डली बालविधवाओं पर महा अत्याचार करते पुनर्विवाह से दीन अबलाओं को रोकते हैं परन्तु जब वे काम बाण से बिद्ध हो लोक और धर्म दोनों से हाथ उठा कुकर्म में हाथ डालती हैं तब ये माथे पर हाथ धर अपने कर्मों को रोते हैं ; आप चाहो ६० वर्ष की उमर में दस व्याह कर लें वेश्याओं के हाथ में हाथ दिये बाजारों मे बेधड़क फिरा करैं पै बेचारी बाल विधवाओं को किसी सुपात्र के सिपुर्द कर देने मे उन का हाथ कांपता है; हम हाथ उठाके कहते हैं कि जो लोग ऐसाही इस शुभ काम मे हाथ डालने से सिकुड़ते रहैंगे तो किसी दिन ऐसे चपकुलिस मे आ फसैंगे कि हाथ के तोते उड़ैंगे; अब इसी बात पर हाथ लाइये

और हाथ मारिये कि परोपकार और देश की भलाई से हाथ कभी न उठावेंगे बस हाथभाड़ नो न सेतुआ बांध इसकी पीछे पड़िये देखिये क्यों नहीं तुम्हारा मनोरथ सफल होता; हाथ की तङ्ग होना बड़ी बुराई है मुक्त हस्त को सबी चाहते हैं हां अलबत्ता गृहस्थिनी स्त्रियों का मुक्त हस्त होना प्रशंसनीय नहीं है। "व्ययेचामुक्तहस्तया" ईश्वर करे हाथ चलता रहे हाथ न चला तो रोजगारियों का रोजगार ही मिट्टी है हाथ चलना या हाथ छुट होना बुराई भी है; कारी गरी और वीरता में हाथ की सफाई देखी जाती है; हाथ मिला और दिल मिल गया इसी से नई सभ्यता में मिलते ही पहले "शेकहैंड" हाथ मिलाते हैं दो पहलवानो की कुश्ती में भी पहले हाथही मिलाते हैं; आहा हाथ पकड़ना बड़ी भारी बात है विवाह, पाणिग्रहण से वरवधू का हाथ पकड़ जन्म पर्यन्त उसका पार लगाने को अग्नि को साक्षी देता है "मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्त मनुचित्तं तेस्तु। मम वाचमेकमनाजुषस्व बृहस्पतिस्त्वां नियुनक्तु मह्यम्"। कोई भला मानुष बात का धनी किसी का हाथ पकड़ लेता है तो शरण गहे की लाज जन्म भर निवाह ले जाता है हमारे क्षत्रियों में सदा से यह उदार वृत्त रहा एक सौ पुर की कछवाहों को छोड़; प्रियबन्धो इस हाथ की गाथा समाप्त करते हम आपसे हाथ जोड विनती करते हैं कि आप सुस्ती और काहिली छोड़ एक २ के आगे हाथ बांधे दास बनने की आदत दूर करो अन्त को हाथ पसारे जावोगे तब बहते पानी में हाथ क्यों नहीं धो लेते दीन दुखियाओं पर हाथ साफ करने में कुछ हाथ न लगेगा जो यह कहो कि हमतो सब कुछ हाथ पीटते हैं हमारे हाथ में तो कुछ नहीं क्या कर सक्ते हैं तो हम कहते हैं आप नृप की कथा याद रख खड़े हो जाइये

हिम्मत न हारिये बगल मे हाथ दिये न बैठ रहिये हाथों हाथ तो सब काम होता है सच पूछो तो यावत् काम क्या छोटे क्या बड़े सब इन हाथही से होते हैं रेल तार जहाज आदि बड़े से बड़े काम और छोटे से छोटा एक पतली सुई तक सब इसी हाथका करतब है; बस अब बहुत लिख चुके हाथ थक गया इस लिये अब लिखने से हाथ खींचते हैं आप के मन मे आवे तो हमारे कहने के अनुसार इन कामो को हाथ से करो नहीं हाथ बांध बैठो रहो हरामी माला फेरा करो ।

ह०प्र०

Meteor उल्कापात ।

भारत खण्ड मे जहां ऋतुओं का अदल बदल समस्त भूमण्डल से अद्भुत और निराला है कोई विरलाही मनुष्य होगा जिसने ग्रीष्मशरत् के स्वच्छ निर्मल आकाश की जगमगाती तारावली देखे अपनी चारपाई पर रात को मैदान मे लेटा हुआ एका एक नभ मण्डल से काष की नाईं तारा टूटने का विलक्षण कौतुक पर ध्यान न दिया हो। इसी तारा टूटने को सम्मत मे उल्कापात कहते हैं अङ्गरेजी मे उल्का का नाम मीटियर या शूटिंग स्टार है; वाराही संहिता आदि ग्रंथों मे उल्का पात के सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा है पर वह सब उल्कापात के शुभाशुभ फल के विषय मे है उल्का क्या है और क्यों देखाई देती है इसका हेतु आदि कुछ नहीं बतलाया; यूरोपके विद्वान खगोल विदोंने इसका बहुत कुछ अनुसन्धान किया है और यद्यपि इस अद्भुत दर्शन phenomenon का उन्हे भी अभी ठीक २ पता नहीं लगा परन्तु इसके पात आदि के कारण की बहुत दूर तक खोज उन लोगों ने की है उल्का पात का निम्न लिखित यह आशय एक अङ्गरेजी पत्र से अनुवाद कर यहां लिखा जाता है जिस्से हमारे पाठकों को इस का बहुत सा पतेवार जमा हाल खुल जायगा। सन १८६६ ई—मे १३ नवंबर की रात को इंगलिस्तान मे एक अद्भुत दर्शन उल्काओं का हुआ कई घंटों तक संपूर्ण आकाश जिसके प्रकाश से प्रदीप्त रहा यहां तक कि उल्का पतन अस्त हो जाने पर भी देर तक प्रकाश की

धारा बनी रही उस रात्रि को ग्रीनिच की प्रसिद्ध नक्षत्र शाला में ८ सहस्र उल्का गिनी गईं ; ठीक इसके ३३ वर्ष पहले आज की उसी रात को उत्तर अमेरिका वालों को इसी प्रकार की उल्काओं की अनोखी दृष्टि गोचर हुई जैसा उदय और भयावना उल्कापात पहले कभी नहीं मनुष्य की स्मृति पथा रूढ़ हुआ था ; एक खगोल विद ने लिखा है कि इनमें बहुत से टूटते हुए तारे शुक्र से भी बड़े और चन्द्रमा के आधे जान पड़े और ८ घटे में २५०,००० तारे टूटते हुए गिने गए सूक्ष्म परीक्षा से यह भी जाना गया कि वे सब एकही स्थान से आये थे और हमारे वायुमण्डल से जो ५० मील के लग भग पृथ्वी के चारों ओर है कुछ सम्बन्ध नहीं रखते थे अर्थात ५० मील के अन्तर्गत नहीं थे किन्तु उसके बाहर से जहां तारा गण चक्कर करते हैं और नक्षत्र सूर्य की प्रदक्षिणा में निरवच्छिन्न प्रवृत्त रहते हैं, उनका आगमन हुआ सिवाय इनके और बहुत सी बातें जानी गयीं बहुत सी उल्का ऐसी प्रकाशमान थीं कि उनका दर्शन कई एक स्थानों पर लोगों ने मुख्य करके स्मरण रक्खा ये स्थान एक दूसरे से बहुत दूर थे इससे प्रत्येक स्थान वालों की जांच के मिलाने से उन उल्काओं की पृथ्वी से ऊंचाई का परिमाण स्पष्ट हो गया यह ज्ञात हुआ कि वे हमारे भूतल से लगभग ७५ मील की दूरी पर जाय निकले और अनुमान ५५ मील की ऊंचाई पर अस्त हो गये अत एव यह सिद्ध हुआ कि ये उल्कायें यद्यपि हमारे वायु मंडल के बाहर से चलीं परन्तु जब तक वायु मण्डल में उन का प्रवेश नहीं हुआ तब तक हमारी दृष्टि पथ से अन्तर्हित रहीं जिससे स्पष्ट हुआ कि ये उल्का केवल छोटे २ नक्षत्रों के समवाय से उत्पन्न हुई थीं और अपने मार्ग में पृथ्वी से संघट्ट उनका हो गया था अर्थात अत्यन्त सूक्ष्म नक्षत्रों के झुंड सूर्य की परिक्रमा करने में हमारे वायु मंडल में हो के जाता था उसी का दर्शन उस रात्रि को अमेरिका में हुआ।

अब जब उसी प्रकार की उल्काओं की सेना का दर्शन ठीक ३३ वर्ष पीछे इंगलैंड में हुआ तो खगोलज्ञों ने यह निश्चय किया कि और नक्षत्रों की भांति उल्का भी नक्षत्र हैं अंडाकार उनका क्रान्तिवृत्त अर्थात चलने का मार्ग है और ३३¼ वर्ष में ये सूर्य की परिक्रमा करती हैं तदनुसार उनका आकार और परिमाण ज्ञात हुआ

इनकी धारा एक अरब पचास लाख मील लम्बी, चालीस लाख मील चौड़ी और दस लाख मील मुटाई मे जानी गई है उल्का इतने अन्तर पर होती हैं कि दो २ के बीच भी २ मील का अन्तर कहा जा सक्ता है इस लिए आकाश मे इनके विस्तार का ठौर कई सख मीलों के फैलाव मे कहना चाहिये गति इन उल्काओं की ३० मील फी सेकंड अनुमान की गई है; ऊपर लिख आये हैं कि हमारी पृथ्वी के चारों ओर एक प्रकार का वायुमण्डल है ये उल्कायें जब उस वायुमण्डल के भीतर प्रवेश करती हैं तो जैसा गाड़ी की लीक को पहिया रगड़ खाते २ घिस जाती है इसी तरह पर उल्का वायु मण्डल मे अपनी अत्यन्त वेग गति के कारण रगड़ खाय घिस जाती हैं और जैसा यह एक प्राकृतिक नियम है कि जो पदार्थ गरमी की चरम सीमा को पहुचता है तो उसमे प्रकाश उत्पन्न हो जाता है उसी नियम के अनुसार लोहा आदि कई एक धातु जिनसे उल्कायें बनी हैं घात्या। होय प्रकाश मय पिण्ड देख पड़ती हैं; होते २ पिघल कर भाफ के आकार मे इसका बहुत सा हिस्सा परिणत हो जाता है यही कारण है कि उल्का पतन के साथही बड़ा प्रकाश चारों ओर थोड़ी देर के लिये छाया रहता है; आग की चिनगारी के समान कोई २ उल्का तौल मे केवल दो ग्रेन एक रत्ती के लगभग होती हैं गन्धक फासफरस कारबन टिन लोहा ताम्बा शीशा निकिल मैगनीशियम सोडियम आदि कई प्रकार की धातु इसमे अब तक प्रगट की गई हैं इन धातुओं मे लोहा सब से विशेष रहता है कभी की पृथ्वी की वेग गति के आगे उल्काओं की गति का वेग कुछ रुक या टूट सा जाता है तब वायु मण्डल मे उल्काओं की इतनी रगड़ नही होती कि जिस्से उस दरजे की गरमी पैदा हो सके जो पदार्थों को पिघला कर भाफ कर सके तब ढोके के ढोके एक साथ कई मील तक बराबर देर तक इन उल्काओं के गिरा करते हैं; १४ नवम्बर को उल्काओं की बहुत अधिक वृष्टि होती है इसी से "दूसेनवम्बर शवर" भी कहते हैं; कभी की इस प्रकार के ढोकों के गिरने समय बड़ा प्रकाश और शब्द सुनाई देता है १८५८ की १५ नवम्बर को न्यूजरसी टापू पर दिन मे ऐसाही एक बड़ा ढोका आ गिरा जिसके गिरते समय इतना शब्द हुआ मानो हजारों तोप एक साथ कि

स ने छुड़ा दिया था ; १८०३ अप्रैल को फ्रांस के नारमंडी इलाके में दो बजे दिन को उल्कापात के पहले बड़ा शब्द सुन पड़ा तब एक बड़ी भारी उल्का आकाश मण्डल से दिखाई दिया थोड़ी देर बाद २००० छोटे २ टुकड़े पत्थरों के गिरते हुए देख पड़े जो इतने गरम थे कि उनको छूने से हाथ जलता था ६ मील की चौड़ाई और ८ मील की लम्बाई में ये पत्थर गिरे उनमें एक पत्थर बहुत बड़ा था ; एक बार १८६६ में अस्ट्रिया देश के हंगरी सूबे में ८ जून को एक इतना भारी पत्थर गिरा जो ७ मन के ऊपर था और १००० छोटे २ टुकड़े गिरे; हम लोगों में जो बिजली का लोहा प्रसिद्ध है वह यही लोहा है यह बड़ा स्वच्छ और निखालिस लोहा होता है इस लोहे की तलवार बहुत अच्छी बनती है ; सम्भव होता है कि केतु या बड़े ग्रह जो अकास २ किसी दूसरे ग्रह से टक्कर खा चूर २ हो जाते हैं या सूर्य के समीप पहुंच जाने से भस्म हो सूर्य मण्डल में गिर जाते हैं ये उल्काएं उन्हीं ग्रहों के चूर या टुकड़े हैं जो हमारी पृथ्वी पर गिरते हुए देख पड़ते हैं—

श्रीधर

भूतानि कालः पचतीति वार्ता ।

खौलते हुए बड़े कड़ाहे में प्राणी मात्र को काल ले जा झोंके देता है सब के वश हैं किसी की कुछ चलती नहीं एक ढर्रा है जिस पर काल चक्र दिन रात चला ही जाता है यह वह प्रवाह है जिसकी उलटी धारा चलते आज तक किसी ने न देखा ; जाते सब हैं लौट कर कोई न आए० न जो था सो अब है न जो है सो रहेगा० यह वह रेल है जो लादे लिए जाती है वह इञ्जिन है जो आगे को जाती है पीछे हटने का नाम नहीं लेती कोटि यतन कीजिए जो है वह कभी न रहेगा भविष्य भूत हो जाता है भूत को वर्तमान् करना तो दुर्लभ है वर्तमान् वर्तमान नहीं रह सक्ता ; सदी, साल, दिन, रात, घड़ी, पल जो अभी है फिर न रहेगा न दुख रहेगा न सुख रहेगा न लोग रहेंगे न कोई वस्तु रहेगी जो नश्वर होने से बची रहे- होनहार जो अभी मौजूद और प्र-

त्यच नहीं है ना मालूम है और जो अब मौजूद है कभी मौजूद न रहैगा ; यह सब कौन नहीं जानता परन्तु इसका कुछ असर किसी के दिल पर नहीं होता जो मरा उसे फेंक आए घर आय फिर उसी मोहमयी निद्रा में गड़गाप हुए ऐसे गाफिल रहते हैं कि उनके बर्ताव से यह किसी तरह निश्चय नहीं होता कि वे भी कभी इस दशा को पहुंचेंगे ; इस बात का जो हमें हर वक्त ध्यान रहै तो हममें और पूर्ण योगी में कोई अन्तर न रह जाय यह परं ज्ञान का मूल सारांश या बीज है ; किस्सा है कि सुलेमान बादशाह को जब अपने प्रताप और तेज का ध्यान आया परी जिन से ले चीटीं तक को अपने सामने सिर झुकाते पाया तो वजीर से कहा कुछ ऐसी उपाय करो कि मुझे खुशी में खुशी और रंज में रंज न हो ; वजीर ने एक अंगूठी बनवाय उसमें यह लिखवा दिया "यह भी न रहैगा" सुलेमान यह अंगूठी पहने रहा करता था और हर दम इस मसल को अपने सामने रखता था ; जरा आंख खोलने से इसका सब मर्म हमारे ध्यान में आ सक्ता है पर हिये की तो हई नहीं क्योंकर खुले ; अंगरेजी के परमाचार्य जानसन ने अफ्रिका के राजकुमार का एक किस्सा लिखा है कि राजकुमार कई एक चोपदार नियत कर रक्खे थे जो उसे हर साफ करते समय चिताते रहते थे "राजकुमार याद रख तू भी एक दिन मरेगा" इन शब्दों के कान में पड़ते ही उसे होश हो जाती थी और न्याय पथ से कभी नहीं लड़खड़ाता था ; इससे बढ़ कर अचरज और क्या होगा बराबर देख रहे हैं कि आज हम कल तुम परसों तीसरे अदे चले जाते हैं पर जो बचे हैं वे आशा की सैकड़ों फांसीसे जकड़े हुए जीने से नहीं अघते मरने के नाम दुम दबाते हैं "पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्त भूतं जगत्"

प्रयाग कायस्थ पाठशाला की उन्नति ।

इस पाठशाला की उत्तरोत्तर उन्नति देख हमें बड़ा हर्ष होता है अब कि साल इससे से ६ लड़के इन्ट्रेंस में और ७ मिडिल क्लास की परीक्षा में भेजे गये ६ में से ३ सेकण्ड डिवीजन और १ तीसरे डिवीज़न में इन्ट्रेंस की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और ७ में ३ पहले डिवीज़न २ दूसरे डिवीजन में मिडिल की परीक्षा में पास हुए १ लड़का ४० के भीतर आया है जिसे गवर्नमेंट से स्कालरशिप मिलने की आशा हुई है; इसका नतीजा निहायत उमदा और प्रशंसा योग्य देख जी को परम प्रसन्नता होती है इस पाठशाला से लड़के पहले बार इन्ट्रेंस में गए थे और सैकड़े पीछे ६६ इन्ट्रेंस और सैकड़े पीछे ७१ मिडिलक्लास की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए इस हिसाब से यह पश्चिमोत्तर के कालेज और स्कूलों से भी बढ़ गया इस पाठशाला के योग्य अधिष्ठाता कायस्थ कुल कमल प्रभाकर मुंशी काली प्रसाद जी को तथा इसके समस्त अध्यापकों को अनेक २ धन्यवाद है ईश्वर इस पाठशाले को दिन २ वृद्धि करे ।

मृगाङ्कमौलिनाटक ।

पण्डित श्रीधर रचित ।

प्रथम अङ्क—प्रथम गर्भाङ्क ।

स्थान—अनुराधा पुर में राजा महेन्द्र की सभा ।

(मंत्री—सेनापति—सूबेदार—कोतवाल—आदि अपने २ स्थान में बैठे राजा के आने की बाट जोह रहे हैं—दो चोपदार दोनो ओर खड़े हैं)

नकीब आगे बोलते राजा महेन्द्र का प्रवेश ।

नकीब—(ऊंचे स्वर से) समस्त सामन्त मौलि लालित पाद युगल, अखण्ड प्रताप, प्रजापालक, दुष्टजन घालक, श्रीमहेन्द्र, महा राजा महेन्द्र की जैजैकार । सब लोग उठ खड़े होते हैं और यथा योग्य प्रणाम करते हैं ।

राजा—(राजसिंहासन पर बैठ मंत्री से) मंत्री कहो प्रजापर किसी तरह की पीड़ा तो नहीं; उनकी स्वास्थ्य की रक्षा ठीक २ है; नगर में सफाई का इन्तिजाम कैसा है; राजकर का बंदोबस्त कैसा है; तुम या तुम्हारे अनुयायी राज कर्मचारी प्रजा पर किसी तरह का अत्याचार तो नहीं करते ?

मंत्री महाराज आपके अखण्ड प्रताप की महिमा से प्रजा सब बड़े सुख चैन में है नगर में सब प्रकार की स्वस्थता है जब से आपने सफाई का नया बन्दोबस्त निकाल ठौर२ फर्श और पनाले दुरुस्त करा दिये हैं तब से बदबू के कारण जो तरह२ के रोग उठा करते थे सो अब कहीं नाम को न रह गये नगर में जहां देखो वहां आठ बार नौ तेहवार नित्य नये लगे रहते हैं राज मार्ग में सदैव सन्ध्या सकारे छिरकाव होता है गली २ कूचे २ रात की रोशनी की जगमगाहट मानो दीपावली की शोभा दिखाती है; ब्राह्मण सब निर्विघ्न पढ़ते पढ़ाते रहते हैं; व्योपारी लोग अपना व्योपार बे खटके और लाभ के साथ चला रहे हैं; खेतिहर अपनी खेती के काम में सदा मगन रहते हैं आपने जो कुछ नियत कर दिया है उससे एक पैसा अधिक भूमि कर नहीं लिया जाता यह सब महाराज के उत्तम प्रबन्ध का फल है।

राजा—(कोतवाल से) नाहर सिंह कहो तुम्हारा प्रबन्ध कैसा चल रहा है प्रजा सब तुम्हें चाहती है या नहीं सबल और निर्बलों में कैसी निबहती है तुम्हारे अधिकार में जो मुहकमा है मेरी नेक नामी या बदनामी का सब बोझ उसी पर आ रहा है।

कोतवाल—महाराज का सदा अचल प्रताप रहे अपनी मुंह अपनी तारीफ ओछों की बात है पर मैं हर तरह के सामदाम से नित्य इसी यतन में रहता हूं कि पुरवासियों में से किसी को मुझपर यह चिन ही अत्याचारी दुष्ट दुराचारी लुच्चे बदमाशों को पकड़ २ शहर बदर कर दिया सड़क पर सोना उछालते चले जाइये चोर बटमार कहीं नाम को भी नाम के राज्य में न रह गये क्या मजाल जो कोई सबल किसी निर्बल को किसी तरह पर दबाले बाघ बकरी एक घाट पानी पीते हैं।

चोबदार—(आकर महाराज को) जोशी पुरोहित जी महाराज को आशिर्वाद देने आये हैं।

राजा—आने दो।

पुरोहित। महाराज का कल्याण हो (पुष्पाञ्जली हाथ मे देता है)

राजा—(फूल माथे पर चढ़ाय) पुरोहित जी विराजिये (राजा के दाहिने ओर बैठ जाता है) कहिये विप्रवर मेरे लिये अबका सम्वत् कैसा है?

पुरोहित। महाराज इसी निमित्त आज मेरा आना हुआ है अभी तो दो तीन महीने बहुत अच्छे बीतें गे परन्तु ३ महीने उपरान्त मुझे कुछ ऐसी भ्यासती है कि किसी तरह का विपर्यय राजकाज मे आ उपस्थित हो आज पार्थिव पूजन समय मेरे मन में कुछ ऐसी बात आई तब मैंने मयूर चित्रक और वाराही संहिता आदि कई एक सम्वत्सर के शुभा शुभ फल प्रकाश करने वाले ग्रंथ देखे तो उन मे कोई एक अशुभ सूचक योग पाये पर आप कुछ सन्देह न कीजिये ईश्वर सब मङ्गल करेगा।

राजा। द्विजवर आपकी बड़ी कृपा को मुझे तो आपही सरीखे सुपात्र ब्राह्मणो की कृपा का भरोसा है।

चोपदार। महाराज की विजय हो राज कुमार मृगाङ्क मौलि आप के अभिवन्दन को आये हैं।

राजा। राज कुमार को आदर भीतर लाओ।

मंत्रि पुत्र चन्द्रकान्त के हाथ मे हाथ दिये राज कुमार का प्रवेश।*

राजा को प्रणाम कर दहिने बायें बैठ जाते हैं।

दो गवैयों के साथ विदूषक का प्रवेश।

विदू०। (झुक के प्रणाम करता है गवैयों से सिखाके) गाओ रे गाओ (सब हंस पड़ते हैं)।

मंत्री। (क्रोध से) अरे घीँघू साह सभा के समय यहां आने को तुझे किसने कहा?

विदू०। मंत्री आप झाषा क्या करती महाराज का हमाही तो हुक्म ह्याने पाया।

राजा। अच्छा गान भी थोड़ा होने दो

(गवैये ताल सुर मिलाते हैं)

विदू०। अपनी लाठी पर सारंगी की नकल करता हुआ) ठीक २ मिल गई हां हां वही सोरठ।

गवैये। विदू० की बात पर ध्यान न दे

---

* विशाल नेत्र, काक पक्ष धारी, कर्णों में बाले मौक्तिक सहित, अत्यन्त मनोहर स्वरूप, देखें भोलतोइई।

आपस में) क्या ही इन दिनों तो बसन्त की बहार है अच्छा छेड़ो।

विदू० । (रोक कर) हिंडोले की बहार कोई कजली की तान छेड़ो (सब हंसते हैं)।

गवैये । राग बहार ।

प्यारी नवल रसीली ऋतु आई बसन्त । भये सुजन सबै आमोदवन्त ॥

विदू० । गलियन में मच रही अधाधुन्ध । (हास्य)

गवैये । छायो त्रिभुवन विच अति अनन्द ॥

विदू० । रोक कर) घोंघू के रूप पै अपसरा लुभन्त ॥ (हास्य)

गवैये । बोलत मीठे सुर पच्छि वृन्द ।

विदू० । कौआ कांव कांव करि दिल लुभाय । (हास्य)

ग० । सरवर पूरित अरविन्द जाल ।
जहां भ्रमर पुंज गुंजत रसाल ॥

विदू० । सूअर कीचड़ में खूब लुटन्त ! (हास्य)

मंत्री । धिक् मूर्ख गान में क्यों विघ्न करता है ।

विदू० । कौन बोला० चुप रहो रे गवैये हमे सुने दो ।

ग० । बहु सोहत ऋतुराज आज । आनंद अनुराधा पुर समाज ॥

राजा । (प्रसन्न हो) गाना तो सामयिक है मंत्री इन्हे दो २ मोहरें इनाम दे विदा करो ।

विदू० । (चिल्ला के) खजानची कहां है

मंत्री । अरे चुप रह क्यों शोर करता है ।

विदू० । हं हं ये मंत्री बन हमे चुप किया चाहते हैं—चतुर कहीं चुप रहे हैं

खजानची का प्रवेश ।

मंत्री । इन्हे दो २ मुहरें दिलवा दो महाराज की आज्ञा है ।

विदू० । (खजानची से) दो दो दो तीन दो दो तीन इनको मुह में दो (चिल्लाते हुए सब बाहर गये)

रा०मो० । (खड़ा होके नम्र भाव से) यदि महाराज की आज्ञा हो तो आज मैं और अ० का० आखेट के अभ्यासार्थ शाल्मली बन की ओर जांऊं ।

रा० । (कुछ सोच कर) राजकुमार, यह तुम्हारी अभिलाषा यद्यपि निन्दनीय नहीं है और न अनुचित वा असम्मत समझी जा सकती है परन्तु किसी हेतु विशेष से मैं तुम्हे अभी दूर के आखेट की आज्ञा नहीं दे सकता ।

रा०मो० । (उदास हो) जो महाराज की आज्ञा ।

रा०। परन्तु मंत्री को इसमें क्या संमति है?

मं०। (धीरज से) राजकुमार का चित्त आखेट में बहुत लगा जान पड़ता है, और यद्यपि वे महाराज की आज्ञा को क्षण मात्र भी उल्लंघन नहीं करेंगे, पर उनका चित्त उदास रहेगा इस लिए यदि उनको जी बहलाने की आज्ञा दे दी जाय तो क्या बुराई है युवा अवस्था में विद्यमान होकर मनुष्य के मन में अनेक प्रकार की उमगें समय समय पर आया करती हैं और राजपुत्रों का धर्म है कि इसी अवस्था में अपने को अस्त्र शस्त्र विद्यादि से भली भांति सम्पन्न कर लें जिस्से शासन काल में देश प्रबन्ध निर्विघ्नता से बांध सकें, शत्रु के दमन करने में बिना प्रयास कुशल हों० फिर राजकुमारों को बहिर्भूमि का अवलोकन भी अवश्य कर्तव्य है आखेटादि क्रिया से युद्ध विद्या में बड़ा उपकार होता है।

रा०। मंत्री आप ठीक कहते हैं० मेरे मन में भी यह सब बातें पुष्टता से समाई हुई हैं परन्तु अभी ये आखेट से भली भांति अभिज्ञ नहीं हुए हैं और शाल्मली बन दूर है प्रथमही प्रथम अहेर को ऐसे स्थान में जाना मैं इनके लिए अनुचित समझता हूं।

चं० का०। (नम्रता से) महाराज किसी प्रकार का सन्देह न करें, रा०कु० आखेट विद्या में बड़े कुशल हैं० और यद्यपि किसी बड़े बन में मृगया को आज तक नहीं गये, पर उसका अभ्यास इन्हें पूर्ण रूप से हो गया है० और आज मेरा भी मन इस वीर क्रीड़ा के लिए बहुत चाहता है०हम दोनों बड़े उत्साह से महाराज की आज्ञा प्राप्त करने को आए हैं० आप बहुत प्रसन्न होंगे० जब हम हिंस्र जन्तु विध्वंस करके बन के निर्बल जीवों के निष्कंटक विहार के कारण होंगे।

रा०। अच्छा चं० का० मैं तुम्हारे कथन से बहुत प्रसन्न हुआ जाओ रा०कु० अपने साथ अपेक्षित घुड़ चढ़े और विविध शस्त्रधारी पदचर ले जाओ० (मं०से०) मंत्री रा०कु० के लिये आखेट सेना का प्रबन्ध हो जाय० और चार हरकारे नियत किए जांय जो नित्य बन से इनका समाचार यहां पहुंचाते रहें।

मं०। जो आज्ञा महाराज की (पु० हि०से०) पुरोहित जी कौन सा समय रा०कु० के प्रस्थान के लिए श्रेष्ट होगा?

रा०पु०। (विचार कर) कब रा०कु० का गमन श्रेष्ठ है? (ठहर कर) जो शीघ्रही मुहूर्त्त चाहिए तो कल अरुणोदय पर प्रयाण हो जाय।

रा०। अच्छा (मं०मो० से) तो तुम तड़के की मुहूर्त्त से च० का० और सेना को साथ ले चले जाओ, परन्तु मार्ग में किसी ग्राम को दुःख न पहुंचे वरञ्च मन्त्रियों के द्वारा सब प्रजागण की दशा पूछते रहना० ब्राह्मण और गौ को कोई कष्ट न दे० हिंस्र जन्तुओं की अहेर सावधानी से करना० यदि उतावली में सैन्य के छिन्न भिन्न हो जाने से कहीं अकेले रह जाओ तो जन्तु से भय न करना० अकेले दुकेले में घोड़े से नीचे न उतरना और चारो ओर चेष्टा रखना० घुड़ चढ़ों और पदचरों को अहेर के समय इस रीति से अपने साबिध्य में स्थापित करना कि वे तुम्हारी रक्षा सब दिशाओं में कर सकें० सबों को प्रसन्न रखना० च०का० का साथ कभी न छोड़ना० और नित्य २ दोनों के समाचार हरकारों के द्वारा हमारे पास आजाया करें० और शीघ्र लौटना०

म०मो०। जो आज्ञा महाराज की (प्रणाम करता है)

मं०। (चं०का० से) चं० का०। महाराज का उपदेश तुमने सुन लिया, रा० कु० का साथ न छोड़ना, और सब विषय में इनकी अनुगामी और सहायक रहना।

चं० का०। जो आज्ञा। (राजा और पिता को प्रणाम करता है; दोनों बाहर जाते हैं)

रा० (मंत्री से) मंत्री आज मेरा चित्त कुछ विकल सा है इस लिये इस समय मैं त्रिकूटाचल की तलहटी में नीलोद्यान को जाऊंगा। वहां सूर्यास्त पर्यन्त एकान्त की स्वच्छ पवन सेवन करूंगा। आज की सभा का कृत्य तुम्हीं करलो। और जो विषय कठिन जान पड़े उसे कल की सभा के लिये रहने देना।

मं०। जो आज्ञा।

(राजा पूर्वोक्त प्रकार से जाता है)

शेष—

———※———

महाजनोयेन गतः स पन्था।

बाबा आदम के समय के पुराने खोदा ऊपर के वाक्य पर निर्भरित हो इस बिगड़े समय की जितनी कुरीते हैं सब को पन्था

या सदाचार कहते हैं फाग में भकुआ बन गाली बकनीही चाहिए क्योंकि बड़े लोग सदा बकते आए हैं इसी बुनियाद पर काम काज ब्याह शादियों में भले घरों की स्त्रियां [illegible] बाजारू कसबियों के समान [illegible] सठनी गाना भी वही "[illegible]: स पन्था" है उन्हीं खूसट महाजनों ने विधवा विवाह की नई चाल नहीं निकाली तो अब हम क्यों कर नई रीत निकालें बाल्यविवाह बड़े लोग करते आए हैं तो अब हम क्यों न करैं जात पांत का भेद और खान पान की छिलावट आदि अनेक सर्वनाशकारी अन्ध परम्परा पर हमारे पुराने पुरखे चले आए हैं इस लिए यह सब सन्मार्ग है हम भी वही लीक पीटते जांयगे "लीक लीक गाड़ी चलै लीकहि चलैं कुपूत" पहले तो हम यही कहेंगे कि ऐसेही जघन्य आचरण उनके भी होते तो वे महाजन और आप्तक भी न समझे जाते और कदाचित् हमारे पुराने खबीसोंही का कहना सही है उन प्राचीन महाजनों में ऐसाही जघन्य आचरण शिष्टता की पहचान थी तो हम उनको दूरही से प्रणाम करते हैं हमारे लिए कुपन्थाही सुपन्था है हम महाजन नहीं बना चाहते मत कहो सज्जन हमें हम तो बड़े बदमाश हैं ;

—*—

पुस्तक प्राप्ति ।

तीन ऐतिहासिक रूपक सिन्धु देश की राज कुमारी गुन्नौर की रानी जय जी का स्वप्न सिरसा निवासी बाबू काशीनाथ कृत ; कामातुर हो मनुष्य कैसा विवेक शून्य हो जाता है यह बात बड़ी उमदी तरह पर पहले दो कथानक में प्रगट की गई है और मुसल्मान बादशाहों के अत्याचार के मुकाबिले हमारे प्राचीन आर्य वंशी राजा कैसे धर्मिष्ट और प्रजावत्सल थे यह सब के स्वप्न में अच्छी तरह पर दर्साया गया है मूल्य ≠)॥

मूल्य का नियम

अग्रिम ३।≠)

पश्चात ४)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and
Pnblished by Pt. Balkrihna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि की विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st April 1884. Vol. VII.] [No. 8.
प्रयाग चैत्र शुक्ल ७ सं० १९४० जि० ७ [संख्या ८

महंगी से महंगी बिकी तो २) कोड़ी एल् एल्डी ३) दरजन एमए ४) सैकड़े बीए, ४।) कोड़ी एफ् ए और साढ़े ढाई रूपये बंडल् कलकत्ता यूनी वर्सिटी वाले एंट्रेन्स और मिडिल् के लड़का कबूतर उठेंगे और सिर्फ १॥) के तीन पंजाब यूनी वर्सिटी के एंट्रेन्स पास शुदा ज़र्दा बेचे जायंगे सिवाय इसके विलायत के पास किये हुये देसी बारिस्टर कबूतरों का अलहदा नीलाम किया जायगा. अफसरों को यह मौका हाथ से न जाने देना चाहिये खास करके डिपटी कलट्टर चिंगलपट को तो जुरूरही आना चाहिये जिन्हों ने हाल में एक १५)की नौकरी के वास्ते बीए पास किए हुए लड़कों के लिए इश्तिहार दिया था लेकिन नीलाम बहुत जल्द ख़तम हो जायगा जो आएगा फाइदह का माल उठाएगा जो न आएगा पीछे पछतायगा और हाथ मलते रह जायगा ; वक्त नीलाम शब के १२ बजे तारीख यकुम अप्रैल सन् हाल सौदागर औक्शनियर किस्मत एंड् कंपनी एजंट हर शहर में खास करके बड़े २ मुकामों में जहां नीलाम की शै मजकूरह की जियादह तरखाहिश रहती है ।

शैर— नचूको मौका है सब से य बिहतर । करेंगे काम इन्सां का कबूतर ! ! !

किस्मत साहब की दूकान में सब तरह की बढ़िया चीजें तयार होती हैं माजून ऐश ऐसी दूसरी जगह नहीं बनती सिवाय इसके सैकड़ों दवाए मुन्दर्जै ज़ैल हरवक्त तयार रहती हैं ।

नाम दवा ।	फायदा ।
मुरब्बा फूट बड़ा तुहफा ।	दिल कली की तरह टुकड़े २ खिल जाता है
शरबत जिहालत ।	आंखों में तरी आजाती और नई

रोगने मगज का हिली।

इतर नादिहिन्दी।

सत सुस्ती।

वगैरह वगैरह

रौशनी की चकाचौंध नहीं सताती

सिर पर पड़ने पर भी मस्त

हालत रहती है

हिन्दी वालों के बड़े फायदे की

अलमस्ती की दवा बड़ी सस्ती

वगैरह वगैरह

ये सब दवाएं एक हजार साल पुरानी महाराज जयचन्द और पृथी राज के वक्त की खास लुकमान हकीम के हाथ की बनाई हुई हैं और हर कार में इस्तिअमाल हो सक्ती हैं जिन साहिबों को दरकार हों हरकारा भेज के मगालें।

किस्मत एंड कंपनी

कोठी नं० सवा छप्पन करोड़

शहर काफ़ूरा बाद० बिस्मिल्लाहाबाद

मुल्क नादि हिन्द हिन्द

ता० यकुम अप्रल सन् १८८४ई०

नई रोशनी का विष।

एक दृश्य रूपक।

समाज की बुराइयों के संशोधन निमित्त अब तक बहुत कम बरन दो ही एक नाटक हमारी भाषा मे प्रगट किये गये है अब तो पारसियों ने नाटकों का जो कुछ प्रयोजन था उसे बिगाड़ ही डाला लोगों की रुचिही नाटक की ओर से बदल गई अब यह निरा तमाशा हो गया बल्कि भाड़ और कसबियों के नाच से भी अधिक बुरा असर तमाश बीनो के जीमे यह पैदा करता है और जिन बुराइयों से छुटाने के लिए यह दृश्य काव्य समझा जाता था कि कहने से करके देखा देना अधिक मन में चुभ सक्ता है सो उलटा हो गया इन पारसियों के नाटक से मैल छटने को कौन कहे मनुष्य के शुद्ध चरित्र में वह मैल जम जाती है जो सौ मन साबुन से धोने पर भी साफ हो

ना कठिन है बल्कि सच पूछिए तो समाज संशोधन के इरादे पर हमारी संस्कृत के पुराने नाटक भी कोई नहीं लिखे गए जिनमे शृङ्गार और वीर रस अङ्गी वा प्रधान रक्खे गए हैं "एकएवभवेदङ्गी शृङ्गारोवीरएवच" और सिवा दो एक के बाकी नाटक काट्य चित्त अभिनय के द्वारा कभी दिखाए गए हों संदिग्धही है जिनमे पाण्डित्य के प्रकाश कठिन २ शब्द और मोहाविरे भर दिए गए हैं; और यही बात सेक्सपियर के अंगरेजी नाटकों में भी पाई जाती है जिस्का अधिक तोड़ उस समय की रीत व्योहार के प्रगट करने पर है या किसी ऐतिहासिक पुरावृत्त पर लिखे गए हैं समाज संशोधन किसी का उद्देश्य न न था; इस नाटक मे न हमने उस प्रकार के पात्र रक्खे हैं न निरा शृङ्गाररस को प्रधान रख बड़ी २ लब्ओं से अपनी लियाकत जाहिर करना हमारा मतलब है सच तो यों है कि उस तरह के नाटक इन दिनों के रसिक पढ़ने वालों की रुचि के अनुकूल होही नहीं सकते; इस नाटक के "सीन" दृश्य थोड़ा अत्युक्ति लिए है पर विचार कर देखिए तो जिनकी तस्वीर हमने इसमे उतारना चाहा है ठीक २ पाई जायगी; यह एक सर्व सम्मत सिद्धान्त है जिस्का पक्का सबूत हाल की मर्दुमशुमारी तैयार है कि हिन्दुस्तान जैसा और देशों मे भी मध्यम श्रेणीही के लोगों ने सब प्रकार की उच्च शिक्षा का लाभ उठाया है; हमारे भोले जी के पुराने खयाल के लोगों का यह झीखना कि आज कल के नव शिक्षित अंगरेजी पढ़ों की रुचि में एक प्रकार का विष मिल गया है बहुत सच है जिन पर यह मसल बहुत ठीक उतरती है। झोपड़ियों में रहना और महलों का खाब देखना धनी पहले तो बहुत कम पढ़ते हैं और जिन्हो ने पढ़ा उन्मे अङ्गरेजी शिक्षा का विष फजूल खर्ची कितना असर

पहुंचा सक्ती है ऐसे लोग कहां तक अपने घर को लुटावेंगे बहुधा तो उलटा असर देखने में आता है कि बाप तो कुछ उदार भी थे पुत्र अङ्गरेजी पढ़ ऐसे कंजूस और काइयां निकले कि दूकानों भी चाट कर बैठ रहे ; जेंटिलमैन की मेख में अनोखे की तुयह जो दिन प्रति दिन उठते चले आते हैं सो सब इसी मध्यम श्रेणी के आकाश मण्डल में बड़ी आभा के साथ चमक रहे हैं सीधे पुराने लोग इस कौतूहल की सर्वथा बुरे परिणाम पर सशङ्कित हो रहे हैं ; हमारे अवध पञ्चनाहव को राय इस बारे में लो जाय तो निस्सन्देह जेंटिलमैन और कसेट एकही ठहरेंगे जिसको पह्ली सुशोभित टर्किश टोपी या फुंदना दुमदारसितारे की दुम से किया जायगा ; यह कोई न समझे कि हम उन पुराने लोगों की कदम व कदम पैरवी कर रहे हैं जिन पर आज काल के छोकड़े अपनी कमीज़ की आस्तीन में मुंह छिपा चिढ़ाने के ढंग पर हसते हैं ; न हम उसी श्रेणी के लोगों के अनुकूल हैं जो बो को किस्मत fortune के प्रिय सन्तान हैं जिनको राह में चलते देख सड़क पर कुत्ते भी स्तुति पाठ करते ताजीम देने को उठ खड़े होते हैं ; हमारा तो यह सिद्धान्त है कि

virtue is virtue whether seen in the garb of a peasant or a prince

भलाई सब ठौर सदा एक रूप में पाई जायगी चाहो वह किसी राजा महाराजा में हो अथवा किसी में साधारण किसान में हो; हमारे सुशिक्षितों के चरित्र में जो कुछ घास फूस जम आया है जो भलाई good morals रूप शस्य को सब ओर से दबाए लेता है यह घास जो उन्मे से साफ कर ली जाय तो निश्चय है कि विचित्र उपजाऊ शक्ति संपन्न उस खेत में सोने के फूल और फल फलने लगें ; अगर इस बात का कोई जिम्मा उठा सके कि

कोट पतलून के साथ good morals भलाई अवश्य रहती है तो यह पोशाक हमें व दिलोजान कबूल है चाहो यह हमारे इह जनों को आंख का भिलनाही काटा क्यों न हो पर अफसोस जेंटिलमैन जो साहब खुद उस दरजी की कारीगरी है जिनकी तबियत और रुचि की झुकावट निश्चय उनके विनाश करने को विष तुल्य प्रगट होती है. हमारे नौशिक्षितों की तबियतदारी फानूस खयाल Phantas magoria से सदा यही एक तरह की अंगरेजी तर्ज़ की फ़जूल खर्ची सवार रहती है जिसका परिणाम यह होता है वह कली जो खिलने पर सुगन्ध सुवासित कुसुम होता सो फजूल खर्ची तुषार के पात से ठिठर कर नष्ट हो जाती है ; ऐसों को डूबने से उबार रखना सब पहलू बचाकर चलने वाले सावधान और सुचेत हमारे पुराने लोगों का कर्तव्य कर्म है क्योंकि उनकी भविष्य आशा का सर्वस्व जिन पर निर्भर था वह आशा हाथ से निकल गई तब हाथ उनके जी से हुम अथाह दुःख सागर का क्या हाल पूछना चाहिए ऐ हमारे विज्ञ पाठक वर्ग उस बुरे परिणाम से डरो और शिक्षा ग्रहण करो और हमारे सीधे सादे सच्चे धर्म निष्ट पुराने लोगों के खयाल से जिनका मेल नहीं खाता उन बुराइयों को अपने घर में न घुसने दो जो तुम्हें सत्यानाश में मिलाने का प्रत्यक्ष कारण है।

पूत सपूत तो धन क्या। पूत कपूत तो धन क्या।

पुरुष पात्र।

विश्वमित्र। एक बुड्ढा पुराने खयाल का छोटा जमीदार।

भानुदत्त। विश्वमित्र का लड़का

सत्यानन्द। भानुदत्त का मित्र और सह पाठी।

तारकचन्द्र। एक चालाक कट्टर दिल का अंगरेजी तर्ज़ का सौदागरी करने वाला महाजन।

नौ कुमार। रसिकविहारी—नौ
मचन्द्र आदि भानुदत्त के मुफ्त
खोरे दोस्त।

लालू—भानुदत्त का जमादार,

कप्तान—जहाज का अफसर वि
श्व मित्र का दोस्त।

जहाज के मांझी रेल के कुली
खानसामा मुसाफिर आदि।

॥ स्त्री पात्र ॥

सीमन्तिनी भानुदत्तकी मा सी
धे सुभाव की स्त्री।

सरला वे मा बापकी लड़की
जिसे विश्व मित्रने पाला था।

प्रमदा अंगरेजी पढी स्वच्छन्दचा
रिणी स्त्री।

——**——

प्रथम अङ्क प्रथम गर्भाङ्क।

स्थान

कलकत्ते के पास एक गांव मे खूब आ
रास्ता बाग मे मकान तालाब कुंज भवन
आदि एक बड़ा फाटक कियारियों के
बीच २ मेज कुर्सी बेंच धरी हुई बीच मे
ताश और चौसर खेलने का मेज तिपाइ
यों पर चुरट पान के बीड़े रक्खे
हुए शराब का बोतल और ग्लास रक्खा
हुआ साटन के गद्दे की है क्षिङ्ग बेड पर
भानुदत्त पेड़ की छाया मे सोता हुआ
पासही एकर कोच पर सत्यानन्द नौ
कुमार आदि भी बे खबर सोते हुए।

सत्यानन्द। (बर्राता है) जी हां हमारी
आप की शर्त। हां हमारी आपकी दस
दस रुपये की शर्त।

भानु। (धीरे से स्वप्नमे) प्रमदा प्यारी
प्रमदा सिर्फ एक दफा-यह कहदो कि मैं
तुमको चाहती हूं।

नौ कुमार (स्वप्नमे जोर से खर्राटा मार
ता हुआ) खरररररर।

सत्या। (स्वप्नमे) अब आप चुप क्यों हो
गए-ला-लू जरा बर्फ छोड़ ब्रांडिस देना।

थड़ी देर के लिए सब चुप हो जाते हैं

लालू और तारक चन्द्र का प्रवेश।

तारक। (झुककर सलाम करता हुआ)
आप मुझको माफ कीजिए बा (आगे
देख चकित सा हो लालू से) क्योंजी तुम
ने तो हमसे फाटक पर कहा कि बाबू
लोग बागमे पढ़ते हैं इस वखत मौका
नहीं है कानून याद कररहे हैं और यहां
तो कुछ निरालाही ढंग है।

लालू। साहब हमको जो हुक्म था वह
किया।

तारक—अलबत्ता कानून पढ़रहे हैं;
ब्रांडिस और शेरी का कानून जो इन्दिन

ओं के नौजवानों के लिये हालमें तसनीफ किया गया है।

लालू—(ग्लासमें ढालता हुआ) वाह एक ग्लास ठंडा शम्पेन का आपभी कीजिए आप कलकत्ते से आ रहे हैं गरमी बड़ी पड़ती पीतेही कलेजा ठंढा हो जायगा।

तारक—अच्छा लाओ (स्वगत) गोया इतने का दाम सधा और शामपेन फेका गया (गिलास पी जाता है और कड़ए लाह से का मुंह बनाता हुआ) (दांत पीस कर) इन बदमाशों ने हमारे रुपये से यह सब खरिद रक्खा है और हमारेही रुपये से इतना कूद रहे हैं—शराब-ऐश जुआ और हर तरह की नई रोशनी की झलक।

लालू—ओहो और क्या हाहाहा।

तारक—(सोते हुओं का अलग२ अच्छी तरह निरख कर देखता हुआ) भानुदत्त सतानन्द—नीकुमार—मेरे कर्ज दिये हुये रुपये गये अब फिर वापिस आवें तो जानें।

लालू—इन लोगों को हम उठा दें (उठाने जाता है)

तारक (रोक कर) थोड़ा ठहरो बेशक तुम अपने मालिक के अच्छे नौकर हो तुम्हारी इमानदारी का हमको कुछ भी शक नहीं है (उसके हाथ में दो रुपए दे) और अपने मालिक का भेद तुम किसी से न कहोगे।

लालू—जो कभी नहीं चाहें सारी दुनिया एक ओर हो

तारक—यही तो हम भी कहते हैं (उसके कान में) अच्छा तो इस सबके माने क्या? यह बाग? यह आराइश?

लालू—मेरे मालिक ने इसे मोल लिया है कि गरमी में यहां आकर रहें।

तारक—और दाम इसका दे दिया है?

लालू—शायद (हंसता है)

तारक—और इस सब असबाब का?

लालू—इसका भी दाम दे दिया।

तारक—उसी तरह से? ऐं?

लालू और क्या- सब कोई जानता है कि उनका बाप अमीर है कलकत्ते के पास उधर उनकी जायदाद है और उन का यही भानुदत्त अकेला लड़का है-

तारक- हां बेशक और चूंकि तुम्हारे मालिक ने यह बाग मोल लिया है।

लालू--इस लिए नित यहां हम लोगों के गुल छर्रे उड़ा करते हैं।

तारक--तुम्हारे मालिक तो अंगरेजी तबियत के हैं तब यहां कोई लेडीज भी आया करती हैं।

लालू—सिर्फ वही जिनकी शादी नहीं हुई है।

तारक-(मकान की ओर देख यह मकान भी इसी बाग के जोड़ का होगा? ऐसही क्या यह भी आरास्ता है?

लालू हमारे बाबू साहब ऐसी छोटी तबियत के नहीं है कि थोड़ी २ चीजों के लिए किफ़ायत करें अपने आराम के आगे वे रूपये को कुछ माल नहीं गि-नते।

तारक-धन्य है क्यों न करेंगे क्यों कि उनका तो एक पैसा भी नहीं उठता गाढ़ी मे-हनत से कमाया होता तो जानते।

लालू—आइये आपको मकान की सैर करा लावे भीतर चलियेगा।

तारक अच्छा-(स्वगत) और सब चीजों की फिहरिस्त भी लिखे लिये आवेंगी क्योंकि यह तो निश्चय है कि यह मकान नीलाम होने पर और किसी के हाथ आ सक्ता है (मकान के भीतर लालू के साथ जाता है)

॥ थोड़ी देर तक सब चुप रहते हैं॥

नौ कुमार (खर्राटा मारते सोरहा है) घररररररर·

सत्यानन्द-(जागकर) हलो· क्या हुआ (नौकुमार को पांव का ठोकर मारता है) मत गरजो बहुत; नहीं तो तूफान उम-ठेगा।

नौ कुमार (ऐंडाता हुआ उठकर) आपने क्या कहा?।

सत्यानन्द—आज तो आप ऐसा गरजे कि सावन भादों के मेघों को भी हरा दिया।

नौ कुमार—माफ कीजियेगा मुझे ख्वाब मे ऐसा मालूम होता था कि मै शेर मन्ना पढ़ रहा हूं।

सत्यानन्द—और मै ख्वाब देख रहा था कि सैंकड़ों रुपया जीतरहा हूं पर जागा तो सिर्फ दो चवन्निया जेब मे हैं खैर इनको अपने कर्जदारों के लिये रख छोड़े (भानुकी ओर इशारा कर) देखो भानु कैसा सोरहा है।

भानु—अप्रिय—प्या—री—ऐऐ—प्या—री—प्र—मदा—प्या—रो—हमी—जानती—हैं कि—हम—तुमको—कि—तना चा:—हते हैं—

सत्यानन्द—'भानुको हिला कर' उठो बचा उठो; औरतों के वास्ते जितनी बेवकूफी की बातें करते बन पड़े करो मगर उनको जाहिर मत करो।

नौकुमार—'सत्यानन्दसे' यह उस औरत के पीछे बे तरह पड़े हैं और कैफीयत यह कि उसको बिल्कुल मोहब्बत इन की तरफ नहीं है।

सतानन्द—मगर सच २ यह उसके साथ रहना चाहता है और उससे शादी करेगा।

श्रीकुमार—परवह करैश्रीतवन—शादी—छाहा—अरेवह इनको अच्छी तरह चेला बनाया चाहती है।

भानु—'पलङ्गसे कूद कर' क्योंजी के बजा होगा।

सतानन्द—'घड़ीदेख' अभी तीन बजा है और उन दोस्तों के आने का ६ बजे वादा है।

भानु—अच्छा तब तक क्या करना चाहिये।

सतानन्द—हमलोग शराब पीचुके—चुरट पीचुके—गंजो फा खेल चुके!

श्री कुमार—सितार बजा चुके।

भानु—और सो भी चुके।

सतानन्द—अच्छा तो अब कुछ पढ़ना चाहिये 'मेज पर से किताब उठाता है'

भानु—तुम भी कितने बेवकूफ आदमी हो सतानन्द रखदो किताब!

सतानन्द—भाई सब कुछ थोड़ा २ करना चाहिये आज की ला लेक्चर में के से अच्छे २ च पटर्स थे जैसा Deeds of gifts, Law of contracts; Law of inheritance.

भानु—उह stuff and none sense वे र सत आदमी के पढ़ने में तब आता है जब परखलत परखत आखें भें जाती हैं जब मुंह में न दांत न पट में आंत बाकी रहती हैं कभी २ का बृढे होने पर सोता अपनी मौरास अपने की नहीं मिलतीं।

सतानन्द—खूबकहा और इसी लिये तो मिलने के पहलेही उसका भोग कर लेना चाहिये जैसा आप कर रहे हैं।

'किताब पढ़ता हुआ' खैरप हले Law of arrest पढ़ डाले।

भानु। (किताब छीन) चुप रहो बड़े पढने वाले इसका मजा तो हम लोग एक दिन चक्खे हो गे तब क्या अभी से हाय हाय इस जून आप को क्या सूझा जो कानून पढने लगे।

सतानन्द भाई कभी २ आदमी को बैठे २ अपने ऊपर आने वाली बुराइयों का भी खयाल आ जाता है पर इस समय मेरे जीमें एक बात आई है कि तीन महीने से हम लोगों के घर से कोई चिठ्ठी पत्री नहीं आई इसलिये आज आंपो लिखें कि हम लोग यहां खूब मेहनत करते हैं और अब नई २ किताबें खरीदना है इभी बहाने कुछ रुपया मगावे।

भानु। पर ऐसा तो हम सदहा बार लिख चुके हैं अगर अब कि बार हम कि खने का कुछ असर हुआ ५०) आये तो क्या।

सता। इतने का तो हम लोग महीने में चुरट पी लेते हैं भाई जान इतने थोड़े रुपये के लिए झूठ मत लिखो झूठ का नतीजा अच्छा नहीं होता।

भानु। जो कुछ हो अब तो इस जून चैन से कटती है आज दिन हमारे पास सब ऐश की चीजें मुहैया हैं उमदी २ पोशाकें उमदी २ फिटने सवारी की घोड़े गाड़ियां नौकर खानसामा बैरा बाग मकान वगैरह; जिन्दगी का मजा इसी को कहते हैं जिन्दगी जिन्दादिलों का है नास मुर्दा दिल खाक जिया करते हैं।

सता। कल तो तुम पर इतना जोश न था (औरों से अलग जाकर) अब तुम मिस प्रमदा को मोतियों का हार पहनाने के खयाल में थे।

भानु। कल मेरे पास एक पैसा भी न था और आज।

सता। आप का जेब भरा है।

भानु। जेब तो नहीं भरा पर हमने तारकचन्द को लिखा है उम्मेद है।

सता। कि वह गिन देगा तुमको ऐसा?

भानु। हां यही तो।

सता। लेकिन याद रक्खो तारकचन्द के हाथ तुम्हारा बाल २ बिका है बहुत कर्ज तुम्हारे ऊपर उनका हो गया।

भानु। इसी से तो उम्मेद है कि अबकी भी देंगे।

श्रीकुमार। (कोट पहनता हुआ) I say आओ हम लोग हमिरिस की तरफ हवा खाने चलें और वहीं जिसको हमसे शर्त लगाना हो लगाये आज हमारे भाग का सितारा चमक रहा है (सब अपना २ कोट पहनते हुए)

Bravo Bravo carried unanimously

भानु। आप लोग चलिये हमको अभी कुछ काम है हम और सतानन्द पीछे से आवेंगे पर याद रखिये सात बजे तक लौट कर आजाना होगा खाना खाने वखत।

सता। हां उस वखत इल्म हफरने पर लेक्चर होगा वृकोदर भीमसेन उसके चेयरम्यन होंगे भांत २ की पनीर खास पिकिल्स विलायती बिसकुट का चसकूट लगाया जायगा और पोर्ट वइन शांपेन शेरी की धाराएं बहेंगी थोड़ी २ सोच

सबको देना होगा किसी बांधने का मांडाबिरा बड़े खूब तैयार हो कर आना। सिवा भानुदत्त और सत्यानन्द सब लोग हसते हुए जाते हैं।

भानु। (अपना सिर हाथ से पकड़ एक कोने में जा बैठ जाता है)

सत्यानन्द। (टहलता हुआ कोट पहनता है) इस वखत न जानिये क्यों मुझे वो फोरोगा याद आ रही हैं

(गाता है)

अवे तारीक दोसे मौज गिर्दावे चुने हायल। कुजा दानन्द हाले मा सुबुक साराने साहिल हा (चुरट पीता हुआ बाग में टहलता है)

भानु। (स्वगत) अभी हमने यह स्वप्न देखा कि कालेज में हमारी छुट्टी शुरू हुई और हम घर गये सीमन्तिनी और अपनी मासे जा मिले; हाय आज हमको यह क्यों सोच सवार हुआ कि हमारी करतूत एक दिन मा को सब खुल जायगी तब हम अपनी मा को और बाप को क्या मुंह दिखावेंगे; भानु तुमने यह क्या किस्सा छेड़ा है इस दास्तान का न आर है न छोर कहानियों में अकसर प्यार और मोहब्बत को बातें होती हैं पर इसका डर है कि हमारा किस्सा तूफान से शुरू हुआ और तूफान से खतम होगा; ऐ हमारा जी यह क्या असगुन सोच रहा है कि: आदमी का दिल भी क्या घनचक्कर है क्या २ तरंगें उठा करती हैं हमारे बापने हमें कलकत्ते पढ़ने भेजा और अगर हमने और उनकी पूंजी थोड़ा सा चैन किया भी तो कौन बड़ा पातक किया।

सत्या। (गाता हुआ भानु के पास आता है)

निसि अन्धियारी भंवर भय उठत सरग गंभीर। वे मम डर का जानिहैं जो बस सागर तीर।

(भानु से) क्यों भाई साहब खैरीयत तो है आज आप किस पेंचमें पड़े हैं चलिये हवाखाने।

भानु (उठकर) देखो सत्यानन्द आज तुमको बहुत तंग कर रहे हो तुम्हें क्या कोई दूसरा दोहा गाने ही को नहीं है; पहले तुमने ला आफ अरेस्ट का जिकिर छोड़ हमें खुश किया और अब!

सत्या। हां तो अब क्या किया ? क्या एक आपही की प्रमदा हैं जब देखो तब उन्ही के नाम की गायत्री पढ़ा करते हो; हमको भी तो किसी का सहारा है हम

भी तो अपना जी खुश करने को किसी का ध्यान किया चाहें।

भानु। अच्छा ध्यान करो। हां अच्छी याद आई सत्यानन्द इस वक्त हम हवा खाने नहीं जा सकेंगे।

सत्या। क्यों क्यों ? फिर कोई नया स्वांग रचा क्या ?

भानु। नहीं स्वांग नहीं। तुमको याद होगा कि तारक चन्द को हमने इसी वखत बुलाया था (घड़ी देख) और अकेले हमसे वह राह पर नहीं आने का तुम्हारी मदद भी दरकार है। इष्वाकूणां दुरापेर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः। समझे ?

सत्या। मै तो आप का सदा का जर खरीद गुलाम हूं।

मकान के भीतर से तारक चन्द का प्रवेश।

भानु। Hallo! old hundred per-cent; whence do you spring from ?

तारक। आप लोग सोते थे जब मै आया और उठाना मुनासिब न समझ के बाग वगैरह की सैर अभी तक करता था मगर क्या खूब बाग और मकान है।

सत्या। Well, my dealer in human flesh and blood! How do you do ?

तारक। ऐसी २ मीठी बातों से हमारी तबियत खुश करना सत्या नन्दही का काम है।

भानु—खैर—कहिये और सब खैरीयत है ? बाजार की क्या कैफीयत है ? कोठी के कारबार का क्या हाल है ?

तारक—(नाक भौं सिकोड़े) ऐसाही वैसा—रोटी खाने को मिली जाती है और क्या—और रुपये की किल्लत का क्या आपसे हाल कहें।

सत्या (स्वगत) सुनती हो बदमाश को (प्रकाश) हजारों रुपये रोज पैदा करना और उसपर गरीबी की शिकायत आप भी गजब करते हैं।

तारक—(आधा हंस कर) आपके सामने आदमी को जबरदस्ती हंसना पड़ता है हाहा।

सत्या—निहायत खुशी की बात है कि आपको हंसना पड़ता है मगर यह मुनासिब नहीं कि इसी आप सिर्फ मारे खुशी के फूले न समाय देखिये हम लोगों के दोस्त भानुदत्त जी साहब कुछ अफसुर्दा खातिर से मालूम होते हैं—इसकी वजह हमसे सुनिए—पहले जब तक हमारे पास एक रुपया भी था तब तक हमारी तबियत ऐसी परेशान रह

तो थी जैसे नाटकों में किसी कामिनी के प्रेम में आसक्त नायक की होती है पर जब से आपने मुझको आजाद कर दिया और थाल और पर नोच महल मुंड मुंड कर दिया तब से दिन रात गीतें गाया करता हूं—यह आप का एहसान है मुझपर—कहने का मतलब यह कि वही एहसान भानुदत्त पर भी कीजिये बाबा बिश्वमित्र आप जानते हैं बड़े हुए उनके मरने पर सब दौलत भानुदत्त के हाथ लगैगी उस्में का जब तक कुछ हिस्सा भी बाकी रहैगा तब तक हम लोगों को चैन नहीं लेने देगा।

भानु—(रोक कर) हां हां आज भूसा जियादह तो नहीं खागये—कुछ पागल हो गये क्या? मगर तारक चन्द जो आपको आज रात में हमलोगों की पार्टी में जरूर शरीक होना होगा क्यों कि आज हमारे यहां बहुत से दोस्त आने वाले हैं आप भी आइये गा!

तारक। आंहो आज आप के यहां पार्टी है हमको पार्टी बहुत भली लगती है हम जरूर आवैंगे (स्वगत) जे दिन अपने घर न खांय उतनाही अच्छा जो कुछ इस वेवकूफ के हाथ से निकले वही सही—भागी भूत की—

सत्या—आपने क्या कहा?

तारक। हमने कहा कि आज बड़ा जमघटा है।

सत्या। एकसे एक छटीं हुई आवैंगी।

तारक। यह बात है (स्वगत) लालू ने तो हमसे यह कुछ नहीं कहा (प्रकाश) अच्छा तो अब मुझको घर जाने दीजिए मैं तैयार होकर आऊंगा।

भानु। ऊः बहुत बखत है अभी आप बाखूबी आ सक्ते हैं और वापिस आसक्ते हैं और हां खूब याद आई ५००, रुपये भी लेते आइये गा ग्रेट ईसटरन होटल को शाम्पेन को बिलअदा करना है।

सत्या। और दो बड़े २ तरबूजे लेते आइये गा।

तारक। तरबूजे! खैर तरबूजे जे कहिये मैं लेता आऊं। पर दूसरी चीज जो आप मांगते हैं उस्की निस्बत—

सत्या—दोनो एक साथ हैं भले आद मी दोनो एक साथ।

तारक। ५००, रूपये इसी वखत—[भानु से धीरे से] मुझको माफ कीजियेगा बहुत दिनो से मैं आपसे कुछ बात कहने का मौका ढूढता था मगर शरम के मारे नहीं कह सका था आज लाचारी कहना ही पड़ता है। माफ कीजिये गा

आपका हिसाब बहुत बढ़ता जाता है हमारी बही मे १५ हज़ार आप के नाम चढ़ चुका है कलह उसी के सूद की तारीख है ५००) उलटा और मुझे चाहिये न कि आप मांगते हैं।

भानु। वाह आपकी शराफत से फर्क नहीं यह कैफीयत है तो बगैर हजार के हमारा काम नहीं चलने का है सुनिये हिसाब ५००) जो आप मांगते हैं सो तो उसी दम हाथों हाथ लौटा देंगे। त्वदीय वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पितं। और ५००) हम रक्खेंगे खूब आप अपने ही हक मे कांटा बोते हैं।

तारक—तो ५००) आप रख छोड़ियेगा ?

भानु—वाह हम रक्खेंगे नहीं तो आपको फाइदा क्या हुआ और नहीं तो सुनिये आप १०००) दीजिये और हमसे उसी वक्त सूद ज़द अपना सब बेबाक कर लीजिये।

सत्या—ठीकतो है तारक बन्द तारीफ करो तुमभी वाक़े बज़—

भानु—और क्या अकिल के पीछे लाठी लिये फिरते हो।

तारक। (धीरेसे) मगर हज़ार रुपया।

सत्या। क्या सोच रहे हो बाबू विश्वमित्र को कलकत्ते के उधर कौन नहीं जानता थोड़ेही दिनो की देर है फिरतो आप ही के सबकी होगी और हमारी भी पांचों अंगुलियां घी मे होंगी ; अब आप जाइये आठ नौ बजे तक फिर आइयेगा और रुपया भी लेते आइयेगा ज़रूर।

भानु। और कागद वगैरह सब ठीक किये लेते आइयेगा जिस्से हमको दस्तखत अकेला कर देना पड़े।

तारक (भानु के कान से) मगर एक बात तो हम कहने को भूलही गए शायद आज शाम को हम न आ सकेंगे। और इस्की बाकी के कैफीयत आपसे पीछे कहेंगे एक बड़े मालदार घराने की औरत को हमने फंसाया है देखिये कांपे से आजाय तो जाने आज ही शाम को उस्से मुलाकात की ठहरी है।

भानु। you gay old dog! you rogue उस्को भी यहां लेते आना कुछ घबड़ाओ मत हम लोग डाकू नहीं हैं।

तारक। अच्छा देखेंगे और जो हम जून १०००) मौजूद न होतो सोदी की को चौजें लेते आवें आप कुछ अन्देशा

सत की लिए हाथी हाथ निकल जाय गो।

भानु। इस्में पियानो भी है।

तारक। पियानो तो नहीं है पर और बहुत तरह के बाजे है।

हम सब दस्तावेज भी आपको लेते आवेंगे।

सत्या। (स्वगत) कहीं फिर हिन्दुस्तान मे एक बार थोड़े दिनों के लिये नवाबी हो जाती तो सबके पहले हम ऐसेही महाजनों को सूली परचढ़ा देते।

भानु। लालू लालू।

॥ लालू का प्रवेश ॥

भानु। देखो ये सब चीजें अच्छी तरह लगा दो मेज दुरुस्त और साफ करडालो हम टहलते २ रेलवे स्टेशन तक इन लोगों के साथजाते हैं। (सत्या नन्द से)। by the bye सत्या नन्द प्रमदाने भी इसी वक्त आने कहा है शायद रास्ते में उस्से मुलाकात हो जाय।

सत्या। शायद। लो तारकचन्द तो अब आप जरूर आइयेगा आइये स्टेशन पर चलिये आपको रिटर्न टिकट ले दें आपको रुपये की किल्लत है तो खैर टिकट का खर्चा भी हमी अपने जिम्मे लिये लेते हैं।

आनन्दत सत्यानन्द। और तारकचंद हंसते हुए बाहर गये। क्रमश:

रूप।

रूप का निरूपण कोई सहज काम नहीं है न्याय दर्शन वालों ने ९ द्रव्यों के अन्तर्गत गुण पदार्थ में इसे भरती कर रक्खा है यह वह पदार्थ है जिस्का बोध केवल नेत्रों ही के द्वारा होता है इसीसे रूप नेत्र का विषय कहलाता है "रूपंशब्दोगन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी" अर्थात् नेत्र जब इस्का देखने वाला या ग्राहक बनता है तब मन को इस्का बोध या पहचान होती है; जन्म के अन्धों को बहुधा रूप का अनुभव छूने से स्पर्शेन्द्रिय द्वारा होता है विलायत के बुद्धिमानों ने अन्धे गूंगों के पढ़ने पढ़ाने को उपाय निकाले हैं; चन्धे अक्षरों को टटोल २ धड़ाधड़ पुस्तकें पढ़ लेते हैं जैपुर के आर्टस्कूल में एक अन्धा कारीगर उस्तादों में गिना जाता है; अन्धों को पदार्थों की गुलाई मुटाई आदि का ज्ञान तो भरपूर हो जाता है परन्तु रूप का निस्शेष और यथार्थ बोध नेत्र

छीन को नहीं हो सक्ता। वे विविध रङ्गों की प्राकृतिक चमत्कारी श्याम घटा उठने पर पर्वतों की छटा नदी का प्रवाह आंधी के समय वायु का वेगवान् झकोर वसन्त और वर्षाऋतु मे उपवन के वृक्षों की हरी भरी सोहावनी शोभा का कुछ भी अनुभव वे नहीं कर सक्ते तात्पर्य यह कि दृश्य पदार्थों के रूप का ज्ञान सर्वथा नेत्र ही पर निर्भर है परन्तु नेत्र एक वाहक अर्थात् रूप को मन तक पहुंचा देता है जिस्की परख वा कदर मनही के आधीन है जो रूप मन को भा जाता है उसे वह सराहना के साथ ग्रहण कर लेता है और अपने में कुछ काल तक या सदैव के लिए स्थान देता है भक्त जन इसी से अपने इष्ट देव की रूप माधुरी के दर्शन के बड़े कौतुकी और उत्साही होते हैं और जिस रूप से मन का मन नहीं मिलता उसका वह ऐसा निरादर करता है कि किसी के मनाए नहीं मानता परन्तु सब मन एक प्रकार के नहीं होते इसी लिए जिस रूप को एक मनुष्य प्यार करता है उसी से दूसरा गलानि मानता है मसल है मन लगा गधी से तो परी क्या चीज़ है--रूप कुरूप न कोय जाको रुचि जैसी जिते। तित तैसी रुचि होय गुनि लीजे सब हृदय में। अंगरेज़ों में कांजी आंख की बड़ी महिमा है हमारे यहां विकार की सी आंख बड़ा दोष समझा जाता है स्त्रियों में क्षीण कटि और कृशोदर सब ठौर सौन्दर्य की भूमिका समझी जाती है यहां तक कि फारसी के शायर कमर की उपमा बाल से देते हैं पर माड़वारिनै और पंजाब की स्त्रियों में इसके विपरीत देखा जाता है कुच की गोलाई और ऊंचाई में कवि लोग बिल्व कुम्भ और पर्वत तक की उपमान खोज २ पच मरे हैं वही बंग देश की कोमलाङ्गी स्त्रियों ढ़ेल कुचस्तनी शोभा की सामग्री समझी जाती है ; शुकतुण्ड नासिका अर्थात सुआ के टोंट

सी नाक प्रशंसनीय मानी गई है पर मुगलों में जब तक काक भुसुण्ड समान चोंच भर की नाक न हो तब तक रूप ही अधूरा; चीन देश की स्त्रियों में अत्यन्त छोटा पांव और मर्दों में ऐंड़ी तक लटकती चूंड़ी खूब सूरती की पहचान है इत्यादि; अब रूप को हम दो प्रकार का कहेंगे एक प्राकृतिक वा स्वाभाविक दूसरा कल्पित वा निर्मित प्राकृतिक रूपों में ईश्वर की सृष्टि मात्र का समावेश हो गया यथा नदी समुद्र पहाड़ पशु पक्षी मनुष्य वृक्ष आदि; प्राकृतिक पदार्थों में मनुष्य अपने बुद्धि बलोदय से जिन पदार्थों को और का और कर दिया है वे निर्मित या कल्पित रूप कहलाते हैं; रूप अनेक प्रकार के हैं पर वह रूप जो मन में असली प्रीति पैदा कर देता है सब से प्रबल है और मन उसके ऐसा वशीभूत हो जाता है कि प्राण जाने पर भी उसे नहीं छोड़ा चाहता; जैसा रूप भिन्न २ हैं वैसेही मन भी भिन्न २ रुचि के हैं कोई मन ईश्वर की सृष्टि के किसी विशेष दृश्य पर मोहित हो उसके ध्यान में मग्न रहता है कोई मन मृग नयनियों के रूप पर मोहित हो आपही कुरंगवत चौकड़ियां भरने लगता है कोई कोई मन ऐसे हैं कि जिन्हें जगत् का कोई रूप नहीं भाता और वे उस रूप को तलाश में रहते हैं जिसमें सब रूपों के रूप का निवास है; सच पूछिए तो इस रूप परंपराही से सृष्टि की स्थिति है वाणी की शक्ति मनुष्य को इसी लिए दी गई हैं कि वह अपने देखे हुए रूप को वाणी के द्वारा दूसरों को सुना सके बड़े २ युद्ध उत्सव तथा इतर दृश्य पदार्थ का रूप खड़ा कर मन को पहुंचा दिया जा सक्ता है रूप का आरोप किया जाता है इसी लिए इस प्रकार के वर्णन या लेख को रूपक कहते हैं रूपारोपात्तु रूपकम् और उस लिखे हुए रूप को चाहो जितने काल तक बचाय रख

सक्ते हैं जब निकाल कर पढ़ो जैसे का तैसा ताजा और नया; प्रेम भी रूप ही की सहाड़ से उत्पन्न होता जिसका ऐसः फन्दा है को जगत् भर को गांसे है श्रीधर

——#०——

समस्यापूर्ति

पं॰ भैरवदत्त।

एक समै मख हेत विरंचि सुदेव समेत उछाह जगौरी। ताहं बृहस्पति दार समेत अचारज काल में आनि पगौरी॥ ता प्रिय को लखि सुन्दर रूप सुधाकर काम कलाहि ठगौरी। मानि न कानि गलानि तजी तबही ते मयंक कलङ्क लगौरी॥

पं॰ पुत्तीलालतिवारी।

आपही चालि जो चूकि गए तो कहो कहा ताकि लिए लरियेजू। दैव सों रूके सदा जो रहै तिनको भला कैसो कहो भरियेजू॥ जिनकी मन पक्ष की मात सदा तिनको महा मोह सु क्यों हरियेजू। अब होत कहा पछिताए भला मति मारी गई तो कहा करिये जू॥

पं—पु—ला

जहां गाधि दिलीप से भूप भए जिनको उदय अस्तलौं भूमिगई। अबलौं यश धर्म वितान तनो अकुलोरता चारो दिगन्त छई॥ तहां मूरख लोलुप कामी महा खल कूर कुपंथ प्रजा है ठई। कहूं हाय कहा न बिसाय कछू किमि आरत भारत भूमि भई॥

पं॰ पुत्तीलाल।

अब चेतो कहां लों अचेत भए पड़े रैहौ चढ़ें मद मोह के झेले। जपर स्वच्छ भये न कछू जब लों मन को न छुड़ाइहै मैले॥ देश की उन्नति काम करो न बनो सो-प्रसाद कहूं कुछ दै लै। हे हितयामी तुम्हारी सदा अखिदे ही त्याजि गहो गुन गैले॥

पं॰ भै॰ द॰

यह भारत भूमि मनो नभयान चढ़ो जन चौबिस कोटि सुहातो। दुख सागर पारहि जान चहै निज भूपति सों शुचि जोरिके नातो॥ नहिं टर सुने सुविदेश बसै उरटू मणिकाक्रति में अति रातो

किमि भैरवपार सुनाव लगै पर चण्ड अखण्ड खेचट गारो ॰

नृप शासन में सुख आस वृथा तमतालिहि की अति गोय गई। कवि भैरव जू निज पच्छ लई रिपु रूप मिलि चकवा चकई॥ कसि कूजत कुक्कुट से हितकार चहूं दिसि साजी समाज सई। अब सोवन को न रह्यो समयो उठि भारत रैन वितीत भई॰

टरि टरि हारे सब भारत सन्तान तऊ विनती महीप के परी न जाय कान में। हानि छई भारी सुनीति गई सारी अब नागरी सुदेवन को हीन भई मान में॥ भैरव सुप्रेम घटो नृप को प्रजा की ओर बाधा भ्रम प्राप्ति सांच सुन्दर सुज्ञान में। कैसी करें कहां जांय सो तो बत राखो भीत विपिन लतान में किकोकार पता में ॰

श्रीधरपाठक।

वंशी की कलंक कान्ह झूठो ना लगाओ हमें हम निर्दोषी तुम भूले हो गुमान में। पैसा की अधिला की छदाम की न दाम में सो ऐहै किहि काम श्याम हमरी घरान में॥ ढूंढ़ो जाय वंशीवट निकट तमालन में जमुना के कूल के करील विरवान में। हमने लई ना लाख अल्लहां गई न। ह्वै है विपिन लतान में किकोकार पतान में

हरिश्चन्द्रकुलश्रेष्ठ।

जाहि ओर देखिए कलह द्वेष ताही ओर शाही फेरि आपनी सुढूंढ सो मचायो है। भाइन उरूज सुनि सूजि सी गड़ति होय वैरिन की मार सहि भलो मन भायो है॥ देश हित काज कौड़ी एकानानिकासी जैहै लिय की दबाय ताहि सर्वस चढ़ायो है। कछू ना अनोखी हरिचन्द मन मार बैठ भूल को॰

पं॰पु॰ला॰

पखो बसन्त भूप कों कलिन्दजा निकुंज में पलास कुन्द नूत वृन्द मल्लिकान पुंज में। पराग रंग रंजितालि चञ्चरीक गुंज में विना मुकुन्द का करूं लता वितान॰

पं॰भै-द॰

आदित प्रचण्ड तेज छायो महि

मण्डल में पवन लपट रूप लहरनि लुंज में। चलत अलाक आक फूलि चहुंओर धाय पंथी भुरझाय परे बागन की गुंज में॥ ग्रीषम की भीषम यह गरमी घनेरी घेरि चित्त लिए जाति खैंचि भौंर भौर गुंज में। भैरव सुभागि वनौ आनँद विनोद हेत सुभ्र सियराई सो लता बितान कुंज मे।

श्रीधर पाठक।

मलूक वेलि मालती समीरसंग हालती मराल आलि चालती कलिंदिनी निकुंज मे। तड़ाग चारु कूलपै कादम्ब अम्ब मूल पै जहां सरोज धूल पै भरे हैं भृंग गुंज में। मयूर जूथ नाचहीं अनन्द रंग रांचहीं मनो अनंग सांचहीं रमें विहंग पुंज में। तहां गुपाल लाड़िली कलोल काम माधुरी करें विहार माधवी लता बितान कुंज में।

पं॰पु॰ला॰। फूलि चारु किंशुक गुलाब कचनार अम्ब बौरे भौंर भौरें मद माती चारु धाई री। त्रिविध समीर खेद शीकर हरन हारी कैसी बन भूमि फर्श चन्द्रिका निछाई री। कोकिल काल कूजें सुनि विरही जन मान त्यागी समझै तू नाहि नेह पंथ कठिनाई री। याद करि बीती बात उठि के मिलि कांत साथ “फेरिकै सुहाई सो बसन्त ऋतु आई री॰

पं॰ भै॰ द॰

ग्रीषम सताई मुरझाई अकुलाई महा ताप तन ताई हित सूरति भुलाई री। पावस प्रचंड सो अखंड जल धार मेघ चपला रमंक देखि डर उपजाई री। शरद हिमन्त हू बिताई सुख सेज परि लागी नहीं नेक पाय शिशिरि निकाई री। भैरव सुएरी मति धारि लै अनोखी गति ‘फेरिकै’॰

श्रीधर पाठक।

सीतल सुमन्द मद गन्ध सनी पौन बहै मधुप विहंग संग गावत बधाई री। सिसिर सुखाने ते समस्त सरसाने नव कुसुम किरोड़ कंज कलित निकाईरी। दसहू दिसान में निसान दरसाने बाकी बांकी मृग अंक को अनोखी

छवि छाईरी । अति मन भाई रति काम सुखदाई अहो 'फेरि हू ०'

पं० पु० ल०

काछे काछनी पीत पटी भृकुटी धनु चारु रदच्छद बिम्बू । कंबुल लोल कपोलन में सुख यों लसे ज्यों शशि को प्रतिबिम्बू । गोरज रंजित कुंचित कुंतल भाल बिशालहू पै श्रम अम्बू । आज कहो कवि कैसो बनो सखि 'लावण्य।'

पं० भै० द०

कोक सुपंकज चोरन कौं शुचि चन्द्र लखि तन शोक महाई । त्यों विरही जन जारत है निज सुन्दर सेत कला दरसाई । आनद देत चकोरन कौं रजनी सजनी छत मान बढ़ाई । भैरव एह दुहुं गुण है "कोउ कौं शशि मोद कोउ दुखदाई"

। इश्तिहार सफाई का खार ।

॥ बढ़िया इतर केवड़ा ॥

मुफ्त मे लुटा दिया । जिस्को कई एक खान पश्चिमोत्तर की राजधान इस प्रयाग के बीच निकली है कारावे का कारा बा खुली नालियों के द्वारा बहा जाता है बल्कि एक शाखा उसी को बीच खुदर बाजार ऐन कोतवाली के नीचे खड़जी की नालियों की शकल मे पाओगे ; यह इतर म्यूनिसिपल कमिशनरों का पाली दिमाग घोट कर निकाला गया है हम लोगो को तो इसकी खुशबू "सूबते २ असर नक हो गई इस लिए यहां अब इस्को दर बाकी न रही पर बाहर वालों को जिन्हे शायद अभी इस्को कदर का शौक बाकी है सस्ते से सस्ता २५०) तोला यह एक अजीब खान है जो बदबूत खुशबू और शाम को बंगाले की खाढ़ी के ज्वार भाठे को मात करता है खान क्या है खुदा की शान है वाशिन्दगान प्रयाग को खुश किआती है यह अजीब गरीब शै इन्सान क्या जिन्नात को भी मयस्सर नही है इस लिए बड़े २ शहरों के अमीर उमराओं को खबर दीजाती है कि इस नायाब नियामत के खरीदने मे पसी न करें क्योंकि यह नई खान साहबान पाली दिमाग अंगरेजों को नही मालूम हुई है यह सिर्फ बद किस्मत हिन्दुस्तानियों के सहाब मे निकली है जिन्हो ने बड़ी होशियारी से इस्का हाल पोशीदा इस लिये रक्खा है कि कहीं साभर झील की

तरह इसे वे अपने कबजे में न करलें और हिन्दुस्तानी इसके मुनाफ़े से हाथ धो बैठें फ़ाइदे इस तरह के बेशुमार हैं दिमाग़ में पहुंचते ही तप जूड़ी तिजारी चौथारी लुकन्दर बुकन्दर जलन्धर भगन्दर सिर्फ़ इन नामों के नहीं बरन है नाम मुकन्दर बन्दर के भी चन्द अर्से के अन्दर इसके वक़्त हो दोज़ख़ की जानिब रफ़ू चक्कर होते हैं दिल्ली लखनऊ जौनपुर कन्नौज के सब गन्धी और अत्तारों को एक २ पीपा बतौर नमूने के मंगा लेना चाहिये इस का रखाने का म्यसर्स एलिकजेंडर मेहतर ऐण्ड को की बड़ी दूकान नंबर सवा ढाई गन्दे नाले के पास जिसे लेना हो लिखभेजे पीपानुमा गाड़ियों से भर बज़रिये तार बर्क़ी रवाना कर दिया जायगा नहीं तो मेहतर ऐण्ड को के एजेंट को लिख भेजें जो हर एक गली कूंचों के नुक्कड़ पर कूड़े की गाड़ी लिए बैठे रहते हैं; इस इतर की उमदगी की एक सनद की नकल नीचे लिखी जाती है।

महाशय आप का अतर के लदा हमारे पास पहुंचा पहुंचते ही तमाम शहर के अमीरों ने इसे तुर्त खरीद लिया लोग इसकी खुशबूपर मुश्ताक़ हैं एक पीपा और भेज दीजिए।

आपका कृपाकांक्षी
खटिक चन्द चुहड़ा

शहर तीसमार खां मुल्क कालापानी
ता० एकुम अप्रिल १८८४ ई०

कलकत्ते के बंगालियों में अभी हिन्दू मत पर विश्वास रखने वाले बाक़ी हैं।

हाल में कलकत्ता पाकपाड़ा के श्रीमहाराज पूर्ण चन्द्र और शरत् चन्द्र सकुटुम्ब वृन्दावन में घूम कर यहां आये और भक्ति पूर्वक त्रिवेणी स्नान किया फाल्गुन मास में जाती बार उक्त महाराज ने अपनी तीर्थ यात्रा का अङ्ग यहां के सौ ब्राह्मण और पण्डितों के एक २ रुपया दक्षिणा दिया और त्रिवेणी तटके हजारों कंगलों को एक २ दो अनी बांटा तीर्थ के पण्डा को भी हाथी घोड़ा आदि हजारों रुपये का दान दिया और इसका दस गुना दान वृन्दावन में किया; क्यों न हो फिर भी वैष्णवाग्रय धर्मिष्ठ शिरोमणि लाला बाबू के प्रपौत्र हैं जिनकी कीर्त्ति का पताका रूप मन्दिर वृन्दावन में अवापि उनकी धर्मिष्ठता की साक्षी दे रहा है।

समस्या पूर्त्ति।

राजा और बाबू नव्वाब और अमीर जिते। सुधि बिसराई सबै दुनिया और दीन की। रूचे हैं सबन को जवाहिर मणिमुक्ता चारु। पोशाकैं जड़ाऊ सुनहरी ज़रीन की। उमग है सबन को फिरंगी ही बनवे की। आर्य यह नाम मानो पदवी है हीन की।

चरचा भी सुहावै नहीं वेद अरु पुरानन कौ। सबही कहानी सुनै जिन्न और परीन कौ। भारत के भाग फूटे वाही दिना से जब। लोग सुधि भूल गये घोड़ा और जीन कौ। रण से मुख मोड़ देख घरमे घुसन लागे। मनका सिरो छिन की फनक फरीन कौ॥

रिपुदेखि खड़े सन्मुख रण मे क्यों शस्त्र न अपने हाथ गहो। करिमोह वृथा निज धर्मन सौं बनि कायर क्यों जग मे विचरो। दुख भांति अनेकन तुम जो सहे इन दुष्टन हांथ सो ध्यान धरो। नहि राज लिये सन्तोष इनहि सब भांत अनीति समाये रहो। तिनपर जो दया करिवो न उचित क्यों अपयश की तुम नाहिडरो। बनदास रहि तुम जीवित क्यों नहि लाज तनिक मन माहि करो। कबहूं नहि चेत कियो तुमने नहि देखि दशा जिन नैकल जो। श्री कृष्ण कहैं पारथ से यही अब तो तुम भारत नींद तजो॥

करि ब्याह बरस सतए अठए उत्साह सबहि मनकी सियरे। रूपया काढ़ि कियो यह यज्ञ महा धन लाख करोड़न के बिगरे। कहु दैव वशात् नवें ही बरस वर बालक सुर पुर गवन करे। अब विधवा वह निर्दोष सुता नहि कबहूं जग दुख से उबरे। जो साधन मुनि वरहु की कठिन कन्या हित अब समझावत रे। रहैं आप सदा बश कामकला बिसवन संग प्रीति न लाज धरे। कोउ लाख कहो समुझाओ कितौ नहित्यागत मार्ग अनीति भरे। अति घोर कठोर हियो न फटै कबलों यह चालि चलैगो अरे॥ ह—प्र—

॥ पुस्तक प्राप्ति ॥ ॥ राम पंचाशिका ॥

बाबू हरिश्चन्द्र कृत श्रेष्ठ विरचित ५० गीतों मे सम्पूर्ण रामायण संक्षेपसे इसमे कहा गया है श्री रामचन्द्र चरण परिचण परायणान्त: करण भक्त जनो के लिये यह छोटीसी पुस्तक अत्युत्तम है आर्य दर्पण यंत्रालय शाहजहां पुर मे छपी है।

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Pablished by Pt. Balkrishna Bhatt, Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st May, 1884. Vol. VII.] [No. 9.

प्रयाग वैशाख शुक्ल ७ सं० १९४० जि० ७ [संख्या ८

। मेरेही देखत्त मेरो भटू सब
रोब्रज ह्वै गयो और को
औरै।

आज कल नये फेशन के चस
के का जैसा विस्तार है उसपर दृ-
ष्टि फैलाने से यही बोध होता है
कि महा सागर जिस्के समान
विस्तार जगत मे किसी का नही
है कोलम्बस आदि प्रसिद्ध नावि-
क उस्का भी और छोर पागये प
र इस नये फेशन अनन्त असीम
सागर का पार पाना अति दुर्घ

ट है—वाहरे नये फ़ेशन तेरी अ
कथ कहानी हैं जिधर देखो उध
र तेराही प्रकाश रंग होतो तेरा
सा जिस्पर इस्का रंग एक बार
चढ़ा उसे दूसरे रंग कीझांई तक
नही भाति ; गुरु होतो ऐसा जि
से इसने एक वार चेला मूड़ा व-
ह जन्म भर के लिये इस्का दास
वना जिस्का एक वार भी इसने
साथ कर पाया उस्का क्षण भर
भी विना फ़ेशन कटना दुर्घट हो
जाता है ; हम पूछते हैं पहले
यहां के आदमी क्या अंधेरेही मे
वैठे रहा करते थे जो अब विना
लैम्प के काम नही पड़ती चाहे
रोज एक चिमनी टूटा करे पर
युगान युग ठहरने वाले शमादान
कभी न खरी देंगे; केरोसीन की
दुर्गन्धि से घरके यावत् प्राणीमात्र
के श्वास प्र श्वास का प्राण प्रद
वायु "आक्सीजिन" विगड़
कर चाहो वड़े २ भयानक रोग
पेदा कर दे परंतु देशी तेल मे
कुछ ऐसी छूत समानी है कि
हाथ से छूयेंगे भी नहीं हिना
के इतर की वड़ी कड़ी खुशबू
होती है लवेंडर पसन्द के
लायक है; काशी या मुरादा
वाद के वरतन भद्दे होते
हैं विलायती मिट्टी की बनी तश्त
रियां या कांच के गिलास सभ्यता
की नाक हैं क्योंकि जो कुछ सभ्य
ता या सुकुआपन था सब उसी मे
आ समा रहा ; कोसे या पुरवे
क्या भया जो बहुत सस्ते मिलते
हैं पर too cource वड़े कड़े
होते हैं विलायती मिट्टी के वने चा
हिये; टोपी कोट पतलून चड़ी घड़ी
सब विलाइती ही काम के लाय
क हैं कहां तक इस भारत की
नख सिख का वर्णन किया जाय
टोपी कोट झाड़ने के लिये व्रूश
वूट झाड़ने के लिए व्रूश कांघी कर
ने के लिए व्रूश दांत मांजने के
लिये व्रूश यहां तक कि अक्किल
के पीछे भी व्रूश लिये खड़े हैं;
निदान कागज़ कलम दवात स्या
ही कपड़ा डोरा सुई दियासलाई
झांड़ी फानूस चाकू कैंची वसूला
आरा रन्दा रेती जो कुछ हो सब

विलाइती एक अन्न मात्र छोड़ कर जिसे हम दग्धोदर की पूर्ति के लिये लाचारी से काम मे लाना पड़ता है; पाठक महाशय हम नये फ़ैशन महा सागर की लहरों मे टकराता गोते खाता मुझे एक मछली देख पड़ी मुख उसका सुन्दरी नारी का माथा पर उसके हाथ के नख मानो शेफील्ड की कटलरी छुरे चाकू से भी अधिक पैने थे पूछ उसकी मछली कीसी थी पर उसमे भी दो कांटे थे एक पूरब की ओर झुका था दूसरा पश्चिम की ओर; पूरब वाले मे चमकीला लाल रंग का हलाहल विष भरा था पश्चिम वाले मे श्वेत वर्ण अमृत था; वह मछली मेरी ओर देख मनुष्य वाक् मे यह बोली क्यों तथा इस भमर जाल मे पड़ता है जो अच्छी तरह इस महासागर का भेद जानना होतो इसमें गहरी डुबकी मार और देख इसके भीतर क्या भरा है मैने वैसाही किया और डूब के देखा तो जैसा मै सोचता था उस से अधिक पाया; लैंप की बदले तो शमादान काम दे सक्ता है पर दिया सलाई की बदले कौन काम देगा देशी कपड़ा पहनना अंगीकार कर लोगे पर सीने के लिए सुई कहां से लाओगे निदान ऐसी २ बातों के विचारने से जान पड़ता है कि बिन परदेशी सहायता के हमारा चण मात्र निर्वाह नहीं हो सक्ता; फिर यह कब से हुआ और कैसे हुआ ? क्या सत्ययुग से द्वापर के अन्ततक हमारे यही सहायक रहे आये जो अब हम ऐसे आलसी होगये हमारे देश के बड़े २ प्रतापी राजा महाराजा क्या इन्ही दरिद्र वस्तुओं से अपना निर्वाह करते थे जैसी की अब यहां तैयार होती हैं? यदि ऐसाही है तो उन प्राचीन ग्रन्थों मे हरताल पोत देना चाहिये जिनमे चौसठ कला और अनेक शिल्प विज्ञान दरसाये गये हैं और आज दिन भी जिन पुरानी बची खुची ग्रह निर्माण आदि की कारीगरी देख यूरो

प के प्रसिद्ध "आर्टिस्ट" कला धारियों के होश चौकन्ने होते हैं तो काही पुराने लेख का कौन विश्वास वह तो निरी कवियों की उक्ति युक्ति थी तो इल्लोरा खोह और इलिफेंटा आदि स्थानों की मनुष्य शक्ति बाह्य कारी गरियां इसकी गवाही दे रही हैं फिर माना कि कवियों की गढन्त है तब भी कुछ न कुछ आधार अव श्य चाहिये जिस्पर कवि लोग अपने खयाल का घोड़ा दौड़ा सके; निस्सन्देह भारत वर्ष एक समय सारे संसार का प्रधान देश था समस्त कला कौशल से परि पूर्ण विश्वकर्मा यहीं हुए रथ हा कने की विद्या विशारद महारा जा नल किसी दूसरे देश के नहीं थे; नाद्याचार्य भरत मुनि भी यहां ही जन्मे इसी भूमि से जेन रल वाशिंगटन से भी बढ़ कर गाण्डीव धनुर्धर वीर केशरी अर्जुन हुए कृषिकर्म प्रचारक महाराज पृथु जिनके नाम से यह रत्न गर्भा पृथिवी कहलाई किसी अन्य देश से नहीं आये थे; वेणु वादन शील श्याम सुन्दर कृष्ण चन्द्र ने बांस की पोली में जो सारा संगीत भर दिया तो क्या कम फिलासोफी खर्च किया; खैर इन सब बातों को पुराण की किस्से समझ छोड़ दो तो आगरे के रौजे को देखिये जिस्के आगे सारी दुनिया की कारीगरी झक मारती है चन्देरी में अब भी कुछ बुरा कपड़ा नहीं बनता थोड़े दिन हुए सिजैरा घोगढ़ में ऐसी तल वार बनती थी कि लोहे के खंभे उसी काट डालना कुछ बड़ी बात नथी; सच तो यों है कि हमने अपनी यंत्र विद्यारूपी कूंडी सोटे से सुख रूपी भंग ऐसी घोट पी और सो रहे कि विदेसी भाई चुपचापही हमारे बिनजाने हमारे सिर के नीचे से वह कूंड़ी सोटा लै भगे बस अब भंग के सुखानुभव से मस्त हो हमें कुछ पहचान न रही कि हम ये कि वे; विदेशी वस्तुओं को भी स्वदेशी परंपरा के समान लेते और चाह

ते हैं कदाचित् अभी तक यही जाने हुए हैं कि कुंड़ी सोटा अभी तक हमारे ही अधिकार मे है और अनेक चमत्कारी चीजें जो दिन पर दिन नई निकलती चली आती हैं हमारी ही भंग की कमाई हैं; भाइयो इस भ्रान्ति का निवारण कर डालो आंख खोल देखो तो सही अब वह ढाके की मलमल कहां आती है कश्मीर का कश्मीरा शिकोहाबाद का गाढ़ा अब कहीं नाम को न रहा बरेली मे बन्दूक की नलियों का कारखाना बन्द हो गया केवल कांसे पीतल के बरतन शेष रहे हैं सो भी एकही आपके के होंगे जहां ब्रह्म समाज ने जोर मारा और "एक मेवा द्वितीये" कर दिखाया कि चीनी के बरतन आने मे देर न लगेगी तब हमेरे कसेरे बेचारे निर्जीव हो किनारे बैठेंगे; जागो और अपने साथियों को जगाओ तुम गुरू तो गुड़ही रहे तुम्हारे चेले चीनी हो गए अब भी तो चेतो; मन का यह एक क्रम है कि वह सदा नूतनता को चाहता हैं जो भारत वासियों ने एतद्देशीय वस्तुओं पर अपनी प्रीति लगाई तो यह कोई बड़े अचरज की बात नही है और न इसमे उनका कोई विशेष दोष है केवल अपराध इनका है तो यही कि नूतनता को पसन्द तो किया परन्तु उसे अपनाने न जाना यह बात इनके मन से न आई कि हम भी इस उन्नीसवीं शताब्दी मे विस्तृत नवीन कलाओं को धारण करें; फलाने ने नये प्रकार की छींट मोल ली तो वैसी हम भी लें यह तो सोंचा परन्तु वैसी हम भी बनावेंगे यह किसी ने न सोचा; मैंने बहुतों को कहते सुना है कि अंगरेजों कि कौड़ी मे बरकत नही है परन्तु वास्तव मे देखिये तो हमारी चाल मे बरकत नहीं है दूसरों को दोष देना बड़ा आसान समझ लिया गया है परन्तु अपने दोष तो देखो दूसरों ने कब तुमसे कहा कि तुम रूपया दे मिट्टी

मोल लो परन्तु धन्य है उनकी चतुराई को जिन्हो ने मिट्टी को अपना कौशल रूप वस्त्र पहनाय ऐसा आभूषित किया कि तुमने उसके बदले रूपया दे देना कुछ बड़ी बात न समझा; सरकार ने अब ऐसा कानून जारी किया कि जो कोई हिन्दुस्तानी लोहा गला ना सीखेगा उसे फांसी दी जाय गी फिर क्यों नहीं सीखते और अपना बुद्धिपाटव उसमे दिखलाते क्यों सरकारी नौकरी पर कनागत के कौओं की भांत टूट टूट पड़ते हो? हैं हैं ऐसा मत कहो वे अदबी होती है हां मे हां मिला ओ जिसमे श्रीहत भारत महाराज खिल खिला उठें; भ्रातगण प्राकृतिक नियम है "बिन गरजी गरजे नहीं जड़लडू को मोर, जब तक उत्तेजक कोई न हो साहस अकेला क्या २ करेगा पानी की भाफ आकाश मे अवनहीं रहती परन्तु वायु मे बिना परिमित ठंढाइ के अब वर्षा हुई है इंगलिस्तान आदि की कारीगरी जो इतनी बढ़ गई सोभी कुछ एकही का किया काम नही हैं जब तक हम लोग ऐतद्देशीय भिन्न २ पेशे वालों को अपने २ धर्म की वृद्धि मे उत्तेजना न देंगे तब तक उन के पेशे की तरक्की केबारे मे जो कुछ है सब जबानी जमाखर्च समझना चाहिये इसी उत्तेजना के बिना भारत अपनी सब पूंजी गवां बैठा; देखते ही देखते भारत वर्ष कुछ का कुछ हुआ जाता है जिस देशको कनक भूमि कहते थे वहां अब धूल उड़ने की नौबत पहुंची खैर अब भी सम्हलो जो गया सो गया; जैनाबाद जिले नीमाड़ मे ब्लाटिंगपेपर बनना आरंभ हुआ है जो ऐसे २ नये कारखाने जारी करने वालों को बराबर उत्तेजना मिलती जाय तो निस्सन्देह थोड़े दिनो मे सब संकट दूर हो जांय और फिर इस भूमि पर वसन्त ऋतु अपना प्रकाश कर चिरकाल की मुरझानी बेल और लताओं को हरी भरी करदे; केवल एक इसी

जैनावाद ही पर क्या सब बात आ अड़ी है हर एक जिले मे योग्य मनुष्यों को इस ओर ध्यान देना चाहिये जो बनाने योग्य हों बनावें जिन्हे बनवाने की सामर्थ्य होवे बनवावें जो लोग मोल ले सकें मोल लें जो बिकवाने मे सहायता दे सकें वे बिकवावें हर एक मनुष्य को इस शुभ और शुभद कृत्य का पुण्य भागी होना चाहिये। सोने वाले के मुह पर मक्खी बैठती है। और "नास्ति जागरितोभयं"

अब तो तुम भारत नीद तजो।
सुख सौरभ सब खोय गंवायो।
अपने कर्मनि आप लजो॥ अब०
तुमहि निहारि बिरक्त कलानिहु।
उदधिपार निज राज सजो॥ अब०
सम्हारि खिलियो या होरीमे।
नूतनता वर साज सजो॥ अब०
कपट स्वार्थपरता आलस ते
दूरि रहो हरिचन्द भजो॥ अब०
हरिश्चन्द्र। कुलश्रेष्ठ। हुशंगावाद।

अश्रुमतीनाटक।

पं० शिवरामभक्त गुजराती से अनुवादित

प्रथमअङ्क—प्रथमगर्भाङ्क।

स्थान। उदयसागर भोजन की सामिग्री धरी है।

प्रतापसिंह। उनके पुत्र अमरसिंह और मंत्री का प्रवेश।

प्रताप। मंत्रिवर मानसिंह के लिए भोजन की सब सामिग्री तैयार हो गई।

मंत्री। महाराज देखिए यह सब तैयार परसी रक्खी है केवल उनके आने की देर है; महाराज उनके जीवनार के समय आप भी पधारियेगा;

प्रताप। क्या कहा मंत्री तुमने; जिस क्षत्रियाधम ने मुसलमानों के हाथ में अपनी बेटी और बहन सौंप दिया उसके साथ एक पांत में बैठ सूर्य वंशी राणा कभी भोजन कर सकते हैं।

मंत्री। महाराज अतिथ का आतिथ्य बहुत अवश्य है महमान की महमानी मे तनिक भी कमी होने से बदनामी का डर रहता है।

प्रताप। महमान की महमानी बहुत उचित है यह मै सब जानता हूं इसी लिए अपने कुंवर अमरसिंह को उस समय उपस्थित रहने की आज्ञा भी दे दी

है; मिहमानदारी ही के खयाल से मैने इतना अपना हेठा पन स्वीकार कर लिया नहीं तो जिस नराधम कुलाङ्गार पतित ने तुर्कों के साथ यौनिक सम्बन्ध किया उसका मुख तक न देखते।

एक दरवान का प्रवेश।

दरवान (नम्रभाव से) महाराज की जय हो अम्बर के राजा मानसिंह आए हैं।

प्रताप। उचित सन्मान के साथ उन्हे भीतर लाओ।

दरवान। जो आज्ञा (बाहर गया)

प्रताप। मैं यहीं छिप रहता हूं तुम और अमरसिंह उसका आगत स्वागत करना (एक ओर से प्रतापसिंह जाता है दूसरी ओर से मानसिंह दरवान के साथ आता है)

मंत्री और कुमार आगे से मिल कर पधारिए महाराज जेवन परसा है।

मानसिंह (भोजन पर बैठता हुआ) शोलापुर से आता हूं युद्ध में बहुत थक गया हूं।

मंत्री। हां महाराज थक तो गए होंगे युद्ध में किस पक्ष की जय भई महाराज।

मानसिंह (अभिमान से) जिस पक्ष में मानसिंह हो जिस ओर मुगल बादशाह हों उस पक्ष को छोड़ किसको जय हो सकती है।

नेपथ्य में। उसकी प्रतिध्वनि

मान०। (खाने को ओर उठाता है कि चौंक कर चारो ओर देख सयत्न) ऐं यह क्या यहां तो कोई दूसरा नहीं है यह कौन मेरे कहे हुए शब्दों की प्रतिध्वनि कर रहा है उदयसागर की अधिष्ठात्री देवी मुझे धिक्कारती है मैं भयानक सिंह की मांद में जाकर उसके बच्चे को निकाल लाया बज्रनादी तोप के मुंहपर जाय शत्रु का नाश किया कहीं भी मेरा हृदय नहीं कांपा न जाने क्यों इस प्रतिध्वनि को सुन मेरी छाती धड़कती है; राजपूत हो मुगल का दासत्व इसमे मेरा क्या अपराध है जब एक बार दासत्व अङ्गीकार किया तो किया तेरी मा ने खसम किया बुरा किया करके छोड़ दिया और बुरा किया अब उसका प्रतिपाल ही उत्तम है।

नेपथ्य में फिर वही प्रतिध्वनि।

मान० (चारो ओर देख) यह आवाज कहां से आती है।

मंत्री। महाराज भोजन कीजिए न।

मान०। मैं शोकाचार भूल गया था बहुत अच्छा राणा प्रतापसिंह कहां हैं?

वे क्या यहां न आवेंगी ?

मंत्री। आज्ञा महाराज के सिर में पोड़ा है।

मान०। मंत्री मैं उनके सिर दर्द का कारण समझ गया परन्तु यह भूल अब सुधरने की नहीं है अब भी आजाते तो उनके हक में अच्छा था सुबह का भूला शाम को आवे तो उसे भूला नहीं कहते और जो ऐसाही है तो मैं भी इतना अपमान सह भोजन नहीं किया चाहता।

(उठ खड़ा होता है)

मंत्री। हैं हैं महाराज यह आप क्या करते हैं।

प्रतापसिंह का प्रवेश

प्रताप। मंत्री मिथ्या छल की बात बनाने से क्या लाभ है महाराज मानसिंह क्षमा कीजिए जिस राजपूत ने अपनी बहन तुर्कों को ब्याह दी और उनके साथ सह भोजन करते हैं सूर्य वंशी राणा उनके साथ एक पांत में बैठ किसी तरह भोजन नहीं कर सकते।

मान०। महाराज प्रतापसिंह तुर्कों को बेटी दे हम अपना गौरव और प्रतिष्ठा खो बैठे सही किन्तु सदैव दुःख की गोद में पड़े रहना आप के मन का संकल्प हो तो वह संकल्प आप का सिद्ध हो मैं यह आप को चिताए देता हूं कि आप बहुत दिनों तक इस देश में न रह सकोगे; कोई है मेरा घोड़ा लाओ॥

प्रताप। मानसिंह मैं वसंत २ वन २ अनाहार रह कर घूमता फिरूंगा सब तरह की विपत्ति सुख से झेलूंगा पर तुर्कों का दासत्व किसी तरह स्वीकार न करूंगा।

मान०। हां पर मैं तो मुगल बादशाहों का एक नितान्त अनुगत दास कह अपना परिचय देते तनिक लज्जित नहीं होता; (क्रोध में आता है) राणा प्रतापसिंह तुम्हारा घमंड न तोड़ूं तो मेरा नाम मानसिंह नहीं।

प्रताप। क्या मानसिंह तुम मेरा घमंड तोड़ोगे बप्पाराव का वीर वंश सर्वलोक पूजनीय श्री रामचन्द्र का अकलङ्कित रक्त जिसके शरीर में बह रहा है उसका अहङ्कार तोड़ना क्या दास वृत्ति में पड़े पतित मानसिंह से मान भ्रष्ट का काम है ?

मान०। यह सब रण भूमि में जान पड़ेगा।

प्रताप। जो आप रण भूमि में मेरे सम्मुख आवैं तो मैं बड़ा प्रसन्न हूं।

मानसिंह जाता है।

मंत्री । हम सब लोग यवन दास मानसिंह के संसर्ग से दूषित हो गए चलो स्नान कर शुद्ध हों (दरबानों से) इस स्थान को जहां मानसिंह बैठा था धुला डालो ।　　सब गए ।

द्वितीयगर्भाङ्क ।

स्थान । दिल्ली में दरबार ।

अकबर । मारवाड़ का राजा पृथ्वीसिंह इत्यादि राजपूत और मोहब्बत खां बैठे हैं ।

अकबर । राजपूत वीरो तुम मेरी बादशाहत के खंभ हो ।

मारवाड़ का राजा‒यह हुजूर की खाविन्दी और निवाज़िश है ।

दरबान का प्रवेश ।

दरबान (अदब से) जहांपनाह महाराजा मानसिंह आए हैं ।

अकबर । आने दो (दरबान जाता है) मानसिंह का प्रवेश ।

अकबर । मानसिंह को अपने दहिनी ओर बैठा कर) आइये कहिए शोलापुर का क्या हाल है ।

मान० । आप की मेहरबानगी से लड़ाई में फतेयाबी हासिल की ।

अकबर—मैं बहुत खुश हुआ—जहां मानसिंह हों फतहयाबी कोई बड़ा तअज्जुब नहीं है पर महाराज मैं आप को आज दिलगीर देखता हूं इसका क्या सबब है ।

मान० । हुजूर मेरे दिलगीरी का सबब मेवाड़ के राजा प्रतापसिंह हैं ऐसी हेठी मेरी जनम भर कहीं नहीं हुई ।

अकबर । क्या मानसिंह की भी हेठी ?

मान० । जांपनाह शोलापूर से लौटती बार मैं उदैसागर के पास राणा प्रतापसिंह का मेहमान बनने को उससे मिलने गया सो मेहमानी करना तो एक ओर रहा मेरे रूबरू मुझे और बादशाह हुजूर को भी बड़ी सख्त बातें कहीं और मेरे साथ खाने से इनकार किया इस लिए कि मैंने बादशाह को अपनी बहन दी है ।

अकबर (क्रोध से) छिः क्या उस जंगली बेहूदे की इतनी जुरत जो मेरे सबब तुम्हारी इतनी बेइज्जती की ; अभी फ़ौज तैयार करा उसपर धावा कर उसे जड़ पेड़ से उड़ा दो ।

मान० । हुजूर मैं चलती बार उससे कह आया हूं कि मेरा नाम मानसिंह नहीं जो तुम्हारा अभिमान न तोड़ूं ।

अकबर । महाराजा मानसिंह वह आप से किस बात में बड़ा है जो इस कदर

गरूर उसे अपने खानदान का है। मोहब्बत खाँ तुम भी मानसिंह के साथ प्रतापसिंह पर फौज कशी में शरीक हो मैं शाहजादे सलीम को जाकर अभी तुम्हारे साथ जाने को इजाजत देता हूं।

मोहब्बत। जो इरशाद हुजूर का।

(सब गए)

अकबर (चलती बार स्वगत) राजपूतों की लड़की लेने में मैंने यह हिकमत अमली समझा कि हिन्द में हमेशा से वालियान मुल्क यही होते आए हैं और इन्हें तलवार के ज़ोर से दबा रखना नामुमकिन है इस लिए इनसे सम्बन्ध हो जाने पर इनका और हमारे खानदान का लहू मास एक हो जायगा तब तो हमारे खानदान से इन लोगों की अस्ली मोहब्बत हो जायगी और राज हमारा हिन्दुस्तान में अटल हो जायगा; सो यह हिकमत बहुत से राजपूत घरानों के साथ अच्छी तरह कारगर हुई पर प्रतापसिंह को देखता हूं तो उसे पुराने हिन्दूपन का खयाल दिन २ जोर पकड़ता है; इसमें कुछ शक नहीं कि उदैपुर के राणाओं का घराना राजपूतों में सब से पुराना और मोअजिज़ है किसी तरह पर इस घराने को भी दबा कर अपने कबजे में कर लेने पाता तो यह मेरी हिकमत अमली सफल होती नहीं तो बिना प्रतापसिंह राणा को दबाए सब बे फाइदा है अच्छा देखेंगे इसकी क्या तदबीर हो सकती है (प्रकाश) चला हम भी प्रतापसिंह के मुकाबिले में जाने वाली फौज को चल कर एक बार निगरानी कर लें (गए)

प्रवाहे पतित: कार्य्ये काम सङ्कल्प वर्जित:। तिष्ठत्याकाशवद्यो य: पण्डित स उच्यते।

अर्थात् कार्य की नदी के प्रवाह में पड़ जो पुरुष उसकी की लहरों में फस के गोते नहीं खाता और न उसकी प्रचण्ड चोटों से डरता है वरन भारी से भारी तूफान मे भी इस संसार सरिता के अथाह मान तल पर अपनी डोंगी को दृढ़ता के साथ स्थिर रखता है कामना और सङ्कल्प विकल्पों के प्रबल झकोरों से अपने स्थान से न डिग कर जैसा आकाश सब वस्तुओं के लिए जितना चाहिए उतना ठौर सदा रखता है उसी

तरह अपने हृदय और मन से सब मिथ्या सङ्कल्प विकल्प हर्ष शोक आदि को न आने देता और उन्मे से एक को भी चित्त पर विकार नहीं पहुंचाने देता वरन सब अवस्था में अखण्ड निर्विकल्प शान्त भाव को अपने अन्त:करण में अनुभव करता रहता है वही नर पण्डित पद का अधिकारी है वही मनुष्य इस सृष्टि की विविध चातुरी और ईश्वर की सर्वशक्ति मत्व आदि बातें देखता है और उन्हें देख २ प्रति क्षण आनन्द के अगाध महोदधि में मग्न रहता है ; वही मनुष्य परमेश्वर को पद २ में धन्यवाद देने भी जानता है और जगत् के जंजाल से न घबड़ा के भारखण्ड वा गिरि कन्दराओं में सच्चे सुख को ढूंढ़ने नहीं जाता वरन सत चित आनन्द रूप को सबी जगह एक भाव से समझ सर्वत्र उसी आनन्द का अनुभव करता है जिसे विरक्त योगी जन इस कठिनाई से खोजते हैं इस पर एक पुराने कवि यों कह गए हैं ।

सिंहावलोकन सवैया ।

बन में बसिबो बन खंडिन को जिनके कुल मांहि लख्यो पन है । पन है तिनको हरि भक्ति विषैं जिन इन्द्रिन जीति कस्यो तन है । तन है यह सार असार भस्यो इक साधन ही अपनो मन है । मन है जिनके वस में कुशलेश सदा तिनको घरही बन है ॥ १ ॥

श्रीधर

मई रोशनी का विष ।

पहले अङ्क से आगे से ।

लालू । मेरी बला जाती है ऐसी गरमी मे काम करने; अभी थोड़ी देर हुई वह आइयां तारक चन्द हमसे पूछता था भानु दत्त ने यह बाग और मकान सब लिया क्यों ? हुं ! क्यों क्या ? भला शौकीनों के लिये भी क्यों पूछना होता है—अरे कल कत्ते मे बड़ी गरमी आज कल पड़ती है ऐसे समय कोई अमीर आदमी उस कैदखाने मे पचार सा गंज कर रह सक्ता है इसी से शहर का मकान हम लोग छोड़ यहां आये हैं—क्या हमारे बड़े ला

टसाहब गरमियों में पहुंचने पर शिमला नहीं जाते ? क्या बड़े २ साहब लोग औ काम छोड़ २ नैनीताल दारजिलिंग मनसूरी नहीं जाते ? तो फिर क्या ? हम लोगों का यही शिमला है; यहां पहाड़ों का मजा नहीं है तो क्या ? ईश्वर तारक चन्द से महात्मों को बनाये रहै गंगा यमुना की नित्य नई धारा यहां से निकला करेंगी। पर हम से तो इस जून काम नहीं हो सक्ता। आग क्या इस सम य तावे की तरह तप रहा है और फिर यह तो काम है इन्हें मालियों का सब काम करना चाहिये हम जमादार भ हुए क्या कुली हैं। खैर तो भी इन मेजों को हटवा देना चाहिए ओ मई हमाम! तनगेर! इन सब कमबखतों को भी इमा रत सूझी है। सब के सब मर गये।

भीतरसे—हाजिर—हाजिर—

तीन चार मुसल्मान खानसामों का प्रवेश।

पहला खानसामा। क्या हुक्म है जमादार साहब ?

दूसरा खानसामा। आजकल आप की कुछ खफगी की नजर हम लोगों पर रहती है। तब हम लोगों का कहां से गुजारा हो सक्ता है। यहां सिर्फ एक आ पहीका भरोसा है कि किसी दूसरे का।

कालू। (झुड़क कर) चुपरहो; मत बातें बनाओ बहुत; चिल्लाते २ गला बैठ गया और तुम लोगों के कान पर जूं भी तक न रेंगी।

तीसरा खनसामा। हजिर तो हुआ साहब; आवाज सुनतेही तो दौड़ा आता हूं। जरासी देर लग गई माफ कीजिए आज रात की जियाफत के सामान में लगा हुआ था।

कालू। सामान में लगा हुआ था अप ना सिर; तुम लोग कुछ काम नहीं करते बाबू लोगों के खाने की जून अलबत्ता पराठा सा पक्कड़ बांध २ कुरसी के पीछे हाथ बांधे खड़े रहते हो और महीना पूरा होते ही लम्बी २ तनखाहैं फटकार लिया करते हो; देखो इस मेज पर के बिसकुट के टुकड़े साफ़ करडालो।

(खानसामा मेज साफ करते हैं और समूचे २ बिसकुट अपनी जेब में रखते जाते हैं)

कालू। शराब के इन सब मेजों को उठा ले जाओ (खानसामा मेज उठाते हैं) जरा ठहरो ये दोनो बोतलें बिलकुल काम की नहीं आई इन्हें अलग रख दो; हम खुद नहीं पीते तो पीने वालों को

तो जानते हैं बहुतेरे औकीन इन चीजों के दुनिया में हैं।

पहला खानसामा। शाबाश! शाबाश!

लालू। अपना काम करो।

दूसरा खानसामा। (आधी खर्च हुई एक बोतल को हाथ में ले आंख गाड़ देखता हुआ) इसलाम का मजहब भी क्या ही गन्दा मजहब है। सरासर हिमाकत से भरा हुआ। मैं पूछता हूं अगर इन चीजों से मनाही करना था तो खुदा ने इन नियामतों को पैदा क्यों किया। एक दिन किसी कठ मुल्ला से मुड़ भेड हो जाती तो ऐसा शिकंजे में कसता कि बचा सामने से भाग कर मसजिद ही में जाकर दम लेते।

तीसरा खानसामा। खूब कहा यार मेरा मन तो यही चाहता है कि मजह ब को एक लात मारूं चकनेचूर होजाय।

पहला खानसामा। और क्या कब तक हराम हलाल को हदीस बगल में दबाए फिरें और भीतर से तो इन चीजों की लाल चरीक नहीं रुकती।

लालू। (हंसता हुआ झुड़क कर) क्या मजहब उगल रहे हो। कुरान चाटने को यही वक्त है? अभी सरकार आती होंगी तो सारा इसलाम तुम लोगों के मुंह में ठूस कर रख देंगी चुपचाप अपना काम नहीं किया जाता?

सब। कीजिये कीजिये। (मेज बाहर लेजाते हैं)

लालू। [मेजपर की किताबें दुरुस्त कर रखता है और खानसामों के चले जाने पर एक कोच पर बैठ आमदरफ्त की नकल करता हुआ मालियों को बुलाता है] भगवान! झगड़ू?।

(दो मालियों का प्रवेश।

लालू। (स्वगत) ये अलबत्ता नौकर हैं मगर मालिक हांकते हैं और हम नहीं कहें तो हमारा हुकुम ऊपर रक्खे (प्रकाश) गमले लगा दो। रविशों पर झाड़ देदो। गुलदस्ते बनाओ। (माली सब दौड़ते हैं) हां २ उधर कहां। साफ तावाताओ। इधर इधर। कुरसी की गद्दियां दुरुस्त करो। जलदी (दौड़ते २ सब माली घबड़ा जाते हैं) कोच सीधी कर दो। दो चार गुलाब के फूल इसको दो। (घबड़ा कर सब चुप चाप खड़े हो जाते हैं) काम करो जी मुंह क्या ताकते हो। ये लोग आदमी हैं कि चूहे। जरा आवाज सुना कि घबड़ा गये। फुहारा जारी पानी छिड़को। पंप से पेड़ की पत्तियां तर कर दो [जब हम लोगों के

कुछ नहीं बन पड़ता] अच्छा धीरे २ काम करो। (आप चुपचाप बैठ कर सोचता है स्वगत) तारक चन्द अभी पूछते थे कि तुम्हारे पास भी कुछ रुपया इकट्ठा हुआ है। हमने कहा इसी क्या शक है। तब उन्होंने कहा आनन्द से ऐसे कामधेनु मालिक को पा कर सब हो सक्ता है। तब हमे समझाया कि रुपया रक्खे २ बिगड़ जाता है गायब हो जाता है। यह बात तो हमारे समझ में नहीं आई पर हां घर में रुपया रखने से कोई लाभ नहीं है (मकान के भीतर से घंटी बजती है) क्या सरकार आये क्या ? हां तो फिर तारक चन्द से सलाह पूछना चाहिये कि रुपया कैसे और किस कार मे लगाना चाहिये। (घंटी जोर से बजती है "लालू लालू" का शब्द) आये आये। राम राम जरा सा कोई बैठ कर अपने रुपये पैसे की बात भी नहीं सोचने पाता। (घंटी फिर जोर से बजती है) आये आये। साहब गिर पड़ें क्या !

(बाहर गया)

माली लोग सिर झुकाये चुप चाप काम करते हैं।

लालू के साथ * विश्वामित्र का प्रवेश।

विश्व। (धोती के कोने से ऐनक की गर्द और अंगोछे से मुंह पोंछता हुआ लालू से नम्रता पूर्वक) क्यों भाई आनन्ददत्त का यही मकान है ?

लालू (विश्वामित्र को कुछ आचरज से मुंह बिचका कर देखता हुआ) हां जी हां के टके पूछोगे। आनन्द दत्त हवा खाने गये हैं तुमको इन्तिजारी करना हो बैठो नहीं अपनी राह पकड़ो। (स्वगत) यह देहाती परेत कहां से आया है नाहक चाटे डालता हैं।

विश्व। (एक छोटे स्टूल पर बैठ कर) अच्छा भाई हम बैठते हैं (स्वगत) क्या आज हमे बकरही खाना बदा था। एक तो घरी से चलने में देर हुई। आनन्द की मां के मारे घर से निकलने पावें तब न आनन्द से यह कह देना वह कह देना। ऐसे समझा देना। आनन्द के पीछे जान दिये डालती है बड़े मुश्किलों से किसी तरह रेल पर सवार हो कलकत्ते उतरे तो शहर में मकान पर पूछने से मालूम हुआ कि आनन्द यहां नहीं रहता तब गाड़ी कर यहां आये अब यह सुनने में आता है कि अभी मुलाकात नहीं हो सक्ती। खैर अभी पढने वाले सांझ को हवा खाने जाते हैं दिन भर मेहनत

* मिरजई और धोती पुराने चाल का मोटा पहनाव; आंख में भद्दी पुराने चाल की ऐनक; हाथ में एक लम्बा अंगौछा; मोटा हिन्दुस्तानी जूता; थोड़े २ सुफेद बाल; पुराने ढंग की पगड़ी; इत्यादि इत्यादि।

करते २ थक जाते हैं शामको थोड़ा बाहर की हवा खाने और टहलने से थकावट दूर हो जाती है और तबियत खुश रहती है (लालू का सब ठाठ देख) क्यों जी तुम यहीं के नौकर हो ?

लालू (उसकी बात अनसुनी करते) सरकार को गये देर हुई अब आतेही होंगे एक दोस्त को रेलवे स्टेशन तक पहुचाने गये हैं देर नहीं लगेगी आप चुप चाप बैठे रहें ।

विश्व । स्टेशनही तक गये हैं तो भाई एक काम करते तो बड़ी कृपा होती जरा दौड़ कर इतना उनसे कह आते कि एक दो आदमी तुम्हारे घर से आये हैं (लालू चारो ओर देखता है) बड़ी देर से ठहरे हैं बहुत जरूरी है भाई जलदी इतना संदेसा कह आते तो बड़ी कृपा होती । साथ सरलाको भी गाड़ी से उतार ले आवें भाई से मिलने के लिए घबड़ाती होगी ।

(बाहर गया)

लालू । हुं : ऐसे २ खूसटों के वास्ते हम दौड़ा करें तो हमारी जान मुफ्तही में गई (मालियों से) सब काम कर चुके ?

माली । हां सब बेस है ।

लालू । अच्छा तो जाओ बाहर (सबगये)

(सरला के साथ विश्वनाथ का पुनः प्रवेश)

विश्व । क्या भाई अभी गये नहीं कह आते तो बड़ा एहसान होता हमको बड़ा जलदी है ।

लालू । हमको तो नहीं है (बाहर गया)

सरला । क्यों बाप भैया कहां हैं ? आप को अकेले छोड़ कहीं चले गये क्या ?

विश्व । अभी आया नहीं कहीं बाहर गया इस मकान का कोई कारिन्दा था उससे हमने बहुत कहा है वह अभी बोला लावेगा थोड़ी देर तुम और सबर करो अभी अपने भाई से मिलोगी ।

सरला । पर बड़ा ठंडा है यहां ; कैसे अच्छे २ फूल फूले हैं; इसे तो बहुतही सोहावना लगता है हमारे घरों पर कुछ फूल हैं जब हमें पढ़ने और सीने से छुट्टी मिलती है तब उन्हीं से अपना जी बहलाया करती हैं; कोई कहे तो हम दिन रात यहीं रहें ।

विश्व । (मुसकिराता हुआ) बेटी तुम्हारा यहां कैसे रहना हो सकता है यह न मालूम किसका मकान है और कैसे लोग इसमें रहते हैं; शायद भानु इसके

दोचार दिन के लिये सिर्फ मिलने को आया हो; घर पर चल कर तुम जितने फूल कहा ला चाहोगी हम मंगा देंगी; सच है अपने घर की चीजों में जो आनन्द मिलता है वह कहीं नहीं मिलता और हम को तो अपने घर के छोटे बाग में बड़ा सुख मिलता है; जब भानु को हमने पढ़ने के लिये कलकत्ते भेज दिया था और जब तुम्हारे पिता जो जीते थे तब अकेली भानु की मां जिसको तुम भी मां कहती हो और हम घर में रहते थे उन दिनों सन्ध्या को जब हमें गांव के काम से छुट्टी मिलती थी बाग में जाय अपने हाथ से मालियों का काम करना बतलाती थी; थोड़े ही दिन के उपरान्त ऐसा संयोग आ लगा कि तुम्हारे बाप मा भी हमारे यहां आ उतरे तब तुम्हारे खेल कूद और चहल से हमारा घर भी गुलजार रहता था—सच है बालकों ही से घर की शोभा है बिन बालक का मकान तो श्मशान तुल्य है—ईश्वर की कुछ ऐसी इच्छा हुई कि आने के थोड़ेही दिन बाद तुम्हारे पिता जी तो मारे गए (गदगद स्वर से) और चार की पांच दिन की बीमारी में तन त्याग दिया उन्ही के शोक में तुम्हारी मा को भी स्वर्ग वास हुआ मरती समय वह तुम्हारा हाथ हमको पकड़ा गई (सरला की आंख में आंसू भर आते हैं विश्व मित्र यह देख स्वगत) ऐं यह हमें आज क्या सूझा जो ऐसी बात छेड़ बैठे (अपनी जगह से उठ सरला के कन्धे पर हाथ रख उसे बहलाता हुआ) अच्छा आओ चलो तुमने इधर की क्यारियों को नहीं देखा—देखो यह रजनी गन्धा जिसे तुम इतना चाहती हो तुम्हारे बाग से इसमें ज़ियादा तैयार है (सरला के साथ टहलते हुए कुंजभवन की ओर जाता है) देखो यह कुंज कैसी घनी लताओं का बना है।

सरला—अच्छा तो हम इसी के भीतर बैठती हैं (कुंज भवन के भीतर जाती हैं) कैसा अच्छा यह कुंज है।

(बाहर विश्वामित्र भी एक झूले पर बैठ जाता है)

सरला—अभी तक भैया नहीं आये आप ने बोलाया है न? आपको विश्वास है आवेंगे?

विश्व—क्यों न आवेंगे—दो वर्ष हुए कि भानु को हमने नहीं देखा और इधर तीन चार महीने से उसने कोई पत्र भी नहीं लिखा उसकी मा वपुरोता समझा

घबड़ाई है कि कुछ कहा नहीं जाता भला देखें कोई आता है या । (कुंज से उठ भानु की किताबों की मेज के पास जा इधर उधर देख) अभी तो कोई नहीं आता—आहा यह तो वही किताब है जिसे दो महीने हुए हमने भेजा था भानु अपनी चीजें कैसी बड़ी सावधानी से रखता है (किताब ले कुंज की ओर लौट आता है)

सरला—यह तो वही किताब है जिसको आप के कहने से हमने बांधकर भैया के नाम से भेजा था—इसके भीतर हमने उनका नाम भी लिख दिया था देखें है न ?

विश्व—हां है और इसमें दो चार गुलाब की पत्तियां भी हैं ।

सरला—हां हां हमीने रख दिया था जहां हमने जे पत्तियां रक्खी थीं वहां वैसीही धरी हैं—आप देखिये भैया हम को कितना प्यार करते हैं ।

विश्व—और भी इस मेज पर बहुत सी किताबे हैं जिन्हे हमीने भेजा था—रात दिन उसको पढ़ने के काम मे आती हैं पर देखो ऐसी साफ और सुथरी बनी हैं मानो अभी टटकी दुकान से चली आती हैं भानु आवे तो उससे हम पूछें ऐसी अच्छी तरह चीजों को रखना तुमने किस्से सीखा—परन्तु यहां चुरट की बड़ी इफरात है इस मकान का मालिक पूरा किरस्तान ही जान पड़ता है ।

सरला—हां आप चुरट की गन्ध से हमारा भी सिर घूमने लगाता है—हमको तो सन्देह होता है कि भैया किसी काम मे फस गये अब न आवैंगे और हमारा आपका आना यहां व्यर्थही हुआ—पर वह देखिए कौन आ रहा है—भैया ही तो हैं—देखें आप भैया हमे पहचानते हैं कि नहीं—दो बरस पर आज हम उन को देखती हैं ।

(भानुदत्त का प्रवेश)

भानु—इस वक्त कौन बड़े मेहमान आये हैं जो इतने जोर शोर से हमारी तलबी हुई खालू से तो हम कह गये थे कि इस जून मुलाकात न होगी मगर ये सब नौकर इतने बेवकूफ हैं कि—(विश्वमित्र को देख) पिताजी आप हैं (दौड़ कर पांव पर गिरता है) आप यहां कहां ?

विश्व—(उसकी पीठ ठोक कर) बेटा पहले तुम्हारे मकान पर कलकत्ते गये—

भानु—पिताजी हमने आप को बड़ा कष्ट दिया ।

विश्व—कुछ हर्ज नहीं बेटा हम अवसर जैसा तुमको देखने आते थे आज भी वैसही सरला को लेकर—

भानु—(सरला को देख) सरला भी हम से मिलने आई है (दोनों बड़े प्यार से मिलते हैं अलग हो दोनों आंख पोंछ डालते हैं स्वगत) इस समय अपने मनको पीड़ा को हमी जानते हैं।

सरला—(धीरेसे) भैया तुम्हारा मुंह उतरा सा दीखता है?

भानु—(सरला से) कुछ तो नहीं हमारा मुंह तो जैसा था वैसाही है—पर तुमको दो वर्ष उपरान्त देखते हैं तो अब सुभ बहुत बड़ी हो गई हो।

सरला (लज्जित सी हो) आप २ तुम जब मिलते हो तब यही कहते हो।

विश्व—तुम दोनो क्या धीरे २ बतिया रहे हो सरला भानु को हमसे भी कुछ कहने दोगी कि तुम्ही सब बतिया डालो गी—अच्छा कहो बेटा तुम बराबर कुशल पूर्वक तो रहे तुम्हे किसी बात का दुख तो नहीं हुआ?

भानु—आपकी कृपासे सब कुशल और आराम है।

विश्व—तुम्हे प्रसन्न देख हमे भी बड़ा आनन्द हुआ ईश्वर करै तुम्हारा इम्तिहान पूरा उतरे और खुशी खुशी घरमें आकर रहो यही हमारी इच्छा है।

भानु—मगर पिताजी यहां यह मकान आप को कैसे मिला?

विश्व—हमने अभी कहा न बेटा कि पहले हम कलकत्ते गये और वहां खोज किया तो मालूम हुआ कि तुम वहां अब नहीं रहते फिर पूछते २ यहां का पता लगा तब गाड़ी कर यहां आये इसी से थोड़ी देर भी हुई नहीं तो अब तक तुमसे मिल कभी के लौट गये होते।

भानु—घर में सब कुशल है पिताजी? आप आइयेगा तो मासे हमारा बहुत २ प्रणाम कह दीजिये गा (सरला से) देखो भूलना मत सरला

सरला—न भूलेंगी—क्यों भैया यह सब किताबें जैसा घर को आपही की पढ़ने की हैं? आप को बड़ी मेहनत पड़ती है इसी से कुछ चेहरा उतरा है,

भानु—फिर!

सरला—नहीं २ हम सच कहती हैं और देखिये यह वही किताब है जिसमें हमने गुलाब की पत्तियां रख दिया था।

भानु—हां हां यह वही इत्यादि।

भानु—हां हां यह वही किताब है [स्वगत] Psha! यह कैसे इसके हाथ

खत भई यभी पिता जी देख लेंगी कि तीन चार महीने इसे आये हुए अभी इसके वरक तक नहीं काटे गये [किताब उन्हीं के मेज पर रख देता है]

पिता—क्यों बेटा इधर कई महीने से तुमने घर कोई पत्र क्यों नहीं लिखा तबियत तो अच्छी रहती थी? मेहनत आज कल पढ़ने में अधिक करते हो मालूम ?

भानु—हां पिता जी अब इमतिहान के दिन करीब आ गये हैं।

पिता—अच्छा बेटा खूब मेहनत किये जाओ जितनी पढ़ने और बाहर की किताबों का दाम हो हमसे बेधड़क मांग लिया करो कानून की किताबों का दाम बहुत होता है तो चिन्ता नहीं—यह सोचि के न डरने को हो कि यह किताब न मिली वह किताब जून पर न आसकी; बहुधा मेहनती गरीब लड़कों का नुकसान वक्त पर किताबों के न मिलनेही से हो जाता है तुम ईश्वर का धन्यवाद करो कि तुम उन लड़कों में से नहीं हो।

भानु—हां पिता जी आप की कृपा से हमको और उलटी शिकायत रहती है कि नई २ किताबें आकर रक्खी रहती हैं और हमको पढ़ने की छुट्टी नहीं मिल

भानु (आपही) इन लोगों की औठों २ बातों के आगे तो और भी हमारा कुछ नहीं चलता—खास करके सरला का झूठी बातें नहीं निकलतीं-छोटी बात हैं या तो बहुत बड़ा और सच्चा किस्सा झूठाई का हम इस जून खड़ा करें या जन्म भर के लिये बाप की मोहब्बत से हाथ धो बैठें और मा बाप के दिलको नाजुक खूबसूरत शीशे की तरह एक बारगी तोड़ डालें—हमारी बुद्धि में तो इस जून पहली ही रास्ता सुगम जान पड़ती है आगे जो कुछ हो--भानु! याद रख तेरे मुह से सच न निकलने पावे इस समय झूठ तेरे लिये अमृत है और सच्च विष। इस समय हमें दो पहर वाला स्वप्न क्यों याद आ रहा है।

पिता। क्यों बेटा भानु तुम्हारी छुट्टी कब से होगी ?

भानु। [झेंपकर] अभी तो देर है पिता जी मगर जैसेही छुट्टी होगी वैसेही हम घर आवेंगे।

पिता—हां देखो फौरन आना।

सरला—(भानु से) और आज कल जितना आप अलग दूर घर से रहे हैं इस सब का बदला लिया जायगा तनिक भी घर के बाहर न जाने पाओगे।

को (रुक कर सामने पेश आता हुआ स्वगत) यह अनाम बहुत ही बेलगाम चीज़ है—क्या इसकी सीधी ये छोटी मीठी भोला चेहरा देखकर तो और भी हमारी हिम्मत भाग जाती है और दिल हिचकिचाता है और जैसे हाकिम के सामने चोर को दशा हो वैसे हमारी भी मालूम होती है।

सरला—भय्या हम आप से एक संदेसा मां का कहना भूल गईं उन्हों ने पूछा है कि पायताबे जो हम ने भेजा था सो सब आप को मिले न ?

भानु—हां सरला सब मिले। बहुत अच्छे थे—मगर सरला यह तो बतलाओ कि वह किसके बनाए थे।

सरला—आप को इससे क्या मतलब कि किस्के बनाये थे अगर आप को और चाहिए तो यह एक दरजन हम और लेती आई हैं। (देती है)

भानु (चकित सा हो कर) वाह सर का मगर यह सब मेहनत तुमने हमारे ही वास्ते किया [स्वगत] थोड़ेही दिनों में भानु तुम इस योग्य न रहोगे कि तुम्हारी खातिर कोई करै।

विश्व—हम आते थे तब तुम्हारी मां ने तंग किया कि थोड़ासा रस और हलवा भी लिए जाओ। तब हमने कहा बड़ा बोझ हो जायगा कौन रेल पर लादे फिरैगा। थोड़े दिनों में जब भानु घर आवैगा तब आपही पीलेगा। क्यों बेटा हैन ? पर तुम आज उदास क्यों देख पड़ते हो। जैसा तुम्हारा चेहरा हमेशा देखते थे वैसा आज नहीं है।

सरला (भानु से) हम कहती न थीं भैया ; आप हमारी बात नहीं मानते थे (विश्वामित्र से) हम लोगों के एक बारगी आ जाने से भैया कुछ घबड़ा से गए हैं।

भानु—नहीं २ ऐसी नहीं (जल्द से) आप लोगों के आने की खुशी और ताज्जुब से—हमको पहिले से नहीं मालुम था कि—

विश्व—हां होता ही है पर तुमने यह न कहा बेटा कि कलकत्ते का मकान छोड़ यहां तुम क्यों आये ? यह तुम्हारे किसी दोस्त का मकान है ?

सरला—हां भैया यहां बड़ा आराम है यह किसका बाग और मकान।

सत्यानन्द दौड़ता हुआ आता है।

सत्य—भानु—भानु—भानु—चलो जल्दी तुमने बड़ी देर लगाई चलो जल्द दो यहां क्या कर रहे हो कमरेमें। क्रमशः

अकसीर हैज़ा।

दौड़ो—खरीदारो—यह अरक मेसर्स ऐंड को साहब ने बड़ी मेहनत से तैयार किया है—इस अरक ने बज़रिये खुली नालियों के सिवा हैज़े को चौक बाज़ार की पैज़ार मार ख्वार कर दिया— यह वह जौहर है कि मेलोरिया तो इसको

खबर पातेही एशिया का दरवाज़ा छोड़ पाली नेशिया के दूर दराज़ मुल्कों को भाग गया इसकी तासीर से मअमूमन मर कनेस्तनाबूद हो गए—बावजूदेकिमुन्त ज़िम सफाई की काहिली और अलमस्ती से यह सुरक्षित है—रिफाहआम में इसे बड़ा मुफीद समझ हमारे बजेदार म्युनि सिपल कमिश्नरों ने इसी लिए खुली डाकों नालियां बनवा दीं कि मेहतर साहब पीपेनुमा गाड़ियों में भर २ हर दम इस अरक अकसीर को बहाया करें और बस्ती के भीतर की हवा इसकी खुशबू से न बिगड़ कर हमेशा तन्दुरुस्त और तारोताज़ी बनी रहे इसकी खुशबू बम्बई की धूपबत्ती अष्ट गन्ध और कपूर आदि से कहीं बढ़ चढ़ कर है हम कसम खाकर कहते हैं आपको यकीन कामिल रखना चाहिए कि इस अरक के फायदे और असर में एक बात भी गलत हो तो हमारी एडिटरी की लियाकत झूठी—वह बड़ा दवाखाना जिसमें यह अरक अकसीर तैयार होता है गन्दानाले के पास वाके है और इसमें के "कम्पौडर" दवा तैयार करने वाले कलकत्ता लाहौर लन्दन के मेडिकल कालेज के सन दयाफ्ता मौजूद हैं—और शहरों के बाशिन्दगान को इत्तिला दी जाती है कि इस गरमी के मौसिम में जब हर जगह हैज़े की किल्लत सुनने में आती है अपना २ घर छोड़ यहीं आकर बसें नहीं तो एक २ शीशी इस अरक को मंगा भेजें जून जुलाई न जानिए किस वख्त हज़रत हैजा तशरीफ लावें पड़ा रहेगा तो काम देगा।

पता दूकान का
मेहतर रैगड को
गन्दानाला
नं० सवाढाई

———o———

काश्मीर कुसुम।

संस्कृत राज तरङ्गिणी की संक्षिप्त समालोचना; श्री बाबू हरिचन्द्र रचित; इस छोटे से ग्रन्थ के पढ़ने से जान पड़ता है कि उक्त बाबू साहब ने राज तरङ्गिणी भी तैरा चाहे तो हमारे बाबू साहब के इस कुसुम के सहारे बिना उसकी तरङ्गों में उलझे सहज में पार जा सक्ता है; ऐसे २ क्लिष्ट ग्रन्थों में बुद्धि के लिये सुगम सोपान बना देना इन्हीं का काम है।

॥ प्रथम पुस्तक ॥

बाबू गद्दूमल विरचित छोटे बालकों को लिखने पढ़ाने में अक्षरा भ्यास के लिये बहुत अच्छे उपाय और सङ्केत इसमें दिये गये हैं और अप टैप सम्मिलित शुद्ध नागरी शब्दों के छोटे २ पाठ इसमें रक्खे गये हैं इलाहाबाद वैदिक यंत्रालय में छपी है। मूल्य ३/॥)

इश्तहार।

प्रकाश हो कि बनारस लाइट छापेखाने में रायल अकटेवो शिशुपालबध महाकाव्य सस्कृत मल्लीनाथ की टीका सहित "माघ" अच्छे कागद पर ७०० जिल्द तैयार है दाम ३) रु० फी जिल्द और उसी साइज में "रघुबंस" महा कवि कालीदास कृत मल्लीनाथ की संस्कृत टीका सहित १००० जिल्द अच्छे कागद पर छप कर तैयार है दाम १।) रु० फी जिल्द इस लिये प्रगट किया जाता है कि जिन महाशयों को पुस्तक लेने की इच्छा होवे लिखें "होल सेल" यानी सब एकठे थोक या थोक ऊपर लिखे दामों के अनुसार कमीशन काट के भेजेंगी।

गोपीनाथ पाठक।

समस्यापूर्त्ति।

मतिमारीगईतोकहाकरियेजू।

सवैया।

अब तो बढ़ती है मलिच्छन की रूम रूस डरा नहि के जरियेजू। हिंदुस्थान में कौन बली अब है जेहि को सर्कार मनै डरिये जू॥ चुप चाप ह्वै बैठि रहौ सभई कछु ह्वै है नहीं कितनो लरियेजू। इल्बर्ट बिलै पै तिलांजरि दैव मतिमारी गई तो कहा करियेजू॥

सवैया।

नैन कि सैनन में ना सनौ बतरान सुधा श्रुति ना भरियेजू। भावन में भरमावो नहीं तिय चुंबक लोह मनै टरियेजू॥ ज्वाल बिशाल महा गनिका तेहि पै फनिगा बनि ना जरियेजू। समझावत भार केदार थके मति०॥

सवैया।

व्याकुल होहु न काकुल में सिरबेनी की बंधन ना परियेजू। झूमक बाली झुलैं श्रुति में पिशवाज की साज में ना ढरियेजू। यह मोहनी

है मन मोहिबे की गनिका विधि राखी बनै धरियेजू । समभावत हार केदार थकै मति मारी० ॥

कारते हरिकै पद कंज पुजौ पग ते हरि धाम छिते भरियेजू । नाहूये साथ जहां लखिए द्विज दण्ड समान पगे परियेजू । मुख तें रघुनाथ को नाम रटौ श्रुति में श्रुति स्मृत्ति रसैं भरियेजू । समभावत हार केदार थकै मति० ॥

सवैया ।

किमि आरत भारत भूमि गई ।

किमि ब्राह्मण द्रव्य विहीन भए किमि क्षत्रिन वीरता बोरि दई । किमि बांचत शूद्र पुरान सवै किमि मारैं मलिच्छन पुण्य गई ॥ किमि देत हैं भूप गयै गनिका किमि मानव पूजत प्रेत मई । किमि फूट को बीज केदार जम्यौ किमि आरत भारत भूमि भई ॥

जेहि भूतल में हरिचन्द भए सिवि रंति बली न्टग कर्ण कई । रघु भूप भगीरथ विक्रम जू कुरु पांडु महा रन सूर ठई ॥ भृगु व्यास वशिष्ठ पराशर नारद कुंभज लोमस बाल जई । सोइ ठाम केदार न बूझि परै किमि आरत भारत भूमि भई ॥

अविवेकहि त्यागि गह्यौ गुन गैलै

द्रव्य कमाय लियो अधिकै अप कीरत खूब जहान में कैलै । सौ एस आई कहाई भए सुखदाई सुनाई नहीं श्रुति भैलै ॥ बीति गयो पन तीन केदार चतुर्थ अवस्था कछू अब ऐलै । द्वेष को लेस रखौ ना हृदै अविवेकहि त्यागि०

परचण्ड बवण्डर खेवट मातो ।

सवैया ।

तरनी दस बीस को खींच सकै जल कौल हुतासन पाइ अघातो तरल तरङ्ग में तीव्र चलै रव सोटी ठौरहि ठौर सुनातो ॥ धीवर नीवर कीन्ह केदार बनै लघु स्टमर नाव हरातो । बुद्धिमता अँगरेज कियो परचण्डबवण्डर खेवट मातो ॥ शेषमग्रे

व०ला०प्रेस केदारनाथ ।

मूल्य अग्रिम २।/ पश्चात ४।/

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt, Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st June, 1884. Vol. VII.] [No. 10.

प्रयाग जेठ शुक्ल ८ सं० १९४० जि० ७ [संख्या १०

। नमो धर्माय महते ।

धर्म के विषय मे कुछ लिखना बड़ी जोखिम की बात है इसलिये कि धर्म एक ऐसी वस्तु है कि इसमे सबोंका ऐकमत्य कभी होही नहीं सक्ता; पर यदि सच्चे मन से किसी से पूछिये तो क्या धर्म से बढ़ कर भी कोई वस्तु संसार मे बड़ प्पन का सक्ता है जो मनुष्य के सोचने योग्य है और जिसपर हम सबों का लौकिक और पारलौकिक सब कुछ निर्भर है? तो फिर बहुधा लोग इसका चर्चा छेड़ने मे क्यों हिचकिचाते हैं? पहले यही देखना

चाहिये कि इस संसार मे बहुतेरे मनुष्य पड़े हैं कि जिन्का जन्म बीत गया कभी एक पलभर के लिये भी धर्म क्या है इस बातके सोचने की ओर अपना खयाल नहीं दौड़ाया ऐसों को तो कोई दवा नहीं है अब रहे वेलोग जिनके मन मे इस प्रकार के भाव कभी २ उदय हुआ करते हैं कि धर्म क्या है और इस्का खयाल हमे क्यो करना चाहिये ! इस श्रेणी के लोगों को देखते हैं तो अधिकतर इस सिद्धान्त के पाये जाते हैं ; if the mind is beating an the bars of fate, let it be only an inward struggle; religion is not a thing to speak of far less to brag of,. अर्थात् मनमे तरह २ के तर्क और सन्देहों के झकोर आते भी रहें तो उन्हे जीके भीतर ही रहने देना चाहिये मज़हब ऐसी चीज़ नहीं मालूम होती कि हर दम उसपर बैठ झंझट किया करे या अगर मत सम्बन्धी किसीबातों का कुछ पता भी लग गया और उस्से चित्त को कुछ सन्तोष हुआ तोजो कुछ टटोलते २ हाथ लग गया उसी से जोटें हांका करते हैं ; हमारे कहने का मतलब यह नहीं है कि धर्म के विषय मे जो कुछ अपनी पक्की सही धुनी राय पाया उसे लेभाट दिल के सन्दूकमे रख ऊपर से चुप रहने को कुंजी दे दिया और अपने प्यारेसे प्यारे मित्र सेभी उस्का कुछ हाल न कहा ऐसा करने वालों का जी कंकर पत्थर सी वाहियात चीजों से भरा पाया जाता है; आदमी एक पैसे का मिट्टी का बर्तन भी खरीदता है तो दस बार उसे ठोक बजा लेता है तब जिस बात पर यावज्जीव के लिये हमारा सुख दुख निर्भर है उस्मे भी मनुष्य तोल २ कर सब पहलू देख २ कर पांवम रक्खेगा तो किस्मे रक्खेगा ; जो लोग अपने मनका विश्वास बाहर प्रकाश करने मे हिच किचाते हैं वे अपने जीमे चाहो जैसा समझे हों पर बाहर वाले यही कहेंगे कि हिम्मत नहीं है कि जीखोल के belief जिनबातों को वे मानते हैं उस्का हाल कहें और दलील करने वाले उसे बहुत ही ओछी समझ वाला जान उस्की ओर से सर्वथा अश्रद्धा करलेते हैं और कहते हैं जिसने आंख मूंद थोड़ी सी बातों पर विश्वास जमा लिया है ऐसा आदमी कभी दलील के आगे ठहर सक्ता है; पर हम तो यही कहेंगे कि इस चुप रहने का कारण मतो सोचने की कोताही है न दलील करने की असक्य

ता है इसी तो इस का हेतु कुछ और भी जान पड़ता है; जिस अर्थ मे धर्म को हमने रक्खा है उस से हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि यहां हम यह सिद्ध करें कि शैवों से वैष्णव अच्छे हैं; या यह देखाने जांय कि बौद्ध और वेदान्तियों मे क्या अन्तर है; या शियाओं के कौल के माफिक सुन्नियों ने इसलाम के मज़हब को बिल्कुल खराब कर रक्खा है; या लूथर ने रोमन कैथोलिक को कैसे उधार डाला अथवा प्रोटेस्टेंट के मजहब मे क्या २ गुण हैं; नहीं २ जिस धर्म से हमारा मतलब है उसका पूरा निरूपण बिना cosmopalitan view सार्वभौम चक्षु के हो ही नहीं सक्ता यह सब तो भिन्न २ सम्प्रदाय या मत के जुदे २ फिर्के जथा या लड़ाई झगड़े हैं आज इस सूरत मे हैं कल किसी दूसरी सूरत मे हो गये मजहब सच पूछिये तो उन्हीं का असल और ठीक २ है जिसमे "अयंनिजः परोवेति" का झगड़ा नहीं है; पर इस मत को सदा ध्यान मे रख सब मजहबों को परखना और किसी एक पर विशेष आग्रह न प्रकाश करना सहज काम नहीं है सब से बड़ी भारी कठिनाई तो यही जान पड़ती है कि जो आग्रह करने वाले हैं वे कभी माने होंगी नहीं कि हमारा पक्षपात है मगर पक्षपात कहां तो मजहब वाली गोलियां खेले उनके हिसाब से तो और सब मजहबही भ्रष्ट हैं एक जिसका वे आदर करें वही सच्चा; खैर इस से हमें क्या प्रयोजन यदि ऐसा न होता तो संसार मे भिन्न २ मतों के नाम भी न बाकी रहते।

अच्छा तो उस सार्वभौम चक्षु से देख सब धर्म और मतों के पूर्ण शरीर के हम ३ अङ्ग यहां देख लाते हैं।

पहला।

Certain tenets and particular doctrines थोड़ी सी विशेष मानने की धर्म सम्बन्धी बातें; या Rites and ceremonies कुछ विशेष प्रकार की क्रिया या संयम; या "Particular articles of faith,, थोड़ी सी आवश्यकीय बातें जिन पर भिन्न २ मत वालों को अपने २ धर्म के अनुसार विश्वास रखना ही पड़ेगा; इस सब को अलग २ देखलाने से हमारा यह अभिप्राय है कि इनके द्वारा एक मजहब वाला दूसरे को जल्द लक्षित हो जाता है या जो खास करके उसी मजहब की बातें हैं; जैसा ईसा मसीह को ईश्वर का पुत्र जानना या महम्मद को खुदा का भेजा

नहीं है हिन्दू धर्म की शोभा इन सब परस्पर की फूट में नहीं है किन्तु इसमें है कि आपस में इतना लड़ झगड़ और बिगड़ कर भी सब के सब हिन्दू धर्म की शोभा के भीतर ही हैं Difference of sects संप्रदाय के भेदों को जाने दीजिए यह देखिए कि Difference of intellectual and spiritual livels,, हर एक संप्रदाय में बुद्धि और आत्मा सम्बन्धी बातों पर अमल कर कौन से कौन और ऊंचे से ऊंचा ख्याल रख कहां तक लोग गये हैं; एक वह हिन्दू है कि जिनके वास्ते एकादशी का व्रत और गणेश जी को पांच सेर लड्डू का भोग छोड़ और कोई धर्म की बात सोची निकत नहीं की गई; एक उन हिन्दू महात्माओं का ख्याल कीजिये जो "ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा" परब्रह्म में मिल गये; क्या वसिष्ठ गौतम आदि को हिन्दू धर्म की श्रेणी से आप निकाल देंगे? एक वह हिन्दू ब्राह्मण हैं कि गायत्री सन्ध्या को कौन कहे अपना नाम शुद्ध नहीं जानते और धर्म के खिलाफ की इतनी शेखी हांकते हैं कि घर में कहीं कोई मुसलमान आगया तो तमाम घर नापाक और चीजें अशुद्ध होगईं; इन्हीं के मुकाबिले उन परमहंसों को लीजिये कि जो स्वच्छा जूठा कौन कहे कुत्ते का जूठा खाने को तैयार हैं " विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः" और उन्हीं के हमलोग पांव पूजते हैं तो क्या ऐसे उत्तम हिन्दू को आप धर्मच्युत कहेंगे? कभी नहीं एक वह हिन्दू है कि रोज सवेरे उठकर गांव के कोने में जो पांच सेर का पत्थर पड़ा है उसपर नित्य जाय एक घड़ा पानी छोड़ आते हैं एक वह हैं कि जिनका दावा है कि मन्दिर के सामने रहेंगे पर कभी दर्शन न करेंगे और जब चाहें देवता को साक्षात देख सक्ते हैं इत्यादि; इत्यादि भला फिर बतलाइये संसार में कौन ऐसा मजहब है जो इतना liveral उदार catholic सर्वग्राह्य और tolerant सर्वसहिष्णु है; कौन ऐसा धर्म है जिसमें बहुधा लोगों ने जैसा कहा है कि धर्म की अ—बी—सी से लेकर एम ए डी की लियाकत तक के लेक्चर्स मौजूद हैं जब आज कल के सुसभ्य योरप के विविध विज्ञान विद योरप के परिमाणुवादी योरप के विद्वानों को Religious and spiritual hankering धर्म और आत्मा सम्बन्धी क्षुधा होती है तो उसका शान्त करने वाला सिवा आर्य धर्म सिवा

वैदिक धर्म के और कौन वस्तु है? जिसकी यह अटल पहचान है कि जिस वर्ण के जिस छात्र की जैसी योग्यता होगी तदनुकूल वह खुद आकर उसे भरती हो जायगा नती उसके नीचे वाले छठ धर्मों से उसे रोकेंगे न ऊपर वाले उसको तुच्छ समझ हंसेंगे; जिस आर्य धर्म को सदा की glory शोभा और pride अभिमान था कि किसी धर्म पद्धति पर हठकर यह न कहा कि मोक्ष का यही मार्ग है; दूसरी राह पर चलोगे तो नष्ट हो जाओगे अर्थात् तअस्सुब वाद का दस्त dogmatising. कभी भारत वर्ष मे रहा ही नहीं मगर अपनी रास्ता पर चले जाते हो और आप की आत्मा को इसी मे सुख है चलिये; अब इसाइयों के शृंखलाबद्ध होने का हाल सुनिये पहले तो spiritual religion आत्मा विचार सम्बन्धी धर्म का कहीं उसे नाम भी नहीं है भोलों पहले सर्व साधारण के लिए थोड़े से धर्म सम्बन्धी नियम पर चलना अवश्य है जैसा दो चार एतवार गिरजा में न गये पादरी साहब ने तकाजा करना शुरू किया इबरट मे पढ़ पढ़ाय आप सुनने गये किसी तरह पर; इस समय लन्दन पंच की एक दिल्लगी याद आई है एक "पेरिश मिनिस्टर" गांव का पादरी और वहीं के बड़े जमींदार से मुलाकात हुई तो पादरी ने उस जमींदार से पूछा आप बहुत दिनों से sabbuti h सबथ को अच्छी तरह नहीं मानते और गिर्जे मे भी हम आपको नहीं देखते जमींदार ने जवाब दिया "हां पादरी साहब मगर आपके चर्च का चन्दा तो हम बराबर दिये जाते हैं" पादरी साहब ने कहा और क्या असिल मजहब तो यही है अगर मुसलमान नमाज न पढ़ें रोजा न रहे काफिर और जाति से खारिज; किसी मजहब की हजो करना हमारा आशय नहीं है सब मजहबों मे कुछ न कुछ उमदा असूल भरे हैं अगर ऐसा न होता तो वह मजहब कभी चल न सकता इसका हेतु हम इस आशय के दूसरे खण्ड मे लिखेंगे आगे फिर।

सुगांकमौलिनाटक। पं० श्रीधर सम्पादित

प्रथम अङ्क—द्वितीय गर्भाङ्क ।

स्थान—एक ग्राम के निकट एक कूआ।

(गाती हुई अनेक युवतियों का प्रवेश)

गान—राग बिहाग—कान्ह तुम वैरी न गेल हमारी। हम घर लिये जांय यमुना जल हरि सौगन्द तिहारी। कटि पै धरी भरी मटका जल उत जेहरि

सिर भारी। पवन झकोर उठत अञ्चल पट तन ह्वै जात उघारी॥ सीत अधिक सिमकत सरीर सब जल सों भीजति सा-री। हाली चलति कठिन कुच कम्प जत खसकत कञ्चुकि प्यारी॥ छांड़ो गैल छैल चलवैते तुम जीते हम हारी। करो कृपा नँदलाल लाल पिय बिनवति है ब्रजनारी॥

(पानी भरने की चेष्टा करती हैं)

(घबराती हुई एक सखी का प्रवेश)

१ सखी—आजु कोई बड़ो राजा ह्यां बागन में आय परा है—मैं अपनी जीजर (१) लिये आवै हीं सो है सिपाही मोंति हसो ठट्ठा करन लगी—डर के मारे मेरी एक मटको ह्व गिर गयी!

२ सखी—चल जा डर पोंकनी, तू उनते डर काहे कू गयीं?

३ सखी—ये है जी बड़ी डर पोंकनी—अरी वे तो राजा भुवन चन्द्र विसाखा पुर वारे के सिपाही होंगी—तोहि मालूम नाहिं भुवनचन्द्र प्रागराज तिरवेनी न्हाइवे जाय है—मेरी ज्येठोत या राजा के ह्यां नोकर है सो काल्ह घरे आयो है—और कहे है कि बड़ी रानी और बड़ी बेटी भुवन मोहनी तो भुवकुन्द में रह जायगी और सबेरे प्राग कूं चली जायगी।

१ सखी—अरी हव्वे; तैने भली बैन मिटाय दियौ, नहीं तो मेरी न जाने कहा गति होती!

४ सखी—मुचकन्द तो हमारे ही महाराज का गाड़ेरी? आहा कैसो सुन्दर सुहावनो पर्वत है!

३ स—हां हां, पर हमारे राजा को नाहें—वुतो हम ही विसाखा पुर वारेन पै है।

२ स०—अरी और तो सुन, काल मेरौ देवर सोहन पुर ते आयो है० सो कहै हौ कि एक राजा बड़ो भारो दल लिये बनै में परो है—और सुनै हैं कि वु हमारे महाराज का कोई लगे है!

३ स०—हांगो—पर ये विसाखा पुर वारौ तो सकारें चल्यो जायगो!

४ स—अरी तो कहा अब पानी न भरोगी ये निगोड़ी भली आयी कि हम याही की बातन में लग गयीं (१ स० की ओर देख के)

३ स—अच्छो, पानी भरलेउ—भारी चलौ।

(पानी भरती हैं और गाती हैं)

गान—"देखो देखो सखी कन्हैया ठाढ़ो रोके गैल। मैं जमुना जल भरन जाति ही बीच में मिलि गयो नन्द को छैल"

(१) मथना बड़ा घड़ा।

(एक पथिक का प्रवेश)

पथिक—(नम्रता से) अरी आयब न सखीओ, थोड़ो जल म कूं प्याय देवगी ?

सब सखी—हां हां, परदेसी, आ वैठ जा पटिया पै।

(एक सखी पिलाती है—)

प—(थोड़े प्रसन्न हो)—बड़ो मीठो जल है, राम करै तुम्हारो भलो होय।

स—तुम्हारो गाम कहां है ?

प—मैं चन्दर भा पुर को रहवैया हूं ।

स—पहु चागो कहां ?

प—अनुर धा हो पुर जाता हूं ।

स—(मुसकार)—अरी, परि याको बोलो तो याही देस को सो है !

प—मेरो ठेठ घर तो याही ओर है—आजमल को रहिवे वारो हूं—पर राजा को ह्यां नौकर हूं अनुराधा पुर में ।

स—इत कौन गामते आयो है—अर गयो कहां ?

प—(थकावट जता के)—अरी माहिं राजा को बड़ो कुमार आज एक महीना ते पहाड़ की डांग (१) में सिकार खेलि रह्यो है—सो याकी खबरि रजवाड़े में लिये जाऊं हूं—हम चार हलकारे हैं आठ २ दिन पीछे बारी आवै है—अरी परि आज तो मैं बलाय (२) हार गयो हूं—

स—(तरस खाकर) तो छांही गढ़ी में ठहर जा—सकारे उठ जइयो ।

प—हां, आज ह्यांही टिक जाऊंगो—महाराज को कारिन्दा हूं ह्यां एक रहे है अब जाऊं हूं राम राम री सखीयो—

स—राम राम, परदेसी, राम राम (हाथ से बता के) इत माऊं ह्वै के चल्यौ जा, गढ़ी समुहो ही दीखे है ।

प—भलो, इतनो है कैं निकर जाऊंगो

(एक ओर से पथिक दूसरी ओर से सखियां गाती हुई जाती हैं—)

समझ की खिचड़ी पकने का अनूठा ढंग है।

जब हम ज्ञान दृष्टि से इस अपार संसार के चमत्कार देखते हैं तो समझ के आदि अन्त का कुछ पता नहीं पाते यह वह निद्रा है जिसका सोया न जागा पै न जागा ; यह वह अथाह सागर है जिसमें हजारों गोते खोरों ने गहरी डुब की मारी पर

(१) जंगल

(२) बहुत

इसकी थाह न पाई ; यह वह सर्प है जिसके डसे को सांस न आई ; यह वह हालाहल है जिसका एक बार पी कर कोई भी न जिया पै न जिया ; एक वह समय था कि इसी समझ के कारण संपूर्ण वेद वेदान्त न्याय योग इस रे इस प्रकार करतल गत थे कि जिसके बल इस संसारी पदार्थों को हस्तामलकवत् देखते थे मनचङ्गा तो कठौती में गङ्गा । यह कहावत् उन्हीं दिनों को अब तक प्रचलित है ; एक समय था कि इस अपनी सीधी सच्ची समझ काम में लाय स्वाधीनता का खड्ग बगल में दबाए चित्त को चैतन्य में लगाये निर्भय ब्रह्मानन्द में विचरा करते थे ; वह भी समय था कि बड़े से बड़ा चक्रवर्ती राजा अपनी तुच्छ प्रजा की आह और शाप से डरता था ; हे आर्य भाइयों झौन झौंगा की झापड़ सूपड़ पुरानी समझ और कोट पतलून वेष्टित नई रोशनी का इन दिनों ऐसा मुकाबिला आ पड़ा है कि हमारी समझ हमारे ही गले पड़ी खड़ी पुकारती है कि इस अल्हड़ पन को छोड़ हीन दीन बनने से मुख मोड़ किंचित् कर करो तो अपना काम करो नहीं तो सदा ऐसीही दास रहे आओगे सहती अनसहती सहोगे ; ऐसा उपाय करो कि अनाथों को अनीति कम हो और तुम्हारी उदार नीति में कसर न पड़े ; मिस साहब बनने की धौंसिले से, कोट पतलून पहन झूमी टांय २ कव्वी २ कसूरता और स्पीचों से, हां हुजूर कह हां में हां मिलाने से, जेंटिलमेन बन छड़ी घड़ी ले रेलवे स्टेशनों के प्लेटफार्म पर चुरुट के धुएं उड़ाते बूट को खट २ से, कोई प्रयोजन सिद्ध होते नहीं दीखता सिवाय नाक कटाय शोहदों में शामिल होने के ; सिर पर ताज धर बन्दूक तलवार हाथ में ले हिजरों के दल में मिलना जैसा नहीं सोहता उसी तरह यूरोपियन फैशन धारण कर मन में क्रूरता

तन में दीनता धारी किए नहीं आवता ; हे प्रिय भारतवासियो यह समझ हमारे किसी काम न आवेगी सोचो के सोची रहि जा ओगे ; जिनके हिरसे से अंगरेजी टोपी पहन यह सब स्वांग कर रहे हो उनकी दृष्टि में half civilized नीम आदमी से पूरे आदमी कभी न जंचोगे ; शोक से का विषय है कि भारतवासियों ने यूरोपीय आचरणों से उनका सा द्रव्य आकर्षणवाला मंत्र एक भी न सीखा ओल्ड टाम शेरी और शाम्पेन आदि की सेवा भली भांति जान गये धन्य ऐसी समझ देसी गधी और पूर्वी रेंक । हत तेरी सभ्यता की दुरमेनदा । पाठक जन देखिए क्या सभ्यता है और एक यही क्या जहां २ इस औंधी समझ ने जाल फैलाया वहां २ कमाल दिखलाया । यती सन्यासियों में घुसी तो उनकी एक हाथ में तूम्बा दे चिथड़े की लंगोटी पहनाय जंगल में बहाया। पन्थों में धसी तो कंठी माला गले में डाल पंचाग्नि सप्ताग्नि तपवाय लोहे की कील पर सुला या या रस्सी में बांध उलटा टंगा या ; ज्योतिषी और पण्डितों में आई तो ग्रह और नक्षत्रों से सम्बन्ध लगाय सारे संसार को भर माया ; आयक्कड़ व्यास और गुरुओं में समाई तो भले घराने की बहू बेटियों को चेली बनाय उन का तन मन धन सर्वस्व अर्पण करा या ; कवियों को जो इसका आनन्द मिला तो राई को पर्वत और पर्वत को राई कर दिखाया ; रसिकों को जो इसका स्वाद आया तो उनका सब धन धाम कौन रसीलियों के द्वार का कुत्ता बनाया ; राजा महाराजों में जो इसका चमत्कार हुआ तो वैभवोन्माद में उन्मत्त कर गद्दी के खटमल उन्हें बनाया ; हमारी सरकार की जो इसका मजा भोगा तो सर्वग्रास की डिकारत असली सुझाया ; पार्लियामेंट में इसका वेग आया तो कानून की लकड़ी से प्रजा को नचा दिखाया ; भि-

था कमिशन के प्रधान मेम्बर त-
था डाक्टर हंटर को जो इस स-
मझ का शेष आथा तो हिन्दी
को जड़ पेड़ से निर्मूल कर घर२
का भिखारिन बनाया। अस स-
मर्थं को था जगमांही। जो था
वपुरी के बस नाहीं। उपसंहार
में हमारी वेड़ी समझ इसे यही
समझाती है कि यही समझ ब्र-
ह्मा होकर सृष्टि कर्ता विष्णु हो
कर पालन कर्ता और रुद्र हो कर
नाश कर्ता है जब ऐसे बड़े२ उस
के खेल खेलौने हैं तो हम और
तुम किस खेत को मूली हैं इतने
पर भी जो न समझे उनसे कुछ
नहीं बिसाती इसी से हमारा यह
अटल सिद्धान्त है कि समझ की
खिचड़ी पकानेका अनूठा ढङ्ग है।
एक ना समझ।

गान।

उदित है नई रोशनी आज।
छड़ी घड़ी जंजीर डाग बुश आ
को साज्यो साज ॥ विधवा बाल्य
विवाह बक्तृता घर २ येही काज
अथा कपट कानून काम की क
रत सकल तज लाज ॥ गीता
ज्ञान कुरान बाइबिल गई सभ्य
ता भाज। फैल पास को फिकर
प्रात उठ डेम फूल मुख छाज ॥
भारत मूल भोंड़ है कबलौं बूडत
अहत समाज। जागु जागु मतिम
न्द अभागो पाय सुखद यहराज ॥

श्रीरामस्तुति।

कछु संस्कृत कछु नागरी तज
सर्व गुण आगरी ॥

नमामि राम चन्द्र भक्त भीति
भार मोचनम्। त्रिलोक शोकना
शनं तड़ागजात लोचनम् ॥ अन
न्त सन्त सिद्धि ऋद्धि निद्धि वृद्धि
दायकम्। नमामि लोक नायकं
स्वनुर्धरं सुसायकम् ॥ वसुन्धरेन्द्र
इन्द्र देव वृन्द विष्णु नारदा। उ
पेन्द्रनाभिजाऽब्जजात धात शेष
सारदा ॥ गिरीन्द्रनन्दिनीसुकन्त
बन्दते खड़े खड़े। गुहा मझारि
योगि वृन्द ध्यावते बड़े बड़े ॥
अयोध्यिकान्तिकी नदी तटे विहार
कारिणम्। दुरापपाप हारणं न-
मामि दैत्य मारणम् ॥ सुधा सर
स्टे सुराम नाम सार भूषिते।

सुरामा नाम छादिनी तरीस्तती पियूषिनी ॥ सदा अनन्द मग्न नाम पीयूषम्पिवास्म्यऽहम्। विदेश धीश कान्यका रमापतिन्नमाम्यऽहम् ॥

दो०। यह सौम्यस्तुति राम की परम रम्य अभिराम। बिरचा श्रीधर बाल द्विज रामभक्त जनकाम ॥

—०—

समस्या।

१ सुख के दिन सांचु भए सपने से ॥

२ प्रतिबिम्ब विभाव सु कैसो भयो ॥

३ दिग्गज दिसान में थिरकत्विक् कटचान में ॥

४ भारत मझार कौन अधिक दुखारी री ॥

नई रोशनी का विष।

पहिले अङ्क के आगे से

भानु (दौड़कर सत्यानन्द से Hush Hush it is my father

सत्या—yours who.

भानु—My father.

सत्या—The devil it is.

भानु—(सत्या—से safe (सत्यानन्द को विश्वमित्र से मिलता हुआ) बाबू सत्यानन्द राय—हमारे बड़े मेहरबान—थोड़े दिनों से कलकत्ते से यारिस्टरी शुरू किया है।

विश्व—(स्वगत) बारिस्टर क्यों न हो बेशक इस मकान का मालिक यही है।

सत्या—(बनावट के साथ धीरे से बोलता हुआ) आप—किसी काम—से आये है—हमको निहायत खुशी हुगी—अगर हम आप के—मुकदमे मे कुछ—मदत कर सकें।

विश्व—नहीं साहब आप की कृपा से हमको मुकदमे का कोई काम नहीं है और ईश्वर से तो आपो लोगों के पास आवेंगे कि किसी दूसरे के—पर हां माफ कीजिये तो एक बात पूछें।

सत्या—(भानु से) लो बस अब हम तुम दोनों की सब कलई खुली जाती है Dear me; this comes of bamboozling and meddling with a hale andheasty old man लो भानु एक अच्छेदार बाँस की बहस अब आती है जो हमारे तुम्हारे दांत खिलाकार रख देगी।

भानु—(सत्या—से) Tush; never fear; (विश्व—से) हां पिता जी आप

को क्या पूछना है हम लोगों से जहां तक बन पड़ेगा जवाब देंगे।

विश्व—तुमसे नहीं बेटा (सत्या—से) आप से यही पूछना है कि आपी ने हमारे इस लड़के को यहां बुलाया है और इतनी खातिर से रक्खे हुए हैं इसका बहुत २ सा धन्यवाद आप का है।

सत्या—By no means sir there's some mistake—precisely the very reverse sir.

विश्व—(घबड़ा के भानु से) आपने क्या कहा?

सत्या—(जलदी से) हमने कहा इसके बरक्स—आपही का यह मकान है।

विश्व—हमारा कैसा?

सत्या—हमारा मतलब यह कि भानुदत्त जी का।

विश्व—यह तुम्हारा मकान है बेटा?

भानु—(सत्यानन्द से अलग) My stars? तुमने बिलकुल चौका हो पात कर रख दिया " You ill faishioned oaf? with scarcely sense enough to keep your mouth shut,,

सत्या—हां २ क्या हुआ खैरीयत तो है?

भानु—(सत्यानन्द से) अब इस जून हम आप से सब क्या कहने बैठें? तुम आप बूझ कर बेवकूफ बनते हो।

सत्या—[भानु से मुखातिब होकर] अच्छा हम समझे मगर हम आप से हजारों बार माफी मांगते हैं—हमारे मुंह से निकल गया—मगर आप घबड़ाइये मत हम बात को बात में सब दुरुस्त किये देते हैं—[विश्व से] जनाब जब मैंने कहा कि यह मकान भानुदत्त का है तो शायद आप मेरा मतलब समझे नहीं!

विश्व—नहीं—

सत्या—मेरा मतलब यह था कि हम लोग इसमें रहते हैं।

विश्व—आप लोग इसी में रहते हैं?

सत्या—जी हां हमने और भानुदत्त जी ने इसे किराये पर लिया है।

विश्व—हां तो यह कहिये समझे तो।

भानु—जी हां!

विश्व—पर बेटा जरा यह तो खियाल करो कि इतनी बड़ी कोठी आप लोगों ने लिया है तो इसका किराया भी बहुत होगा—सिवाय यह मकान अंगरेजी ढौल का बना है तब तो इसके रखने में बड़ा खर्च पड़ता होगा?

भानु—कुछ नहीं पिता जी बहुत ही कम!

विश्व—यह कैसा ?

सत्या—शहर के बाहर न है यह मकान और शहर के बाहर आप जानिये किराया कुछ नहीं होता—क्योंकि यहां इन मकानों को कौन पूछता है।

विश्व—शहर के बाहर किराया कुछ नहीं होता ? खैर।

भानु—और हम लोग शहर की हुल्लड़ से बच बेखटके यहां पढ़ लिख सके हैं—हमारे दोस्त बारिस्टर साहब से देहात में रहने की तारीफ सुनते तो फिर आप हमको शहर में रहने को सलाह दो न देते—पर अपनी भाषा बोलने का जरा उनको कम अभ्यास है अंगरेजी ही का दिन रात चर्चा रहता है इस लिये आप के सामने जो खोलकर नहीं बोल सके।

विश्व—कुछ चिन्ता नहीं बोलो तुम तर्जुमा कर देना।

भानु—[सत्या मन्द से]Now for a lecture in set phrases.

सत्या—(begins) First see how undisturbed we are here?

भानु—[अपने आप से तर्जुमा करता हुआ] यहां न कुत्ते का खटका न किसी का गम—कैसे आराम से पढ़ना लिखना हो सक्ता है।

सत्या—No friends to call no visit to pay

भानु—न कोई आता है न हमको किसी के यहां जाना है।

सत्या। And then the open air, the open sky, the sunny mornings—

भानु—(सत्या—से) थोड़ा २ (विश्वमित्र से) और बाहर की हवा में यह फायदा है कि क्या कहना—शाम को रोज बाहर दो तीन कोस की हवा खा आना और कैसी चमकती हुई सुबह यहां होती है न धुआं है—न गैस है कलकत्ते की तरह।

सत्या—Lycurgus

भानु—लाइकरगस—

सत्या—Cicero—Demosthenes.

भानु—सिसिरो—डिमास्थनीज—

सत्या—All the eminent laywers of ancient times were in the habit of

भानु—जितने पुराने जमाने के बड़े २ वकील थे सबों को यही आदत थी—

सत्या—of pursuing their studies extramuras.

भानु—कि शहर के बाहर जाकर पढ़ा करते थे—(सत्या से) Thank you for this extramuros.

सत्या—Oh? this villa is the place in the world for studying law in—

भानु—हमारे बारिस्टर साहब को सरासर यही राय है कि अहाता भर से एक यही जगह बहुत उमदा कानून पढ़ने के वास्ते मालूम होती है।

शिव—(तङ्ग आकर) खैर तुम लोगों को इतना आराम है और थोड़े से खर्च मे यह मकान मिल गया है तो—

सत्या—और क्या ऐसा न होता तो आप के लड़के के साझे मे हम क्यों मकान लेते—?

शिव—बहुत अच्छा आप लोग सुख से रहिये—यदि यह बात है बेटा तो हम को एक बात सूझी है—

भानु—वह क्या पिता जी?

शिव—अब आज रात भी हो चली है हमारा इरादा होता है कि रात भर यहीं ही रहें — आज विश्राम कर कल सुबह को घर जांयगे — जरा सरला से भी इस बात को पूछ लें (कुंज की ओर जाता है)

भानु—न मालूम हमारे पिता जी पर आज क्या शैतान सवार है।

सत्या—अब एक लेकचर आप को भी दें—क्यों साहब आपने कितने आदमियों को आज शाम की जियाफत मे बुलाया है?

भानु—हम देखते हैं तो सारा खेल भण्ड हुआ चाहता है।

सत्या—अभी तो हम भी पूछते हैं जिस प्रमदा को आपने आंसा दिया था है? By the bye मालूम हमको याद है कि प्रमदा भी इसी वक्त आती होगी।

भानु—तुम बड़े कट्टर आदमी हो तुम मे जरा भी रहम का नाम नहीं है सत्यानन्द।

सत्या—"तारक चन्द आप भी जरूर आइयेगा" कीजिये अब क्या बखान दे और बन्दा ले।

भानु—"काय बेदर्दी कोई तापे किसी का घर जले" सत्यानन्द सब मसखरापन इसी जून के लिये उठा रक्खा था?

सत्या—आप तारक चन्द की तरफ से बेखौफ रहिये आप ने उनको रिटर्न टिकट दे दिया है अभी आते होंगे आप के पिता जी की और उनकी मुलाकात को भी आप नहीं भाग्य का संयोग समझिये।

भानु—बस अब बहुत तङ्ग मत करो हम दिल्लगी नहीं करते देखो हमारे ५००) पर पानी फिर जायगा जो आज की जियाफत मे खर्च होंगे।

सत्या—इसी अफसोस मे तो मेरी जान निकल रही है।

भानु—यार तुम अपना पुराना माटो भूल गये क्या—"इत्तू कुभांदरादेयैस्तदधी नाहि विषयः"—तारक चन्द से रुपया

दिखाने से आपकी सहायता करने का फल हो वा जो थोड़ी फजीहती हुई।

सखा - " माले हराम बूदबाईहराम रफ़्त " खैर २ आपको तुमक मिजाजों को भी बलिहारी है जो नौ दाम के वास्ते इतना झगड़ा मचे कि अपनी और पराई जान एक कर डाला।

आन - अच्छा आपही बड़े उदार मन के हैं तो एकाग्र चित्त हो इसको कुछ उपाय सोचिये।

सखा उहु उपाय! अरे चुटकी बजाने मो इसको फिकिर होती है आप तमाशा भर देखते रहिये वह देखिये आप के पिता जी जिन पर आप अभी कही चुके हैं शैतान सवार है कुछ की ओर से आ रहे हैं (चुटकी बजाते जाता है) अहनू जलाल तू आई बला को टाल तू - अक्ष तू जलाल तू - इत्यादि।

आन - भाई गाने क्या हो जल्दी बताओ क्या करें?

सखा - (दुआ मांगने की भी चेष्टा कर) अहनू जलाल तू आई बला को टाल तू [उठकर] सुनिए आइये हम आप दोनो मिल आपके पिता के सामने कान में धीरे २ कुछ बात चीत करैं - अभी तो उनको शक पैदा होता है और फिर हम आप सैतान मार लेंगे।

विशु० - (आकर) हां बेटा तुम्हें भी बहुत सरला जी इसको बहुत पसन्द है कि आज रातभर हम लोग यहीं रहैंगे - बड़े खुशी की बात है बेटा कि आज यह अवसर मिला कि रात भर हम दोनो एक साथ रहेंगे।

आन - [स्वगत] कैसे हम इन दोनों को दूर करें?

(सखा० इशारा करता है और दोनों कानाफूसी करते हैं)

विशु - अच्छा बेटा तो अब यह पक्का समझा कि हम लोग रात यहीं बितावैंगे कुछ बड़ा तरद्दुद मत करो - जो कुछ रूखा सूखा तय्यार होगा हम खालेंगे!

सखा [स्वगत] तय्यार तो कुछ २ आमने हैं कि आपने क्या आपके बाबा ने भी ख्वाब में भी कभी न देखी होगी मगर आप के वास्ते सब हराम है आप तो अभी पुराने खेयालात के कीचड़ में फंसे हुए हैं [फिर दोनों कुछ कान में बात चीत करते हैं]

विशु - बेटा तुम बारिस्टर साहेब से क्या धीरे २ कह रहे हो?

आन - कुछ नहीं पिता जी - सिर्फ यह कि— (रुक जाता है)

विष्णु – हां बेटा क्या ?

भानु – हम यह कहते थे पिता जी कि-

(रुक जाता है)

विष्णु – हां बेटा कह डालो – क्या कह ते हैं ? – कुछ हमारे आने से तुम्हारा हरज तो नहीं हुआ ?

भानु – नहीं पिता जी हरज कुछ नहीं हम यही कहा चाहते थे पिता जी कि (सत्या से) come, come, quick ; a word of help.

सत्या – भानुदत्त जी का मतलब है कि पहिले से उम्मेद नहीं थी कि आपके दर्शन होंगे इस लिये हम लोगों ने ते कर रक्खा था कि [रुक जाता है]

विष्णु – नहीं मालुम आप लोग साफ २ हाल क्यों नहीं कहते – क्या सोच २ कर हिचकिचाते हैं ? कहीं जाना है आप लोगों का ?

सत्या – [दृढ़ मन से] हाल यह है कि यहां से थोड़ी दूर पर वकीलों और बारिस्टरों का एक क्लब है – वहां अक्सर मीटिङ्गज् हुआ करती हैं और कानून के बातों पर बहस भी होती है – आप जा निये कि खाली किताब चाट लेने से आदमी को बहुत कम लाभ होगा जब तक कि वह बहस करने को भी शक्ति न हासिल करे – हम तो उस क्लब में बहुत दिनों से जाते हैं और भी कलकत्ते के बड़े २ बारिस्टर सब वहां आते हैं – तो हमने यह सोचा कि भानुदत्त जी को भी उसका मेम्बर करा देते तो यह बड़ा फाय दा उठाते – यही सोच कर आज सात बजे वहां जाने को हम लोगों ने ते कर रक्खा था – मगर चूंकि आज आप आगये इस लिये भानुदत्त जी को किसी दूसरी मीटिंग में वहां ले जायंगे।

विष्णु – (निहायत खुश होकर) नहीं साहब नहीं यह कैसे हो सकता है आप लोग ज़रूर जाइये वहां – सो काम छोड़ कर जाइये (स्वगत) धन्य भाग्य हमारे ! बड़े २ बारिस्टर वहां आते हैं ! अब भानु ने भी ऐसे आदमियों से राह रस्म पैदा किया – यह खबर हम जाकर उसकी मां से कहेंगे तो उसको कितनी खुशी होगी – बड़े २ बारिस्टर ! !

सत्या – ज्यादा तरद्दुद इसी का होता है कि आज ही पहिला मरतबा था जो भानुदत्त जी वहां जाते – मगर (निहायत नरम जोशी से) पिता की खातिर से बढ़ कर संसार में कौन सुख है आप यहीं रहिये आज हम अकेले वहां जाते हैं उन लोगों से कह देंगे कि भानुदत्त जी कुछ

काम में फंस गये थाओ न थाऊँगें।

बिश्न - वाह साहेब ! पढ़ने लिखने की बात में यह ढीलापन ठीक नहीं हैं आप लोग हमारा खेयाल कुछ मत कीजिये (भानु से) क्यों बेटा इसी बात के वास्ते तुम पत्रा छिपकिपाते थे - वाह ! ऐसी बात को तो तुमको बेधड़क दिल खोल कर कहना चाहिये था (पीठ ठोंककर) जरूर जाओ बेटा और बड़े २ बारिस्टरों के सामने बोलो।

सत्या (बढ़ावा देता हुआ) सच है छोटों को आप ऐसे स्याम सिविल आदमी न समझेंगे तो कौन समझेगा ? (बिश्नु० भानु० का मुह देखता है)

भानु (बिश्न के कान में) हमारे बारिस्टर साहेब आप से नेहायत प्रसन्न हुए कि आपने हमको क्लब में जाने की इजाजत दे दिया -

बिश्न - वाह बेटा अगर हमारे आने से तुम्हारे काम में हरज हुआ तो फिर क्या रह गया ? और फिर बड़े २ बारिस्टरों के सामने बोलना यह कैसे टल सका है।

भानु - मगर हमको बड़ा ही दुख: है पिता जी कि दो वर्ष के बाद आप से मुलाकात भी हुई तो ऐसा अंडेस लग गया कि अच्छी तरह न मिल सके।

बिश्नु - खैर कुछ हर्ज नहीं बेटा—जब तुम्हारी छुट्टी होगी तब मन मानता घर में आकर रह लेना।

भानु - हां जब छुट्टी होगी तब तो दिन रात हम आपही लोगों के साथ रहेंगे।

बिश्नु - खैर बेटा तुम अब जा बड़े २ बारिस्टरों के पास जाओ और हम भी घर जाते हैं।

सत्या - (स्वगत) रसीदा बूद बलाए बलैव खैर गुजश्त।

बिश्नु - (भानु से) अच्छा तो हम जाय सरला से भी कहैं कि चलने के लिये तैयार रहै [कुंज की ओर गया]

[बाहर गाड़ी के आनेका सा शब्द]

भानु - [घबड़ा के सत्या नन्द से] यह तो प्रमदा की गाड़ी मालूम होती है एक आफत से छुटकारा न हुआ था कि दूसरी का सामना हुआ - तवे से उड़े और चूल्हे मे गिरे - सत्या नन्द ! सत्या नन्द जलदी जाओ प्रमदा को वहीं रोके रहो हम पिता जी को विदा करलें तो लेकर आना।

सत्या - अभी जाकर रोकते हैं - (जाना चाहता है)

भानु - Too late ? too late ? I am

undone now.

हे हे ! यह तो आ होगई अब ईश्वर ही के हाथ निबाह है।

समदा का प्रवेश— क्रमशः —

भाग्यवान कौन हैं ?

भाग्यवान पुलिस है भाग्यवान दोगले किरानी हैं भाग्यवान राजा शिवप्रसाद हैं अथवा ए॰ सि ऐड तक उपाधि धारी अंगरेजों की खुशामदी हैं भाग्यवान उर्दू बीबी हैं॰ भाग्यवान् मुसलमान हैं भाग्यवान ऐंगलोइंडियन हैं डिफन्स एसोसिएशन है भाग्यवान नीग्रो लोग हैं भाग्यवान कलकत्ते की ट्रैमवे है भाग्यवान इङ्गलिशमैन और पायोनियर साहब हैं भाग्यवान् मैनचेस्टर की जुलाहे हैं भाग्यवान शेफील्ड के लुहार हैं भाग्यवान कलकत्ते की प्रदर्शिनी के अधिष्ठाता मिस्टर जूबर्ट हैं भाग्यवान इलाहाबाद के कुंजड़े कसाई और कलाल हैं भाग्यवान् गुडमैन काइगिस्टहाल है या सौदागरों में लायल साहब हैं भाग्यवान सिविलियन हैं विलायत के बारिस्टर हैं भाग्यवान् हंटर साहब हैं भाग्यवान इन दिनों सेक्रेटेरियट के क्लार्क हैं भाग्यवान नई रोशनी वाले युवक हैं म्योर कालेज के विद्यार्थी हैं भाग्यवान साहब लोगों के खानसामे और चमारिन आया हैं॰ संप्रदाय प्रवर्तकों में भाग्यवान गोकुल के गोसांई हैं ब्राह्मणों में भाग्यवान तीर्थ के पण्डे या कुलपूज्य पुरोहित हैं पढ़ लिख अक्षो चाल क्यों चलें हम चाहो कमही अवारा और नष्ट होय जमाना हमे छोड़ किसी दूसरे को पूजैहीगा नहीं--सर्वस्व गटक कर बैठ रहने वालों में भाग्यवान हमारे सहोदर कुन्दनारायण हैं जिनके सर्वग्रास ने राहु के सर्वग्रास को भी मात कर दिया—इलाहाबाद की चौक में भाग्यवान सिंह जी हैं जिनकी सदादम फरियाद एक चक्र पृथ्वी भोगने वाला का भी यह रोबन रहा होगा I am the monarch of all I survey my ri

ght there is none to dispute कहां तक गिनावें डूब कर देखते हैं तो हमें सब भाग्य वान ही भाग्यवान नज़र पड़ते हैं इन भाग्यवानों के बीच एक अभागे रहे तो हमी अकेले ।

—०—

"उड़ता खूाक सिर पर झूमता मस्ताना आता है"

ऐ मस्त जबर्दस्त अंगरेजों सम्हल बैठो मध्य एशिया में घूमता फ़तहयाबी के नशे में झूमता अफ़गानों का मुंह चूमता रूस मस्ताना बढ़ा चला आता है ; ऐ ब्रिटिश सिंह तू अब सुस्ती अलमस्ती और तङ्गदस्ती छोड़ मुक्त हस्त हो गश्त करने पर क्यों मुस्तैद नहीं होता ? हाथों का दस्ताना फेंक सिपाहियाना बाना पहन इस रूस रूपी भालू के दराज़ दहन तोड़ने में मुंह मत मोड़ क्या तुझे भी हिन्दुस्तान की आलसी हवा ने फ़ौज काहिली में डाल सिंह से गीदड़ बना दिया जो इस गरम जोशी से रूस के आने का अहवाल सुन कर भी कानों में उंगली दिए बैठा है और इस कराल व्याल के मुखान्तराल में सारे हिन्द समेत गिरा चाहता ? हे चेत चेत चेत ।

Delays are dangerous.

—

पुलिस क्या है ?

कुछ समझ में नहीं आता यह क्या बला है ? क्या जादू है ? क्या टोना है ? मिस मेरिजम है या मोहिनी रूप भगवान् की मोहन शक्ति है ; जैसा वहां भगवान मोहिनी रूप धर दैत्यों को छल दे देवताओं का छिपे २ उपकार किया उसी के बरक्स यहां भले मानुषों की रक्षा का बहाना रख दुष्ट बदमाशों का भरपूर काम सधता है—अथवा यह कानस्टेबिलों की रोज़ी है या इस महकमे के मुखियाओं की फ़ीरोज़ी है—यह पूर जुल्म सख्ती हैं या रिआया की कम बख्ती है- आली दिमाग अंगरेज़ों का फ़रोग है दुनिया का दरोग है—शहर की हिफ़ाज़त का बन्दोबस्त है

या हिन्दू और मुसलमानों के दिलों में फरक डालने का तरीका जबरदस्त है—गरीबों के गले पर चलाने का शमशेर है या हिन्द के दिनों का हेर फेर है—मुसाफिरों की हिफाजत है या रेलवे कम्पनी के इन्तिजाम की शिकायत है—चोरी करने की दवा है या चोर और जुआरियों का रतवा—है अंगरेजी सभ्यता की नाक है या इनसाफ के मुंह पर उड़ने वाली खाक है—इन्तिजाम की खूबी है या इस महकमे की सब महिमा कुंड अत्याचार में डूबी है हमेशा अमन चैन रखने का कायदा है या इसके अधिकारियों का कमाल फायदा है—रैयत रूख पर दबदबा बेल चढ़ाने की सीढ़ी है या उस रूखे सूखे को चाट डालने वाली टीड़ी है० फाइदा आम का एक वसीला है या बदमाशों के उभड़ने का हीला है० सोचते २ मन का वेग नष्ट हो गया पर यह गोरखधन्धा कुछ समझ मे न आया कि क्या है।

प्रयाग में पानी का दुर्भिक्ष।

यह नगर यद्यपि गङ्गा यमुना दो बड़ी नदियों से ३ ओर से घिरा है पर गरमियों में यहां पानी का इतना दुर्भिक्ष हो जाता है कि कई एक महल्लों के रहने वाले पानी के लिए तरसा करते हैं ; कुएं बहुधा सूख जाते हैं नदियां बस्ती से बहुत दूर पर हैं इस हालत में यहां की दरिद्र म्युनिसिपालिटी को चाहिए कि गरमी के आने पर एक बार कुएं उगरा दिया करे तो क्यों लोगों को यह क्लेश उठाना पड़े ; हम पूछते हैं हम किस बात से अपने को म्युनिसिपलिटी द्वारा उपकृत समझें क्लेश अलबत्ता इसके अबस प्रबन्ध द्वारा भोग रहे हैं जरा सा कूड़ा कहीं पड़ा हो सफाई वाले रङ्ग कर डालें इंजन का उत्तम प्रबन्ध देखिए तो खुली नालो प्राण की गाहक हो रही है बरसात में ठौर २ जो कीचड़ और किचकिहर हो जाता है उसमें चलने वालों को रौरव की रा

स्ता की बानगी मिलती है बाज़ार में गिनती की थोड़ी दूर दस पांच लालटेन लगा दी गईं बस दीपावली का धोर हो गया बस्ती के भीतर की गली कूंच० अन्धकारे महाघोरे रविर्यत्र न विद्यते। गाढ़ान्धतम मार्ग जैसा का तैसा बना है ; जल की किल्लत की तो हम गीता पढ़ी रहे हैं तो अब बतलाइये कौन सा उपकार हमारा म्यूनिसिपालिटी करैगी गली दरगली तमाम नप गईं बरसों से सुन रहे हैं पइप महल्ला महल्ला लगाया जायगा जिससे जल का क्लेश लोगों का दूर हो पर करतूत आज तक कोई देख ने में न आई० काहि को नौ मन तेल हो काहे को राधा नाचें इस दरिद्रपुर से काहे को इतना रूपया सम्पादित हो सकैगा कि एसटिमेट के अनुसार रुपया झट पट मोहैया हो जाय और अंगरेज़ी बस्ती तथा छावनी और शहर सब में एक साथ पानी का पइप जारी कर दिया जाय सच पूछिए तो अङ्गरेजी बस्तियों में यह पइप एक प्रकार की luscury ऐश की सामिग्री है यहां तो उसकी want मोहताजगी हो रही है—पर हां गङ्गा के साथ अथवा भी चाहो मिल जाय हिन्दुस्तानी नालायक जहन्नुम भी हम लायक कहां जो उन्हीं अकेले के लिए यह खर्च म्युनिसिपलिटी बरदाश्त करे० हम अपने योग्य म्युनिसिपल कमिश्नर बाबू गयाप्रसाद साहब को ऐसेही ऐसे मौकों पर याद करेंगे कि चाहो चले ना पर अपने लोगों के फाइदे की बातों में लड़ते तो थे विद्यमान म्युनिसिपल मेम्बरों से तो हमें यह आशा भी नहीं है खैर बाबू चारुचन्द्र को ईश्वर दीर्घायु करे जो अब भी यहां की म्युनिसिपालिटी के जान life हैं आमदनी देखिए तो म्युनिसिपलिटी ने हम लोगों का खून चूस २ हमें अस्थि मात्र अवशिष्ट रख छोड़ा है ; जैसी कुछ गहरी चुंगी यहां लगाई जा

तो है किसी दूसरे नगर में ऐसी सख़्ती न होती होगी एक तो यह शहर किसी तरह के बनिज का केन्द्र भाग नहीं दूसरे इस तरह की कड़ी चुंगी। रोजगारियों का सब मुनाफ़ा चुङ्गीही चाट लेती है उसमे भी अब थोड़े दिनों से नए सुपरिंडंट साहब ने अपनी खैरख्वाही जताने को न जानिए क्या विष घोल दिया कि बाहर के बैपारियों के माल में चुंगी की वापिसी एक कलम बन्द हो गई तो अब रोजगारी बेचारे और भी हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहते हैं तो निश्चय हुआ जहां हाज़ों तरह की आधि व्याधि कलियुगी प्रजा के लिए हमारे शास्त्रकारों ने लिखा है उसीसे एक भयङ्कर व्याधि यह म्युनिसिपालिटी और पुलिस आदि भी है।

—०—

हैजार्णव रस।

अब की बार उसी गन्दे नाले की दुर्गन्धशाल में यह उत्तम रस तैयार किया गया है अफ़सोस नोटिस इसकी ज़रा देर से छपी नहीं तो आगरे में नौ महीने तक रुकी हुई नहर का पानी यमुना में आ गिरने से जो हैज़ा फैला था वह कभी न फैलता। यह परम प्रशस्त हैजार्णव महारस उन सब औषधियों का सार खींच बनाया गया है जिसके सबब से हैज़ा साहब हर एक घर के दरवाजे पर धन्ना देने लगते हैं; पर जब कि वे सब पदार्थ इस रसराज में एकत्र हैं तो अब हैज़ा साहब को हर एक घर पर न जाना पड़ेगा इस रस के वसीले चाहे जिस जगह और जिस वक़्त साहब मौसूफ़ से मुलाक़ात हो सक्ती है क्योंकि यह रस मिस्टर मेहतर साहब की कृपा से सारे शहर में खुली नालियों की द्वारा धारा प्रवाह बहा करता है इस सार्वजनिक कर्म के लिए हम म्युनिसिपलिटी को अन्तःकरण से धन्यवाद देते हैं और यथा अवसर बराबर उसको

प्रशंसा को अपने पत्र द्वारा जगत् में प्रख्यात किया करेंगे चिरजीवै प्रयाग की म्यु,निसिपालिटी जिन्ह कियो यह उत्तम प्रबन्ध अनहद नौबत बाजि तेरे नाम की को और सचे धन्यवादों की अन्य धुन्य ।

जरा इसे भी पढ़ते चलिये ।

वर्ष पूर्ण होने को अब दोही महीने बाकी हैं पाठक जनो को चाहिये कि अपना २ मूल्य भेज हमे सुचित्त करें क्योंकि संसार की जितनी बात सब टका मूलक हैं तो इस सूत्र के अनुसार इस पत्र का जीवन भी उसी टके ही से है टका न मिलतो कहां के हम कहां के तुम कहां की एडिटरी बिन टका टक टकायते ।

॥ प्राप्ति ॥

श्री बाबू हरिश्चन्द्र कृत नारदीय भक्ति सूचका वृहद् भाष्य हिन्दी भाषा मे—यह ग्रन्थ एक बार हरिश्चन्द्र चन्द्रिका मे छप भी चुका है और भक्तिमार्ग का तो एक मात्र पोषक है इसका "माटो" सिद्धान्तही यह है – भक्तात्वनन्य यात्र भ्यो हरिरन्यत् विडम्बनम्" खड्ग विलास प्रेस बांकी पुर मे छपा है मूल्य १)

English Hiddi Primer

थर्ड मास्टर गवर्नमेंट हाई स्कूल फर्रुखाबाद पंडीन दयाल शुक्ल कृत – मूल्य मै पोस्टेज ॥)

इस पुस्तक मे अंगरेज़ी शब्दों का हिन्दी अक्षरों मे पहिले ठीक २ उच्चारण लिख तब माने दिये है अंगरेजी मे उच्चारण एक बड़ी भारी बात है लड़कों का उच्चारण जो अपलि ही से दुरुस्त रहै तो आगे को उनके पढ़ने मे उच्चारण की गलती कभी नहो इस लिये यह प्रइमर बड़ी प्रयोजनीय है ।

मूल्य अग्रिम १।/) पश्चात ४।/)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Pablisued by Pt. Balkrishna Bhatt, Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ लो को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st July, 1884. | प्रयाग आषाढ़ शुक्ल ६ सं० १९४१
Vol. VII.] [No. 11. | जि० ७ [संख्या ११

प्रतिष्ठा।

प्रतिष्ठा स्थिति माहात्म्येः।

हमारे यहां प्रतिष्ठा शब्द का दो अर्थ है एक स्थिति अर्थात् किसी प्राणी या स्थावर का बना रहना दूसरा उसका माहत्म्य अर्थात् बड़ापन; पहले अर्थ में यह शब्द आज कल बहुत कम बरता जाता है केवल ऐसे स्थान में आता है जैसा प्राण प्रतिष्ठा या मन्दिर की प्रतिष्ठा परन्तु दूसरे अर्थ का वर्ताव अभी कुछ २ या

की है ; इस बात को हम लज्जा
के साथ प्रगट करते हैं कि अस
ली प्रतिष्ठा हमारे देश की पृथ्वी
राज और जैचन्द के साथही सा
थ रसातल को चली गई अथवा
उन दोनों की आपस की फूट म
हायज्ञ की डाह अग्नि मे जल
कर स्वाहा हो गई ; बची बचाई
अब तक उसी फूट की बेल के
सीचने में काम आती रही ; बूंद
दो बूंद प्रतिष्ठा का पय जहां तहां
ब्राह्मणों मे रह गया था सो गर्ग
गौतम शांडिल्य भारद्वाज कुल के
मैल लंठ राजों के हाड़ मात्र में
अब आ बसा जिन्मे प्रतिष्ठा का
मूल विद्या गुण या सुचरित की
सुबास का लेश भी चाहो न हो
हाड़ की उत्तमता समझ जाति
अभिमान से जी भर अपने को
काम न गिनैंगे ; पढ़ैं लिखैं क्यों
क्या सुआ मैना हैं ? ४ रुपए की
प्यादगीरी करते तलुए की खाल
उड़ गई दिन भर पंखा खींचते २
पखौरा रह गया गर्ग की प्रतिष्ठा
गांठ में बंधीही रही " लाखो

ऐसानर । धीरसबचौंटहलूखर" ॥
हमारे देश में प्रतिष्ठा के सार भो
क्ता ब्राह्मण उनकी यह दुर्गति है
अब रहे और लोग सो अपना
जातीय गौरव nationality
गवांय विदेशी प्रतिष्ठा की मृग तृ
ष्णा में भटकते फिरते हैं सच है
"—अपना भरम गवांय के बात
न पूछै कोय " । बड़े २ शूर
सामन्त साधारण कलट्टर कमिश
नरों का मुंह जोहा करते हैं जो
बहुधा विलायत के छोटे दरजे के
लोग कंपिटीशन की बदौलत ह-
मारे सिरताज बना कर भेजे जा
ते हैं ; जरा सा दर्बार में कुरसी
मिली या इवनिंगपार्टी में बुला
वा हुआ फूल उठे सात पुरखा
मानो स्वर्ग पहुंचे॰ हम जब तक
इस दास्य भाव सनी प्रतिष्ठा को
लात मार चकनाचूर करने में
दृढ़ न होंगे तब तक ऐसेही काठ
की पुतली और छोटे २ हाकिमों
के खेल खिलौना बनेही रहैंगे ;
पुराना आर्य जातीय गौरव उड़
जाने से प्रतिष्ठा को हमने फूट

रस में सौंद काले पानी के निकट खार सागर मे बहा दिया ; चीनी कपास नील आदि कच्चे बाने में मिलाय इसका भी विलायतवालों के साथ एकसपोर्ट कर इम्पोर्ट में उनसे मान हानि पदाघात दास्य भाव अकर्मण्यता आदि ले रहे हैं ; याद रक्खो स्वत्वाभिमान के रूप में यह प्रतिष्ठा बड़ी चीज़ है जहां के लोगों में इसकी पहचान नहीं वे सर्वस्व खो बैठते हैं जैसा हम खो बैठे ; जो इस्को पहचानते हैं वे हज़ार हज़ार यतन कर इसे रखते हैं प्राण जाय इसे नहीं जाने देते जैसा अंगरेज महाशय हाल की इलबर्टबिल इसका दृष्टान्त है; यह वह बिजली है जिस्की भड़क दिल ही में जगमगाती हैं ; वह तोप है जिसके आगे सारी दुनियां का cannonading सिर्फ चूहे की चुचुआहट है ; इसको वह दम क है जिसके सामने सूर्य और चन्द्रमा की चमक हेच है इसमे वह गाम्भीर्य है कि अथाह महासागर की गहराई गोष्पद मात्र है हिमालय की उंचाई और महत्व इसके मुकाबिले की भर है कहां तक गिनावें मनुष्य के जीवन में यह सार पदार्थ है जो इसे रखने जानते हैं उनको यह मणि मुक्ता के हार से भी दूनी द्युति देती है और जो इसे खो बैठते हैं वे काहू के नहीं होते ॥

—०—

हम लोगों में काल का ज्ञान

सूर्य चन्द्रमा के उदय अस्त के साथही साथ समय उड़ा जाता है और यह सब को मालूम है कि गया वख्त फिर हाथ आता तो भी हमारे देश में वख्त की कुछ कदर नहीं है जैसा चाहिए वैसा ठीक २ इसे काम में लावें तो स्वार्थ परमार्थ दोनो बनै ; बहुधा लोगों को शिकायत रहती है आदमी अपनी थोड़ी सी जिन्दगी में क्या २ करे पर ऐसा कहने वाले जान पड़ता हैं कभी बुद्धि को काम में नहीं लाए विचार कर देखो तो

ऐसे बहुत कम आदमी मिलेंगे जिनके जीवन का संपूर्ण समय कभी बे काम नहीं गया ; जितना समय हमारा हाथ पर हाथ रक्खे व्यर्थ निकल जाता है, अथवा निकम्मी दिल्लगियों में बीत जाता है वही यदि सोच समझ अच्छी तरह समय के काम में बांट दिया जाय तो कितना लाभ हो पर इसका होना तो तब सम्भव था कि समय का खयाल न करना यह बड़ा भारी दोष हमारे में से अलग कर लिया जाता ; यहां तो यह भी मालूम नहीं कि ८ पहर में कितना समय हमारे मामूली काम खाने पीने सोने से बच रहता है ; कितने लोग खास कर अमीरों में ऐसे भी हैं कि उनका नित्य का काम उस ८ पहर में पूरा नहीं होता तो दूसरे दिन का कुछ भाग उन्हे लेना पड़ता है तब पहले दिन का उनका नित्य कर्म पूरा पड़ता है मानो उनके राजा होने की यही बड़ी शोभा है कि सवेरे का कृत्य सांझ को और सायं संध्या ४ बजे के तड़के दूसरे दिन ; बलिहारी जाइए ऐसी रजाई और उनके अभागे जीवन को जिनको २४ घण्टे में खाने पीने सोने ही से छुट्टी नहीं मिलती ; ऐसों से हम क्या आशा करें कि कोई बेहूदी अपने गिह से दीर्घ जीवन में कर देखावेंगे बरन कितनों को जिन्दगी की जिन्दगी इसी तरह निपट गई और सब काम बाकी रह गये ; मिनिट और सेकंड क्या है इसको कदर तो हम जानतेही नहीं सवेरा तभी जब मक्खियां मुह मे आने जाने लगें गलियों में गुलशोर मचै और सूर्य देव की खर तर किरने शरीर को बेधने लगें. सवेरा हमारे यहां १० बजे तक समझा जाता है और दो पहर १२ बजे के बाद शुरू होता है ; खोज कर देखिए तो हम लोगों में १००में कुल ५ ऐसे निकलेंगे जिनको समय का कुछ ज्ञान है ; सुशिक्षा के जहां बहुत से गुण हैं उनमे काल का ज्ञान

भी एक है इस कारण सर्व साधारण में पूर्ण विद्या का अभाव ही इस इसका हेतु कहेंगे ; हमारे यहां की निर्विद्य मण्डली का कुछ विचित्र ढंग है निर्विद्य से हमारा तात्पर्य रोजगार पेशे वालों से है जिनमें बहुधा सिवा दो प्रकार की सृष्टि के तीसरे का कहीं दर्शन भी न पाओगे ; एक वे हैं जिनको जगत् की विविध चातुरी इनसानीयत या मनुष्य जीवन का साफल्य जिन २ बातों से है किसी से कुछ सरोकार नहीं सवेरे से १२ बजे रात तक बैल से रोजगार में जुते, काम के मैले, नाम के मैले, तन के मैले, मन के मैले, खयाल के मैले, स्वभाव के मैले, बात के मैले, क्या कहना मैला पन रग २ रोम में चुभ रहा है सब सुख से वंचित रह हर तरह की बेइमानी कर रुपया जमा करेंगे पर रुपया किस लिए जमा किया जाता है इसके तत्व को बिलकुल नहीं जानते ; इस सब की सुझाने वाली आंखि विद्या से उसका लेश नहीं सिवा मुड़िया हरफ़ के तब किस भांति ऊंचे खयाल उन्हें सूझें ; ईश्वर ऐसे निरर्थक जीवन मलिन संस्कार वालों के संपर्क से हमें बचाए रहे ऐसों की हवा तक हमारे पास न आवे ; यह तस्वीर यहां हमने इस लिए उतारी कि हमारे पढ़ने वालों को प्रगट हो कि हमारे देश की जनता का अधिकांश इसी समझ के हैं ; माना कि इन्हों ने अपने समय को व्यर्थ न जाने दिया तो इससे लाभ क्या ? ८ पहर ६४ घड़ी में कभी एक घड़ी भी तो उनका मन धनोपार्जन वाले नीचे खयाल से हट किसी ऊंचे खयाल की ओर रुजू नहीं होता तब समय का अच्छा बर्ताव इसे हम क्यों कर कहें "व्यापारे वसते लक्ष्मी" इस सिद्धान्त के अनुसार प्रजा के बीच रुपया थोड़ा बहुत इन्हीं लोगों के पास पाया जाता है जिनकी यह दशा है ; आप जानिए यह अंगरेजी राज्य जिस ढर्रे पर

टुलक रहा है उसे बोध होता है कि इस राज्य में जो काम किया जाय सब में आदि से अन्त तक रुपए की आवश्यकता है बल्कि हमें तो कुछ ऐसा जान पड़ता है कि बिन रुपया हम एक कदम भी नहीं रख सकते तब देश की भलाई पुकार २ व्यर्थ की टांय २ से कान टुखाने वाले इन दिनों के नीम पागलों की हिमाकत नहीं तो क्या है? हमी अच्छे जो सब ओर से मन मार चुप ही बैठ रहे जब बहुत उफान आई और न रहा गया तब लेखनी से कहा थोड़ा सा रेंक उठी तबियत ठेकाने आगई उस असह वेदना से तो बचे हुए हैं कि कूंके स्वांग सब लावें पर मेंड की जगह दुम दबाय किनारे बैठें; अब दूसरी सृष्टि वालों का काज्जल सदृश कृष्ण चरित्र सुनाय हम अपने पाठकों के मन में घिन नहीं उपजाया चाहते इससे इस दुख रोने को यहांही समाप्त करते हैं पर इतना जताए देते हैं कि वे भी इसी पहली सृष्टि की एक शाखा हैं नई आजादगी का साथ पाय उनसे दूनी दौड़ तक दौड़े हुए हैं।

—०—

नमो धर्माय महते ॥

गत अङ्क मे हम लिख आये हैं कि प्रायः सबी धर्मों मे हमे अच्छी २ बातें विदित होती हैं पहले इसके कि कुछ अधिक व्याख्यान इसका करें सुविज्ञ पाठकों को जता देना चाहिये कि धर्म विषयक लेख का हमारा यह दूसरा खण्ड क्या है; ? पहले खण्ड मे यह दिखाया गया कि हर एक मजहब की थोड़ी सी बन्धी हुई बातें हैं जिनके अनुसार उस मजहब पर चलने वालों को चलनाही चाहिये और यही कारण है कि एक धर्म की बात दूसरे से बिल्कुल नही मिलती यद्यपि Comparative philosphers and philogers विविध भाषा विद दार्शनिक मण्डली ने इन दिनों ग्रीक रोमन और इस्कैंडिनेवियन आदि mythology को हिंदू धर्म के उस भाग से जिसमे देवी देवताओं का सब हाल है बहुत मिलाया है—तो फिर इस्से क्या? यहतो निश्चित ही है कि Primitive stages आदिम अवस्थाए हर

एक मजहब को एक दूसरे से मिलायें तो ऐसी मिलेंगी कि आप चकित हो जांयगी वजह इसकी हमें यही मालूम होती है कि मनुष्य जाति को First in stinct पहले पहल की साधारण बुद्धि और प्रत्येक देश की जनता nationality से कुछ सम्बन्ध नहीं है; साधारण बुद्धि instinct मनुष्य मात्र की एक है पर ज्यों २ पृथ्वी पर मनुष्य जाति का विस्तार होता गया उसी एक साधारण बुद्धि से भिन्न २ अवस्था में रहने वाले लोगों ने जुदी २ तरह की देव माला को कल्पित कर ली हैं और वे मिलती इस कारण से हैं कि मुख्य in stinct साधारण बुद्धि अर्थात् The deification of the Mighty किसी अद्भुत और चमत्कारी पदार्थ को देवता मान लेना सब में एकही है और फिर कौन सी ऐसी पृथ्वी या देश है जहां आकाश नहीं वायु नहीं जल नहीं सूर्य चन्द्रमा तारे गण आदि प्राकृति के प्रभुत्व प्रगट करने वाले भौतिक पदार्थ न हों वरन ये पदार्थ सब ठौर एक से हैं तब इन्हीं के सहारे से इन्द्र वरुण ऊषा अदिती आदि देवी देवताओं की देव माला जो कल्पित हुई है क्यों न सब देश वालों की एक सी हो; इस सब के कहने का आशय यह है कि अगर हमारे शब्द शास्त्र Philology के अनुसार हिंदू धर्म की देव माला अर्थात् वह भाग जिसमें भिन्न २ देवताओं का नाम करण और उनकी स्तुति या पूजन आदि लिखी है दूसरे मजहबों से मिली भी तो कोई हानि की बात नहीं है और हमने जो धर्म का पहला खण्ड कायम किया है उसमें कुछ विघ्न नहीं पड़ सका; खैर अब धर्म के दूसरे खण्ड को खयाल करना चाहिये जिसका लक्षण हम यों करते हैं The insistance which every religion lays upon ordinary virtues and the importance of them which it vindicates—अर्थात् हर एक मजहबों में सत्यादिक धर्माचरण की पद्धति पर चलने की जो ताकीद और अपने नित्य के वर्ताव में उन उत्तम आचरणों पर चलने का जो लाभ पाया जाता है—अब इसमें कई बातें हैं सब का प्रयोजन और २ देखाना चाहिये (१) insistance अर्थात् धर्माचरण की पद्धति पर चलने की ताकीद और importance अर्थात् उस पद्धति पर चलने की जो महिमा गाई गई है (२) Every religion अर्थात् हर एक धर्मों में जो ऊपर कही हुई बातें पाई जाती हैं —

अब ordinary virtues से हमारा उन

भली आचरणों से तात्पर्य है जो प्रति दिन मनुष्य के बर्ताव में देखे जाते हैं और जिन भलाइयों के करने के वास्ते आदिमी को दिन भर में हजारों अवसर मिलते हैं अगर केवल वह उनसे फायदा उठावे क्योंकि अवसर मिलने का लाभ ही क्या अगर मनुष्य उनको काम में न लाया; जैसे सत्य, दया, इमान्दारी, उदार भाव शान्ति, क्षमा आदि—इस अवसर पर हम पुस्तक की पुस्तक केवल इन के नामों ही से भर देते और गीता मनु और दूसरे संस्कृत ग्रंथों के असंख्य वाक्यों से उनका महत्व अच्छी तरह प्रगट कर देखलाते पर ऐसा करने की क्या आवश्यकता है—अब यह स्पष्ट है कि हमारा धर्म का यह द्वितीय खण्ड कितना सर्व्वोपकारी है और इसकी बयान और प्रशंसा में आदमी जितना कुछ न कहै वह थोड़ा है—कहावत है कि कवियों ने अगर बहुत ज़ोर किया तो यह कहते हैं कि फलाने नायका की रूप माधुरी का वर्णन शेष और शारदा भी पूरा २ नहीं कर सक्ते—यह तो केवल कवियों की अत्युक्ति मात्र है पर इन सवों के वर्णन में शेष शारदा अवश्य हार जायंगी क्योंकि संसार में अगर कोई वस्तु वास्तव में ऐसी है कि जिसको कहते २ जिह्वा थक जायगी तो इन्हीं सब धर्म्मों का शास्त्र है; बहुत लोगों का यह मत है कि धर्म सम्बन्धी बातों पर जो जितना गाल बजा सके वही बड़ा धर्म धुरन्धर संसार में समझा जायगा पर सच पूछिये तो यही एक विषय है जिसको बारीकी लोग कठिनाई से समझते हैं कभी २ तो ऐसा भी होता है कि लोग इस विषय पर लिख जांयगे और पीछे से अपने ही लिखे हुए को समझगे और माने नहीं समझ सक्ते स्कूल और पाठशालों के सैकड़ों लड़के हैं जिन्हों ने इस प्रकार के उपदेश वाक्य घोख लिये हैं जैसा Honesty is the best policy,,—"soft word hurt not the mouth,,—"Be not weary of well doing,,—"Constant dropping wears the stone,,—"Two heads are better than one,,---"If a thing be done twice all would be wise,, &c &c "सत्यान्नास्ति परोधर्मः;"—"सत्येनास्ति भयं क्वचित्"—"धर्मंश्यत्वरितागतिः"—"यतो धर्मस्ततोजयः" "योर्थे शुचिः सशुचिर्नम्रदारिशुचिः शुचिः" करत करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान"—इत्यादि—इत्यादि—पर हम

को बतलाइये तो सही इन उपदेश वाक्यों के पढ़ने वालों में से कै आदमी हैं जो इस पर पूरे २ तरह अमल किये करते हैं या स्कूल वो कालेज के बाहर भी कभी इन वाक्यों पर ध्यान दिया है ? एक लड़की को एक मास्टर ने forgiveness क्षमा पर बड़ा भारी लेक्चर दे घंटे भर तथा उसे खूब समझाया और जब समझा चुके तो अन्त में उससे पूछा कि अगर तुमको कोई लड़का मार भी दे तो उसे तुम भूल जा ने वाले को माफ न कर दोगी ? लड़का बड़े पशो पेश में आया कि मास्टर साहब यह क्या सिखला रहे हैं इस राह पर चलने से तो रोज हमारी भरपूर मरम्मत हुआ करेगी आखिर को बहुत सोच समझ उत्तर दिया "हां मास्टर साहब माफ कर देंगी अगर वह लड़का हमसे बड़ा और बल में अधिक हुआ तो" अब बतलाइये "क्षमा शक्तौ" का अर्थ उसने क्या समझा ! सत्य की बड़ाई में लोगों ने जिल्द की जिल्द पढी होगी पर दुःख का विषय है कि मनुष्य में भूल जाने की शक्ति ऐसी प्रबल है कि किताब बन्द किया और सब शिक्षा अन्तर्ध्यान हुई—इस सब से हमारा आशय यह है कि ज़बानी जमा खर्च और बात है—कागज पर पृष्ठ के पृष्ठ रङ्ग कर अपने आप के समान काला कर देना दूसरी वस्तु है—दोस्तों के साथ बैठ दून की ले २ मगज चाटना कुछ औरही है—बाजारों में वेश्याओं के कोठों के नीचे नज़र बाजी कर दरी शाह का दावा करना दूसरी चीज है—जो मिले उसी को पकड़ कर व्याख्यान देने लगना और झूठा नाम पैदा करना जुदी बात है—और जब काम पड़ें तब छोटे से छोटे उपदेश वाक्य proverb का न भूलना अपने रोजमर्रें के बर्ताव में उदाहरण की तरह पर कर दिखाना इन सब से भिन्न और निराली बात है जैसा आग से पानी पृथक और निराला है—स्कूल और क्लबों में अकसर कमेटियां हुआ करती हैं आज फलाने Benevolence सर्वं जन हितेच्छा पर लेक्चर देंगे—आज अमुक महाशय Charity सार्वजनिक प्रेम पर कुछ कहेंगे—आज फलाने साहिब honesty ईमानदारी क्या चीज है इसे समझावेंगे और इन बातों पर अक्सर बहस भी हुआ करती है गोकि इन बातों में दो राय कैसे हो सक्ती है यह हमारी समझ में नहीं आता।

अब एक बात यहां पर सोचना चाहिये तो क्या मनुष्य धर्म सम्बन्धी बातों का

चर्चा ही कभी न करें इन विषयों पर कभी मुंह न खोलें रुस्तम बना बैठा रहे जब काम पड़े तब कर दिखलावे—हम समझते हैं सब से अच्छा रास्ता तो यही है—मगर फिर यह तो बतलाइये अपने लड़कों को आप सिखलाइयेगा क्या? क्या हाथी की सूंड़ और शेर के पंजे ही पर मदर्सों की तालीम का खातिमा है नहीं साहब पूर्वोक्त विषयों पर मुंह खोलने की भी ज़रूरत है—बहुतों को उसी से लाभ है ऐसा कोई नहीं है जिसे कुछ शिक्षा की आवश्यकता न हो सब, के सिखलाने वाले संसार में पड़े हैं और धर्म पद्धति पर चलने वाले मानो एक सीढ़ी पर हैं कोई किसी डंडे पर है कोई किसी डंडे पर मगर जो सब के नीचे हैं उनकी क्या दशा होगी यदि उनको कुछ भी शिक्षा न मिलेगी; जैसा मनुष्य का शरीर आरोग्य रहने को Physicalexercise कसरत अवश्य है जैसा मन के लिए Intellectual cultnre बुद्धि को उत्तेजन करने वाले विषय आवश्यक हैं वैसा ही आत्मा के सुख के लिये धर्म सम्बन्धी शिक्षा की आवश्यकता है; अब इस जगह पर हमारे दो लफ़्ज़ों insistance और importance " अर्थात धर्माचरण की पद्धति पर चलने की ताकीद और उस्से जो लाभ है " पर ख़याल कीजिये शायद insistance " धर्म पद्धति पर चलने की ताकीद " कड़ा लफ़्ज़ है क्योंकि ऐसी बातों में ज़ोर और जबरदस्ती तो होही नहीं सकती—आप किसी को धर्म का उपदेश ज़बरदस्ती देने लगे वह कहता है हम नहीं चलते आप की राह पर हम पाप ही में पड़े रहेंगे तब क्या कीजियेगा ख़ैर इसे जाने दीजिये natural law प्राकृतिक नियम का कोई department विभाग चाहो physical आधि दैहिक mental मानसिक चाहो spiritual आध्यात्मिक हो एक ज़र्रा भी तो आदमी तोड़ या अस्त व्यस्त नहीं कर सक्ता जो जैसा करता है वह वैसा फल पाता है जैसा पहला खण्ड धर्म का compulsory अवश्य करणीय और limited केवल दो ही चार बातों से हो जाता है वैसा ही यह दूसरा खण्ड optional स्वेच्छाग्राह्य wide and universal वृहत और सार्वत्रिक है इस दूसरे खण्ड की सब बातें यावज्जीव मनुष्य के साथ रहती हैं क्योंकि क्या बन्ध, प्रेम सहानुभूति दया आदि गुण आप जानवरों में पाइयेगा? हमारे खण्ड की पहिली बातें जैसी संध्या ध्यानादि अपनी ही आत्मा के

सुख और अन्त: करण के शुद्धि के निमित्त हैं पर इस दूसरे खण्ड की बातें सर्व्व जनोपकारी हैं हमने ऊपर दो तीन बातें सूचित कर दिया है कि जितना इन सब धर्म्मों से मनुष्य जाति का उपकार हो सक्ता है और किसी तरह नहीं हो सक्ता और संसार में यह भी देखने में आता है कि मनुष्य इस असिधारा वृत्ति पर चलना स्वीकार नहीं करते किन्तु उलटेही रास्ते पर चलते हैं और यह विषय ऐसा है कि इस्से ज़ोर कुछ काम ही नहीं कर सक्ता तो अब यह बतलाइये कि धर्म्म वह हो कैसा जो लोगों को सीधी राह पर लाय सकै?—यहां पर हम को वह खुर्रांट utilitarian doctrine "the greatest good of the greatest number,, याद आई अर्थात उस मध्यम क्रम से चलना चाहिये कि जिस से लोगों का जहां तक हो सकै सब से ज्यादा फ़ायदा हो तो—आशय यह है कि मज़हवी कायदा ऐसा होना चाहिये कि जो अच्छी राह पर चलने से हिचकिचाते हैं वे निकल भी न जाने पावै और जो उस राह पर आ चुके हैं उनपर बोझ भी नहो और नए २ लोग उस्में आते जांय और पुराने लोगों को उस्में दृढ़ रहने का सहारा मिलै इसी लिये हम ने insistance ताकीद का लफ्ज़ इस्तै माल किया है कि मजहब ऐसा हो कि कुछ तो धर्म्म की राह पर चलने को लोगों को उस्कावे और बुरी राह से रोकै—और हमने यह भी ऊपर कहा कि यह बातें सब धर्म्मों every religion में पाई जाती हैं इस्का हाल दूसरे नम्बर में लिखेंगे—

—o—

॥ "नई रोशनी का विष" की बाबत एक दो बात॥

इस बात के देखने से हमको बड़ा ही हर्ष हुआ कि हमारे हिन्दुस्तानी भाई भी अब इंन्द्रसभा और मीर हसन की [illegible] वी छोड़ ऐसे २ असल नाटकों मे भी चित्त देने लगे और नाटकों के द्वारा समाज का कुछ संशोधन और उपकार हो इस ओर झुके; ईश्वर करे उनकी तबियत फेरी और जिन वाले पारसी नाटकों से हटै और इस ओर रुजू हो जिस्में भला कुछतो Moral lessons भलाई की उत्तम शिक्षा उन्हें मिलै; हम बार २ अपना हर्ष प्रगट करते हैं कि वेचारी

हिन्दी मे भी समाज संशोधन के इरादे से यार लोगों के रोज़ की बोल चाल मे ऐसी २ Living pictures सजीव तसवीरें खींची गई हैं—हमने अभी सिर्फ तीन नम्बरो मे इस नाटक को पढ़ा है हम जब तक इसे अन्त तक न देख लेंगें तब तक इसके बारे मे अपनी कतई कोई राय देना मुनासिब नहीं समझते अभी केवल इतना ही कहेंगे कि किस्सा इसका बहुत मनोरंजक और सहज है इसमे बनावट की कार्कश्य किसी तरह नही पाई जाती और न इस ढंग के नाटक हिन्दी मे अभी प्रकाशित हुए हैं-किन्तु दो एक बात इसकी हमारे समझ मे नहीं आती उनका उत्तर हमको मिले तो हम अपने को बड़ाही उप कृत समझें, एक यह कि जब एप्रिल के नम्बर मे यह नाटक आरंभ हुआतो इसको आदिमे जैसा दस्तूर है प्रथम अङ्क प्रथम गर्भाङ्क लिखाया।३नम्बरों मे यह नाटक छप चुका है और छोटे२ अक्षरों के कई सफे हो चुके हैं आगे भी अभी और होने की आशा पाई जाती है पर अबतक इसमे कहीं दृश्य "सीन" बदलीन हो गई और न यही कह सक्ते हैं कि छापने की गलती से रह गया है ; तो अब हम पूछते हैं शैतान की आंतसी इतनी बड़ी लम्बी सीन रखने मे कौनसी खूबसूरती समझी गई है! दूसरी बात यह है कि जिस भाषा मे यह नाटक लिखा गया है आप उसका क्या नाम रखियेगा ? पात्र तो इसके सब हिन्दू हैं काम और सांचा नाटक का बिल्कुल अंगरेजी यहां तक कि शुरूमे जो बयान है उस सीन के टक्कर की सब बातें बड़े इन लाइटेंड लोगों के यहां भी न पाई जांयगी और भाषा जो कोई २ पात्र इसमे बोलते है वह तो खासी चरचराती लखनऊ की उर्दू है वाह ! क्या खिचड़ी पकाई गई है और फिर आजकल बहुत से लोग जो अपने को हिन्दी का लेखक समझते हैं वे

उर्दू के शब्द कौन कहे खास फारसी और कभी२ अरबी के शब्द भर देते हैं स्वच्छ हिन्दी का ठिकाना तो दोचार बाबू हरिश्चन्द्र ऐसे आश्रयों को छोड़ और कहीं हुई नही अब आपने यह नया काम निकाला कि कठिन से कठिन अंगरेजी शब्द भी ठूसने लगे जैसा गत नम्बर मे जो extramuros का शब्द है वह हमको तो डिकशनरी से नहीं मिलता शायद नाटककार ने दिल्लगी के लिए अपने मनसे गढ़ा हो तो यह और बात है; अब बतलाइये जो यह हाल हैं तो हम पाठकों को तो इन दस जबानो की भीड़ मे बुरी दशा होगी—दुर्भाग्य हमारे जो केवल संस्कृत ही मे परिश्रम किया— अस्तु अब हम बहुत कुछ नहीं कहा चाहते आप यह भाषा का नया बीज बो रहे हैं और ऐसे नए ढंग का नाटक हिन्दी मे नहीं है तो खैर जिस ढंग पर आप इसको लिख चले हैं लिख डालिये ईश्वर इसको अन्त तक पूरा करे। एक विवेचक

नई रोशनी का विष।

पहले के आगे से।

* प्रमदा का प्रवेश।

प्रमदा—(दूरही से) छि: कैसा यह घर और इसके बड़े मजेदार मालिक का इन्तिजाम है कि दरवाजे पर एक नौकर तक नही जो आकर हमे गाड़ी पर से उतारता—कोई यह तो बतलाने वाला होता कि हां इस तरफ चलिये हमारे हुजूर मालिक मकान तो पूरे अफलातून ठहरे शायद खुद अपनी इज्जत का खयाल करके अन्दर मकान के परदा नशीनी इखतियार किये बैठे हैं (भानु आदि को बैठे देख) आप यहीं बिराजे हैं! आप खुद जब लेने आवेंगे तभी तो मैं आगे बढ़ूंगी (खड़ी हो जाती है)

सत्य—(दौड़ा हुआ आता है) बस आप यहीं खड़ी रहैं (उसका हाथ पकड़) इस वक्त जो नाच हम नचावें वही नाचि

---

* गुलाबी रंग की सोनहली साड़ी पांव में हलकी जूती गले में सतलरा जड़ाऊ हार हाथ में जड़ाऊ चूरियां कान में सोने की जैसा अन्दराजी स्त्रियां पहनती हैं बालों में मोतियों की लरी गुही हुई।

ये नहीं तो बात बिगड़ जायगी ।

प्रमदा—(उसके कन्धे में पंखी मार) वाह वे तेरे चोंचले ! जी चाहता यह नथा वे ग्रह में लाचूं !

सत्या—(उसके कन्धे पर हाथ रख) प्यारे नखरे मत करो इन सब धन्दाओं के वज़न पीछे देखे जायंगे ।

प्रमदा—(अपना हाथ छुड़ा कर) तो तुझमें शुराख नहीं है ? साफ २ नहीं कहा जाता ?

सत्या—सुनिए—(कान में कुछ कहता है और उसका हाथ पकड़े हुए आगे बढ़ता है)

(वि—मि—और सरला कुंज से निकलते हुए)

सरला—पिता जी यह स्त्री कौन है ?

वि—मि—(इधर उधर देखता हुआ) कौन बेटी ?

सरला—वह जो भैया के पास आ रही है और जिसका हाथ भैया के दोस्त पकड़े हुए हैं ।

वि—मि—हां वह ! यह स्त्री न जानिये कहां से आ गई ।

सरला—[स्वगत] यहां स्त्री भी आती है ! अजब तरह का इसका पहनावा है इसको तो इसपर कुछ शक सा होता है ।

वि—मि—हम जब यहां थे तब तक तो यह नहीं आई थी कदाचित् बारिस्टर साहब के पास कुछ काम से आई हो । (सरला) अच्छा बेटी तो तुम यहीं बैठो जब यह अपना काम कर चली जायगी तब हम तुम घर चलेंगे—तुम कुछ घबड़ाना नहीं अभी तो अंधियारा भी अच्छी तरह नहीं हुआ हम अभी आकर तुमको ले चलेंगे ।

सरला—(कुंज के बाहर लताओं की ओट में बैठ) कुछ चिन्ता नहीं पिताजी आप जाइये ।

(वि—मि—भानु की ओर धीरे २ छिप छिपाता जाता है)

सरला—(इधर उधर थोड़ा टहल) पिताजी ने कहा घबड़ाना मत ! हमको तो यहां ऐसा अच्छा लगता है कि दिन रात यहीं रहें—न जानिये क्यों अब कि बार जब से हम यहां आई हैं भैया पर बहुत क्रोध बढ़ गया है और उन्हें छोड़ने का मन नहीं होता आगे कभी ऐसा नहीं होता था—बाप को तो हमको चेत नहीं है पर उनके बाद भैया ही पर हमारा इतना प्रेम न जानिये क्यों है (मेज पर से एलबम उठा कर) आहा ! इस किताब को तो भैया बहुधा घर पर भी

भारी एक—[सत्या नन्द की ओर बड़ी दीनता से देखता है]

सत्या—इनका काम हमसे है—हमारे पास अक्सर आती हैं एक बड़ा भारी मोकद्दमा इनका अटका है।

प्रमदा—(हंसी रोकती हुई सत्या—से) देखो जी इनको बहुत बनाओ मत नहीं तो हम ऐसा बदला लेंगी कि जन्म भर पछताओगे।

वि—मि—(स्वगत यही तो हम भी समझते थे—(सत्या से—) तो यह आप की मवक्किलों में से हैं (स्वगत) जी में आता है इन से पूछूँ भानु दत्त के पास भी ऐसे २ मवक्किल आते हैं—मगर हां उसने तो अभी इमतिहानही नहीं पास किया।

सत्या—जी हां यह हमारी मवक्किल हैं (प्रमदा से) देखो अब कि कहीं टोका तो ज़बानही काटलेंगे—इस वक्त तो छिपाना जरूर है इस जून चुप रहिये पीछे सब समझा देंगे [ओरे से उसका हाथ दबाता है]

प्रमदा—(सत्या—से) बड़ी आफ़त में जान डाला तुमने—मन चाहता है की खोलकर इस बुड्ढे से बात चीत करें (वि—मि—से कुछ कहा चाहती है)

सत्या—(प्रमदा से) देखो तुझो पीछे से पछताओगी तुम्हारे ही भले के लिये कहते हैं—जो हम कहैं वही तुम भी कहते जाना।

प्रमदा—(सत्या से) बहुत अच्छा —मगर हमारे सरकार भी मुंह पर क्यों हवाइयां सी उड़ रही हैं चुपके बैठे हैं ?

प्रमदा—(वि—मि—) क्या कहूं अ नाथ आज कल बड़ जंजाल में फंसी हूं कि क्या हाल कहूं—ईश्वर शत्रु को भी ऐसी विपत्त में न छोड़े—पांव तले की चींटी को भी ऐसा दुख न होगा हा ! (सांस लेती है)

वि—मि (स्वगत) न मालूम इसे क्या दुःख है (भानु से) क्यों बेटा यह कौन हैं और इनको क्या हुआ है ?

भानु—पिता जी यह एक बड़ी भारी मगर सत्यानन्द इनका हाल खूब जानते हैं (प्रमदा की ओर इशारा कर सत्या से) आप की तारीफ़ कीजिये।

सत्या—आपरङ्गून की रानी की भती जी हैं कलकत्ते में भी आप का मकान मछुआ बजार में है मुकद्दमे की वजह आज कल आप यहां हो रहती हैं नहीं तो आप को कलकत्ते से क्या मतलब।

वि—मि—(स्वगत) सच है हम तो

पहले ही समझे कि यह कोई रानी है बड़े आदमियों की तो सूरतही नहीं छिपती।

प्रमदा। (सत्या से) भाई अब तो हम से मारे हंसी के नहीं रहा जाता। बलिहारी तुम्हारी तबियत की "रंगून की रानी की भतीजी" क्या २ फरमाइयों झूठ खटाखट गढ़ रहे हो।

सत्या। आज कल इनके घर का एक मोकद्दमा बड़ा भारी उठा है।

प्रमदा। जी हां कुछ पूछिये मत।

वि०मि। (सरल भाव से) और आप उसी वकील हैं? (स्वगत) अब भानुकी भी वकालत जम जायगी तो ऐसे बड़े २ लोग उसके भी मवक्किल होंगे!

सत्या। जी हां सब आप की मिहरबानी है वरना मैं किस लायक हूं मोकद्दमा भी जनाब ऐसा है कि हमारी कचहरी में कोई ऐसा न होगा जो इसपर रहम न खाता हो। जब आप की उमर कुल दस वर्ष की थी तब आप की शादी एक भले आदमी से हुई उस वक्त तो कुछ मालूम न हुआ पर अब बचा जी ने हाथ पाव निकाले। कमीना आप जानिये कमीना ही है चाहे जितना आपने को छिपाए।

वि मि। सच है। (प्रमदा मुंह फेर हंसती है)

सत्या। यहां तक हमारी रानी साहब को तंग किया।

प्रमदा। जी हां रोज हमको चाबुक से मारता था। (आंसू लेती है) (सत्यानन्द से) ईश्वर करे तुमको भी ऐसाही भसा भी मिले।

वि मि। राम! राम! ईश्वर ऐसों के पंजे से सब को बचावे।

सत्या। और आपजानिये चरस [illegible] तो अलग चीज है रोज झूठी २ शिकायतें कर मा बाप से भी आप को बदनाम किया।

भानु। इसी बीच में आप की मां भी मर गईं।

सत्या। (स्वगत) मा तो अभी जीती हैं पर बाप का पता नहीं कि कौन थे और क्या हुए।

प्रमदा। बस जब से हमने घर छोड़ा रोज की इस सांसत से गला छूटा। अब तो अकेले रहना बेहतर है मगर उस देव से साफ नहीं। अब जाने आप। (सं० मं० की ओर इशारा कर) लोगों की मदद से कुछ आजादी हासिल हुई।

सत्या। (स्वगत) क्यों न हो। किम् मिलोहिनि स्ववश विहारिणि (प्रकाश)

हमारी सलाह से अपने divorce के लिये दर्खास्त की है।

भानु। (स नं से) Divorce? What fun capital; capital; keep it up; keep it up

बि० मि० डबोस क्या ?

प्रमदा। Poor old man।

सत्या। डबोसं आप नहीं जानते ? तिलाक नामा। जनाब ऐसे आदमी के साथ रह जीने से मरना अच्छा है खयाल तो कीजिये कि रानी की लड़की और उसको यह बदमाश चाबुकों से पीटता है ऐसी नेक औरत के रोज पांव भी पूजे तो थोड़ी इज्जत है (स्वगत) जैसा हमारे दोस्त भानु दत्त जी करते हैं।

प्रमदा। जी हां यह भानुदत्त जी की और आप की मेहरवानी है और नहीं तो।

सत्या। (भानु से धीरे से) और नहीं तो आप को कौन पूछता इसमें कुछ संदेह नहीं।

भानु। (सं० नं० से)shut up ! shut up

सत्या। (भानु से) अच्छा २ मगर आपने तो बिल्कुल अपना मुंह छोड़ी लिया सब हमी लोगों पर छोड़ दिया शायद यह भूल गये कि Heaven helps those who help themselves.

भानु। [हिम्मत करता हुआ] तो वारिस्टर साहब आपने कौन२ सी बातों की नालिश किया ?

सत्या। बदसलूकी। हतक इज्जत। अत्याचार। इत्यादि जो दफा दो सौ नं १ में शामिल हैं।

भानु। हम समझते हैं मोकद्दमा आप जीत जांयगे और फारखती की दरखास्त आप की मंजूर होगी।

सत्या। (बि लि से) हां और क्या क्यों जनाब हैन !

बि—मि—जी हां—[स्वगत] भानु भी अब कानून की बातों में वारिस्टर साहब तक को सलाह देने लगा [प्रमदा से] रानी साहब हमको बड़ाही अफसोस है कि आप को अपने पति पर नालिश करना पड़ा—पर क्या कीजियेगा इसमें आप का क्या दोष—आप निश्चय जानिये भानु से हम अकसर आप के मोकद्दमे का हाल दरियाफत किया करेंगे।

प्रमदा—यह आप की मेहर बानी है।

सत्या—अच्छा रानी साहब जो २ कागजात हमने मांगी थे उन्हें आप लाई हैं ?

प्रमदा—कागज तो नहीं है।

सत्या । [प्रमदा से] आखिर बगैर बोले न रहा गया। औरत के अकिल की दौड़ कहां तक।

प्रमदा । [स०नं० से] हम भूल गये (प्रकाश) हमने समझा आप पूछते हैं यहां हमारे पास है कि नहीं हमने आप ने नौकर को रखने के लिए दे दिया है।

सत्या। अच्छा तो मगाइये । आइये मकान के भीतर चलें वहां अच्छी तरह से देख सकोगी [उसका हाथ पकड़ ले जाने लगता है [भानु प्रमदा को ओर देखता है सं० नं० भानु से] आप खातिर जमा रक्खें हम आप के साल मे चोरी नहीं करेंगे [प्रमदा से] चलिये रानी साहब । भानु हम २० मिनिट मे आते हैं तुम कपड़ा पहिन तैयार रहो कमेटी मे चलने का प्रमदा [बि मि से] अच्छा तो अब बन्दगी अर्ज करती हूं ।

बिम । [झुक कर बन्दगी कर] सच २ हमको आप के मुकद्दमे का हाल सुन बड़ा अचरज हुआ ।

प्रमदा । क्या कीजियेगा साहब । दुनिया के सब अलेही होते तो फिर क्या अच्छा अब जाती (प्रमदा हूं और स नं दोनो बाहर गये) [भानु और बि०मि० टहलते हुए कुंज की ओर जाते हैं]

बि०मि० क्यों बेटा तुमसे बारिस्टर साहब से कैसे दोस्ती हुई ?

भानु । कलकत्ते ही से और आज कल तो गोया दिन रात का साथ है बारिस्टरी इन दिनो हमको खूब चमकी हुई है।

बि मि । बडेही बड़े मोकद्दमे लेते हैं ।

भानु । जी हां छोटे मोकद्दमे तो छूते भी नहीं ।

बि०मि । यह रानी तो हिन्दू मालूम होती हैं तब तिलाक कैसा ।

भा० । क्या जानिये शायद उनके देश के कानून से उनको इखतैयार हो [खगत] हाय ! इस समय सत्यानन्द यहां नहीं है बरना यह मुश्किल ते हो जाती ।

सरला । [आगे आकर] आपके दोस्त सब गये भैय्या ?

भानु । हां सब गये । हमारे दोस्त क्यों वह तो बारिस्टर साहब के दोस्त थे ।

बि०मि० अच्छा तो आओ बेटा अब तुम्हारे खर्च का रुपया तुमको देते आंय शायद तुम्हारा रुपया अब सब उठ गया होगा ।

भानु । हां रुपया तो अब हमारे पास नहीं है ।

बि०मि० अच्छा तो आओ इधर [मेज

से पास जाय एक छोटी सी थैली में से रुपया निकाल गिनता है]

सरला [धीरे से] देखिये भैया पिता जी की आप से कितनी उम्मेद है आप अच्छी तरह पढ़ने में मेहनत कीजिये गा नहीं तो पिता जी को बड़ा दुःख होगा।

भानु। यह सब तुम क्यों कहती हो ?

सरला। न जानिये क्यों आज हमको यही सब सूझता है।

बि मि·। हां तो बेटा।

भा नु। [उनके पास जाता है]

बि मि·। यह ६० तुम्हारे नित्य के खर्च खर्च के लिए और इस ४० रुपये में किताबें मंगाना और जो कुछ दरकार हो हमें तुर्त लिखना।

भानु। [गदगद स्वर से] बहुत अच्छा पिता जी [स्वगत] कहां यह स्नेह कहां हमारी कुटिलता ! अब में जी चाहता है भानु पिता के पैर पर गिर सब हाल बयान कर दो मगर।

बि·मि·। (अच्छा तो अब हम जांय न बेटा ? (उसकी पीठ ठोंक) खूब मेहनत करना बेटा और जो कुछ ज़रूरत हो हमको लिखना फौरन।

भानु। बहुत अच्छा।

बि·मि·। (फिर उसकी पीठ ठोंकता है) आओ सरला चलें।

भानु। आप की गाड़ी बाहर है न ?

बि मि। हां तुम यहीं बैठो बेटा।

भानु। नहीं पिता जी।

[आगे २ बि॰मि॰। पीछे २ सरला और भानु बाहर गये]

इति प्रथमोङ्कः।

—॰—

भजनानन्द।

तुमहि बिना धृग नर अरु धृग घर।

यह संसार अमित अघ सागर तरण हेतु तुम बिन को रघुवर। यह मल मूत्र सनी नर काया बिना भजन तव नरक मलिन खर ॥ नाम मात्र तव सुगम उच्चारण सकल कलुष गण हनन प्रबल तर। माया गूढ़ गुप्तदुस्तर तव मोहित जीव जगत सचराचर ॥ जासु हृदय तव भक्ति रहित जड़ सो सम स्वान मनुज वपुधर नर। यह बिदेह तनया सह मूरति बसहु मोर मानस मन्दिर पर ॥

२ हिंडोला—झूलत भवन बीच

रघुबीर। अति सुगढ़ हिण्डोल सो इत चारु बिलसत चौर ॥ रतन जटित अनूप डांड़ी लसत रेशम डोर। लेंहि झोटा रीझि तन प्रभु कोशलेश किशोर ॥ सखा मिलि सब तान गावें परम आनन्द लें हि। कमल लोचन निरखि पुनि पुनि बिहसि झोटा दें हि ॥ सीस सोहत चौतनी कर कटक युगल अनूप। कटि बिराजत धौत पट पद पैंजनिन को जूप ॥ कर्ण कुण्डल भाल गल अरु अलक अवलि मलूक। निरखि छबि यह बालपन की भयौ श्रीधर मूक ॥

२ शरणागत जगदीश तिहारे। पापी कुटिल निपट कपटी मैं तुम अति अधम उधारन हारे ॥ पलक मात्र सुमिरन नहिं कीनौ मनतें किये बिषय नहि न्यारे। मिथ्या बचन बोलि निसि बासर तन पोषण हित यतन बिचारे ॥ इन्द्रिय राग सदा मन में धरि हरि के चरण सरोज बिसारे। इन कर सुकृत दान नहिं कीन्हो ना कोई दुखित जीव प्रति पारे ॥ इन नैनन्हु पुनि पुनि पर त्रिय पर, पर धन पर, मन सदा बिगारे। मुखतें सदा निठुर वच भाषत कबहुं न करुणा वचन उचारे ॥ पगन सदा स्वारथ में डोल्यौ पर उपकार डगहु नहिं मारे। झूंठ कपट बिन कछु न बसत उर सत इच्छा तहां पग नहि धारे ॥ समय गयौ बहु बीति भजन बिन रोम रोम पापनु ग्रसि डारे। श्रीधर को इन दृढ़ फन्दन तें तुम बिन कौन छुड़ावन हारे ॥

—०—

निम्न लिखित कवित्तों की पूर्त्ति जो महाशय करेंगे वह बड़ी कृतज्ञता के साथ उनके नाम सहित प्रकाश की जायगी:—

१ एरी सखि आज हौं भुराई रात सेज त्यागि अधिक उतावली सों आंगन में धाई री। कोइल की मीठी किलकार बार बार सुनी निमल छटा सौं छाई घटा पै जुन्हाई री। पंचम की तान कान परत ही सु ताही आन

आनन्द में आय ....

लुभाई री। त्रिविध समीर ......

.... आई री॥

२ प्यारे के अंक निसङ्क बसी प
र्यंक प्रिया मन प्रेम पगी री १
छूटि रही छुटकारी उज्यारी दुहू
नव नेह सुधा उमगी री २
.... ३
.... ४

३ हेरत निहारत मन मारत
बिताई रैन चैन ना परी री भटू
बौरी बनी ध्यान में। निठुर हि
ये की गुन मानैं न किये को एको
निपट बिसासी रहै बूड़ी अभि
मान में। परख्यौ हजार बार नि
कस्यौ छल मे अपार..............
याकी बात के प्रमान में। ललि
ता के बिसाखा ....है
है कहूं माधवी लतान में॥

४ ए नव बाल बिशाल दृगंचल
चंचल चाल तजी अलबेली। चन्द
विनिन्दक चारु कपोल पै लोलक
ज्योति छुपा जो नवेली॥ कारे महा
मतवारे से केश विशेष इन्हैं बि
थुरायो न हेली ....

हिन्दुस्तान की प्रसिद्ध अनूठी चीजें।

सब से प्रसिद्ध वस्तु हमारे देश की फूट; जात पांत की करामात आपस की जलन; अपने मतलब की खुशामद; हिमालय के चन्द्र कलासदृश ऊंचे शिखर; कश्मीर का रूप दृशालि और फल फूल; बंगालियों की भीरुता और पंजाब की बीरता और साहस; मध्य हिन्दुस्तान का आलस्य और घर में घुस रहने की आदत; शिमले की आब हवा; राजपूताने की रेत और राजपूतों का रण खेत आगरे का रौजा और गोचारण के मेले मे हिन्दू मुसल्मान का झगड़ा; मथुरा के कफन खसोटू चौबे; मेरट के गङ्गा राम जिन्हो ने मिस्टर फिशर के दांत खट्टे किये; शाहजहां पुर की रम और थैली वाली चीनी; लखनऊ के लौंडे; बम्बई की पारसी कम्पनी जिनके नष्ट नाटक ने हिन्दुस्तान के नौ जवानो को बिगाड़ने मे बजारू कसबियों को भी दबा दिया; इलाहाबाद की खु

ली नाली; बनारस के पण्डितों का इंसान डिगाने वाली व्यवस्था धूर्तता और दंभ; कश्मीरियों की खुद गर्ज़ी; महराठों का पाखण्ड कनौजियों की टिर्र इत्यादि २ ।

—०—

रोजगार नामा ।

हमारे हिन्दुस्तानी भाई व्यर्थ झीका करते हैं कि इस अंगरेजी राज्य मे रोजगार की बड़ी किल्लत है लो गिनते चलो कितने रोजगार खाली पड़े हैं तुम कर सको नहीं तो कौन चारा है; अोवल तो सब से बढ़ कर रोजगार चुंगी का है जो सब रोजगारों को निगल जाने के लिए बड़े २ दांत निकाले चुड़ैल की तरह हर एक गैल घेरे बैठी रहती है; दूसरा रोजगार खुशामद का है जिस्से लम्बे चौड़े खिताब बे मेहनत और बिना किसी तरह की योग्यता हासिल किए सहज मे मिल सक्ते हैं; रोजगार मनीआर्डर और मे बेड़ जिसने हिन्दुस्तान के हुंडी वालों की नाक काट उन्हे रसातल का पाहुना कर दिया गये साल साढे ६ करोड़ का मनी आर्डर जारी किया गया इतने पर भी इस देश के पुराने हुण्डी पुरजा वालों के पर न कटे तो बेहयाई है; फिर इन दिनों का बड़ा भारी रोजगार धन्दा है सिर्फ कही के मेनेजर या सेक्रेटरी हो जाना चाहिये खर्च एक फूटी कौड़ी का भी नहीं और हजारों गटक बैठे २ पेट पर हाथ फेरा करो "अगस्त्यं कुम्भकर्णंच भीमंच वड़वा नलं" एक रोजगार अभी प्रदर्शनी का भी हाल मे निकल पड़ा है जिस्की बदौलत सहज मे जूलर्ट सरीखे जौहरी बन गये; फिर लाटरी का रोजगार जिस्से कमती है २) खरचने से २ लाख पाते हैं; रोजगार थियेटर और सरकस जिनमें ग्राम कट चमार तक चारआने देने को तैयार हैं; रोजगार सोडा वाटर और लेमोनेड का जिस्के आगे लोग बड़े २ शरबतों को भूल गये; रोजगार एडिटरी का जरासा गांठना सीख लेने हो से हो सक्ता है सड़ा हुआ मजमून लिख एक पैसा दाम रखदो खरीदारों की कमती न रहेगी तेली मुंजवा लागी हाट ! गई बकालो लारख बाट । खैर ये रोजगार तो टकसाली है. सब के लायक नही इस लिये अब हम उन छोटे २ रोजगारों को गिनाते हैं जिनके वसीले से सर्व साधारण फायदा कमाल उठा सक्ते हैं जो गिनते चलो

रोजगार जुआ चोरी रोजगार लिड़ो बाजी रोजगार जुआ खानो मे माल बाजी रोजगार चण्डूखाना रोजगार और शिकारी इत्यादि इत्यादि कहां तक गिनावें ऐसे २ सैकड़ों रोजगार रोज नये चमकते आते हैं कोई करनेही वाला नहीं तो क्या कीजिए।

पुस्तकप्राप्ति।

भाषा चन्द्रिका।

हिन्दी भाषा का बाल व्याकरण शंभूलाल कालू राम शुक्ल कृत यह व्याकरण बहुत उत्तम परिपाटी पर लिखा गया है राजा शिव प्रसाद के नष्ट व्याकरण से कहां अच्छा है हमारे इन जिलों के स्कूलों मे जारी किया जाय तो बालकों को कितना लाभ दायक हो मूल्य =) इन्दोर स्कूल के हिन्दी अंगरेजी मास्टर पं—शंभूलाल कालूराम शुक्ल के पास मिलेगा।

विद्यामुकुल और काश्मीरकीर्ति।

उचितवक्ता पत्र के सम्पादक पं॰ दुर्गाप्रसाद मिश्र कर्तृक पहली पुस्तक अर्थात् विद्यामुकुल बालकों का संसार के भिन्न २ पदार्थों का ज्ञान बढ़ाने के लिए बड़ीही उत्तम है राजा शिवप्रसाद का विद्यांकुर इसके आगे कुछ भी नहीं है दाम इसका केवल १ आना; इतना कम दाम न जानिए किस अभिप्राय से रक्खा गया है पुस्तक उत्तम है पर दूसरी पुस्तक काश्मीर कीर्ति खुशामद के मूल पर लिखी गई है इसमें हमारी श्रद्धा इसपर कम होती है अन्त का एक पेज जिसमें ग्रंथकार ने बहुतही भद्दी तरह प्रशंसा प्रगट की है निकाल लिया जाय तो यह भी काश्मीर का एक छोटा सा उत्तम इतिहास हो सक्ता है।

अग्रिम ३।/) पश्चात् ४।/)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathak and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt, Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ लो को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Agst, 1884. Vol. VII.] [No. 12.

प्रयाग सावन शुक्ल ८ सं० १८४१ जि० ७ [संख्या १२

॥ मनुष्य की ४ अवस्थाएं ॥

प्रायः सब देश के विद्वानो ने मनुष्य की ४ अवस्था अथवा मनुष्य के जीवन के ४ मुख्य भाग निश्चय किये हैं; प्रथम बाल्य या पौगण्ड १६ वर्ष पर्यन्त द्वितीय कैशोर २५ तक तृतीय तारुण्य ४० तक उपरान्त वार्द्धक्य या पलित मरण पर्यन्त; इनमे प्रथम अर्थात बाल्य अवस्था मे क्रीड़ा या खेलकूद सबको सोहाता है जैसी उमङ्ग खेलकी ओर एक राजा के कुंवर को होती है उतनी ही वरन उससे भी अधिक दरिद्र से दरिद्र एक खेतिहर के बालक मे भी पाई जाती है अर्थात् खेलकी ओर चित्तकी झुकावट स्वभाव ही से बालक

आयकी रहती है अब रहा खेल खिलौनो की वस्तुओं का सम्पादन सो मा बाप की शक्ति के अनुसार हो सक्ता है एक बालक को जो वस्तु खेलके लिये लभ्य है वह दूसरे को नहीं ; खेलही पर क्या सेकड़ों बातें बालकों को एक दूसरे से मिलती हैं जैसा infant बाल दशा मे जब स्पष्ट अक्षर उच्चारण की शक्ति उन्हें नहीं रहती तो भूख प्यास जताने को केवल रुदन मात्र सब बालक काम मे लाते हैं इसी से बुद्धिमानो ने निश्चय किया है—"बालानां रोदनं बलं" अब इन बालकों की कच्ची समझ आप जिस सांचे मे ढालिये उसी मे सहज ही ढलती चलेगी जिस रंग मे रंगिये वही रंग बिना प्रयास उस पर चढ़ता चलेगा जो बोली बुलाइये वही बोल बोलने लगेगा जो बात कहिये उसी को सरल भावसे सच मान उस पर पूरा विश्वास कर लेगा चोरी सिखाइये बापसे बढ़कर चोर होगा नाचना सिखाइये तुर्त सिखलेगा ज्यों २ अवस्था बढ़ती जायगी त्यों २ बीज रूप वह सीखी बातें दृढ़ होती जायगी ; नटों को अपने मुंह से कहते सुना है कि वे अपने लड़कों को दो या ढाई वर्ष की उमर मे ही नट की विद्या का आरंभ करा देते हैं--रेत मे दूर मे फेंक देना या ऊपर को उछालना बाहों को पीठ की ओर मोड़ देना आदि सब इसी कच्ची उमर मे अभ्यसित कराने लगते हैं—मल्लाह लोग भी अपने बालकों को जल मे तैरना या डुबकी मारना आदि का अभ्यास बाल पनेही से कराने लगते हैं—और यही पन हमारी समझ मे सुखका भी कहना चाहिये अत्यन्त भिखारी के बालक को भी इस अवस्थामें किसी प्रकारका सोच वा क्लेश नहीं होता क्योंकि संसार के झगड़ों से विमुख रहना ही सुख है सो सिवा इस अवस्था के साधारण सांसारिक मनुष्यों को कभी प्राप्त हो नहीं सक्ता—साधारण सांसारिक मनुष्यों मे हम उनको गिनती नहीं करते जो योगाभ्यास द्वारा ब्रह्मानन्द के सुख मे लीन हो गये हैं—उनके अतिरिक्त व्यक्ति मात्र साधारण जन हैं—तो हम यही निश्चय करते हैं कि मनुष्य की आयुका परम पुनीत और परम सुखी भाग इसी १० वर्ष की उमर तक है उपरान्त पौगण्ड अवस्था का आरंभ होता है जिसके साथही साथ आशा अभिलाषा ईर्षा द्रोह मान अपमान को समझ का अंश वेग मन मे होने लगता है ; पहले का सा सरल भाव दिन२ अन्तर्हित होने

लगता है मनुष्य में रूप रंग चढ़ने का भी यही समय है १६ वर्ष पहुंचते २ पूरा सलोना पन आजाता है इसी को कैशोर अवस्था कहते हैं; इस उमर में यदि मनुष्य का वीर्य्य किसी प्रकार स्खलित नहीं तो शेष भाग बड़े आनन्द से कटता है न कोई रोग सताता है न जन्म पर्य्यन्त पराक्रम घटता है; इस अवस्था में बुद्धि बल पौरुष कान्ति सब का उपचय होता है रेख भीगने की सायही साथ सलोना पन बढ़ता जाता है; हमारे देश में बाल्य विवाह की कुरीति ऐसा घुन है जो इस बीड़े को उमड़ने ही नहीं देता और और जो समय हमारे उपचय और बढ़ती का उसे कच्चा वीर्य्य मन्था नाश से सिवाय वर्षही कुमहीने से चुसके आम से पीले पड़ गीठी मात्र रह जाते हैं आंखों के नीचे बड़े २ गड्ढे पड़ जाते हैं उठते बैठते तावर आने लगती कमर झुक गई गाल चुचक गया—इस अवस्था में जो कुछ हुनर विद्या उद्यम व्यवसाय रोजगार पेशा मनुष्य सीखा चाहे सब सीख सक्ता है—इसी उमर का नाम गदह पचीसी है इसमें जो आदतें आदमी की कुसङ्गति के कारण पड़ जाती हैं वह बधाइ छुटये नहीं छूटतीं; इस अवस्था में मनुष्य जो कुछ सीख लेता है और जिस ढर्रे पर ढुलक जाता है उसी पर उसका शेष जीवन निर्भर रहता है; सच पूछिये तो यह उमर आदमी की जिन्दगी में बड़ी ही नाजुक होती है इसमें इसके बुरे और भयंकर परिणामों से भली भांत सावद्ध न रहना चाहिये इसमें सैकड़ों बातें ऐसी हुआ करती हैं जिनमें फंस मनुष्य के जीवन का शेष भाग व्यर्थ ही हो जाती है बल्कि जिन्दगी ही अकारथ हो जाता है—इसी अवस्था से रूप और सौन्दर्य अपने पूरे उत्कर्ष को पहुंचता है मन से मनोज की तरंगें बड़े वेग से उठते हैं चरबी और त्वचा की मजबूती पित्त हृदय का गौरव और गांभीर्य सब इसी अवस्था में प्राप्त होते हैं; इस उमर में पूर्ण विवेक न रहने से उतावली और जोश में प्राय कार्य्य अकार्य्य मनुष्य अटपट कर गुजरता है निर्भयता और self reliance आत्म निर्भरता इसी अवस्था का धर्म है जिसके द्वारा अनेक प्रकार की क्षमता प्राप्त होती है अतएव इस अवस्था में वीर्य्य को रोकना परम लाभ का हेतु है; अब २५ के उपरान्त तारुण्य या युवा अवस्था प्रारम्भ होती है ४० या ४५ तक इसकी परमावधि है यह पन केवल

सांसारिक कार्य्यों के लिये रक्खा गया है इसमें जितने सांसारिक सुख हैं उनके भोगने की वासना सभों के हृदय में दृढ़तर हो जाती है जिस प्रकार विद्या अनुशीलन सङ्कोच क्षुब्धता आदि मानसिक या शारीरिक उन्नति का काल कैशोर है उसी प्रकार तारुण्य धन यश परोपकार सन्तान आदि के उत्पादन के लिये है—वरन यहां तक कह सक्ते हैं कि आदमी की तबियत की भली बुरी जैसी झुकावट होती है उसका परिपाक इसी अवस्था में प्रगट होता है सन्तान अर्थात अपने सदृश व्यक्ति की उत्पत्ति जो स्त्री पुरुष के परस्पर सम्मेलन से होती है उसी तरह है जैसे इतर सृष्ट पदार्थ वृक्ष आदि में फलकी उत्पत्ति ; इस उमर में मनुष्य को विषय वासना संसारिक वस्तुओं की कामना सङ्कल्प विकल्प मद मात्सर्य ईर्षा द्रोह जलन डाह आदि अनेक मानसिक शत्रु आकर घेर लेते हैं ; यदि किशोर अवस्था उचित रीति से बर्ती गई तो हो मनुष्य इन ऊपर कहे भेड़ियों से अपनेको बड़ी सफाई के साथ बचा कर सिवा सुख के ढेर के और कुछ अपने आगे नहीं देखता—पर यदि लड़कपन निरे खेल कूद में व्यर्थ बीता हो अथवा अविवेकी अल्हड़ों की बुरी सोहबत में केवल गटह पचीसी की सामिग्री ही एकत्र करने में समाप्त हुआ हो तो इस जवानी की उमर में अवश्य मनुष्य की हृदय की आंखें भरपूर खुलजाती हैं और अपनी स्थिति का भार अपने माथे आ जाता है अपनी पहिले की असावधानता को याद कर २ रोता और पछताता है और अपने जीवन को व्यर्थ का बोझ पृथ्वी पर समझ ज्यों त्यों कालक्षेप करता है ; इसमें कुछ सन्देह नहीं यह समझ हर एक आदमी में नहीं आती क्योंकि चोर जुआरी बटमार आदि मनुष्यों की मण्डली को कभी किसी तरह का पछतावा नहीं आता पर हमरा प्रयोजन उस समाज के लोगों से है जिनमें औसत दरजे की समझदारी पुश्तहा पुश्त चली आई है; इस अवस्था में यावत् देशोपकारी बातों का अनुष्ठान हो सक्ता है मनुष्य नई २ ईजाद कर सक्ता है वरन नवीन यूरोप की सुसभ्यता के सब सामान इसी अवस्थाके फल हैं संक्षेप में यह कि यह भाग मनुष्य के जीवन का बहुत ही काम का है—चढ़ती जवानी के जोश में बड़े २ काम सहज और थोड़ी मेहनत से हो सक्ते हैं—नई जवानी नया जोश नई उमर नवीन उत्साह सब नयाही

नया पुराना कुछ नहीं—यह वह समय है जिसमें जो कुछ करते हैं किसी से तृप्त नहीं होती—भोग विलास जितना करते हैं मन नहीं अघता वरन चौगुनी लालसा बढ़ती जाती है—धनोपार्जन यशोपार्जन विद्योपार्जन किसी से तृप्ति नहीं होती सदा यही इच्छा बनी रहती है कि थोड़ा और होता; आज एक काम हो जाने पर मन मारे आनन्द के मोर सा नाचने लगता है और ऐसा जान पड़ता है मानो स्वर्ग सुख भी तुच्छ है वही उसका न के बिगड़ जानें पर मनमें ऐसी उदासी छा जाती है कि सकल संसार असार और फीका प्रतीत होता है—सारांश अन्तको यही सिद्धान्त मन में आता है की यह यौवन सुख केवल अदम्य लालसा का आधार स्तंभ है इस अस्थिर यौवन और इसके सुख पर घमण्ड करना केवल मूर्खता और नासमझी है—इसके उपरान्त बुढ़ापा आता है जिसमें यहां तक शिथिलता आ जाती है कि जिसे याद कर हमारी लेखिनी भी इस समय शिथिल हो वार्द्धक्य को आगामी अङ्क के लिये छोड़ दिया।

योधर—

साहब लोगों की मुलाकात।

हमको यद्यपि अपने हुजूर लोगों की यहां बन्दगी कर आने के और मौके २ पर अपनी भक्ति प्रगट करने के बहुतेरे अवसर मिलते रहते हैं पर इन बातों में अपनी तबियत लगती नहीं न इसी हमको कुछ सुख मिलता है इसलिये यह खिदमत हम से आज तक अदा न हुई और न बंगलों के इर्द गिर्द लक्का कबूतर की भांत कावा मारने या बैरा खानसामों से दोस्ती पैदा करने का आनन्द ही प्राप्त हुआ पर हां हाल में हमारे मित्रों में से एक साहब अपनी मेहनत और लियाकत से इस शहर में बड़े उच्च पद पर पहुंच गये हैं और चूंकि जरा तेज तबियत और अंगरेजी मिजाज के आदमी हैं इस लिये नौकरी होते ही उन्होंने शहर की गन्दी बस्ती में रहने को लात मार कोसों शहर से दूर नदी के किनारे एक बंगला किराये पर लिया है। आप को कदाचित यह बात न मालूम हो कि अंगरेजी बंगलों के भी नाम होते हैं अगर बड़ी २ कोठियां हुईं तो क्यासिल या हाउस कहलाती हैं पर जो छोटे झोपड़े खपड़ैल के छाये हुए तो काटेज या लाज की पदवी पाते हैं; खैर

हमारे मित्र जी ने जो बंगला लिया उस्का नाम ग्रीन काटेज यानी "सब्ज़ झोपड़ी" है इस नाम की वजह हम को दो मालूम होती है एक तो शायद सब्ज़ इस वजह से कि घास फूस से छाई है पर यह बात कुछ ठीक नहीं सब्ज़ उस्का नाम इस लिये पड़ा कि यह रहने वालों को सब्ज़ बाग दिखलाती है क्योंकि किराया उस्का १६ को साल है (अंगरेजी मकानों के किराये साल भर के लिये ते होते हैं) और मकान कितना बड़ा होगा सो तो झोपड़ी के नाम ही से स्पष्ट है; हमारे मित्र जी हमपर बड़ी दया दृष्टि रखते हैं और बहुत सज्जन पुरुष हैं सच तो यों है कि यद्यपि अङ्गरेजी वज़ा की सब बातें उन्में है पर ईश्वर की कृपा से मिजाज में अंगरेजी रुखापन अभी तक नहीं घुसने पाया आगे को ईश्वर जाने क्या हो; खैर एकदिन उन्हों ने हमारी ज़ियाफत किया और बड़े चाओ से हमें बुला भेजा उनका पत्र खत आया मज़मून उस्का यह था कि "अगर शाम को आप हमारेही घर आकर खाना खांयगे तो हमको बड़ी खुशी होगी" और शायद दिल्लगी के तौर पर यह भी लिख दिया था कि कृपा करके ज़रा ठीक समय पर पहुंचने की कोशिश कीजियेगा! खैर कारण पीछे लिखेंगे मगर पहुंचने में तो हमको देर होही गई हमको पीछे से मालूम हुआ कि इस्में हमारे मित्र का बड़ा नुकसान हुआ। हमारे यहां जब ठाकुर जी का भोग लगता है तब घंटा बजता है उन लोगों के यहां खाने के वक्त बुलाने को घंटी बजती है कदाचित् उस्का यह मतलब है कि अगर आप समय पर पहुंच गये तो खैर आपके वास्ते कुर्सी खालीही होगी और अगर आप को देर हो गई तो सच मुच आप के वास्ते घंटा हो है और जिन पैरों आप गये थे उन्ही पैरों वापिसही आते बन पड़ेगा। यह सब बातें तब होती हैं जब ज़ियादा लोगों का जम घटा रहता है मगर हमारी ज़ियाफत तो हमारे मित्र जी ने अकेले किया था इसी हमको ऊपर लिखी हुई खातिर दारियों का सामना न हुआ। मगर हां शुरू से आप से हाल कहें। पहले तो आप जानिये वह मकान शहर से इतनी दूर है कि रोज आदमियों की कौन कहे शायद रात को चोर भी उधर को मुंह न करता होगा इस लिये एक फायदा तो अंगरेजी कोठी लेने का यह

हुआ। फिर अब यह हाल है तो बसलाइ से पैदल चलने का खयाल कौन करेगा। गाड़ी छोड़ हमारे यहां सात पुरखों से भी किसी जन्म था ही नहीं अब रह गई किराये की चीज़। गाड़ी का भाड़ा दरयाफ्त किया तो पहले उसने यह पूछा आप वहां कितनी देर ठहरेंगे हमने समझा दोस्त के घर जाते हैं न जानिये बात चीत में कितनी देर हो इस लिये दो तीन घंटेका उससे वादा किया। मगर आने जाने और वहां रहने का कुल ४) सिर्फ उसने मांगा चार रुपयेका नाम सुन मेरे तो कान खड़े हो। आये चट एक्का कर वहां से टट्टू आगे बढ़ाये। न तो अपने को यहां हैसीयत बढ़ानेका घमंड है और न वह दोस्त ऐसे हैं कि उनके यहां भड़कीला बन कर धूमधाम से जाने की ज़रूरत है इस लिये एक्के ही की सवारी मुनासिब समझा। किसी तरह वहां पहुचे। एक्के किस तेजी और आसानी से चलते हैं यह भी आप खूब समझते होंगे। मगर चूंकि हमारे घोड़े साहब को घास दाना खाये कुछ मोअह्री चार रोज़ हुए थे इस लिये सिर्फ आधही घंटे की देर हुई। अब अंधेरा भी हो गया था वहां की सुन सान निराली scenary दृश्य भूमि का हाल न पूछिये ऐसी अकेली जगह में रहने को लोग भी कुछ तारीफ करें पर हम को तो ऐसा मालूम हुआ कि यदि हमको यहां एक अठवारा भी रहना पड़े तो खासा पागलपन नहीं तो खफकान हो जाने में तो कुछ शबही नहीं है और फिर अकेले ही के सदर मकान की सैर करना पड़े। मगर कौन हैं और लोगों की तबियत है। अब उस अन्धियारे में गलती यह हुई कि जिस दरवाजे से हमको मकान में जाना था लिये था उसको तो छोड़ दिया और न जानिये मकान के किस ओर जा निकले अगर गाड़ी पर आये होते तो ठीक दरवाजे पर जा लगते पर हमने चालाकी क्या किया कि जब अपना घोड़ी भी दूर रह गया तो चट एक्के पर से कूद कर गोड़ से पहुंच अपनी कुदरती सहसपरिमाण अर्थात् हम दोनो पैरों को जोड़ी को हांक दिया और न जानिये कहां जा निकले इसी से यह गलती हुई ख्याल कीजिये अगर हिन्दुस्तानी किते का मकान हो तो पता भी लगे कि यह सदर दरवाजा है इन अंगरेज़ी बंगलों में जिधर देखिये दरवाजे ही दरवाजे मकान क्या है यह

द की मक्खियों का छत्ता है । खैर अब हम गिरते पड़ते एक दरवाजे से घुसे तो गये । देखे यह तो बावरची खाना था । जहां बड़े २ शेख़ सद्दार पगड़ी बांधे किसी खास तरह की गोश्त पकाने के मसाले तैयार कर रहे थे । मालूम हुआ कि कोठी दूसरी ओर है बाहर निकले तो पूछने से जाना कि जिस फाटक से आना था उससे न आये इस लिये बे जगह जा फंसे । खैर उधर ही को मुड़े एक आदमी उधर से आता था उससे पूछा कि किधर जांय ? उसने कहा मै तो दर्जी हूं शाम हुई काम से फ़ुरसत पाय अब घर को जाता हूं यह कह कर चल भी दिया । हमने समझा साहब लोगों की कोठी मे बंधा हुआ कारखाना रहता है जो काम जिस नौकर के सिपुर्द हो वही करै दूसरे काम की ओर आंख उठा कर देखे तो दोनो आंख फोड़ दी जांय इस लिये शायद मियां दरजी को यह मनशा नहींथा कि बतलाते कि दरवाजा किधर है । आगे बढ़े तो एक दूसरे आदमी जुलुफ़ से सुफ़ेद दाढ़ी लिए अंगा पायजामा पहने निकले उनसे चाहा कि कुछ पूछें पर वह ऐसी तेजी के साथ उसी बावरची खानेमे घुस गये कि हम हक्का बक्का से रह

गये हो रह गये कुछ कहते न बनपड़ा अब हम खोज मे हुए कि पहले उस आदमी को ढूढें जिससे यह पूछ सकें कि सरकार साहब किधर हैं । खैर हमने मन मे यही सोचा आओ बंगले के चारी ओर प्रदक्षिणा कर आवें आपही पता लग जायगा हनूमान जी ने कदाचित् इतने अचरज के साथ लंका की परिक्रमा न किया होगा जैसा हमने उस कोठी की परिक्रमा किया खैर घूमते २ दूर से देखा कि पंखा चल रहा है और हमारे दोस्त साहब कुरसी पर बिराजे हैं इतना भी उस समय हमको सूझा कि जहां कोठी रखने और अंगरेजीयत मे बहुत से मजे हैं वहां एक यह भी है कि गरमी से गरमी मे भी डबल कोट पतलून डाटे रहना पड़ता है और यह भी मनमे तरंगा उठी कि जो लोग बंगलों मे रहते हैं और साहब बहादुर होने का दम भरते होंगे उनमे ठंडे मुल्क की तासीर भी आ जाती होगी यह सब बातें हमारी आप की शुद्ध बुद्धि मे नहीं आने योग्य हैं इस लिये इसपर अधिक विचार मत कीजिये । ज्यों ही हमने भीतर जाने का इरादा किया त्योंही दो बड़े २ कुत्तों ने आय दामन पकड़ा; शायद इन कुत्तों का यह मतलब

था कि वे दरियाफ़्त किया चाहते थे कि तुम्हारे पास कार्ड है या नहीं क्योंकि सामने से एक पगड़ी वाले नमूदार हुए उन्होंने भी यही पूछा उनकी पोशाक देख मैं अचरज में आय सोचने लगा अङ्गरेज़ों के नोकर भी हम से अधिक ठाठ से रहते हैं; " कार्ड " वह चीज़ है कि जो एक आदमी जब दूसरे से मुलाक़ात को जाता है तब उसके पास उसे भेजता है जिसमें उसका नाम लिखा रहता है—मगर चूंकी हमको ऐसी बड़ी इज़्ज़त और प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले मुकाम किसी बाल या पार्टी में जाने का कभी इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ था—और बैठे बैठाये क्यों जाने लगे क्या कुत्ते ने थोड़े ही काटा था। इसलिए अंगरेज़ी तर्ज़ की मुलाक़ात का औज़ार यह चीज़ हमारे पास नहीं इसका कभी नाम तक न सुना था सिर्फ़ एतना जानते थे कि कार्ड के माने खेलने का ताश हैं या चिट्ठी लिखने का पोस्ट कार्ड भी अब एक निकला है पर हां अब इरादा है कि कल्ही एक पांच सौ कार्ड छपवा डालें और जिसके यहां जाया करें उसके हाथ में पहले एक कार्ड दे तब बात चीत शुरू करें क्योंकि " महाजनो येन गतः सपंथा " जो अपने से बड़े लोग करें उसे खुद भी करना चाहिये। खैर हमने उस खानसामा से कहा (शायद खानसामा इन लोगों का इसलिये नाम पड़ता है कि खाने का सामान करते हैं पर यह बात गौर तलब है) कार्ड तो हमारे पास नहीं है तब उसने कहा फिर कैसे आपके आने की इत्तिला करूं आय० बन्दा इसीसे तेज तबियत मशहूर है जल्द मैंने उसको अपनी छड़ी दे दी और कहा इसको ले जाओ और अपने सरकार से कहो जिनको आपने यह छड़ी नज़र दी थी वह खड़े हैं और उन को आपने आज शामको बुलाया भी था। पहले तो वह हिचकिचाया बारे कुछ सोंच सांच लेगया। हाल सुनतेही हमारे मित्र जी खुद दौड़ आये क्योंकि अभी तक वे बेचारे बड़े सरल सभाव के आदमी थे और खानसामा को हमको रोकने के वास्ते बहुत सा डांटा और दोनो कुर्सी को एक ओर मुझे दूसरी तरफ करके भीतर गये।

बाकी फिर

एक मुलाकाती।

॥ समस्या पूर्ति ॥

पं—पुत्तोलाल तिवारी कृत ।

सवैया

अङ्क बसी सि कलङ्क लगो तेहि मेटन हेतु हुताश चयो । धसी सोय जबै कर जोरि सबै तहां कौतुक एक भयो है नयो ॥ पद यावक हारसो ज्वाल हिये शुभ चीर कुसुंभी दिखात छयो । न दह्यो तनु नेक पतिव्रत सो प्रति बिम्ब बिभाव सुकेसो भयो ॥

कवित्त

पोखौं जन प्रान दुग्ध पानको कराऊं नित पूत्रन ज्यों प्रेम बश पालत महतारी री । दधि घृत नवनीत खाय होत हैं बलिष्ट शूर अच्छ सच्छ गेरैन पै करत सवारी री ॥ ताहूपै यवन कुचाली ये क्रतघ्न सदा द्वेष बश गर्दन पै फेरत कटारी री । पूछत गोहन्द सुनो भारत महारानी और भारत स-भार कौन अधिक दुखारी री ॥

सवैया

प्रीति करी हठि मोहन सों निज जाति की कान्ह सदा अपने सी । सहि लाखन ही अपमान भटू कुलकानि गवांई अजान पनेसी । हरि प्रीतिकी रीति न नेको लखी कुबिजा सों रमे न डरे अपने सी । मन की मन मे सब बात रही सुखके दिन सांचु भये सपने सी ॥ ३ ॥

ब॰ लाइटप्रेस केदारनाथ शर्मा ।

स्वकीया स्वाधीन प्रोषितपतिका

सवैया

नेक सँदेस लिखैं ना कभूं बरु पाती पठाई कई अपने सी । मालती को जिमि चाहै अली तिमि चाहि बिमोह भयो छपने सी । कै कोउ दार केदार मिली रससंपुट बद कियो ढपने सी । मैं मार की मार सहौं रजनी सुख के दिन सांच भयो सपने सी ॥

प्रौढ़ा खण्डिता नायका

सवैया।

कज्जल रेख कपोल लसे अधरानन पीक की लीक छयो। दोउ आंखिन मौं अरुनाई महा अँगिरान सरीर निवास लयो॥ पटपीत केदार कहां बदले किन को गर मानिक माल दयो। टुक आरसी लै मुख देखो हहा प्रति बिम्ब विनाथ सुकैसो भयो।२।

विधवा वियोगिनी नायका

कवित्त

सातएं बरस में व्याह करि दीन्हो होत तरुण अवस्था पिय सुरपुर सिधारी री। गाज परै ऐसे बाल व्याह की प्रणाली पर समुझै नहीं पूर्व वर्षे बालिका विचारी री॥ ईश्वरचन्द्र काशीनाथ पुन विवाह हेत दीन्हे धर्मशास्त्र के प्रमाण लिखि भारी री॥ मो सम केदार मन रञ्जक विचारो अब भारत मझार कौन अधिक दुखारी री॥

हिन्दी की आर्तनाद।

गोजर की टँगरी समान उरदू है तऊ इज्जत लहत छूजलाश मांहि भारी री। जाकी नुख्त पढ़ने में मूक बनि जात केते थोखेबस लब्ज मुख बांधत विचारी री॥ नागरी हरूफ सीधे लिखे पढ़े जात भले हिन्द में केदार सब जानैं नर नारी री। ताहि को प्रचार न अभागी हिन्दी से अब भारत मझार कौन अधिक दुखारी री॥

—,—

धन्यवाद के साथ पूर्व अङ्क के कवियों की पूर्ति नीचे प्रकाशित करते हैं।

बा—हरिश्चन्द्र कुल श्रेष्ठ।

कवित्त (१) घरो सखि०...... आनन्द मैं आय रोम रोम हौं लुभाई री। त्रिविध समीर तन मन को हरत घोर मानो मैन तोर सों झकोर लेत आई री—वा त्रिवि० सबै कुसुमन को हीर किये हिये मैं त्यागि तें याद प्रीतम को आई री—(हि०प्र०)

ईश्वरदासशर्म्मा।

...आनन्द मैं आय वाको सुधि मैं लुभाई री—त्रिवि० साथ ऐसी छाड़ गई बीर

मेरी मन वृत्ति फिर ध्यान छ न आईरी—

हरिश्चन्द्र कृत ०

(२)······ बात तहां रस की सरसा त सिखाय लिया पिय कंठ लगोरी मानो मनोज के बालक सुमनि बीनि सुहावनो माल लगीरी।

ईश्वर। बलभित।

पीवतही मधुराधर को रस जग पियूख की भुख भगीरी स्वर्गहु के सुख तुच्छ लगी कासिकें जब छाती सो छाती लगीरी

हरिश्च०कृत०

(३) हेरत निशान्त······नेक हु न हार याको बात के प्रमान में लखि०—चन्द्रावलि कलीन संग विहरत है है कहुं माधवी लतान में वा······ ठगी सी भुलानी याको बात के प्रमान में लखि०···नहीं कोति चन्द्रावलि संग रमि रह्यो है है कहुं (हि०प्र)

हरिश्च०कृत०।

(४) एनद नास०—···

नूतन साजि दुकूल भजूषण जेवो करी जिगि बाट अकेली।

ईश्वराम ०

प्रान न लेहु विचारेन के छवि देखि जिन्हे परि है तव बेली।

॥ भई रोशनी का बिस ॥

। दूसरा अङ्क।

पहिला गर्भाङ्क

॥ स्थान ॥

बाग मे मकान के भीतर एक आरास्ता कमरा मेज़पर खुशबू की शीशियां और फूलदान रक्खे हुए।

। सत्यानन्द और प्रमदा का प्रवेश।

सं—नं—आइये रानी साहब यह मकान आपके लायक तो नहीं है पर चूंकि भानुदत्तजीने इसे आरास्ता करने मे बड़ी फिकिर और मेहनत की है इसलिये उन की सेवा आपको स्वीकार करना उचित है—आइये विराजिये यही आपकी गद्दी है (कुर्सी उसे देता है और दोनो बैठते हैं)

प्रमदा—बहुत अच्छा पर हमारे सरकार बाहर कर क्या रहे हैं ? हमको तो बिल्कुल इस बात की खबर न रही कि अब उन्होंने बुड्ढों से भी लगाव पैदा किया है।

स—नं—हां इन दिनों सरकार साहब के यहां ऐसेही लोगों की कदर है।

प्रमदा—फिर क्या—कीजिये जितने फर माइशी बुड्ढे कहिये हम पेश करें—मगर यह सब जाने दीजिये इन बुजुर्गवार का हाल हम भी कुछ सुन सके है ?

स—नं—बड़ी मंजिल ते कर के आते हैं,

प्रमदा—कहां से ?

स—नं आपको बताही दें—भानु दत्त के देश से।

प्रमदा—भानुदत्त का देश कौनसा मुल्क है ?

स—नं—नरकही समझिये क्योंकि आप ऐसे देवताओं का वहां गुजर कहां

प्रमदा—तो यहां किस पापको वासना भोगने को आ फंसे—ऐसे जीवोंसे यहां के वैकुण्ठ से क्या सम्बन्ध ?

स—नं—पुत्रही नरक से उद्धार करता है—यहां भी आप पुत्रही के द्वारा आसके।

प्रमदा—क्या कोई खानसामों से उनका पुत्र यहां है ?

स—नं—हा—हा—हा—खानसामा ? खैर जाने भी दीजिये आप तो वे तरह उनकी पीछे पड़ी हैं।

प्रमदा—(भेद लेते हुए) अच्छा एक बात बतलाइये—यह भानुदत्त के कौन लगते हैं ?

स—नं—(स्वगत) वाह तेरी चाला को—अब तो इसने हाथ पांव निकाले—अच्छा अभी दो तुमको भेद्रसे ठीक किये देते हैं—भानुदत्तके जिगरी दोस्त हो हमे यह मुनासिब नहीं कि उनकी छिपी मर्मं की बातें सबसे कहा करें—(प्रकाश) भानदत्त के तो कोई नहीं लगते पर तारकचन्द्र के बड़े दोस्तों में हैं।

प्रमदा—(चौंक कर) किस्के ?

स—नं—आप चौंक क्यों पड़ीं—देखिये कोई दूसरा होता तो इस वक्त इनसे खुश हो जाता और नहीं तो पीठ तो जरूर ठोंकता—मगर आप पर कुछ भी असर न हुआ।

प्रमदा—यह आपको कैसे मालूम हुआ कि यह तारकचन्द के दोस्त हैं ?

स—नं—यह हमको कैसे मालूम कि यह तारकचन्द के दोस्त हैं ? भला हम किस्की दोस्ती से आगाही नहीं रखते-तारक चन्द से इन से भी बड़ी दोस्ती है इनसे सब हाल कह देते हैं और बहुधा आपकी तारीफ करते हैं कि ऐसी औरत इस कलकत्ते भर में कोई नहीं है।

प्रमदा—(क्रूद्दी से) यह सब झूठ है तारक चन्द कभी आप से ऐसा न कहेंगे।

स—नं—न कहेंगे तो क्या आप को शिकायत करेंगी?—कि एक बात पर काय म नहीं रहती उस्की चंचलता के मारे हमारा नाक में दम आ गया है—औरत है कि पारा—यह कहेंगी क्या ?

प्रमदा—आज न जानिये आप कहांर

का झूठा किस्सा जोड़ बैठे थे हमारे आतिही बरस पड़े—सच बताइये यह सब गप्प आपने कब गढ़ी?

स—नं—देखिये बुरा न मानियेगा आप को भी मानना पड़ा कि आप के हालात से हम भी कुछ वाकिफ हैं—इसे झूठ समझिये चाहो सच आप को इखतियार है—मगर जो ठीक २ बात थी सो हमने कह दिया—अब अगर आप यह कोशिश किया चाहें कि तारकचन्द और आपका रिश्ता हम को मालूम ही न हो तो यह कोशिश आपकी फजूल है—हम आंख रहते अन्धे नहीं बन सके।

प्रमदा—नहीं साहब आप बगैर आंख के अन्धे सही इस्से हमारा क्या घाटा है-पर यहभी याद रखिये कि हम लोग ऐसी कच्ची गोलियां नहीं खेले हैं कि आप ऐसे मेहरबान चाहें जब हम लोगों को उड़ा दें।

स—नं—अच्छा आपको थियेटर छोड़े कितने दिन हुए?

प्रमदा—आपको इस्से वास्ता?

सं—नं—मोफ हो; अब आप किसी का कुछ भी दीजियेगा क्या?

प्रमदा—अच्छा अभी तो छ महीने भी नहुए होंगे।

स—नं—क्यों बीबी साहब अब एक बात हम आप के मनकी कह दें तो खुश होगी या नहीं—जिस दिन आपने थियेटर से अपना सम्बन्ध छोड़ा उस दिन पहरों के पीछे आपसे और तारक चन्द से क्या२ बातें हुईं?

प्रमदा—बहुत अच्छा अगर आपने छिप के दो आदमियों की पोशीदा बातें सुनी तो यह आपकी शराफत है-क्या आपके कानून के मोताबिक जिसे आप दिन रात घोंटा करते हैं किसी से दोस्ती करना भी मना है? कुछ हमने भानुदत्त का गला तो घोंटा ही नहीं जो आप हम को धमका रहे हैं अगर कोई शख्स किसी की खातिर करे तो आपका क्या बिगड़ता है—अगर तारकचन्द से हमसे बनती है तो इस्से आप क्यों जले जाते हैं?।

स—नं—यह आपने उस चाहयां महाजन से दोस्ती किया है कि शैतान की गुलामी में अपने को बेच दिया है—ऐसी दोस्ती और दोस्ती करने वाले दोनो को धिक्कार है—भानुदत्त की न पूछिये "लंगड़ा चले लाठी की टेक" आप शायद अभी तक इस नशे में चूर हैं कि आप की हकूमत में रोक टोक करने वाला

कोई नहीं है—मगर आपके कान में इतना मैं भी अर्ज किये देता हूं कि आपको कुञ्जी मेरे हाथ है जो राज हम कहें उसे न छेड़ियेगा तो फिर देख लीजियेगा—इस वक्त मैं आपके कोठे से खूबसूरत सिर को ज़ियादा तकलीफ नहीं दिया चाहता सिर्फ इतनाही और कहेंगे कि अगर मुझको आप यहां थोड़ा सा चुहल मचाते देखती हैं तो यह न समझियेगा कि मैं तारकचन्द का दोस्त हूं बल्कि खास भानुदत्त का दोस्त हूं और जो आप अब तक धोखे में थीं सो उसे दूर कीजिये और समझे रहिये कि आपको और तारकचन्द को हम पर एतबार बात आईना है और भानुदत्त से ज़ायदा आपसे इतनी न बनती होगी जितना मुझसे। बस अब इस अध्याय को यहांही तमाम कीजिये और अपने गुरू तारकचन्द से सलाह लेकर तब आगे चलियेगा। खैर अब हमारी और आपकी चोहलबाज़ी हो चुकी आइये कुछ और बातें करें आपने रोज़ * की फरमाइश किया था लीजिये। लालू लालू।

लालू का प्रवेश।

स—नं—ज़रा रोज़ लिकर तो निकालो (प्रमदा से) देखिये मैं आप की खातिर और फरमा बरदारी से बाहर थोड़े हूं (आलमारी से निकाल लालू बोतल और दो गिलास रखता है) एक गिलास एक गिलास (प्रमदा से) क्यों साहब एकही गिलास में।

प्रमदा—जैसा आप चाहें।

लालू—क्यों साहब तो एकही गिलास रक्खें?

स—नं—हां रख दो (हाथ से इशारा करता हुआ) चपत हो।

लालू—(जाना चाहता है)

स—न—लालू—लालू—

लालू—हां खोदावन्द।

स—न—बुड्ढे से जो एक आदमी आये थे को गये?

लालू—हां गये।

स—नं—क्या भानुदत्त अकेलेही बैठे हैं।

लालू। नहीं अभी बाहर हो हैं उन्हीं से बात कर रहे हैं।

स—नं—अच्छा अब जाओ (लालू गया) (बोतल खोल शराब ढालता हुआ) यह लीजिये लाइये हम आप को पिलादें।

प्रमदा। (पीकर) बस बस अब आप भी पीजिये।

* लेमो के पीने की हलकी शराब।

सं। नं। बहुत अच्छा (टोला पीते हैं) प्रमदा। अब आप यहां आंद से कब तक लुके बैठे रहेंगी चलिये बाहर चलें। स॰न॰। बहुत अच्छा पर यहां थोड़ी देर आप और बैठी रहें। हम बाहर देख आवें (बाहर गया)

दूसरा गर्भांक।

स्थान। वही बाग।

भानु। का प्रवेश।

भानु—गये—सरला भी गई। रात को घर पहुंचने में कुछ तो तकलीफ होहीगी मगर उन्हों ने कुछ न कहा हम से बराबर छिपाते ही गये। हा एक उनका इस बात का छिपाना और एक हम लोगों का छिपाना। न जानिये इतनी धूर्तता हम में कहां से आ गई। और अभी न मालूम क्या २ सीखना बाकी है। हा पिता जी को इस सब क्लेश का कारण हमी हुए परन्तु इतने ही पर क्या अभी न जानिये क्या २ दुःख हमारे कारण उन्हें सहना पड़े उसके सोचने की भी खुद हमारी हिम्मत नहीं पड़ती। क्या जानिये घर के लोगों की बातों में क्या जादू रहता है कि बात २ में हमारा जी भर आता था। खैर यहां हमने सब सीखा इस दिल के दुःख को दूर करना भी सीखें। नहीं तो यह दुख हमें खा डालेगा (टहलता है) मनुष्य का मन सभी का दुश्मन है डिटेक्टिव है पुलिस है गाउं है चोर को चोरी करने से तो नहीं रोकता पर पीछे से अच्छी तरह सजा देता है कै कै बार हमारा जी चाहा कि जो काम एक दिन करनाही है उसे अभी कर डालें॰ पिता जी से सब बात खोल कर कह दें कब तक इस बोझ को लादे फिरें ज्यों २ देर होती है त्यों २ यह बढ़ताही जाता है पर फिर वही मन! इसके करने की हिम्मत अपने में नहीं रखता अब न जानिए पिता जी से कब सुना कात हों और तब न मालूम कौन २ खुश खबरी ले कर हम जांयगे॰ हर एक बात में सत्यानन्द का सहारा लेने की हमारी बान पड़ गई है खुद न तो हाथ है न पैर न ज़बान है न मुंह—जो कुछ है पीछे से सोचने और पछताने को यही प्रबल मन है! हाय अगर कहीं इस मनही को तन से निकाल फेंक दे सकते तो चैन पाते पर क्या? कुछ भी किया नहीं हो सकता।

सत्यानन्द दूर से आता हुआ दिखलाई देता है।

सन्—Well my tar is the coast clear

भानु— Yes, yes, ha! in your ship.

स०नं०। बहुत अच्छा आप को भूख लगी होगी आपके प्रद्माऽसिष को ले आवैं।

भानु०। लाइये लाइये (स०नं० गया) लालू लालू (लालू का प्रवेश) दो तीन कुर्सियां इसी कुञ्ज के पास लाकर रख दो (लालू कुर्सी रख कर गया)

प्रमदा के साथ स०नं० का पुनः प्रवेश।

प्रमदा। (आगे बढ़ कर भानु से) बड़ा बड़े भारी मुकद्दमे में आप फंसे थे बड़ी मेहनत पड़ी होगी—आप के मेहमान गये?

भानु—हां गये पर आप लोग भीतर इतनी देर तक क्या करते रहे?

स नं—Oh! you have learned to be inquisitive, have you? well then we had a little billing and cooing of our own.

भानु—Oh had you? I am really glad to hear it.

प्रमदा। मगर क्या ही चकमा आप लोगों ने भी उस बेचारे को दिया० रानी साहब! और रंगून की! क्या कहें उस वक्त दिल खोल कर न हंसी हा हा हा।

स नं—और हम व्यरिस्टर साहब बने थे हा—हा—हा।

भानु०। (मुंह फेर कर अलग टहलता हुआ स्वगत) अभी २ तक हमें बड़ा दुःख होता है कि इन बदमाशों ने हमारे पिता जी को इतना तङ्ग किया (सांस लेता हुआ) इस समय प्रमदा किसी तरह चली जाती तो हम अकेले में थोड़ी देर तक बैठते।

स नं—My friend seems to be under one of his usual cold fits.

प्रमदा। क्यों हुजूर आप ने इस लिए मुझे याद किया है कि आप खुद अलगर टहलैं? अगर इस वक्त फुरसत न हो तो हम जांय फिर कभी हाज़िर होंगी।

भानु०। नहीं नहीं।

प्रमदा। अच्छा यह तो बतलाइये आप ने हमें जो हार देने कहा था उसकी लालच में सिर्फ अलकही पड़ कर रह गई।

भानु०। हमने तारकचन्द से कह दिया है वह कल ज़रूर लेते आवेंगे।

प्रमदा। यह ठीक है देखिए अब आप की तबियत बहाल होती चली (स०नं० से) क्यों साहब है न?

स० नं०। क्यों न हो भला आप की सोहबत और रंज (स्वगत) कभी दूर हो सकते हैं।

लोगों के हसने और बोलने का शब्द
बाहर सुनाई देता है

प्र०। यह किन लोगों की भीड़ है?।

स०। देखिए [बाहर नौ कुमार का शब्द यह कहते हुए "रसिकबिहारी इधर! इधर!"]

स०। क्यों जनाव अब दावतों का आलमय है अब आप इनको [प्रमदा की तरफ इशारा करके] कहीं छिपा दीजिए

भा०। वाह! हम इनके साथ लड़ेंगी।

[नौ कुमार, रसिकबिहारी, और बहुत से दोस्तों का प्रवेश]

हिन्दू समाज के वर्षोत्सव में पं—रामप्रसादतिवारी का लेक्चर।

श्लोक।

स्रष्ट्रादौज्ञानरूपाकलयतिसुधियांधीसुनिर्माणयुक्तिं। संस्थानेनीतिरूपागुणगणविमलैराज्यलक्ष्मींतनोति॥ संग्रामेयाकरालारिपुबलनिचयान्हंतिशस्त्रास्त्रजालै। विद्याशक्तिःपुरारेःशुभमिहवितरत्वार्यवंशप्रसूतेर्णाम्॥

जिस विद्या शक्ति के विस्तार के लिये हम जगदीश्वर से प्रार्थना करते हैं यह उसी विद्या शक्ति की दीप्ति का प्रभाव है कि हम सब आपस के लोग आज एकत्र हो ऐसे शुभ कार्य के प्रयत्न मे उत्सुक हैं—आज हमे आत्मीय मण्डली के दर्शन और मिलाप से वह सुख प्राप्त हुआ है जो दुर्भिक्ष और अनावृष्टि पीड़ित किसानों को वृष्टि कारिणी घन घटा के देखने से अथवा बन्ध्या को पुत्र प्राप्ति और रंक को खोये हुए रत्न के पाने से होता है—इसमे कुछ सन्देह नहीं पूर्व काल के देशोपकारी महात्मा जिनके वंशानुवंश हम लोग अमुक गोत्रोत्पन्न अमुक शर्मा अमुक वर्मा अमुक गुप्त अमुक दास अपने को कह उनका स्मरण किया करते हैं उन्ही महात्माओं की सदा की यह रीति थी कि ठहराये हुए पवित्र स्थानों में एकत्र हो उपस्थित कार्य की भलाई के प्रसङ्ग का विचार किया करते थे और यही कारण था कि पूर्वकाल मे छापा न होने

पर भी हर एक विद्वान और क वि का ग्रंथ सर्वत्र प्रचलित हो जाता था जो अब छापने और विज्ञापन देने पर भी वैसे सर्व व्यापी और सर्व प्रिय नहीं हो सक्ते—उस समय की विद्या शक्ति जैसी कुछ रही हो इसका तारतम्य करना तो कठिन है पर इतना तो कह सक्ते हैं कि उनकी विद्या शक्ति से भलाई और परमार्थ और लोभ से रहि त रहने की धारणा कैसी कुछ थी अब राजाओं के अश्वमेधादि य ज्ञों में ऋत्विक् आचार्य पदधारी ऋषि बड़े २ दान को इसी लिये स्वीकार नहीं करते थे कि कदा चित् धन वा प्रभुता के मद से विद्या शक्ति का प्रभाव ढीला पड़ जाय और यथार्थ भी है कि यदि वे महात्मा लोग उस समय बड़ा बड़ा दान ले धनी हो जाते तो उनके वंश मे आज तक विद्या प्रसून की कहीं सुगन्धि भी न रह जाती उनकी दोही गति होती एक तो तीर्थ के पंडो की सो दूसरी उन विद्यार्थियों की सी जो आज कल कालेज मे पढ़ने के समय कैसी दौड़ धूप उछल कूद के साथ देश भलाई की धूम मचाते हैं जहां कोई ऊंचा अधि कार मिला तहां उन्होंने यह मंत्र का पुण्य पाठ आरंभ कर दिया। देशभलाईकठिनहै कौनपड़ैएहिफ न्द। विद्यातुमतीरथकरी हमअब करैंअनन्द॥ (करतालिध्वनि) बीए। एमए। शुभाचार का साथ तो नहीं छोड़ते पर उनका फल किताबों मे बन्द रहता है। इस लिये हम जगदीश से प्रार्थना क रते हैं कि उन आर्य महात्माओं की सी विद्या शक्ति हमारे बन्धु वर्गों मे झट पट फैले। भाइयो जब कोई मनुष्य परदेस जाता है तो अपनी जन्म भूमि वासियों के लिये उत्तम २ पदार्थ लाता है और उन्हे दे भव का यथोचित सत्कार करता है और अपने देशाटनिक मनोहर वृत्तान्तों से इष्ट मित्रों के कर्ण पुट को कृता र्थ करता है पर अफसोस कि

हमारे बन्धु वर्ग पंद्रह बीस वर्ष तक विद्या तीर्थ की यात्रा में प्रवृत्त रहते हैं सहस्रों कला और चमत्कारियां प्राप्त कर मौन साध लेते हैं और अपने दुखी भाइयों के दुख दर्द की वैसी इलाज नहीं करते जैसी उन्हें विद्या तीर्थ की यात्रा के प्रभाव से विदित रहती है। हम यह नहीं कहते कि उनके हृदय में बन्धु स्नेह का अभाव है बल्कि बन्धु प्रेम अपने भाइयों की ममता और छोह का जो कुछ तत्व है वेही केवल जानते हैं—और क्यों न जाने अब जाति वात्सल्य और बन्धु स्नेह रत्न को पशु पक्षी कीट पतंग भी नहीं छोड़ा चाहते तो पढ़ा लिखा आदमी क्यों छोड़ने लगा---नीतिकार चाणक्य पण्डित ने लिखा है कि सवेरे का जागना और बन्धु पालन गुण मुर्गे से सीखना चाहिये तो निश्चय हुआ यह बन्धु स्नेह प्राकृतिक गुण सब में भरा है पर उसका प्रकाश बिना एकता के नहीं फैलता—यह एकता वह यंत्र वा कल है जिसके सहारे से लाखों कठिन और दुस्साध्य काम सहज में होसक्ते हैं यह वह दुर्ग अथवा किला है जो सदैव शत्रु की भय से रक्षित रखता है गाय बैल बहुधा व्याघ्र के हाथ से मारे जाते हैं पर जब वे अपना दल बांध मण्डलाकार खड़े हो जाते हैं उस समय वह उनका प्रबल बैरी दूर ही से आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं बांधता—कबूतर जब तक दल के साथ आकाशमण्डल में उड़ा करते हैं बाज बहरी कोई उन पर आखेट नहीं कर सक्ता "तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः,, इत्यादि अनेकानेक वाक्य एकता विषयक बुद्धिमानों के ग्रन्थों में पाये जाते हैं और सब लोग जानते हैं इस लिये इस एकता पर बहुत कुछ कहना केवल पिष्ट पेषण मात्र है—इसी लिये चतुर सयाने असक दमक के अभिमान से अपने समुदाय और झुंड के छोटेसे छोटे और तुच्छ से तुच्छ

का भी अपमान नहीं करते वरन उन सब को एकता और मिलाप को भलाई का मूल समझते हैं भूमी सदा तुच्छ वस्तु है पर धान से अलग हो जाने पर कभी चावल बोने पर कभी उग नही सक्ता—हम को यह देख बड़ा अचरज होता है कि जिस बड़े गुरू परमात्मा ने तुच्छातितुच्छ चीटियों को भी एकता के साथ दल बांधकर रहना सिखलाया है उसने इस भारत वासी हिन्दुओं को वह सन्धा या सबक क्यों नहीं दिया अथवा ये इस उत्तम गुण की प्रवेशिका की परीक्षा से फेल हो गये; (करतालि) जो कुछ हो हम जगदीश्वर का धन्यवाद करते हैं जिसकी प्रेरणा से एकता फल की प्राप्ति के लिये हिन्दू समाज रूपी वृक्ष लगाया गया है अब इसके सीचने का भार किसके ऊपर रक्खा जाय इसकी मीमांसा आपही लोगों के आधीन है- यद्यपि यह मान लिया जाय कि समय अब पलट गया रीति नीति अब कुछ की कुछ हो गई तौ भी हिन्दूपन का चिन्ह और बर्ताव हम लोगों मे कुछ न कुछ तो अवश्य ही विद्यमान है मूल एक ही ठहरा तब शाखा प्रशाखाओं की विभिन्नता से क्या होता है यदि स्वजातिय की हवा घटा निरन्तर उठती रहै तो क्या आश्चर्य कि एकता वारिद की धारा से इस समाज रूपी वृक्ष का मूल जल प्लुत हो उत्तरोत्तर पुष्ट पड़ता जाय—यदि आप लोग अपने देश की दशा विपरीत होने के कारण एकता को कोई नई वस्तु समझते हैं तो भी जैसा बहुत सी बिलायती चीजों को लोग पसन्द करते जाते हैं वैसाही इस एकता को भी एक बिलायती पदार्थ जान अङ्गीकार करना चाहिए—"करतालिध्वनि" यह एकता वह टोपी या मुकुट है जिसका धारण करने वाला तीनो लोक मे प्रतिष्ठा पा सक्ता है; यह वह मणि है जिसका प्रकाश बड़ेर अन्धड़ तूफान से भी नहीं बुझता

यह वह चोखी तलवार है जो वज्र को भी दो टुकड़े कर सक्ती है; यह वह बेरिस्टर है जिस्के प्रमाण का खण्डन कोई नही कर सक्ता; यह एकता वह आपदुद्धारिणी नौका है जिसपर चढ़ लाखों दीन दुखी अबल सबल विपत्ति नदी के पार हो सक्ते हैं; यह वह गारुड़ी विद्या है जिस्के प्रभाव से हजारों तरह के जहरी ले जानवर और विषधर जन्तुओं से रक्षा हो सक्ती है; यह वह कल्पकारिणी औषधी है जिस्के गुण से देखतेही देखते काया कल्प हो सक्ता है कितने असभ्य और रंक से राव होगये इस मेरे कहने के तात्पर्य को इतिहास वेत्ता झट पट पहुंच जांयगे; सच पूछिये तो यह एकता वह रत्नाकर या ऋद्धि सिद्धि का समुद्र है कि इस्मे से दिन दूना रात चौगुना रत्नो का ढेर निकलता आता है हमने पौराणिकों के मुख से सुन रक्खा है कि कश्यप की सन्तान देवता दैत्य आपस मे लड़ते २ जब कुछ फल न पाया तब अन्त को दानो ने एक मन हो समुद्र मथा तो उसमे से चौदहों रत्न निकले पर अफसोस कि कथा वाचने वाले महा पुरुष इन मूल सिद्धान्त का उपदेश श्रोताओं को नही करते वैकुण्ठ के अदृष्ट सुख की प्राप्ति मे उन्हे फसा रखते हैं यह नही बतलाते कि लौकिक पार लौकिक सुख को सुगम सीढ़ी यही एकता है; इस एकता के प्राप्त होने पर पहला काम हम सबों का यही है कि हिन्दू जाति की वृद्धि और भलाई का उपाय सोचें जिस्की अनेक शाखायें हो सक्ती हैं कोई तन से कोई धन से कोई विद्या से कोई धर्म से सम्बन्ध रखती हैं जिनका विवरण और विचार काम पड़ने पर होसक्ता है रहा ढंग कि किस काम के लिये कैसा प्रयत्न किया जाय सो इस विषय मे मेरी बुद्धि का वैभव वैसा नहीं है कि ऐसे २ महानुभावों के सामने कुछ कह सकूं; जब बड़े २ लोगों

का गी छोटे२ कामो मे सहाय लेना पड़ता है तो हम किस गिनती मे हैं हमे तो फूलों की रगड़ से पहाड़ काटना है जितनी अधिक सहायता हमे मिलै सब थोड़ी है और सहायता भी श्रेष्ठ और समर्थ पुरुषों की होनी उचित है जैसा गीता मे लिखा है "यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। सयत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते" जो लोग इस सत्कर्म मे सन्नद्ध हैं उनको इस बात से उदास न होना चाहिये कि कितने समर्थ और विद्या सम्पन्न इस कार्य को उचित समझ भी जान बूझ उनकी सहायता नहीं करते गीता मे श्री मुख वाक्य है—"मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः" हजारों लड़के पढने को आरंभ करते हैं पर उच्च श्रेणी तक थोड़े पहुंचते हैं उनमे भी बहुत थोड़े विद्या की पूर्ण सिद्धि को पाते हैं इन सहस्र पूर्ण सिद्धि वालों मे से दो ही एक परमार्थ की प्रयत्न मे लगते हैं और उन प्रयत्न शालियों के झुंड मे विरल दृढ प्रतिज्ञ और अचल रह कर परमार्थता और पुरुषार्थ को सिद्ध करते हैं यद्यपि स्वार्थ महा प्रबल है प्रभुता के मद और विषय लम्पटता के फन्दे से ऐसेही कोई बचते हैं तो भी जिन्होने परोपकारियों की कोटि मे जन्म लिया है वे कब अपने कर्तव्य से हट सक्ते हैं पुराणो मे लिखा है राजा सगर के वंशधरों मे कई एक यत्न कर ते २ काल वश हो गये पर अन्त को भगीरथ ने गंगा को हिमालय की श्रेणी से सिन्धु तक मिलाही दिया—नीतिकारों का सिद्धान्त है—"अद्वैध मनसयुक्तं शूरं धीरं विपश्चितं। न श्री सन्त्यजतीनित्य मादित्यमिव रश्मयः" अर्थात् जिन के मन मे दुविधा नही है जो काम मे लगे रहते हैं एसे शूरता धीरता और पाण्डित्यादि गुणालंकृत पुरुषों को लक्ष्मी नहीं छोड़ती जिस तरह किरन सूर्य से अलग नही होती

अब अन्त मे सब महानुभावों से प्रार्थना है कि आप गुण ग्राहकता की रीति से इसके सारांश को ग्रहण कर मेरी अल्पज्ञता और व्यर्थ भाषणा की भूल चूक सुधारैं गे ।

—०—

॥ कजली ॥

अर्जुन कर्ण द्रोण के अंखियन बहि रहि बहि२ आंसू धार ॥ यही भूमि जहां हम एक दिन किये शस्त्र झनकार । इहैं आज ये कायर कूकुर करैं दास्य स्वीकार ॥ आठ बरस की कन्या ब्याहैं लखैं न अत्याचार । विषय भोग मे बालक पन सों डूबैं हा धिक्कार ॥ ब्राह्मण शास्त्र व्यसन सब छांड़ कछो रन ओहार । अन्य नारि के दास आपु बने कलि २ करैं पुकार ॥ जे सब शास्त्र कला हम सुगये कहि २ क्लेश अपार । तिनहि कतघ्न विषय सम्राट ये नासहि करि अपकार ॥ राजा बजैं सेठ साहूमत हैं करखौं कुमत कर बाल । ब्राह्मण अर्थों न तप दुख सहि भये अवधान सम सुकुमार ॥ कौन आर्य सन्तान कहै इन्हें ? लखि इनके आचार । अजहुंन ये मूरख चेतत हैं करैं न शास्त्र प्रचार ॥

॥ सोमनाथ का मन्दिर गुजरात ॥

मुसलमान घेरो शिव को मन्दिर कासों२ रे गोहार ॥ मारवाड़ को गवल सिंह कहं कहं राना मेवार । कालंजर कन्नौज न नृपति कह कह भट अगहलदार ॥ म्लेच्छ रुच्छ व्यापि चहुं ओरो हने गहन ललकार रुण्ड मुण्ड करि तिन्ह पापिन कह हरहु हरहि उपहार ॥ जिन यागा केसरिया धारो जिन करौ और सिंगार । लै कृपान बेगहि रन धाओ करहु वीर व्यवहार ॥ शत्रुन मारि उच्च रहु सब मिलि भारत जै २ कार ।

॥ झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ॥

काहे पटकत माथ फिरंगिया आपन झांसी देहूं नाहि । प्राण रहत कभी छत्रानी शत्रु को पीठ न ध्याहिं । सहि वापूत न है कायर झांसी जे रन देखि डराहि । इहां सुभट आवत मखु झपड़ि लड़न हेत हुलसाहिं । आशु सुरन्हु तिलंगन लैके न हूं सम अबहिं नशाहिं । विज्ञ समान कृपान सवारत लक्ष्मि बाइस मुसकाय ।

समस्या ।

पिय अङ्क मयङ्क मुखी विहरै ।
प्रिय पेखत मोद भरै नवला ।

अग्रिम २।) पश्चात् ४।)

Printed at the '*Light Press*' Benares, by Gopinath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

Laminated in Laboratory
DIVISON

on 9.7.76

By:

Hani gopal Dey
Sadhan Cha Deb
Ram Chandra Das